उनके यहां गौ आदिका समूह होता है और (भोगवतां मस्तकं समं भवति) भोगनेवालोंका मस्तक बराबर होता है और (मंडलेशानां मस्तकं क्रमोन्नतं भवति) मंडलेशोंका मस्तक क्रम करिके ऊंचा होता है ॥ २९० ॥

विकसच्छत्राकारं यस्य शिरो युवतिकुचनिभं वापि ॥
नृपतिः स सार्वभौमो निम्नं वा यस्य स महीशः ॥२९१॥

अन्वयार्थौ–(यस्य शिरः विकसच्छत्राकारं वा युवतिकुचनिभं भवति स सार्वभौमः नृपतिर्भवति) जिसका मस्तक खुलेहुए छातेके आकार वा स्त्रीके कुचके आकार हो वह सर्वभूमिका राजा होता है और (यस्य शिरः निम्नं स महीशो भवति) जिसका मस्तक नीचा होय सो भूमिका राजा होता है ॥ २९१ ॥

विषमो धनहीनानां करोटिकाभश्चिरायुषो मूर्द्धा ॥
द्राघिष्ठो दुःखवतां चिपिटो मातृपितृघ्नानाम् ॥ २९२ ॥

अन्वयार्थौ–(धनहीनानां मूर्द्धा विषमो भवति) दरिद्रोंका मस्तक ऊंचानीचा होता है और (चिरायुषः मूर्द्धा करोटिकाभो भवति) बडी आयुवालेका मस्तक खोपडीके आकार होता है और (दुःखवतां मूर्द्धा द्राघिष्ठो भवति) दुःख पानेवालोंका मस्तक बहुतही लम्बा होता है और (मातृपितृघ्नानां मूर्द्धा चिपिटो भवति) माता पिताके मारनेवालोंका मस्तक चिपटासा होताहै ॥ २९२ ॥

धनविरहितो द्विमौलिः पापरतो मीनमौलिरतिदुःखी ॥
अधमरुचिर्घटमौलिर्घननतमौलिः सदा निन्द्यः ॥ २९३ ॥

अन्वयार्थौ–(द्विमौलिः धनविरहितः स्यात) दो मस्तकवाला दरिद्री होता है और (मीनमौलिः पापरतः वा अतिदुःखी स्यात्) मछलीकेसे मस्तकवाला पाप करनेमें चाह रक्खै और बहुत दुःखी होता है और (घट-मौलिः अधमरुचिः स्यात) घडेकेसे मस्तकवाला नीचोंमें संगति करनेवाला

परहृदयाभिप्रायं परगादितार्थस्य वेत्ति यः सत्त्वम् ॥
सत्त्वं भुवने दुर्लभसम्भूतिः सुकविरेवैकः ॥ ९ ॥
नृस्त्रीलक्षणपुष्पां स्रजमेतां सुरभिवर्णगुणगुम्फाम् ॥
मृगराजसभाख्याता अपि सन्तः कुरुत कण्ठस्थाम् ॥ १० ॥

अन्वयः-(यः परगादितार्थस्य हृदयाभिप्रायं वेत्ति, स सत्त्वम् तथा भुवने सत्त्वं दुर्लभम् एकः सुकविः एव सम्भूतिः, हे मृगराजसभाविख्याताः सन्तः अपि पुरुषा एतां नृस्त्रीलक्षणपुष्पां सुरभिवर्णगुणगुम्फां स्रजं कण्ठस्थां कुरुत । अस्यार्थः-(जो दूसरेके कहे हुए प्रयोजनको जानिलेय सोई सत्त्व है-और लोकमें सत्त्व ही दुर्लभ है-और एक सुन्दर कवि है यही सम्भूति है हे सिंहसभाके विख्यात पंडितो ! इस पुरुष स्त्रीके लक्षणरूप हैं पुष्प जिसमें और सुगन्धित रंगवाले इन गुणों करके गुँथी हुई मालाको कण्ठमें स्थित करो ॥ ९ ॥ १० ॥ समस्तग्रन्थश्लोकसंख्या ॥ ७९३ ॥

इति श्रीमहत्तमश्रीनृसिंहात्मजदुर्लभराजविरचिते सामुद्रतिलकाख्येऽपर नाम्नि पुंस्त्रीलक्षणे वंशवर्णनं ग्रन्थपूर्तिश्च ॥

सामुद्रिकभाषेयं राधाकृष्णेन निर्मिता रम्या ॥
लब्ध्वा साहाय्यं वै विदुषो घनश्यामनाम्नश्च ॥ १ ॥
गिरिवेदनवक्ष्माभिः प्रमिते संवत्सरे सुपौषे च ॥
मेचकपक्षे रुचिरे दुर्गातिथियुतरवेर्वारे ॥ २ ॥
अर्गलपुरवरनगरे कालिन्दीतीरसंस्थिते रम्ये ॥
नृस्त्रीलक्षणशास्त्रं पूर्णं जातं हि लोकेऽस्मिन् ॥ ३ ॥
जातो वैश्यः खेमराजाऽभिधानः श्रीकृष्णस्यापत्यभावं गतो वै ।
तेनायं वै वेङ्कटेशाख्ययन्त्रे श्रीमुम्बय्यां मुद्रितो ग्रन्थ आशु ॥ ४ ॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

मिलनेका पत्ता-खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बंबई.

॥ श्रीः ॥

सामुद्रिकशास्त्रम् ।

(श्रीसमुद्रेण प्रोक्तम् ।)

श्रीयुतपण्डितघनश्यामदासहमीरपुरीयभूतपूर्व-
डिपुटीइन्स्पेक्टर इत्येतस्य साहाय्येन

अर्गलपुरनिवासिराधाकृष्णमिश्रेण कृतया

सान्वयभाषाटीकया सहितम् ।



तदेव

क्षेमराज-श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना

मुम्बय्याम्

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणालये

मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

संवत् १९६६, शके १८३१.



स्त्रीणां नृणां यत्र शुभाऽशुभानि चिह्नानि सम्यक् प्रतिपादितानि ॥
तद्धचस्ति सामुद्रिकमंकितं वै शास्त्रं बुधैशैरवलोकनीयम् ॥ १ ॥

स्त्री पुरुषोंके शरीरके समस्त शुभाऽशुभ लक्षण विस्तारपूर्वक जिसमें वर्णितहैं ऐसा अपूर्व मनोहर यह "सामुद्रिकशास्त्र" अत्यन्त **शुद्ध सान्वय** भाषाटीका सहित "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् यन्त्रालयमें नवीन छपकर तयार है। यह शास्त्र ज्योतिर्विदोंको परमोपकारक है, पहिले यह समग्र शास्त्र मिलना अतिकठिन था, जहाँ तहाँ विरल जगह खण्ड २ था, सम्पूर्ण एकत्र मिलनेमें नहीं आताथा, अब यह शास्त्र महत्परिश्रमसे समग्र सांगोपांग एकत्र तयार कियागया है सो इस शास्त्रका आनन्द अवलोकनसे विद्वज्जनोंको प्रतीत होगा और विद्वानोंको ज्योतिश्शास्त्रका बहुतभी अवगाहन करने जो फलादेश सामर्थ्य नहीं होता वह इसमें अति शीघ्रही होजाता है।

विद्वज्जन कृपाकांक्षी-

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् यन्त्रालयाध्यक्ष-मुंबई.

प्रस्तावना।



वाचकवृन्द ! तनिक परिश्रम तो होयहीगा परंतु कृपापूर्वक इस प्रस्तावनाकोभी तो देख लीजिये. मित्र! आजकल अनेक धूर्त पामरजन मनुष्योंके हाथको देखकर उसके शुभाशुभ फलको कथन करते आपने देखे होयँगे. आप जानते हैं कि, वे कौन हैं. परंतु हम ही बताये देते हैं कि वो धूर्त सेरवरा जो प्राय: पश्चिमके देशों (जयपुर, जोधपुरके देशों) में होते हैं और दूसरे भडुली (भरारे) लोग जो प्राय: पश्चिमोत्तर देशमें (काशी-लखनऊ-दिल्ली-आगरा-मथुरा आदि) में होते हैं. तथा गुजरातमें डाकोत नामसे प्रसिद्ध हैं इसी प्रकार ये लोग सर्वत्र फैले हुए हैं. ये निरक्षर भट्टाचार्य होते हैं परंतु जो मूर्ख होते है वे प्राय: चालाक अधिक होते हैं सो यह सामुद्रिकशास्त्री बनकर विचारे साधारण स्त्री पुरुषोंका हाथ देखकर उनके भूत भविष्यत् और वर्त्तमान तीन जन्मका हाल बतानेका दावा रखते हैं, धन्य है इनके माता पिताको ! फिर तो हम इनको दूसरा ईश्वर समझें ? परंतु अब महाराज ब्रिटिशकी ध्वजा फहरानेसे वह पिछला समय गया, अब हमको स्वयं धूर्त्त और पंडितकी परीक्षा होने लगी-है. मित्र ! यह सामुद्रिक क्या वस्तु है ? और इसमें क्या विषय है? यह अवश्य जानने योग्य विषय है, इस वास्ते कुछ थोडासा विषय संक्षेपसे यहां पर लिखता हूं. यह सामुद्रिक शास्त्र मुख्य एक ज्योतिषका अंग है, जैसे जातक-ताजक-केरल-रमल और जफर आदि हैं उसी प्रकार यह सामुद्रिक भी है इसके उत्पत्तिके विषयमें बहुत वादानुवाद है. कोई कहता है कि, शिवजीने श्रीपार्वती महारानीके प्रति कहा है, कोई कहता है विष्णु भगवानने ही सामुद्रिक नामक ब्राह्मणका अवतार लेकर इसको प्रगट किया और कोई कहता है समुद्रशायी विष्णु और लक्ष्मीकी सुंदरता और शुभ लक्षणोंको देखकर नदनदीपति समुद्रदेवने ही यह शास्त्र निर्माण किया इसीसे इसका **सामुद्रिक नाम** विख्यात हुआ जो कुछ हो परंतु इस शास्त्रके प्राचीन होनेमें सर्व जन निर्विवाद है और अनेक ज्योतिषसंहिता रचयिताओंने इसको अपने ग्रंथमें स्थान दिया है और एक छोटासा ग्रंथ पृथक्‌भी मिलताहै जो सर्वत्र भाषाटीकासहित छप चुकाहै परंतु उस अल्पग्रंथमें क्या क्या लिखें और दूसरे **"नटभटगणकचिकित्सकमुखकंदराणि यदि न स्युः"** इसके चरितार्थ कर्त्ताओंने उसको कितनी अशुद्धियोंसे दूषित कर दिया सो हम नहीं कह सक्ते, इस वास्ते मैं बहुत दिनोंसे इसके शुद्ध बृहद्ग्रंथकी तलाशमें था परंतु मित्रगण ! **'जिन ढूंढा तिन पाइयाँ, गहरे पानी बैठ"** यह ईश्वरका नियम सत्य है सो मेरे परम मित्र आगरेके रईस सुप्रतिष्ठित पण्डित **राधाकृष्णजीने** यह सामुद्रिकका सबसे बडा और दुष्प्राप्य **"सामुद्रिक शास्त्र"** हमारे पास मुद्रणार्थ भेजा.

इस ग्रन्थको जगद्विख्यात महाराजाधिराज श्रीराजपालकुलकमलदिवाकर **श्रीजगद्देव** महाराजने अनेक प्राचीन और अर्वाचीन ग्रंथोंके सहारे ललित आर्या छंदोंमें अद्भुत प्रकारसे निर्माण किया है, इससे बडा इस विषयका अन्य ग्रन्थ नहीं है. इसके तीन अधिकार (अध्याय) है. इनमें क्रमसे स्त्री पुरुषोंके प्रत्येक अंग उपांगके शुभाऽशुभ लक्षणोंका उत्तम रीतिसे ऐसा वर्णन है कि, जैसा अन्य किसी ग्रन्थमें देखनेमें नहीं आता यह सर्व गुण संपन्न ग्रंथ सर्वोपकारी होय.' इस अभिलाषासे उन्ही पंडित राधाकृष्णजीने पण्डित **घनश्यामदासजी** जो कि हमीपुरके प्राचीन इन्स्पेक्टरोपाधिधारी थे उनकी सहायतासे इसका अन्वय- सहित सरल हिन्दीभाषाटीका किया और वह **' सोना सुगंध '** इस वाक्यको चरितार्थ करनेवाला होगया.

सान्वय भाषाटीका सहित इस अद्वितीय ग्रंथको पाकर हमने भी दिव्य पुष्टटाईप और बढिया चिकने कागज पर अपने "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें मुद्रितकर प्रकाशित किया.

और इस आवृत्तिमें फिरभी शास्त्रियों द्वारा भली भांति शुद्ध कराकर उत्तमतासे मुद्रितकर प्रकाशित करताहूं आशा है कि अनुग्राहक ग्राहक इसे स्वीकार कर स्वयंलाभ उठावेंगे और हमारे परिश्रमको सफल करेंगे ।

आपका कृपाकांक्षी–खेमराज श्रीकृष्णदास; अध्यक्ष "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस मुम्बई.

॥ श्रीः ॥

सामुद्रिकशास्त्रविषयानुक्रमणिका ।

इति सामुद्रिकानुक्रमणिकायां शारीराधिकारःप्रथमः १

इति शारीराधिकारो द्वितीयः ॥ २ ॥

इति सामुद्रिकानुक्रमणिकायां संस्थानाधिकारश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

इति सामुद्रिकशास्त्रविषयानुक्रमणिका समाप्ता।



श्रीगणेशाय नमः ।

अथ सामुद्रिकशास्त्रम् ।

सान्वयभाषाटीकासमेतम् ।



श्रीपतिनाभिजभवः कनकच्छायः प्रयच्छतु शिवं वः ।
कल्पादिसृष्टिहेतुः पद्मासनसंश्रितो देवः ॥ १ ॥

अन्वयार्थौ–(पद्मासनसंश्रितो देवः ब्रह्मा वः शिवं प्रयच्छतु)कमलासनपै स्थित जो देव अर्थात् आदिदेव ब्रह्मा सो तुमको कल्याण देओ (कथंभूतो देवः-श्रीपतिनाभिकमलप्रभवः) कैसे हैं वह देव कि, श्रीपति जो हैं विष्णु तिनकी नाभिकमलसे उत्पन्न (पुनः कथंभूतः–कनकच्छायः) फिर कैसे हैं वह देव कि सुवर्णकीसी है कांति जिन की (पुनः कथंभूतः देवः कल्पादिसृष्टिहेतुः) फिर कैसे हैं वह देव कि कल्पकी आदिमें जो सृष्टि हुई तिसके कारण हैं॥ १ ॥

स्फुरदेकलक्षणमपि त्रैलोक्यलक्षणं वपुर्यस्याः ।
अविकलशब्दब्रह्म ब्राह्मी सा देवता जयति ॥ २ ॥

अन्वयार्थौ–(सा ब्राह्मी देवता जयति) सो ब्राह्मी देवता अर्थात् सरस्वती देवी सर्वोत्कर्षकरिके जयवती हो अर्थात् जयकारी हो (कथंभूता सा ब्राह्मी देवता–अविकलशब्दब्रह्म स्फुरदेकलक्षणमपि) सो कौनसी देवी है कि विकलतारहित शब्दरूप ब्रह्म और देदीप्यमान है मुख्य लक्षण जिसमें ऐसा (यस्याः त्रैलोक्यलक्षणं वपुः) जिसका त्रैलोक्यरूप लक्षण शरीर है ॥ २ ॥

पुरुषोत्तमस्य लक्ष्म्या समं निजोत्संगमधिशयानस्य ।
शुभलक्षणानि दृष्ट्वा क्षणं समुद्रः पुरा दध्यौ ॥ ३ ॥

अन्वयार्थौ–(समुद्रः पुरुषोत्तमस्य शुभलक्षणानि दृष्ट्वा क्षणं पुरा दध्यौ) समुद्र जो है सो पुरुषोत्तम कहिये विष्णु तिनके शुभलक्षणोंको देखकरिके क्षणमात्र पहले ध्यान किया (कथंभूतस्य पुरुषोत्तमस्य लक्ष्म्या समं निजोत्सं

गमधिशयानस्य) कैसे हैं वहपुरुषोत्तम कि, लक्ष्मीजीके साथ अपनी गोदमें, शेषशय्या पर शयन करते हैं ॥ ३ ॥

भोक्ता त्रिखण्डभूमेर्भक्ता मधुकैटभादिदैत्यानाम् ।
रूपवशीकृतयाऽसौ क्षणमपि न वियुज्यते लक्ष्म्या ॥ ४ ॥

अन्वयार्थौ–(त्रिखण्डभूमेः भोक्ता) तीन खण्ड पृथ्वी तिसका भोगनेवाला (च पुनः मधुकैटभादिदैत्यानां भंक्ता) और मधुकैटभ आदि दैत्योंके मारनेवाला(असौ रूपवशीकृतया लक्ष्म्या क्षणमपि न वियुज्यते)ऐसे यह विष्णु रूपकरिके वशकरनेवाली जो लक्ष्मी तिससे क्षणमात्रभी अलग नहीं होते॥ ४ ॥

इहेक्षणलक्षणयुतं तदपरमपि हंत भजति श्रीः ।
विपरीतलक्षणयुतस्त्रिजगत्यपि किङ्करो भवति ॥ ५ ॥

अन्वयार्थौ–(इह ईक्षणलक्षणयुतं तत् अपरम् अपि हन्त श्रीः भजति) इस लोकमें नेत्रोंको शुभ लक्षणयुक्त अन्य पुरुषको भी यह हर्षकी बात है कि, उसको लक्ष्मी जी भजती हैं अर्थात् उसकेभी निवास करती हैं और(च पुनः–विपरीतलक्षणयुतः पुरुषः त्रिजगति अपि किंकरः भवति) जो विपरीतलक्षण अर्थात् अशुभलक्षण युक्त जो पुरुष है सो तीनों लोकोंमें दास होताहै५

अथ चेह मध्यलोके सकलेष्वपि सत्सु जंतुजातेषु ।
मर्त्यः प्रधानजातो यदाख्यया मर्त्यलोकोऽयम् ॥ ६ ॥

अन्वयार्थौ–(अथ च इह मध्यलोके सकलेषु अपि जन्तुजातेषु सत्सु अयं मर्त्यः प्रधानजातः)इसके अनंतर इस मध्यलोकमें सब जीवजंतुओंके समूह होते संते मनुष्य प्रधान हुवा और (यदाख्यया अयं मर्त्यलोकः प्रसिद्धः) जिसके नामकरिके यह मर्त्यलोक विख्यात है ॥६॥

उत्पत्तिः स्त्रीमूला तस्या अपि ततः प्रधानमेषापि ।
क्रियते लक्षणमनयोर्यदि तदिह स्याज्जनोपकृतिः ॥ ७ ॥

अन्वयार्थौ–(उत्पत्तिः स्त्रीमूला ततः तस्या अपि एषा अपि प्रधानम्) स्त्री है मूल अर्थात् जड़ उत्पत्ति जिसकी तिससे यह स्त्री भी प्रधान है (यदि

अनयोः लक्षणं क्रियते तत इह जनोपकृतिः स्यात्) जो इन दोनोंके लक्षण करे जायँ तौ इसलोकमें सबका उपकार होय ॥ ७ ॥

इत्थं विचिन्त्य सुवरे स्वहृदि समुद्रेण सम्यगवगम्य।
नृस्त्रीलक्षणशास्त्रं रचयांचक्रे तदादि तथा ॥ ८ ॥

अन्वयार्थौ–(समुद्रेण इत्थं सुवरे स्वहृदि, विचिन्त्य सम्यक् च अवगम्य) समुद्रने श्रेष्ठ अपने हृदयमें विचार करके और अच्छे प्रकार समझिके (नृस्त्रीलक्षणशास्त्रं तथा तदादि रचयांचक्रे) मनुष्य और स्त्रीके हैं लक्षण जिसमें ऐसा शास्त्र और आदिमें मनुष्यके हैं लक्षण जिसमें सो रचा अर्थात् बनाया ८॥

तदापि नारदलक्षकवराहमाण्डव्यषण्मुखप्रमुखैः ।
रचितं क्वचित्प्रसङ्गात्पुरुषस्त्रीलक्षणं किञ्चित् ॥ ९ ॥

अन्वयः–(तदापि नारदलक्षकवराहमाण्डव्यषण्मुखप्रमुखैःप्रसङ्गात्–पुरुषस्त्री लक्षणं किंचित् क्वचित् रचितम्–) अन्यार्थः–तब भी नारद मुनि जाननेवाले और वराह माण्डव्य स्वामिकार्त्तिक आदिकोंने प्रसङ्गमें पुरुष और स्त्रीके लक्षणों करके युक्त कुछ कुछ शास्त्र कहीं बनाया ॥ ९ ॥

तदनन्तरमिह भुवने ख्यातं स्त्रीपुंसलक्षणज्ञानम् ।
दुर्बोधं तन्महदिति जडमतिभिः खण्डतां नीतम् ॥ १० ॥

अन्वयः–(तदनन्तरम् इह भुवने स्त्रीपुंसलक्षणज्ञानं ख्यातम्–अति दुर्बोधं तत् महत् जडमतिभिः खण्डतां नीतम्–) अन्यार्थः–ताके पीछे इस लोकमें स्त्री पुरुषके लक्षणोंका ज्ञान प्रगट हुआ–जिससे वह बड़े जानके कठिन होनेसे जडबुद्धियोंने खंडित कर दिया ॥ १० ॥

श्रीभोजनृपसुमन्तप्रभृतीनामग्रतोपि विद्यन्ते ।
सामुद्रिकशास्त्राणि प्रायो गहनानि तानि परम् ॥ ११ ॥

अन्वयार्थौ–(श्रीभोजनृपसुमन्तप्रभृतीनाम् अपि अग्रतः सामुद्रिकशास्त्राणि विद्यन्ते) श्रीमान् भोज और सुमन्त आदि राजाओंके आगेभी

सामुद्रिक शास्त्र थे (प्रायः तानि परं गहनानि सन्ति) परंतु वे बहुधाकरिके अत्यन्त कठिन और गूढ थे ॥ ११ ॥

खण्डीकृतानिचपुनःपिण्डीकृत्याखिलानितान्यधुना ।
सामुद्रिकं शुभाशुभमिह किंचिद्वच्मि संक्षेपात् ॥ १२ ॥

अन्वयः—(पुनः खंडीकृतानि अखिलानि तानि पिंडीकृत्य इह शुभाशुभं सामुद्रिकं किंचित् संक्षेपात् अधुना वच्मि) अस्यार्थः—फिर वे जो संपूर्ण खंडित होगये थे तिन्हें इकट्ठे करिके इसलोकमें शुभ और अशुभ लक्षणोंका जो सामुद्रिक शास्त्र तिसे संक्षेपसे कुछ एक अब कहता हूं ॥ १२ ॥

सामुद्रमङ्गलक्षणमिति सामुद्रिकमिदं हि देहवताम् ।
प्रथममवाप्य समुद्रः कृतवानिति कीर्त्यते कृतिभिः ॥ १३ ॥

अन्वयः—(समुद्रः प्रथमम् अवाप्य इदं सामुद्रिकं देहवतां शुभाशुभम् अंगलक्षणम् इदं शास्त्रं कृतवान् तत् अधुना कृतिभिः कीर्त्यते) अस्यार्थः—समुद्रने पहिले मनुष्योंके अंगका शुभाशुभ लक्षण इस सामुद्रिक शास्त्रको किया सो अब उसीको पंडित कहते हैं ॥ १३ ॥

ऊरू जठरमुरःस्थलबाहुयुगं पृष्ठमुत्तमाङ्गं च ।
इत्यष्टाङ्गानि नृणां भवन्ति शेषाण्युपाङ्गानि ॥ १४ ॥

अन्वयः—(ऊरू—जठरम्—उरःस्थलं—बाहुयुगं—पृष्ठम् उत्तमाङ्गं च नृणाम् इति अष्टाङ्गानि भवन्ति—तथा शेषाणि उपाङ्गानि भवन्ति) अस्यार्थः—दो जाँघ—पेट—छाती—दो भुजा—पीठ—शीस मनुष्योंके ये आठ अंग मुख्य हैं—जिनमें और बाकी उपअंग हैं अर्थात छोटे अंग हैं ॥ १४ ॥

पूर्वभवान्तरजनितं शुभमशुभमिहापि लक्ष्यते येन ।
पुरुषस्त्रीणां सद्भिर्निगद्यते लक्षणं तदिह ॥ १५ ॥

अन्वयः—(येन पूर्वभवान्तरजनितं शुभाशुभलक्षणम् इह अपि लक्ष्यते—तत इह पुरुषस्त्रीणां लक्षणं सद्भिः निगद्यते) अस्यार्थः—जिससे पहिले जन्मके उत्पन्न शुभाशुभ लक्षण जो देखे जायँ सोही पुरुष स्त्रियोंके लक्षण पंडितों करिके कहे जातेहैं ॥ १५ ॥

देहवतां तद्बाह्याभ्यन्तरभेदेन जायते द्विविधम् ।
वर्णस्वरादिबाह्यं पुनरन्तः प्रकृतिसत्त्वादि ॥ १६ ॥

अन्वयः–देहवतां तत् लक्षणं बाह्याभ्यन्तरभेदेन द्विविधं जायते वर्णस्वरादिबाह्यं पुनः प्रकृतिसत्त्वादि अंतः) अस्यार्थः–शरीरके वेही लक्षण बाहर और भीतरके भेदसे दो प्रकारके होते हैं सो वर्ण और स्वरको आदि लेकर बाह्य लक्षण कहाते हैं–और प्रकृतिसत्त्व आदि ये अंतरके लक्षण हैं ॥ १६ ॥

आद्य तदाश्रयतया निखिलेष्वपि लक्षणेषु शारीरम् ।
मनुजानां तस्मादिह वक्ष्यामि तदेव मुख्यतया ॥ १७ ॥

अन्वयः–(निखिलेषु अपि लक्षणेषु तदाश्रयतया आद्यं शारीरं तस्मात् इह मनुजानां मुख्यतया तदेव वक्ष्यामि) अस्यार्थः–संपूर्ण लक्षणोंमें उसके आश्रय करिके आदिमें शरीरसे ही संबंध रखताहै तिससे मनुष्योंके मुख्य उसी शरीरके लक्षण कहताहूं ॥ १७ ॥

शरीरावर्तगतिच्छायास्वरवर्णवर्ण गन्धसत्त्वानि ।
इत्यष्टविधं हयवत्पुरुषस्त्रीलक्षणं भवति ॥ १८ ॥

अन्वयः–(शरीरावर्तगतिच्छायास्वरवर्णवर्णगंधसत्त्वानि हयवत् इति अष्टविधं–पुरुषस्त्री लक्षणं भवति(अस्यार्थः–शरीरमें आवर्त कहिये भौंरी १ गति कहिये चाल २ छाया कहिये कान्ति ३ स्वर कहिये बोलना ४ वर्ण कहिये रंग ५ वर्ण कहिये अक्षर ६ गंध कहिये सुगंध दुर्गंध ७ सत्त्व कहिये पराक्रम ८ इस प्रकार जैसे आठ प्रकारके लक्षण घोडेके होते हैं तैसेही पुरुष और स्त्रियोंकेभी होते हैं ॥ १८ ॥

इह तावदूर्द्ध्वमूलो नरकल्पतरुर्भवेदधःशाखः ।
पादतलात्तदिदानीं शारीरं लक्षणं वक्ष्ये ॥ १९ ॥

अन्वयः–(इह तावत् ऊर्द्ध्वमूलः नरकल्पतरुः अधःशाखः भवेत् इदानीं पादतलात् शारीरं लक्षणं वक्ष्ये) अस्यार्थः–इस ग्रंथमें ऊर्ध्वसे मूल-

तक मनुष्यका शरीर कल्पवृक्षके समान नीची शाखावाला है—सो पांवके तलुवा अर्थात् नीचेसेही शरीररूपी वृक्षके लक्षणोंको कहता हूं ॥ १९ ॥

आदौ पदस्य तलमथ रेखांगुष्ठांगुलीनखं पृष्ठम् ।
गुल्फौ पाली जंघायुगलं रोमाणि जानुयुगम् ॥ २० ॥

अस्यार्थः—इसके आदिमें पांवका तलुआ और रेखा अँगूठा अंगुली नख पांवकी पीठ गुल्फौ अर्थात् टकने पाली अर्थात् गढ़ेले जंघायगलम् अर्थात् दोनों पिंडली रोमाणि अर्थात् रोंगटे जानुयुगम् अर्थात् दोनों जाँघ जानो ॥ २० ॥

ऊरू तथा कटितटस्फिग्युग्मं तदनुपायुरथ मुष्कौ ।
शिश्नस्तन्मणिरेतो मूत्रं शोणितमथो बस्तिः ॥ २१ ॥

अस्यार्थः—ऊरू—दोनों जाँघ । कटितट—कमरका किनारा । स्फिग्युग्मं—दोनों कोख । तदनुपायुः—तिसके पीछे गुदा । मुष्कौ—अंडकोश । शिश्नः—इन्द्री । तन्मणि—इंद्रीकी सुपारी । रेतः—धातु । मूत्र । शोणित—रुधिर बस्ति—पेडू जानो ॥ २१ ॥

नाभिः कुक्षी पार्श्वे जठरं मध्यं ततश्च वलयांस्मिन् ।
हृदयमुरः कुचचूचुकयुग्मं जत्रुद्वये स्कन्धौ ॥ २२ ॥

अस्यार्थः—नाभिः—टूंडी । कुक्षी—दोनों कोख । पार्श्वेपांसू । जठरं मध्यं—पेटका बीच । वलयः—[illegible] । हृदयं—छाती । उरः—कलेजा । कुच—चूँची । चूचुकयुग्मं दोनों चूंचीकी नोकें । जत्रुद्वये [illegible]की दोनों हंसली। स्कन्धौ—दोनों कंधा जानो ॥ २२ ॥

अंसौ कक्षे बाहू पाणियुगं तस्य मूलपृष्ठतलम् ।
मीनाद्याकृतिरेखांगुलीकं नखाः क्रमशः ॥ २३ ॥

अस्यार्थः—अंसै—कंधे । कक्षे—कक्षे—दोनों कांख । बाहू—दोनों भुजा । पाणियुगम्— हाथ । तस्य मूलम्—तिसकी कलाई । पृष्ठतलं—हथेली की पीठ । मीनाद्याकृतिः—मछलीकीसी सूरत । रेखा—लकीरें । अंगुली । नख ये क्रमसे जानो ॥ २३ ॥

पृष्ठं कृकाटिकाथ ग्रीवा चिबुकं संकूर्चहनुगण्डम् ।
वदनोष्ठदशनरसना तालु ततो घंटिका हसितम् ॥ २४ ॥

अस्यार्थः—पृष्ठ—पीठ । कृकाटिका—गलेका गट्टा । ग्रीवा—गर्दन । चिबुकं-ठोडी । संकूर्च—गाल । हनुगंडं—गालोंकी हड्डियाँ। वदन—मुख। ओष्ठ—होठ । दशन—दांत । रसना—जीभ । तालु—तालुवा । घंटिका—गलेकी घंटी । हसितं—हँसना जानो ॥ २४ ॥

नासाक्षुतमक्षियुगं पक्ष्माणि ततो निमेषरुदिते च ।
भ्रूशङ्खकर्णभालं तल्लेखा मस्तकं केशाः ॥ २५ ॥

अस्यार्थः—नासा—नाक। क्षुतं—छींक। अक्षियुगं-दोनों आंखें। पक्ष्माणि—आखोंकी बाफनी । निमेष—पलक । रुदित—रोना । भ्रूशंख—कनपटी । कर्ण—कान । भाल—ललाट । तल्लेखा—तिसकी रेखा-लिखावट । मस्तकं—माथा । केशाः—बाल जानों ॥ २५ ॥

इत्यापादतलकेशान्तमिहानुक्रमेण शारीरम् ।
अङ्गोपाङ्गविभक्तं लक्षणविद्भिर्नृणां ज्ञेयम् ॥ २६ ॥

अन्वयः—(इति आपादतलकेशान्तम् इह अनुक्रमेण शारीरम् अंगोपांगम्—विभक्तं लक्षणविद्भिः नृणां ज्ञेयम् इति) अस्यार्थः—पाँवके तलुवेसे लेकर बालोंके अंततक यह क्रमसे शरीरके अंग उपअंगके जुदे जुदे लक्षण मनुष्योंके जानने चाहियें ॥ २६ ॥

अस्वेदमुष्णमरुणं कमलोदरकान्ति मांसलं श्लक्ष्णम् ।
स्निग्धं समं पदतलं नृपसंपत्तिं दिशति पुंसाम् ॥ २७ ॥

अन्वयः—(अस्वेदं उष्णम् अरुणं कमलोदरकान्ति मांसलं—श्लक्ष्णं स्निग्धं समं एतादृशं पदतलं पुंसां नृपसंपत्तिं दिशति इति) अस्यार्थः—पसीनारहित—गरम रहै—लाल होय—कमलके उदरकीसी कांति होय—मांस पुष्ट होय—चिकना होय—एकसा बराबर होय—ऐसा पैरका तलुवा जो होय तो मनुष्योंको राजाकी संपत्तिका देनेवाला होय ॥ २७ ॥

पादचरस्यापि चरणतलं यस्य कोमलं तत्र ।
पूर्णस्फुटोर्द्धरेखा स विश्वम्भराधीशः ॥ २८ ॥

अस्यार्थः--पांवसे चलनेवालेकाभी पादतल जिसका कोमल होय तहाँ पूरी प्रकट ऊर्द्धरेखा होय तो ऐसा पांवोंके तलुवेवाला संपूर्ण पृथ्वीका मालिक होय ॥ २८ ॥

वंशच्छिदे कुपादं द्विजहत्यायै विपक्वमृत्सदृशम् ।
पीतमगम्यारतये कृष्णं स्यान्मद्यपानाय ॥ २९ ॥

अन्वयार्थौ--(कुपादतलं वंशच्छिदे भवति) जो पांवका तलुवा बुरा मैला होय तौ कुलका नाश करनेवाला होय और (विपक्वमृत्सदृशं द्विजहत्यायै भवति) जो पकीहुई मट्टीके तुल्य होय तौ द्विजहत्याका करनेवाला होय और (अगम्यारतये पीतं भवति) जो पीला होय तौ--जिनसे रत नहीं चाहिये जैसे--बहिन--भानजी--पुत्री गुरुस्त्री आदि तिनसे रति करै और (मद्यपानाय कृष्णं स्यात) जो काला होय तौ मदिरा पीनेवाला होताहै ॥ २९ ॥

पाण्डुरमभक्ष्यभक्षणकृते तलं लघुदरिद्रतायै स्यात् ।
रेखाहीनं कठिनं रूक्षं दुःखाय विस्फुटितम् ॥ ३० ॥

अन्वयार्थौ-(यस्य पादतलं पांडुरं अभक्ष्यभक्षणकृते लघुदरिद्रतायै स्यात) जिसके पांवका तलुवा पीतामाटीके रंगके तुल्य होय सो जो खानेयोग्य वस्तु नहीं उसके खानेवाला होय और जो छोटा हलका होय तौ दरिद्री होताहै (रेखाहीनं कठिनं रूक्षं विस्फुटितं दुःखाय स्यात) और जो रेखाहीन और कडा होय और रूखा फटा खुरदरा होय तौ ऐसे पांवके तलुवेवाला दुःखी रहै ३०

तलमन्तः संक्षिप्तं स्त्रीकार्ये मृत्युमादिशति पुंसाम् ।
रोगाय विगतमांसं मार्गाय ज्ञेयमुत्कटकम् ॥ ३१ ॥

अन्वयार्थौ--(पुंसां पादतलम् अन्तः संक्षिप्तम्) जिसपुरुषका पांवका तलुवा बीचमें खाली होय तौ (स्त्रीकार्ये मृत्युम् आदिशति) स्त्रीके कार्यमें मृत्यु देताहै,

और (विगतमांसं पादतलं रोगाय भवति) जो पांवका तलुवा मांसरहित सूखा दुबला होय तौ रोगी रहै और (उत्कटकं मार्गाय ज्ञेयम्) जोखुरदरा होय तौ मार्गका चलनेवाला होय ॥ ३१ ॥

रेखाः शंखच्छत्रांकुशकुलिशशशिध्वजादिसंस्थानाः ।
अच्छिन्ना गम्भीराः स्फुटास्तले भागधेयवताम् ॥ ३२ ॥

अन्वयः--(भागधेयवतां तले रेखाः शंख--छत्र--अंकुश--कुलिश--चंद्र-ध्वजादिसंस्थानाः अच्छिन्ना गंभीराः स्फुटाः भवंति) अस्यार्थः--भाग्यवानोंकी हथेलीमें जो शंख छत्र अंकुश वज्र चंद्रमा ध्वजादिके आकार पूरी गहरी प्रगटरेखा होयँ तौ वह पुरुष भाग्यशाली होताहै ॥ ३२ ॥

ताः शंखाद्याकृतयः परिपूर्णा मध्यभेदतो येषाम् ।
श्रीभोगभाजनं ते जायन्ते पश्चिमे वयसि ॥ ३३ ॥

अन्वयः--(येषां ताः शंखाद्याकृतयः रेखाः मध्यभेदतः सहिताः परिपूर्णाः ते पश्चिमे वयसि श्रीभोगभाजनं जायन्ते) अस्यार्थः--जिनके शंख आदिस्वरूपकी रेखा मध्यभेदके सहित परिपूर्ण होयँ तौ वे पुरुष पिछली अवस्थामें लक्ष्मी और अनेक प्रकारके भोगनेवाले पात्र होते हैं ॥ ३३ ॥

ता गोधासैरिभजंबुकमूषककाककंकसमाः ।
रेखाः स्युर्यस्य तले तस्य न दूरेऽतिदारिद्यम् ॥ ३४ ॥

अन्वयः—(गोधा—सैरिभ—जंबुक—मूषक—काक—कंकसमाः रेखाः यस्य पाणितले स्युः तस्य दारिद्यं अतिदूरे न) अस्यार्थः—गौ भैंसा गीदड मूषक कौवा कंकपक्षी इनके स्वरूपकी तुल्य जिसके हाथकी हथेलीमें रेखा होय तौ उससे दारिद्र बहुत दूर नहीं रहै अर्थात् दारिद्र उसे घेरे रहै ॥ ३४ ॥

वृत्तो भुजगफणाकृतिरुत्तुङ्गो मांसलः शुभोंगुष्ठः ।
सशिरोह्रस्वश्चिपिटोचक्रोऽविपुलः स पुनरशुभः ॥ ३५ ॥

अन्वयार्थौ—(यस्य अंगुष्ठः वृत्तः भुजगफणाकृतिः उत्तुंगः मांसलः भवति स शुभः) जिस पुरुषका अंगूठा गोल सर्पका फणके आकार और

ऊंचा मांसका भराहुवा होय तो ऐसा शुभ है और (सशिरः ह्रस्वः चिपिटः अचक्रः अविपुलः एतादृशः स पुनः अशुभो भवति) जिसके अँगूठेमें नसें दीखें और छोटा चपटा चक्ररहित चौडा होय तौ ऐसा फिर अशुभ होताहै ३५

श्लक्ष्णा वृत्ता मृदवो घना दलानीव पद्मस्य ।
ऋजवोऽङ्गुलयः स्निग्धाः सैभसंख्यान्वितं दधाति ॥ ३६ ॥

अन्वयः–(यस्य अगुलयः श्लक्ष्णा वृत्ता मृदवः घनाः पद्मस्य दलानि इव ऋजवः स्निग्धाः भवंति स इभसंख्यान्वितं दधति)। अस्यार्थः–जिस पुरुषकी अंगुली सचिक्कण और गोल कोमल घनी कमलके दलके आकार सूधी खरदरी नहीं चिकनी होयँ तौ वह पुरुष हाथियोंकी गिनतियोंको धारण करै है ॥ ३६ ॥

विरलाश्चिपिटिकाः शुष्का लघवो वक्राः खटाः पदांगुलयः ।
यस्य भवन्ति शिरालाः सकिङ्करत्वं करोत्येव ॥ ३७ ॥

अन्वयः–(यस्य पदांगुलयः विरलाः चिपिटिकाः शुष्काः लघवः वक्राः खटाः शिरालाः एतादृशाः भवंति स किंकरत्वं करोत्येव।अस्यार्थः–जिसपुरुषके पैरकी अंगुली छिराछिरी चपटी सूखी छोटी टेढी हलके आकार और नसें निकली हुई ऐसी होयँ तौ वह [illegible] करै नौकर बनेरहैं ॥ ३७ ॥

स्त्रीसम्भोगमाप्नोत्यंगुष्ठदीर्घया प्रदेशिन्या ।
प्रथममशुभं च गृहिणीमरणं वा ह्रस्वया च कलिम् ॥ ३८ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्य पुरुषस्य अंगुष्ठदीर्घया प्रदेशिन्या स्त्रीसंभोगान् आप्नोति) जिसपुरुषके पैरकी अंगुली अंगूठेके पासकी तर्जनी अँगूठेसे बडी होय तौ वह स्त्रीके संभोगको प्राप्त होय और (ह्रस्वया प्रथमम् अशुभं पुनः गृहणीमरणं कलिमाप्नोति) जो अँगूठेसे छोटी होय तौ पहले अशुभ है फिर स्त्रीके मरण और कलहको अर्थात् दुःखको प्राप्त होताहै ॥ ३८ ॥

आयतया मध्यमया कार्यविनाशो ह्रस्वया दुःखम् ।
घनया समया पुत्रोत्पत्तिः स्तोकं नृणामायुः॥ ३९ ॥

अन्वयार्थौ-(पुरुषस्य आयतया मध्यमया कार्यविनाशो भवति) जिस पुरुषके पैरके बीचकी मध्यमा अंगुली बडी लंबी होय तौ कार्यको नाश करै । और (तथा ह्रस्वया दुःखं भवति) जो छोटी होय तौ दुःख होय और (घनया समया पुत्रोत्पत्तिः नृणां स्तोकम् आयुः भवति) बहुत पासपास बराबर होय तौ पुत्रोंकी उत्पत्ति थोडी होय और उस पुरुषकी आयु भी थोडी होय ॥ ३९ ॥

यस्यानासिका दीर्घा स प्रज्ञाभाजनो मनुजः ।
ह्रस्वा स्याद्यस्य पुनः सकलत्रवियोजितो नित्यम् ॥ ४० ॥
दीर्घा कनिष्ठिकापि स्याद्यस्य स्वर्णभाजनं स नरः ।
यदि सापि पुनर्लघ्वी परदारपरायणः सततम् ॥ ४१ ॥

अन्वयार्थै-यस्य पुरुषस्य कनिष्ठिका दीर्घा स्यात् स नरः स्वर्णभाजनं भवति) जिसपुरुषकी कनिष्ठिका अंगुली बडी होय तौ वह पुरुष स्वर्णका पात्र अर्थात धनवान् होय और (यदि सा अपि पुनः लघ्वी स पुरुषः परदारपरायणः सततं भवति) जो वही अंगुली बहुत छोटी होय तौ वह पुरुष पराई स्त्रीमें सदा रत होय अर्थात् परदारगामी होताहै ॥ ४० ॥ ४१ ॥

यस्य प्रदेशिनी कनिष्ठिकाभवेद्ध्रुवं स्थूला ।
शिशुभावे तस्य पुनर्जननी पंचत्वमुपयाति ॥ ४२ ॥

अन्वयार्थौ-(यस्य पुरुषस्य प्रदेशिनी ध्रुवं कनिष्ठिका स्थूला भवेत्) जिस पुरुषकी प्रदेशिनी अंगुलीसे कनिष्ठिका निश्चय छोटी और मोटी होय (तस्य पुनः जननी शिशुभावे पंचत्वम् उपयाति) तिसकी माता लडकपनमें ही मृत्युको प्राप्त होय ॥ ४२ ॥

विमलाः प्रवालरुचयः स्निग्धाः कूर्मोन्नता नखाः श्लक्ष्णाः ।
मुकुराकाराः सूक्ष्माः सौख्यं यच्छंति मनुजानाम् ॥ ४३ ॥

अन्वयः-मलाः प्रवालरुचयः स्निग्धाः कूर्मोन्नताः श्लक्ष्णाः मुकुराकाराः सूक्ष्मा एतादृशाः पादनखाः मनुजानां सौख्यं यच्छन्ति) अस्यार्थः-निर्मल मूंगेके रंग चिकने कछुवेकीसी पीठके समान ऊंचे चमकदार दर्पणके आकार पतले जिसपुरुषके पांवके नख ऐसे होयँ तौ वह सुखके देनेवाले हैं॥ ४३ ॥

स्थूलैर्नखैर्विदीर्णैः शूर्पाकारैश्च दीर्घनखैः ।
असितैः सितैर्दरिद्रा भवन्ति तेजोरुचारहितैः ॥ ४४ ॥

अन्वयः-(स्थूलैः विदीर्णैः शूर्पाकारैः दीर्घनखैः असितैः सितैः तेजोरुचा रहितैः एतादृशैः पादनखैः मनुजाः दरिद्रा भवन्ति) अस्यार्थः-मोटे फटे हुए सूपके आकार लंबे काले श्वेत प्रकाश और कांतिरहित जिसमनुष्यके पांवके नख ऐसे होंय तौ वे दारिद्री होते हैं ॥ ४४ ॥

मांसोपचितं स्निग्धं गूढशिरं कोमलं चरणपृष्ठम् ।
रोमस्वेदै रहितं पृथुलं कमठोन्नतं शस्तम् ॥ ४५ ॥

अन्वयः-(मांसोपचितं स्निग्धं गूढशिरं कोमलं रोमस्वेदैरहितं पृथुलं कमठोन्नतम् एतादृशं नरस्य पादपृष्ठं शस्तम्)।अस्यार्थः-मांससे भरा चिकना जिसमें नसें नहीं चमकें नरम रोम और पसीने रहित चौड़ा कछुवेकी पीठके समान ऊंची जिस मनुष्यकी पांवकी पीठ अर्थात् थापी होय तौ बहुत श्रेष्ठ अर्थात् कल्याणके देनेवाली होती है ॥ ४५ ॥

अंतर्गूढा गुल्फाः सरोजमुकुलोपमाः श्रियं ददते ।
सूकरवत्ते विषमाः शिथिलाः प्रथयन्ति वधबंधौ ॥ ४६ ॥

अन्वयार्थौ-(अन्तर्गूढाः सरोजमुकुलोपमा एतादृशा गुल्फाः श्रियं ददते) जिस पुरुषके टकने मांसमें दबे हुए और कमलकी कलीके तुल्य होयँ तौ लक्ष्मीके देनेवाले हैं और (शिथिलाः सूकरवत् विषमाः ते गुल्फाः वधबन्धौ

प्रथयन्ति) जो गुलगुले और सूकरके ऐसो रोमदार खुरदरे होयँ तौ वे टकने मारना बांधना अर्थात् कैदके देनेवाले होते हैं ॥ ४६ ॥

महिषसमानैर्गुल्फैश्चिपिटैर्वा दुःखसंयुताः पुरुषाः ।
तैरपि रोमोपगतैर्नित्यमपत्येन परिहीनाः ॥ ४७ ॥

अन्वयार्थौ-(महिषसमानैः वा चिपिटैः गुल्फैः पुरुषाः दुःखसंयुताः भवन्ति) जिस पुरुषके टकने भैंसेकेसे आकार और चपटे होंय तो दुःखके देनेवाले होते हैं और (रोमोपगतैः तैः अपि गुल्फैः पुरुषाः नित्यम् अपत्येन परिहीनाः भवन्ति) जो वेही टकने रोमसहित होंय तौ सदा संतानरहित करैं अर्थात् संतान नहीं होय ॥ ४७ ॥

कन्दः पादांबुरुहस्येव भवेद्वर्तुला पार्ष्णिः ।
त नरमनुरागादिव नियतं रमयति रमा रामा ॥ ४८ ॥

अन्वयार्थौ-(यस्य पार्ष्णिः पदांबुरुहस्य कन्दः इव वर्तुला भवेत्) जिस पुरुषकी चरणकमलकी बगली कन्दके तुल्य नरम गोलाकार होय तौ (रमा रामा तं नरम् अनुरागात् इव नियतं रमयति)लक्ष्मी और स्त्री उसपुरुषको प्रीतिसे निश्चय रमावै अर्थात् भोगे ॥ ४८ ॥

समपार्ष्णिः सुखसहितो दीर्घायुः स्यान्नरो महापार्ष्णिः ॥
स्वल्पायुरल्पपार्ष्णिः प्रोन्नतया विनिर्जयो भवति ॥ ४९ ॥

अन्वयार्थौ-(समपार्ष्णिः पुरुषः सुखसहितः च पुनः महापार्ष्णिः दीर्घायुः स्यात्) जिस पुरुषकी बराबर बगली होय वह सुखसहित रहै और जो बडी बगली होय तौ बडी आयुवाला होय और (अल्पपार्ष्णिः स्वल्पायुः) जो छोटी बगली होय तौ थोडी आयु होय और (प्रोन्नतया नरः विनिर्जयो भवति) जो ऊँची बगली होय तौ विजयी होय अर्थात् जीतवाला होय४९॥

पिशितान्तर्गतनालिका कुरङ्गजंघोपमा श्रियं पुंसाम् ॥
प्रविरलमृदुतररोमा दत्ते क्रमवर्तुला जंघा ॥ ५० ॥

अन्वयार्थौ-(यस्य जंघा पिशितान्तर्गतनालिका भवति तथा कुरंगजंघोपमा, सा पुंसां श्रियं ददाति)जिसकी पिंडलीकी नली मांसमें घुसी होय और

हिरणकी जांघकी तुल्य होय तो उस पुरुषको लक्ष्मीकी देनेवाली होती है और (यस्य जंघा प्रविरलमृदुतररोमा क्रमवर्तुला पुंसां श्रियं दत्ते) जिसकी पिंडलीमें दूर दूर थोड़े नरम रोम होंय और क्रमसे गोलाई लिये होय तौ उसपुरुषको लक्ष्मीकी दाता अर्थात् लक्ष्मी देती है ॥ ५० ॥

लक्ष्मीं दिशति केसरिमीनव्याघ्रोपमा नृणाम् ।
जंघा ऋक्षसदृशा वधबंधौ निःस्वतां प्रायः ॥ ५१ ॥

अन्वयार्थौ–(केसरिमीनव्याघ्रोपमा जंघा नृणां लक्ष्मीं दिशति) सिंह मछली बघेरा इनकी तुल्य जो पिंडली होय तौ मनुष्योंको लक्ष्मी देती है और (ऋक्षसदृशा जंघा प्रायः वधबंधौ निःस्वतां दिशति) जो रीछकी सदृश जंघा होय तौ बहुधा बंधन मरण और दरिद्रता आदि मनुष्योंको देनवाली है ॥ ५१ ॥

स्थूला दीर्घा मार्गं वितरत्युद्बद्धपिंडिका जंघा ।
श्वशृगालकरभरासभवायसजंघोपमा त्वशुभा ॥ ५२ ॥

अन्वयार्थौ–(स्थूला दीर्घा उद्बद्धपिंडिका जंघा मार्गं वितरति) मोटी और लंबी और बँधा हुआ है पिंड जिसका ऐसी पिंडली मार्ग चलानेवाली होती-है और(श्वशृगालकरभरासभवायसोपमा जंघा तु अशुभा भवति)कुत्ता–गीदड़२ ऊंट-गधा–कौवा इनकी तुल्य जो पिंडली होये तौ अशुभ होतीहै ॥ ५२ ॥

ललितानि स्निग्धानि भ्रमरश्यामानि देहरोमाणि ।
जायन्ते भूमिभुजां मृदूनि विलसन्ति सूक्ष्माणि ॥ ५३ ॥

अन्वयः–(भूमिभुजां देहे ललितानि स्निग्धानि देहरोमाणि जायन्ते तथा मृदूनि सूक्ष्माणि रोमाणि विलसंति) अस्यार्थः–राजाओंके शरीरमें सुंदर चिकने भौंरके समान काले और नरम--पतले ऐसे रोम शोभायमान होते हैं ॥ ५३ ॥

सुभगो रोमयुतः स्याद्विद्वान्घनरोमसंयुतो मनुजः ।
उद्धृत्तरोमभिः पुनरंगैश्च बहुभिश्च वित्तसंकलितः ॥ ५४ ॥

अन्वयार्थौ–(रोमयुतः मनुजः सुभगः स्यात)रोमसंयुक्त पुरुष सुंदर होता है और (घनरोमसंयुतः मनुजः विद्वान् भवति) बहुत रोमसंयुक्त पुरुष पंडित होता है और (पुनः उद्धृत्तरोमभिः बहुभिः अंगैः मनुजः वित्तसंकलितः भवति) गुच्छेके गुच्छे अंगमें ऐसे बहुत रोम होंय तो वह पुरुष धनवान् होता है ॥ ५४ ॥

रोमैकैकं नृपतेर्द्वंद्वं श्रोत्रियधनाढ्यबुद्धिमताम् ।
आदीन्येतानि पुनर्निःस्वानां मूर्धजेष्वेवम् ॥ ५५ ॥

अन्वयार्थौ–(नृपतेः रोमैकैकं भवति) राजाके एकएक रोम होता है और (श्रोत्रियधनाढ्यबुद्धिमतां द्वंद्वं भवति) वेदपाठी और धनवान्के और विद्वानोंके रोम दो दो तक होते हैं फिर (पुनः एवम् आदीनि एतानि निः-स्वानां मूर्द्धजेषु एवं ज्ञेयम्) इनको आदिलेकर दारिद्रियोंके रोमोंमें अधिकता ऐसेही जाननी चाहिये ॥ ५५ ॥

रोमरहितः परिव्राट् स्यादधमः स्थूलरूक्षखररोमा ।
पापः पिङ्गलरोमा निःस्वः स्फुटिताग्ररोमापि ॥ ५६ ॥

अन्वयार्थौ–(रोमरहितः परिव्राट् स्यात) रोमरहित पुरुष संन्यासी वैरागी होय और (स्थूलरूक्षखररोमा अधमः स्यात) मोटे रूखे खुरदरे रोमवाला नीच होता है और (पिङ्गलरोमा पापः स्यात) भूरे रोमवाला पापी होता है और (स्फुटिताग्ररोमा अपि निःस्वः स्यात) फूटा फटा है अग्र जिसका ऐसे रोमवाला दरिद्री होता है ॥ ५६ ॥

कुञ्जरजानुर्मनुजो भोगयुतः पीनजानुरवनीशः ।
संश्लिष्टसंधिजानुर्वर्षशतायुर्भवेत्प्रायः ॥ ५७ ॥

अन्वयार्थौ–(कुञ्जरजानुः मनुजः भोगयुतो भवति) हाथीकीसी जानु जिसकी ऐसा पुरुष भोग करनेवाला होय और(पीनजानुः अवनीशो भवति)

मोटी जानुवाला राजा होय और (संश्लिष्टसंधिजानुः प्रायः वर्षशतायुर्भवति) छिपी और मिली है संधि जिसकी ऐसी जानुवाला बहुधा सौ वर्षकी आयुवाला होय ॥ ५७ ॥

निम्नैः स्त्रीपरवशगः शशिवृत्तैर्गूढमांसलै राज्यम् ।
दीर्घैर्महद्भिरायुः सुभगत्वं जानुभिः स्वल्पैः ॥ ५८ ॥

अन्वयार्थौ—(निम्नैः स्त्रीपरवशगो भवति) गहिरी है जानु जिसकी ऐसा पुरुष स्त्रीके वशमें होय और (शशिवृत्तैः गूढमांसलै राज्यं भवति) चन्द्रमाके तुल्य गोल और बहुत मोटे जानुवाला राज्यका कर्ता होय और (दीर्घैः महद्भिः जानुभिः आयुर्भवति) लंबी जानुवाला बडी आयुवाला होता है और (स्वल्पैः जानुभिः सुभगत्वं भवति) छोटी जानुवाला सुंदर स्वरूपवान् होता है ॥ ५८॥

दिशति विदेशे मरणं मनुजानां जानु मांसपरिहीनम् ।
कुम्भनिभं दुर्गततां तालफलाभं तु बहुदुःखम् ॥ ५९ ॥

अन्वयार्थौ—(मांसपरिहीनं जानु मनुजानां विदेशे मरणं दिशति) मांसरहित जानु अर्थात सूखी पतली मनुष्योंको परदेशमें मृत्यु देती है और (कुंभनिभं जानु दुर्गततां दिशति) घडेके तुल्य जानु दरिद्रताको देती है और (तालफलाभं जानु बहुदुःखं दिशति) तालफलके तुल्य जानु बहुत दुःख देनेवाली होतीहै ॥ ५९ ॥

जानुद्वितयं हीनं यस्य सदा सेवते स बधबंधौ ।
इदमेव यस्य विषमं स पुनः प्राप्नोति दारिद्र्यम् ॥ ६० ॥

अन्वयार्थौ—(यस्य जानुद्वितयं हीनं भवति, स बधबंधौ सदा सेवते) जिसकी दोनों जानु बलहीन होय सो पुरुष बध और बन्धनको सदा सेवन करै और (यस्य इदम् एव जानु विषमं भवति स पुनः दारिद्र्यं प्राप्नोति) जिसकी यही जानु ऊंची नीची होय सो फिर दरिद्रताको प्राप्त होय ॥ ६० ॥

ऊरू यस्य समांसौ रंभास्तंभभ्रमं वितन्वाते ।
कोमलतनुरोमचितौ स जायते भूपतिः प्रायः ॥ ६१ ॥

अन्वयः-(यस्य ऊरू समांसौ रंभास्तंभभ्रमं वितन्वाते कोमलतनुरोमाचितौ एतादृशे ऊरू भवतः स प्रायः भूपतिः जायते) अस्यार्थः-जिसकी जांघ बहुत मांससे भरी केलेके थंभके भ्रमको करती होयँ और नरम और छोटे रोमों करिके युक्त होयँ तो ऐसी जांघवाला पुरुष बहुधा राजा होता है॥६१॥

स्निग्धावूरू मृदुलौ क्रमेण पीनौ प्रयच्छतो लक्ष्मीम् ।
विकटौ स्त्रीवल्लभतां गुणवतां संहतौ कृतौ भवतः ॥ ६२ ॥

अन्वयार्थौ-(यस्य ऊरू स्निग्धौ मृदुलौ क्रमेण पीनौ भवतः तौ लक्ष्मी प्रयच्छतः) जिसकी दोनों जांघें सचिक्कण और नरम क्रमसे मोटी होंय तो लक्ष्मीके देनेवाली होती हैं और (यस्य ऊरू विकटौ भवतः स्त्रीवल्लभतां दिशतः) जिसकी वेही जांघें चौडी होयँ तो वह स्त्रीका प्यारा होय और (गुणवतां संहतौ कृतौ भवतः) गुणवान् पुरुषोंकी जांघें मिलीहुई रानोंसे होती हैं ॥ ६२ ॥

स्थूलाग्रौ मध्यनतौ स्यातां मार्गानुसंधिनौ पुंसाम् ।
कठिनौ चिपिटौ विपुलौ निर्मांसौ दुर्भगत्वाय ॥ ६३ ॥

अन्वयार्थौ-(यस्य ऊरू स्थूलाग्रौ मध्यनतौ पुंसां मार्गानुसंधिनौ स्याताम्) जिसकी जांघें आगेसे मोटा और बीचमें झुकीहुई होंय तो उस पुरुषको मार्ग चलानेवाला करती हैं और (यस्य ऊरू कठिनौ चिपिटौ विपुलौ निर्मांसौ दुर्भगत्वाय भवतः) जिसकी जांघें कडी और चिपटी चौड़ी मांसरहित होंय तो वह पुरुष कुरूप अर्थात् बुरी सूरतका होताहै ॥ ६३ ॥

यस्य कटिः स्याद्दीर्घा पीना पृथुला भवेत्स वित्ताढ्यः ।
सिंहकटिर्मनुजेन्द्रः शार्दूलकटिश्च भूनाथः ॥ ६४ ॥

अन्वयार्थौ-(यस्य पुरुषस्य कटिः दीर्घा पीना पृथुला स्यात् स वित्ताढ्यो भवति) जिस पुरुषकी कमर लंबी मोटी चौड़ी होय वह धनवान् होता है)

और (यः सिंहकटिः स मनुजेंद्रो भवति) जिसकी सिंहके समान कमर होय वह पुरुष राजा होताहै (च पुनः यः शार्दूलकटिः स भूनाथो भवति) और जिसकी बघेरेकी तुल्य कमर होय वह पृथ्वीका स्वामी होता है ॥६४॥

रोमशकटिर्द्दरिद्रो ह्रस्वकटिर्दुर्भगो भवति मनुजः ।
शुनमर्कटकरभकटिर्दुःखी संकटकटिः पापः ॥ ६५ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्य कटिः रोमशा स दरिद्रो भवति) जिसकी कमर रोमसहित होय वह पुरुष दरिद्री होय और (यस्य कटिः ह्रस्वा स मनुजः दुर्भगो भवति) जिसकी कमर छोटी होय सो पुरुष कुरूप अर्थात् बुरी सूरतका होय और (यः शुनमर्कटकरभकटिः स दुःखी स्यात्) जिसकी कमर कुत्ता–वानर--ऊँटकी तुल्य होय तौ दुःखी रहै और संकटकटिः पुरुषः पापः स्यात् । सुकडीकमरवाला पुरुष पापी होताहै ॥ ६५ ॥

मंडूकास्फिङ् नृपतिः सिंहस्फिङ् मंडलद्वयाधिपतिः ।
घनमांसस्फिग्धनवान्व्याघ्रास्फिङ्मं डलाधिपतिः ॥ ६६ ॥

अन्वयार्थौ--(मंडूकास्फिक् मनुजः नृपतिर्भवेत्) जिसका मेंडककासा कमरका पिंड होय वह पुरुष राजा होताहै और (यदि सिंहस्फिक् पुरुष मंडलद्वयाधिपतिर्भवेत) जो सिंहकासा कमरका पिंड होय तो दो छोटे देशोंका राजा होय और (घनमांसस्फिक् पुरुषः धनवान् भवति) बहुतमांसका भराहुवा कमरका पिंड होय वह पुरुष धनवान् होय और(व्याघ्रस्फिक् पुरुषः मंडलाधिपतिर्भवति) जो बघेरे कीसी कमरका पिंड होय तो देशका राजा होताहै६६॥

उष्ट्रप्लवंगमस्फिग्धनधान्यविवर्जितः पुमान्नियतम् ।
पीनस्फिङ् निःस्वो ह्यर्द्धस्फिग्व्याघ्रमृत्युः स्यात् ॥ ६७ ॥

अन्वयार्थौ–(उष्ट्रप्लवंगमास्फिक् पुरुषः नियतं धनधान्यविवर्जितो भवति) जो ऊंट बंदरकी तुल्य स्फिच् होय तो वह पुरुष निश्चय धन धान्य से हीन रहे और (पीनस्फिक् पुरुषः निःस्वो भवति) जो मांसकी भरी स्फिक्

होय तौ वह पुरुष दरिद्री होय और (ऊर्द्धस्फिक् पुरुषः व्याघ्रमृत्युः स्यात) जिसका ऊंचा कमरका पिंड होय उस पुरुषकी बघेरेसे मृत्यु जानना चाहिये ॥ ६७ ॥

यतमांसो गम्भीरः सुकुमारः संवृतः शोणः ।
पायुः शुभो नराणां पुनरशुभो भवति विपरीतः ॥ ६८ ॥

अन्वयार्थौ–(नराणां यः पायुः मांसैः गंभीरः सुकुमारः संवृतः शोणः शुभो भवति) मनुष्यों की जो गुदा मांससे भरी और नरम मिली हुई लाल होय तो शुभ है और (पुनः विपरीतः अशुभो भवति) जो वेही लक्षण गड़-बड़ और प्रकारसे होंय तौ अशुभ होतेहैं ॥ ६८ ॥

मुष्काः स्वयं प्रलम्बा जायन्ते सुपरिष्ठिता यस्य ।
स भवति भर्त्ता नियतं भूमेः सप्ताब्धिवलयायाः ॥ ६९ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्य पुरुषस्य मुष्काः स्वयं प्रलम्बाः सुपरिष्ठिता जायन्ते) जिस पुरुषके अंडकोश आपसेही लंबे और अच्छी बनावटके होंय तौ (स सप्ताब्धिवलयायाः भूमेः नियतं भर्त्ता भवेत) सो सात समुद्रकी भूमिका निश्चय पालन करनेवाला अर्थात् मालिक होय ॥ ६९ ॥

श्लक्ष्णैः समैर्नृपत्वं चिरमायुर्भवति लम्बितैर्वृषणैः ।
जलमरणमद्वितीयैर्मनुजानां कुलविनाशोपि ॥ ७० ॥

अन्वयार्थौ–(समैः श्लक्ष्णैः वृषणैः पुरुषः नृपत्वम् आप्नोति) जिसके अंडकोश बराबर सुन्दर होंय वह पुरुष राजा होय और (लंबितैः वृषणैः चिरमायुर्भवति) जो लम्बे वृषण होंय तौ बड़ी आयुवाला होय और (अद्वितीयैः वृषणैः मनुजानां जलमरणं कुलविनाशोपि स्यात्) जो एकही वृषण होय तो उस मनुष्यका जलसे मरण और कुलका नाश करनेवाला होय॥

स्त्रीलोलत्वं विषमैः प्राक्पुत्रोदक्षिणोन्नतैर्वृषणैः ।
वामोन्नतैश्च तैरपि दुःखेन समं भवति दुहिता ॥ ७१ ॥

अन्वयार्थौ–(विषमैः वृषणैः स्त्रीलोलत्वं भवति)जो ऊंचे नीचे वृषण होंय तौ स्त्रीमें चंचलता रहे और (दक्षिणोन्नतैर्वृषणैः प्राक् पुत्रो भवति) जो दाहिना

वृषण ऊंचा होय तौ पहिलेही पुत्र होय और (वैः अपि वामोन्नतैर्वृषणै दुःखेन समं दुहिता भवति) जो बाईं ओरका वृषण ऊंचा होय तौ दुःखके साथ अर्थात् कठिनतासे पुत्री होय ॥ ७१ ॥

निःस्वः शुष्कस्थूलै रम्यरमणीरतास्तुरंगसमैः ।
पुनरर्द्धार्द्धैर्वृषणैर्भवंति न चिरायुषः पुरुषाः ॥ ७२ ॥

अन्वयार्थौ-(शुष्कस्थूलैः वृषणैः निःस्वो भवति) जो सूखे और मोटे वृषण होंय तो दरिद्री होय और (तुरंगसमैः वृषणैः नराः रम्यरमणीरता भवन्ति) जो घोड़ेकेसे वृषण होंय तो मनुष्य सुंदर स्त्रीके भोगनेवाले होते हैं और (पुनः अर्द्धार्द्धैर्वृषणैः पुरुषाः चिरायुषः न भवंति) जो प्रमाणसे आधे वृषण होयँ ते वे पुरुष बडी आयुवाले नहीं होते हैं ॥ ७२ ॥

शिश्नमनिम्नसमुन्नतमदीर्घलघुसुसंयुतं मृदुलम् ।
उष्णं धनधान्यवतामश्लथमृदुवर्तुलं विशिरम् ॥ ७३ ॥

अन्वयः--(यस्य शिश्नम् अनिम्नसमुन्नतम अदीर्घलघुसुसंयुतं मृदुलम् उष्णम् अश्लथम् ऋजु वर्तुलं विशिरं धन्यधान्यवताम् एतादृशं भवति) अस्यार्थः-जिसकी इंद्री गहरी ऊंची बड़ी न छोटी कोमल और अच्छी गरम आशिथिल नहीं सूधी और गोल जिसमें नसें नहीं दीखती होयँ ऐसी धनधान्यवाले पुरुषोंकी इंद्री होती हैं ॥ ७३ ॥

स्थूलग्रन्थिरतिसुखी केशनिगूढो महीपतिः शिश्नम् ।
व्याघ्रहयसिंहतुल्यो भोगी स्यादीश्वरः प्रायः ॥ ७४ ॥

अन्वयार्थौ-(यस्य शिश्नः स्थूलग्रंथिः स अतिसुखी भवेत्) जिसकी इंद्रीकी मोटी गांठि अर्थात् बड़ी सुपारी होय सो अतिसुखी होय और (यस्य शिश्नः केशनिगूढः स महीपतिर्भवति) जिसकी इंद्री ऐसी छोटी बादामीसी होय जो बालोंमें छिपजाय सो राजा होता है और (यस्य शिश्नः व्याघ्रहयसिंहतुल्यो भवति स प्रायः भोगी च पुनः ईश्वरः स्यात्) जिसकी इंद्री बघेरा घोड़ा सिंह इनकी इंद्रीके तुल्य बड़ी होय सो निश्चय भोगी और समर्थ होय ॥ ७४ ॥

स्पष्टशिरानिचितत्वग्घीनं मेहनं कृशं विमलम् ।
लघुमृदुसुरभिपरिमलं पुंसां सौभाग्यवित्तकरम् ॥ ७५ ॥

अन्वयः–(यस्य पुरुषस्य एतादृशं मेहनं भवति–स्पष्टशिरं निचितत्वक्-हीनं कृशं विमलं लघुमृदु सुरभिपरिमलं सौभाग्यवित्तकरं भवति) अस्यार्थः-जिन पुरुषोंकी इन्द्री ऐसी होय कि नसें दीखती होंय दृढचर्म होय–निर्बल छटी दुबली–स्वच्छ–छोटी–नरम–अच्छी गंधवाली जो होय तो अच्छा भाग्य और धनके करनेवाली होती हैं ॥ ७५ ॥

लिङ्गे लघुनि धनाढ्यो निरपत्यो वा शिरायुतेऽल्पसुतः।
दक्षिणविनते पुत्रो वामनते कन्यकाजनकः ॥ ७६ ॥

अन्वयार्थौ–(लिङ्गे लघुनि सति धनाढ्यो भवति) जो इंद्री छोटी होय तौ धनवान् होय और (लिङ्गे शिरायुते सति निरपत्यः वा अल्पसुतः भवति) जिसकी इंद्रीमें नसें निकली होंय तौ संतान रहित वा थोडे पुत्रवाला होय और (लिङ्गे दक्षिणविनते सति स पुत्रो भवति) जिसकी इंद्री दाहिनी ओर झुकी होय वह पुत्रवाला होय और (लिङ्गे वामनते सति कन्यकाजनको भवति) जो इंद्री बाई ओरको झुकी होय तो पुत्रीका पिता होय अर्थात कन्याकी संतानवाला होय ॥ ७६ ॥

यः समचरणानिषण्णो गुल्फौ नतुशेफसा परिस्पृशति ।
स सुखी ज्ञेयो यदि पुनरवनितलं प्रायशो दुःखी ॥ ७७ ॥

अन्वयार्थौ–(यः पुरुषः समचरणानिषण्णः सन् शेफसा गुल्फौ नतु परिस्पृशति स सुखी ज्ञेयः) जो पुरुष बराबर पैरोंके बैठनेसे इंद्री करिके टकनोंको न छुए वह सुखी होय और (यदि पुनः अवनितलं परिस्पृशति स प्रायशः दुःखी भवति) जो इंद्री करिके धरतीको स्पर्श करे सो निश्चय दुःखी होता है ॥ ७७ ॥

स्थूलोऽधो विनतः स्यात्तीक्ष्णाग्रो दीर्घोन्नतः शिथिलः ।
समलो धनहीनानां शिश्नो भुग्नः सदोन्मिषितः ॥ ७८ ॥

अन्वयः--(धनहीनानां पुरुषाणां शिश्नः स्थूलः अधोविनतः तीक्ष्णाग्रः दीर्घः उन्नतः शिथिलः समलः भुग्नः सदा उन्मिषितः स्यात्) अस्यार्थः--धनहीन पुरुषोंकी इंद्री--मोटी--नीचेको झुकीहुई. सीधा है अग्रभाग जिसका--लंबी ऊंची-- ढीली मैलसहित--टेडी सदा सुकड़ीसी रहे सो निर्धन पुरुषोंकी इंद्री ऐसी होती है ॥ ७७ ॥

स्थूलशिरेण विशालच्छिद्रवता प्रजनेन दारिद्र्यम् ।
अतिकोमलेन लभते नरः प्रमेहादिना मरणम् ॥ ७९ ॥

अन्वयार्थौ-- (स्थूलशिरेण विशालप्रजनेन तथा छिद्रवता दारिद्र्यं भवति) मोटी हैं नसें जिसमें--मड़ी इंद्री करिके और जिसकी इंद्रीका बड़ा मुख होय--ऐसी इंद्रीबाला दरिद्री होय और (अतिकोमलेन प्रजनेन प्रमेहादिना नरः मरणं लभते) बहुतही नरम जिसकी इंद्री होय तो प्रमेहादि रोगसे उस पुरुषका मरण होय ॥ ७९ ॥

हरितांजनाभरेखो महामणिर्जायते समोत्तानः ।
मन्थानकपुष्पनिभो यस्य स भर्ता भुवो भवति ॥ ८० ॥

अन्वयार्थौ-- (यस्य पुरुषस्य शिश्नस्य महामणिः हरितांजना भरेखः समोत्तानः मन्थानकपुष्पनिभः जायते स भुवो भर्ता भवति) अस्यार्थः--जिस पुरुषकी इंद्रीकी सुपारीमें नीछे थोथेके रंगकीसी रेखाहो और बराबर ऊंची रूईके फूलके समान होय--सोपुरुष पृथ्वीका स्वामी अर्थात् राजा होय॥८०॥

मणिभिर्धनिनो रक्तैः स्मेरजपापुष्पसन्निभैर्भूपाः ।
श्लक्ष्णैः स्निग्धैः सुखिनो मध्योत्तानैश्च पशुमन्तः ॥ ८१ ॥

अन्वयार्थौ-- (नराः शिश्नस्य रक्तैर्मणिभिः धनिनो भवन्ति) जिस पुरुष की इंद्रीकी सुपारी लाल होय सो धनवाला होय और (स्मेरजपापुष्पसन्निभैः

भूषा भवन्ति) खिले हुए गुडहरके फलके समान रंग जिस इंद्रीकी सुपारी का होय सो राजा होय और(नराः श्लक्ष्णैः स्निग्धैः मणिभिः सुखिनो भवन्ति) जिस पुरुषकी चिकनी और अच्छी सुपारी होय तो सुखी होय और (मध्योन्नतैः पशुमन्तो भवन्ति) जिसकी बीचमें सुपारी ऊंची होय तो पशुवाला होय ॥ ८१ ॥

कलधौतरजतमुक्ताफलप्रवालोपमा महामणयः ।
येषां भवन्ति दीप्तास्ते सजलधिभूमिभर्तारः ॥ ८२ ॥

अन्वयार्थौ-(येषां महामणयः कलधौतरजतमुक्ताफलप्रवालोपमा दीप्ताः भवंति)जिनकी इंद्रीकी सुपारी सोने चांदी मोती मूँगेके रंग के समान चमकदार होय (ते सजलधिभूमिभर्त्तारो भवंति) वे पुरुष समुद्र सहित भूमिके स्वामी अर्थात् पालनकरनेवाले राजा होय ॥ ८२ ॥

दारिद्र्यजुषः परुषैः परुषाभैर्विपाण्डुरैर्मणिभिः ।
मध्योन्नतैर्बहुकन्या जायन्ते दुःखिनः स्फुटितैः ॥ ८३ ॥

अन्वयार्थौ-नराः परुषैः मणिभिः दारिद्र्यजुषो भवन्ति) जिन पुरुषोंकी इंद्रीकी सुपारी खरदरी कडी होय तो दरीद्री होय और (परुषाभैः विपांडुरैर्मणिभिः मध्योन्नतैर्बहुकन्या भवन्ति) खरदरी जो चीजं हैं वैसी आभा चमक तथा पीता माटीकीसी रंगके समान सुपारी बीचमें ऊंची होय तो बहुतसी पुत्री होयँ और (स्फुटितैर्दुःखिनः जायन्ते) फूटी फटीसी दारार होय तो दुःखी रहैं ॥ ८३ ॥

विद्रुमहेमोपमया महामणौ रेखया नरो धनवान् ।
दौर्भाग्यवात् शबलया धूसरया जायते निःस्वः ॥ ८४ ॥

अन्वयार्थौ-(नराः महामणौ विद्रुमहेमोपमया रेखया धनिनो भवन्ति) जिस पुरुषकी इंद्रीकी सुपारीमें मूँगे और सुवर्णकीसी चमकदार रेखा होय तो धनवान् होय और (शबलया धूसरया दौर्भाग्यवान् निःस्वो जायते)

अनेक रंग और धूलके रंगकीसी रेखा होय तौ अभागी और दरिद्री होय ॥ ८४ ॥

रेतसि पुष्पसुगन्धिनि राजा यज्वा नरः सुरागन्धे ।
मधुगन्धे बहुवित्तः सुखधनवान् मीनगन्धे स्यात् ॥ ८५ ॥

अन्वयार्थौ–(पुरुषस्य रेतसि पुष्पसुगन्धिनि सति राजा स्यात) जिस पुरुषके वीर्यमें फूलकीसी सुगंध होय तो राजा होय और (रेतसि सुरागंधे सति यज्वा भवेत) जिसके वीर्यमें मदिराकीसी गंध होय तो यज्ञ करनेवाला होय और (रेतसि मधुगंधे सति नरः बहुवित्तः स्यात्) जिसके वीर्यमें शहतकीसी गंध होय तौ वह पुरुष बहुत धनवाला होय और (रेतसि मीनगन्धे सति सुखधनवान् भवेत्) जिसके वीर्यमें मछलीकीसी गंध होय तो सुखी और धनवान् होय ॥ ८५ ॥

सुरभिद्रव्यसुगन्धे श्रियोऽन्यगन्धे तु दारिद्रयम् ।
लाक्षागन्धे पुत्र्यो नैःस्वे भोगीः पुनः पिशितगंधे ॥ ८६ ॥

अन्वयार्थौ–(सुरभिद्रव्यसुगंधे सति श्रियो भवंति) जिसके वीर्यमें सुगंधयुक्त वस्तु कीसी जो गंध होय तो लक्ष्मी और शोभा होय और (अन्यगन्धे सति दारिद्रयं भवति) जो और किसीप्रकार की गंध हो तो दरिद्री होय और (लाक्षागंधे सति पुत्र्यो भवन्ति) जो लाखकीसी गंध होय-तो पुत्री होय और (पुनः पिशितगंधे सति नैःस्वे भोगी स्यात्) जो मांसकीसी गंध होय तो दारिद्रय भोगनेवाला होय ॥ ८६ ॥

जम्बूवर्णेन सुखी दुग्धसवर्णेन रेतसा नृपतिः ।
धूम्रेण दुःखसहितः स्याद्दुःस्थः श्यामवर्णेन ॥ ८७ ॥

अन्वयार्थौ–(जम्बूवर्णेन रेतसा नरः सुखी भवति) जामुनकासा ऊदा रंग जो वीर्यका होय तौ वह पुरुष सुखी होय और (दुग्धसवर्णेन रेतसा नरः नृपतिर्भवति) जो दूधके रंगकासा वीर्य होय तो वह पुरुष राजा होय और (धूम्रवर्णेन रेतसा नरः दुःखसहितो भवति) जो धुयेंकासा रंग वीर्यका

होय तो वह पुरुष दुःख सहनेवाला होय और (श्यामवर्णेन रेतसा नरः दुःस्थः स्यात्) जो काला रंग वीर्यका होय तो वह पुरुष दुःखसे डोलनेवाला होय ॥ ८७ ॥

यस्य च्यवते रेतो लघुमैथुनगामिनो बहुस्निग्धम्।
दीर्घायुःसंपत्तिं पुत्रानपि विन्दते स पुमान् ॥ ८८ ॥

अन्वयार्थौ–(लघुमैथुनगामिनः यस्य बहुस्निग्धं रेतः च्यवते) थोडी देर मैथुन करनेवाले पुरुषका जो बहुत चिकना वीर्य गिरे तो (स पुमान् दीर्घायुः संपत्तिं पुत्रान् अपि विन्दते) सो पुरुष बडी आयु और संपत्ति और पुत्रोंको पावे ॥ ८८ ॥

न पतति शुक्रं स्तोकं चिरमैथुनसंगतस्यापि।
दारिद्र्यं सोल्पायुर्बहुकन्याजनकतां भजते ॥ ८९ ॥

अन्वयार्थौ–(चिरमैथुनसंगतस्यापि यस्य स्तोकं शुक्रं न पतति) बहुत देर मैथुन करनेवाले पुरुषका जो थोडाभी वीर्य नहीं गिरै तो (स दारिद्र्यं अल्पायुः बहुकन्याजनकतां भजते) सो पुरुष दारिद्र–थोडी आयु–और बहुत कन्याओंकी उत्पन्नताको प्राप्त होय ॥ ८९ ॥

द्वित्रिचतुर्धाराभिः प्रदक्षिणावर्तजातिमूत्रं स्यात्।
पिङ्गलवर्णं नृपतिः सुखिनो वलितैकधाराद्यम् ॥ ९० ॥

अन्वयार्थौ–(यस्य प्रदक्षिणावर्तजातिमूत्रं पिङ्गलवर्णं द्वित्रिचतुर्धाराभिः स्यात्) जिस पुरुषके मूत्रकी धार दहिनी ओरको झुकी हुई पीले रंग करिके दो तीन चार धारसे होय तो (स नृपतिः भवति तथा वलितैकधाराद्यं सुखिनो भवन्ति) सो राजा होय और जो मिलीहुई धाराओंसे होय तो सुखी होय ॥ ९० ॥

कृतशब्दमेकधारं नृपस्य मूत्रं द्विधारमाद्ये च।
निःशब्दं बहुधारं तदपि दरिद्रस्य विज्ञेयम् ॥ ९१ ॥

अन्वयार्थौ–(नृपस्य मूत्रम् एकधारं कृतशब्दं भवति) राजाका मूत्र एक धारसे शब्दसहित होता है और (दरिद्रस्य तत् अपि मूत्रम् आद्ये द्विधारं

तथा निःशब्दं बहुधारं विज्ञेयम्) दरिद्रीका मूत्र आदिमें दो धार शब्दरहित पीछे बहुत धारवाला जानिये ॥ ९१ ॥

स्निग्धं प्रवालतुल्यं यस्याङ्गे भवति शोणितं न चिरम् ।
स वहति स्वकीयभुजया मनुजो निखिलाम्बुधिमेखलां वसुधाम्॥९२॥

अन्वयार्थौ—(यस्य पुरुषस्याङ्गे शोणितं प्रवालतुल्यं न चिरं स्निग्धं भवति) जिस पुरुषके अंगमें रुधिर मूँगेके रंगके समान बहुत चिकना होय तो (स मनुजः स्वकीयभुजया निखिलाम्बुधिमेखलां वसुधां वहति) सो पुरुष शीघ्र अपनी भुजाओं करिके समुद्र सहित संपूर्ण पृथ्वीको भोगे॥९२॥

रुधिरं यस्य शरीरे रक्ताम्बुजवर्णसंमितं भवति ।
भुजवल्लिकङ्कणरणत्कारा तमनुसरति राज्यश्रीः ॥ ९३ ॥

अन्वयार्थौ—(यस्य शरीरे रुधिरं रक्ताम्बुजवर्णसंमितं भवति) जिसके शरीरमें रुधिर लाल कमलके रंगके तुल्य होय तो (भुजवल्लिकंकणरणत्कारा राज्यश्रीः तमनुसरति) भुजारूपी बेलिमें जो कंगन तिसका जो रणत्कार शब्द जिसके ऐसी जो राज्यलक्ष्मी स्त्री सो मिलती हैं ॥ ९३ ॥

किंचित् पीतं शोणं शोणितमिह भवति मध्यमे पुंसि ।
ईषत्कृष्णं रक्तं तत्तु जघन्ये परिज्ञेयम् ॥ ९४ ॥

अन्वयार्थौ—(इह मध्यमे पुंसि शोणितं किंचित् पीतं शोणं भवति) इस लोकमें मध्यमें पुरुषके शरीरमें रुधिर कुछ पीला कुछ लाल होता है और (जघन्ये पुंसि तत् रक्तम् ईषत् कृष्णं परिज्ञेयम्) अधम पुरुषका लाल और कुछ काला होता है ॥ ९४ ॥

शक्ता बस्तिः पुंसां विस्तीर्णा मांसलोन्नता स्निग्धा ।
शुक्ता विकटा कठिना दारिद्र्यं दिशति वा बहुदुःखम् ॥९५॥

अन्वयः—(पुंसां बस्तिः शक्ता विस्तीर्णा मांसलोन्नता स्निग्धा शुक्ता विकटा कठिना बहुदुःखं वा दारिद्र्यं दिशति) अस्यार्थः—जिन पुरुषोंका पेडू ठीक ठीक, चौडा, मांसका भरा, ऊंचा, चिकना, लम्बा, चौडा, कड़ा जो होय तो बहुत दुःख वा दरिद्रके देनेवाला होताहै ॥ ९५ ॥

श्वश्रृगालकरभसैरिभतुल्या बस्तिर्नता भवति येषाम्।
संकीर्णक्लिन्ना ते धनहीनाः स्युर्नराः प्रायः ॥ ९६ ॥

अन्वयः–(येषां नराणां बस्तिः) श्वश्रृगालकरभसैरिभतुल्या नता संकीर्णक्लिन्ना भवति ते नराः प्रायः धनहीनाः स्युः) अस्यार्थः–जिन पुरुषोंका पेडू कुत्ता –गीदड़–ऊंट–भैंसा इनके तुल्य झुका हुवा–सिकुडा–लिबलिबा होय तौ वे पुरुष बहुधा धनहीन होते हैं अर्थात् धन न होय ॥ ९६ ॥

पृथुरुच्चस्था नाभिर्गंभीरा चाण्डाकृतिः सौख्यम् ।
विदधाति धनं मेधां मनुजानां दक्षिणावर्त्ता ॥ ९७ ॥

अन्वयः–(येषां मनुजानां नाभिः पृथुः उच्चस्था अतिगम्भीरा च पुनः अण्डाकृतिः दक्षिणावर्ता सौख्यं मेधां धनं विदधाति) अस्यार्थः–जिन पुरुषोंकी टूंडी चौड़ी ऊंची बहुत गहरी अंडेकी सूरत और दाहिनी ओर झुकी हुई जो होय तो सुख–बुद्धि–धनको देनेवाली होती है ॥ ९७ ॥

शतपत्रकर्णिकाभा नाभिः स्याद्यस्य मनुजमात्रस्य ।
प्राप्नोति सपदि स पुमान् ससुवर्णां सार्णवामवनिम् ॥ ९८ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्य मनुजमात्रस्य नाभिः शतपत्रकर्णिकाभा स्यात्)जिस पुरुषमात्रकी टूंडी कमलके फूलकीसी आभा चक्राकारवाली होय तो (स पुमान् सपदि ससुवर्णां सार्णवाम् अवनिं प्राप्नोति) सो पुरुष शीघ्रही सोने सहित समुद्रसहित पृथ्वीको प्राप्त होय ॥ ९८ ॥

पुंसां नाभिर्दीर्घा यथाक्रमं पार्श्वयोस्तदूर्द्ध्वमधः ।
दीर्घायुरीश्वरत्वं गोस्वामित्वं सदा तनुते ॥ ९९ ॥

अन्वयार्थौ–(येषां पुंसां नाभिः दीर्घा यथाक्रमं पार्श्वयोः ऊर्द्ध्वम् अधः भवति) जिस पुरुषकी टूँडी बड़ी जैसे क्रमसे पसलियोंके बीचमें ऊंची नीची होय (सा नाभिः पुरीश्वरत्वं च पुनः गोस्वामित्वं सदा तनुते) सो पुरुषको नगरीका स्वामी और गउओंका अधिकारी सदा करै है ॥ ९९ ॥

विषमा वलिर्मध्यस्था नैःस्वं शूलं करोति नीचस्था ।
तुङ्गा स्वल्पा क्लेशं वामावर्ता नृणां शाठ्यम् ॥ १०० ॥

अन्वयार्थौ--(येषां पुंसां मध्यस्था विषमा वलिः नृणां नैःस्वं शूलं करोति) जिन पुरुषोंके बीचमें स्थित विषम सलवट १--३--५ आदि होय तो मनुष्योंको दरिद्र और शूलको करे और (नीचस्था वलिः तुङ्गा स्वल्पा क्लेशं करोति) जो सलवट कुछ बीचसे नीची ऊंची छोटी वा खंडित होय तो दुःखको करे और (वामावर्ता वलिः नृणां शाठ्यं करोति) जो बाईओरको झुकीहुई सलवट होय तो मनुष्योंको मूर्खता करे ॥ १०० ॥

क्षोणिपतिस्तनुकुक्षिः शूरो भो न्वितश्च समकुक्षिः ।
धनहीन उच्चकुक्षिर्मायावी स्याद्विषमकुक्षिः ॥ १०१ ॥

अन्वयार्थौ--(तनुकुक्षिः क्षोणिपतिर्भवति) छोटी कोखवाला राजा होय और (समकुक्षिः शूरः च पुनः भोगान्वितो भवति) बराबर कोखवाला बलवान और भोगी होय और (उच्चकुक्षिः धनहीनो भवति) ऊंचीकोख वाला धनहीन होय और बिषमकुक्षिः मायावी स्यात् कुछ ऊंची नीची कोखवाला कपटी छल करनेवाला होय ॥ १०१ ॥

कुक्षिर्यस्य गभीरा विनिपातं स लभते नरः प्रायः ।
उत्ताना यस्य पुनर्नारीवृत्तेन जीवते सोपि ॥ १०२ ॥

अन्वयार्थौ--(यस्य पुरुषस्य कुक्षिः गभीरा भवति) जिस पुरुषकी कोख गहरी होय (स नरः प्रायः विनिपातं लभते) सो पुरुष निश्चय गिरनेको प्राप्त होय कहींसे गिरपडे और (पुनः यस्य कुक्षिः उत्ताना भवति) जिसकी कोख ऊंची होय (सः अपि नारीवृत्तेन जीवति) सो पुरुष स्त्रीसे जीविका कर अर्थात् उसका स्त्रीसे जीवन होय ॥ १०२ ॥

पार्श्वे मांसोपचिते प्रदक्षिणावर्तरोमाणि मृदूनि ।
यस्य भवेतां वृत्ते नियतं जगतीपतिः स स्यात् ॥ १०३ ॥

अन्वयार्थौ--(यस्य पार्श्वे मांसोपचिते भवेतां च पुनः प्रदक्षिणावर्तरोमाणि मृदूनि भवंति) जिस के पसवाड़े मांससे भरे होंय

और उनमें दाहिनी ओरको नरम नरम रोंगटे होंय और (यस्य पार्श्वे वृत्ते भवेतां स जगतीपतिः नियतं स्यात्) जिसके पसवाडे गोल होंय सो पृथ्वीपति निश्चय होय ॥ १०३ ॥

निम्नैर्भोज्यवियुक्ताः पार्श्वैः पिशितोज्झितैर्धनविहीनाः ।
स्थूलास्थिभिः पुमांसः कुटिलैः पुरुषाः परप्रेष्याः ॥ १०४ ॥

अन्वयार्थौ–(निम्नैः पार्श्वैः पुरुषाः भोज्यवियुक्ताः भवन्ति) नीचे पसवाड़ेवाले पुरुष अनेक प्रकारके भोजनसे रहित होते हैं और (पिशितोज्झितैः पार्श्वैः धनहीनाः भवंति) जिसके मांसरहित पसवाड़े होंय वे धनहीन होतेहैं और (स्थूलास्थिभिः कुटिलैः पार्श्वैः पुमांसः) परप्रेष्याः भवंति जिसके मोटी मोटी हड्डियोंवाले टेढ़े पसवाड़े होंय तो वे पुरुष दूसरेके दूत बने जैसे हलकारे होतेहैं ॥ १०४ ॥

जठरं यस्य समं स्यादभितः स पुमान्महार्थाढ्यः ।
सिंहनिभं यस्य पुनः प्राप्नोति स चक्रवर्तित्वम् ॥ १०५ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्य जठरं अभितः समं स्यात्–स पुमान् महार्थाढ्यो भवति) जिसका पेट सब प्रकारसे बराबर होय सो पुरुष बहुत धनवाला होय और (पुनः यस्य जठरं सिंहनिभं स्यात्–स नरः चक्रवर्तित्वं प्राप्नोति) जिसका पेट सिंहकी तुल्य होय–सो पुरुष चक्रवर्ती राजा होय ॥ १०५ ॥

भेकोदरो नरपतिर्वृषभमयः परदारभोगी च ।
वृत्तोदरः सुखी स्यान्मीनव्याघ्रोदरः सुभगः ॥ १०६ ॥

अन्वयार्थौ–(भेकोदरः नृपतिर्भवति) मेंढकके तुल्य पेटवाला राजा होय और (वृषभमयः परदारभोगी स्यात) बैलके तुल्य पेटवाला परस्त्रीभोगी होय और (वृत्तोदरः सुखी स्यात) गोल पेटवाला सुखी होय और (मीनव्याघ्रोदरः सुभगः स्यात्) मछली और बघेरेके तुल्य पेटवाले सुन्दर भाग्यवान् होय ॥ १०६ ॥

पिठरजठरो दरिद्रो घटजठरो दुर्भगः सदा दुःखी ।
भुजगजठरो भुजिष्यो बहुभोजी जायते मनुजः ॥ १०७ ॥

अन्वयार्थौः—(पिठरजठरः नरोदरिद्रो भवति) हँडिया कैसा पेटवाला पुरुष दरिद्री होय और (घटजठरो दुर्भगः तथा सदा दुःखी स्यात्) घडेकेसे पेटवाला पुरुष कुरूपी और सदा दुःखी रहे और (भुजगजठरः मनुजः भुजिष्यः च पुन बहुभोजी जायते) सर्प केसे पेटवाला पुरुष टहलुवा और बहुत भोजी अर्थात् बहुत खानेवाला होय ॥ १०७ ॥

श्ववृकोदरो दरिद्रः शृगालतुल्योदरो दरोपेतः ।
पापः कृशोदरः स्यान्मृगभुक्सदृशोदरश्चौरः ॥ १०८ ॥

अन्वयार्थौः—(श्ववृकोदरः पुरुषः दरिद्रः स्यात्) कुत्ता और भेडियाकासा पेटवाला पुरुष दरिद्री होय और (शृगालतुल्योदरः दरोपेतः स्यात्) गीदडके तुल्य पेटवाला डरपोकना होय और (कृशोदरः पाप स्यात्) दुबले पतले पेटवाला पापी होय और (मृगभुक्सदृशोदरः)(चौरःस्यात) चीतेकेसे पेटवाला चोर होता है ॥ १०८ ॥

जायेत यस्य मध्यं मुशलोदरसोदरं तनुत्वेन ॥
स पुमान्नृपतिर्ज्ञेयो विपर्ययो भवति विपरीते ॥ १०९ ॥

अन्वयार्थौः—(यस्य उदरं मध्यं तनुत्वेन मुशलोदरसोदरं जायेत—स पुमान् नृपतिर्ज्ञेयः) जिसका पेट बीचमें पतला मूशलके आकार होय सो पुरुष राजा जानिये (विपरीते सति—विपर्ययो भवति) और किसी प्रकारसे उल्टा होय तो दरिद्री और विपरीतको करै ॥ १०९ ॥

प्रहरणमरणं रमणीभोगानाचार्यपदमनेकसुतताम् ॥
एकद्वित्रिचतुर्भिः क्रमेण वलिभिः पुमाँल्लभते ॥ ११० ॥

अन्वयः—(पुमान् क्रमेण एकद्वित्रिचतुर्भिः वलिभिः प्रहरणमरणं रमणी भोगान् तथा आचार्यपदम् अनेकसुततां लभते) अस्यार्थः—पुरुष क्रमसे १—२—३—४ वलि अर्थात् सलवटों कारिके शस्त्रसे मरना और स्त्रीसे भोग और आचार्यपद और अनेक पुत्रोंको प्राप्त होता है ॥ ११० ॥

अवलिर्नृपतिः सुखभाक्परदाररतो हि नूनं स्यात् ॥
सरलवलिः पापरतो नित्यमगम्याभिगमनमनाः ॥ १११ ॥

अन्वयार्थौ–(अवलिः पुरुषः नृपतिः तथा सुखभाक्) बलिरहित पुरुष राजा होय और सुख भोगनेवाला और (परदाररतः नूनं स्यात्) पराई स्त्रीमें निश्चय करिके सुखपाने और (सरलवलिः पापारतः) जिसकी सीधी सलवटें होंय वह पापकर्म करे और (नित्यम् अगम्याभिगमनमनाः भवति) जिनसे भोगकरना उचित नहीं उनसे नित्य भोग करनेमें जिसका मन होय १११

अभ्युन्नतेन मांसोपचितेन सुसंहतेन भूमिभुजः ॥
हृदयेन महार्थजुषः पृथुना दीर्घायुषः पुरुषाः ॥ ११२ ॥

अन्वयार्थौ–(अभ्युन्नतेन मांसोपचितेन सुसंहतेन हृदयेन भूमिभुजो भवंति) ऊंचाईलिये–मांससे भराहुवा–अच्छी बनावटकी ऐसी छाती जो होय तो राजा होय और (पृथुना हृदयेन पुरुषाः महार्थजुषःच पुनः दीर्घायुषो भवंति) जो चौडी छाती वाला पुरुष होय तो बड़े धनवाले और बड़ी आयु वाले होंय ॥ ११२ ॥

स्थूलशिरापरिकलितं खररोमसमन्वितं पुंसाम् ॥
हृदयं पुनः सकंपं निस्वत्वं शश्वदाददते ॥ ११३ ॥

अन्वयार्थौ–स्थूलशिरापरिकलितं खररोमसमन्वितं पुनः सकंपं हृदयं पुंसां शश्वत् निःस्वत्वं आददते)अस्यार्थः–मोटी नसोंसे मिलीहुई–खरदरे बालोंकरि युक्त कंपससहित जो छाती होय तो पुरुषोंको सदा दारिद्रिताको-देनेवाली होती है ॥ ११३ ॥

पृथुलं भवत्युरःस्थलमचलशिलाकठिनमुन्नतं नृपतेः ॥
मृगनाभीपत्रलतासमानमुरोरोमराजिचितम् ॥ ११४ ॥

अन्वयार्थौ–(नृपतेः उरस्थलं पृथुलम् अचलशिलाकठिनम् उन्नतं भवति) राजाकी छाती चौड़ी पर्वतकी शिलाके तुल्य कड़ी ऊंची होतीहै (च पुनः उरः मृगनाभीपत्रलतासमानं रोमराजिचितं भवति)फिर वही छाति मृगनाभीपत्रलता केतुल्य बालोंकी लकीरें करिके व्याप्त होतीहै ॥ ११४ ॥

उरसा घनेन धनवान्पीनेन भटस्तथोर्द्धरोम्णा स्यात् ।
निःस्वस्तनुना विषमेणाकालमृतिरकिंचनश्च नरः ॥ ११५ ॥

अन्वयार्थौ—(घनेन उरसा धनवान् तथा पीनेन ऊर्द्धरोम्णा उरसा भटः स्यात्) बहुत कड़ी छातीवाला धनवान् और मांसकी भरी हुई ऊपरसे रोमयुक्त ऐसी छातीवाला योद्धा अर्थात् शूरवीर होताहै और (तनुना उरसा निःस्वः स्यात्) छोटी छातीवाला दरिद्र होय और (विषमेण उरसा अकालमृतिः) स्यात्) ऊंची नीची छातीवालोंकी अकालमृत्यु होतीहै और (च पुनः नरः अकिंचनो भवति) वह मनुष्य धनरहित अर्थात् दरिद्र होय ॥ ११५ ॥

वृत्ताः स्तनाः प्रशस्ताः सुस्निग्धाःकोमलाः समापुंसाम् ।
विषमाः परुषा विकटाःप्रायो दुःखाय जायन्ते ॥ ११ ॥

अन्वयार्थौ—(वृत्ताः सुस्निग्धाः कोमलाः समाः पुंसां स्तनाः प्रशस्ताः सन्ति) गोल—बहुत चिकने— नरम—और बराबरवाले पुरुषोंके स्तन अच्छे होते हैं और (विषमाः परुषाः विकटाः प्रायः दुःखाय जायंते) ऊंचे नीचे कठोर भयानक बहुधा दुःख देनेवाले होते हैं ॥ ११६ ॥

मांसोपचितैर्भूपाः सुभगाः स्युश्चूचुकैरपि द्वंद्वैः ॥
पीनैः सुखिनो विषमायतैः सदा निःस्वताभाजः ॥ ११७ ॥

अन्वयार्थौः—(मांसोपचितैः अपि चूचुकैः द्वंद्वैः सुभगाः भूपाः स्युः) मांससे भरी हुई दोनों कुचोंकी नोंकवाले श्रेष्ठ राजा होते हैं और (पीनैः सुखिनो भवंति) मोटेपनसे सुखी होते हैं और (तद्विषमायतैः सदा निःस्वताभाजः स्युः) जो वेही कुच ऊंचे नीचे लंबे होंय तो निर्धन अर्थात् सदा दरिद्री होते हैं ॥ ११७ ॥

पीनेन धनाधिपतिर्जत्रुयुगेनोन्नतेन भोगी स्यात् ।
विषमोन्नतेन दुःखी नतास्थिबंधेन धनहीनः ॥ ११८ ॥

अन्वयार्थौ—(पीनेन जत्रुयुगेन धनाधिपतिर्भवति) मोटी दोनों संधि होंय तो धनवान् होय और (उन्नतेन भोगी स्यात्) जो ऊंची होय तो भोग-

नेवाला होय और (विषमोन्नतेन दुःखी स्यात्) जो ऊँची और नीची होय तो दुःखी होय और (नतास्थिबंधेन धनहीनः स्यात्) जो झुकेहुये हड्डियोंके बंधन होंय तो निर्धन अर्थात् दरिद्री होय ॥ ११८ ॥

स्कन्धावनुक्रमतो मूले पीनौ समुन्नतौ किंचित्।
वृषककुदसमौ ह्रस्वौ लक्ष्मीं दृढसंहतिं वहतः ॥ ११९ ॥

अन्वयः–(अनुक्रमतः मूले पीनौ किंचित् समुन्नतौ वृषककुदसमौ ह्रस्वौ स्कंधौ लक्ष्मीं दृढसंहतिं वहतः) अस्यार्थः–जो क्रमसे जडमें मोटे ऊंचे बैलकी टाटिके तुल्य छोटे कंधे होंय तो लक्ष्मीके अचल समूहको देते- हैं अर्थात बहुत लक्ष्मीके देनेवाले होतेहैं ॥ ११९ ॥

डुडवद्दीर्घौ स्कंधौ निर्मांसौ भारवाहकौ पुंसाम्।
कुटिलौ कृशावतितनू खेदकरौ रोमशौ बहुशः ॥ १२० ॥

अन्वयार्थौ–(पुंसां डवद्दीर्घौ निर्मांसौ स्कंधौ भरवाहकौ भवतः) जो बैलकेसे बडे मांसरहित जिन पुरुषोंके कंधे होंय वे बोझके ढोनेवाले होंय और (कुटिलौ अतिकृशौ बहुशः रोमशौ खेदकरौ भवतः) जो टेढे बहुत पतले, छोटे, बहुतबालोंसे युक्त होंय तो खेद अर्थात् दुःखके करनेवाले होतेहैं ॥ १२० ॥

भुग्नौ मांसविहीनावंसौ नतरोमशौ कृशौ यस्य।
निर्लक्षणेन लक्ष्म्या नामापि नाकर्णितं तेन ॥ १२१ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्य अंसौ भुग्नौ मांसविहीनौ नतौ रोमशौ कृशौ भवतः) जिसके कंधे टेढे झुकेहुये विनामांसके रोमवाले दुबले पतले होंय तो (निर्लक्षणेन तेन लक्ष्म्या नाम अपि न आकर्णितं) वे अभागे पुरुष लक्ष्मीका नाभी न सुनें कि लक्ष्मी कैसी होती है ॥ १२१ ॥

अत्युच्छ्रितौ च अंसौ किंचिद्बाह्वोः समुन्नतिं दधतः।
सुश्लिष्टसंधिबन्धौ वपुषोर्धनिशूरयोः स्याताम् ॥ १२२ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्य सुश्लिष्टसंधिबंधौ अत्युच्छ्रितौ अंसौ बाह्वोः किंचित् समुन्नतिं दधतः) जिसके अच्छे मिले हुए जोड़बंध कंधे बाहुसे कुछएक

ऊँचे होंय तो (धनिशूरयोः वपुषोः एतादृशौ स्कंधौ स्याताम्) धनी और शूरवीरोंके शरीरके ऐसे कंधे होतेहैं ॥ १२२ ॥

मृदुतनुरोम कक्षे प्रस्वेदमलोज्झिते सुरभिगन्धी ।
पीनोन्नते धनवतामतोन्यथा वित्तहीनानाम् ॥ १२३ ॥

अन्वयार्थौ–(मृदुतनुरोमे प्रस्वेदमलोज्झिते सुरभिगंधी पीनोन्नते एतादृशौ कक्षे धनवतां स्याताम्) कोमल पतले रोंगटे, पसीने और मल करिके रहित–सुंदर गंधवाली और मोटी ऊँची कांखें धनवानोंकी होतीहैं और (वित्तहीनानाम् अतः अन्यथा स्याताम्) इससे अन्यथा निर्धनोंकी होतीहैं १२३॥

बाहू वामाविवालितौ वृत्तावाजानुलंबितौ पीनौ ।
पाणी फणछत्रांकौ करिकरतुल्यौ समौ नृपतेः ॥ १२४ ॥

अन्वयः–(वामविवलितौ वृत्तौ आजानुलंबितौ पीनौ बाहू तथा फणछत्रांकौ करिकरतुल्यौ समौ नृपतेः पाणी स्याताम्) अस्यार्थः–बांईओरको फिरीहुई गोल घोंटूतक लंबी लटकती हुई मोटी बाहें और फण छत्रके आकार और हाथीकी सूंडके समान ऐसे हाथ राजाके होतेहैं ॥ १२४ ॥

गोपुच्छाकृतिपीनं हीनं खररोमबहुलरोमाभिर्दीर्घम् ।
निर्मग्नशिरासन्धि प्रशस्यते भुजयुगं पुंसाम् ॥ १२५ ॥

अन्वयः–(गोपुच्छाकृतिपीनं हीनं खररोमबहुलरोमभिर्दीर्घ–निर्मग्नशिरासंधि पुंसां भुजयुगं प्रशस्यते) अस्यार्थः–गऊकी पूंछके आकार मोटी हीन–खरदरे रोम और बहुतसे रोमोंकरिके युक्त और बड़ी जिनकी नसोंकी संधि डूबीहुई ऐसे पुरुषोंकी दोनो भुजा प्रशंसनीय हैं ॥ १२५ ॥

दुष्टः प्रोद्बुद्धभुजो बहुरोमा बहुभुजिष्यः स्यात् ।
विषमभुजश्चौर्यरतिः समपीनभुजो नरो दुःस्थः ॥ १२६ ॥

अन्वयार्थौ–(प्रोद्बुद्धभुजः दुष्टः स्यात्) खूब ठगीली फूली हुई भुजावाला दुःखदाई होय और (बहुरोमाः बहुभुजिष्यः स्यात्) बहुत रोमोंकी भुजावाला होय तो उसके बहुत नौकर चाकर होंय और (विषमभुजः

चौर्यरतः स्यात्) ऊंची नीची भुजावाला चोरीमें तत्पर रहे और (समपीन भुजः नरो दुःस्थः स्यात्) बराबर मोटी भुजावाला पुरुष एक जगह न ठहरे फिरता रहे ॥ १२६ ॥

पाणी नृपतेः श्लक्ष्णौ निःस्वेदौ मांसलौ तथाच्छिद्रौ ॥
अरुणावकर्मकठिनावुष्णौ दीर्घाङ्गुली स्निग्धौ ॥ १२७ ॥

अन्वयः-श्लक्ष्णौ निःस्वेदौ मांसलौ तथा अच्छिद्रौ अरुणौ अकर्मकठिनौ उष्णौ दीर्घाङ्गुली स्निग्धौ नृपतेः पाणी स्यानाम्)अस्यार्थः-अच्छे चमकदार पसीने रहित मांससे भरेहुये और छिद्र रहित लालवर्णवाले विना काम करे कड़े रहैं गरम बड़ी बड़ी अंगुली चिकने राजाके ऐसे हाथ होतेहैं १२७॥

विस्तीर्णौ ताम्रनखौ स्यातां कपिवत्करौ धनाढ्यस्य ॥
शार्दूलवद्विरूक्षौ विकृतौ निःस्वस्य निर्मांसौ ॥ १२८ ॥

अन्वयार्थौ-(विस्तीर्णौ ताम्रनखौ कपिवत्करौ धनाढ्यस्य स्याताम्) लम्बे चौड़े लाल नखवाले-बन्दरकेसे हाथ जिसके ऐसे हाथ धनवालेके होतेहैं और (शार्दूलवत् विरूक्षौ विकृतौ निर्मांसौ निःस्वस्य स्याताम्) वघेरेकेसे बुरे सूखेसे विना मांसके होंय तो ऐसे हाथ दरिद्रीके होतेहैं ॥१२८॥

रेखाभिः पूर्णाभिस्तिसृभिः करमूलमंकितं यस्य ॥
धनकांचनरत्नयुतं श्रीः पतिमिव भजति लुब्धेव ॥ १२९ ॥

अन्वयार्थौ-(यस्य करमूलं पूर्णाभिः रेखाभिः अंकितं स्यात्) जिसका पहुंचा पूरी रेखा करिके युक्त होय तो (लुब्धा इव श्री धनकांचनरत्नयुतं पतिमिव भजति) तिसको लोभी हो करिके लक्ष्मी धन कांचन रत्नयुक्त पतिकी नाईं भजै है ॥ १२९ ॥

करमूलैर्निगूढैः सुदृढं सुश्लिष्टसंधिभिर्भूपाः ॥
निःस्वाः श्लथैः सशब्दैः पाणिच्छेदान्वितैर्हीनाः ॥ १३० ॥

अन्वयार्थौ-(निगूढैः सुदृढं सुश्लिष्टसंधिभिः करमूलैर्भूपाः भवन्ति) छिपेहुए बहुत कडे मोटे अच्छेप्रकार मिलीहुई संधिवाले पहुँचे वा पंजेके

राजा होताहै और (श्लथैः निःस्वाः भवन्ति) शिथिलतासे दरिद्री होते हैं और (सशब्दैः पाणिच्छेदान्वितैः हीनाः भवन्ति) ढीले और शब्दसे युक्त होंय तो हीन होतेहैं ॥ १३० ॥

अवहस्तं करपृष्ठं विस्तीर्णं पीनमुन्नतं स्निग्धम् ॥
विनिगूढशिरं परितः क्षोणिपतेः फणिफणाकारम् ॥ १३१ ॥

अन्वयः—(अवहस्तं विस्तीर्णं पीनम् उन्नतं स्निग्धं परितः निगूढशिरं फणिफणाकारं करपृष्ठं क्षोणिपतेः भवति) अस्यार्थः—अच्छा चौडा मोटा ऊंचा चिकना जिसके छोर चारों ओरसे मांस में डूबे हुये और सांपके फणके आकार हाथकी पीठ ऐसी राजाओंकी होतीहैं ॥ १३१ ॥

मणिबन्धसमं निम्नं निर्मांसं रोमसंचितं सशिरम् ॥
करपृष्ठं निःस्वानां रूक्षं परुष विवर्णं स्यात् ॥ १३२ ॥

अन्वयः—(मणिबंधसमं निम्नं निर्मांसं रोमसंचितं सशिरं रूक्षं परुषं विवर्णं करपृष्ठं निःस्वानां स्यात्) अस्यार्थः—पहुंचेकी बराबर नीची विना मांसके रोमोंसे युक्त नसों समेत रूखी कडी बुरे रंगकी हाथकी पीठ ऐसी दारिद्रियोंकी होतीहैं ॥ १३२ ॥

संवृत्तनिम्नेन धनी पाणितलेनोन्नतेन दानरुचिः ॥
निम्नेन जनकवित्तत्यक्तो विषमेण धनहीनः ॥ १३३ ॥

अन्वयार्थौ—(संवृत्तनिम्नेन पाणितलेन धनी भवति) गोल निचाई लिये हथेलीसे धनी होताहै और (उन्नतेन दानरुचिर्भवति) ऊंची हथेलीसे दानमें रुचि करनेवाला होताहै और (निम्नेन जनकवित्तत्यक्तो भवति) नीची हथेलीसे पिताके धन करिके छोड़ा हुवा होताहै और (विषमेण धनहीनो भवति) ऊंची नीची हथेलीसे धनहीन होताहै ॥ १३३ ॥

अरुणेनाढ्यः पीतेनागम्यस्त्रीरतिः करतलेन ॥
सितासितेन दरिद्रो नीलेनापेयपायी स्यात् ॥ १३४ ॥

अन्वयार्थौ–(अरुणेन करतलेन आढ्यः स्यात्) लाल हथेलीसे धनवान् होताहै और (पीतेन अगम्यस्त्रीरतिः स्यात्) पीली हथेलीसे जिनसे भोग उचित नहीं उनसे भोगकी इच्छा रहे और (सितासितेन दरिद्रः स्यात्) सफेद और काली हथेलीसे दरिद्री होताहै और (नीलेन अपेयपायी स्यात्) नीली हथेलीसे पीनेयोग्य नहीं उसका पीनेवाला अर्थात् मदिराका पीनेवाला होता है ॥ १३४ ॥

बहुरेखापरिकलितं पाणितलं भवति यस्य मनुजस्य ॥
यदि वा रेखाहीनं सोल्पायुर्दुःखितो निःस्वः ॥ १३५ ॥

अन्वयः–(यस्य मनुजस्य पाणितलं बहुरेखापरिकलितं भवति यदि वा रेखाहीनं स अल्पायुः च पुनः दुःखितो निःस्वो भवति) अस्यार्थः–जिस मनुष्यकी हथेली बहुत रेखाओंसे युक्त होय अथवा रेखा न होय सो थोडी आयु और दुःखी–दरिद्री होता है ॥ १३५ ॥

अधुना मीनाद्याकृतिरेखानां लक्षणं स्फुटं वक्ष्ये ॥
वामकरे नारीणां दक्षिणकरे नराणां तु ॥ १३६ ॥

अन्वयः–(अधुना नराणां दक्षिणकरे तथा नारीणां वामकरे मीनाद्याकृतिरेखाणां लक्षणं स्फुटं वक्ष्ये) अस्यार्थः–अब मनुष्योंके दाहिने हाथ और स्त्रियोंके बांये हाथमें जो मछलीके आकार रेखा-हैं उनके लक्षण प्रकट करताहूं ॥ १३६ ॥

जीवितमरणं लाभालाभं सुखदुःखमिह जगत्यखिलम् ॥
कररेखाभिः प्रायः प्राप्नोति नरोऽथवा नारी ॥ १३७ ॥

अन्वयः–(नरः अथवा नारी इह जगति अखिलं जीवितमरणं लाभालाभं सुखदुःखं प्रायः कररेखाभिः प्राप्नोति) अस्यार्थः–मनुष्य वा स्त्री इस जगत्में जीना मरना लाभ हानि सुख दुःख संपूर्ण बहुधा करिके हाथकी रेखाहीसे पाता है ॥ १३७ ॥

अन्तर्मुखेन मीनद्वयेन पूर्णेन पाणितलमध्यम् ॥
यस्याङ्कितं भवेदिह स धनी स चाप्रदो मनुजः ॥ १३८ ॥

अन्वयः—(यस्य मनुजस्य पाणितलमध्यम् अन्तर्मुखेन पूर्णेन मीनद्वयेन अंकितं भवेत्—स इह धनी स अप्रदो भवति) अस्यार्थः—जिस मनुष्यकी हथेलीके बीच भीतरको है मुखजिनका ऐसी पूर्ण दो मछली कारिके युक्त रेखा होंय वह पुरुष धनवान् तो होय परंतु देनेवाला न होय ॥ १३८ ॥

अच्छिन्ना गंभीरा पूर्णा रक्ताब्जदलनिभा मृदुला ॥
अन्तर्वृत्ता स्निग्धा कररेखा शस्यते पुंसाम् ॥ १३९ ॥

अन्वयः—पुंसां करतले अच्छिन्ना गंभीरा पूर्णा रक्ताब्जदलनिभा मृदुला अन्तर्वृत्ता स्निग्धा रेखा शस्यते) अस्यार्थः—पुरुषके हाथमें टूटी गहरी न होय—और लाल कमलकी पत्तीके बराबर नरम भीतरसे गोल चिकनी ऐसी रेखा होंय तो वे श्रेष्ठ हैं ॥ १३९॥

मधुपिङ्गाभिः सुखिनः शोणाभिस्त्यागिनो गभीराः स्युः ॥
सूक्ष्माभिर्धीमन्तः समाप्तमूलाभिरथ सुभगाः ॥ १४० ॥

अन्वयार्थौ—(मधुपिंगाभिः रेखाभिः सुखिनो भवन्ति) सरबती रंगकीसी आभा जिस रेखाकी होय तो ऐसी रेखासे सुखी होय और (शोणाभिः रेखाभिः त्यागिनः च पुनः गंभीराः स्युः) लाल रंगकी रेखाओंसे दानी और गंभीर होय और (सूक्ष्माभिः रेखाभिः धीमन्तो भवंति) पतलीरेखाओंसे बुद्धिमान् होय और (अथ समाप्तमूलाभिः रेखाभिः सुभगाः स्युः) जड़से लगाय पूरी रेखा होंय तो ऐसी रेखाओंसे सुंदर और रूपवान् होय ॥ १४० ॥

पल्लविता विच्छिन्ना विषमाः पुरुषाः समास्फुटितरूक्षाः ॥
विक्षिप्ताश्च विवर्णा हारिताः कृष्णाः पुनरशुभाः ॥ १४१ ॥

अन्वयः—(पल्लविताः विच्छिन्नाः विषमाः पुरुषाः समास्फुटितरूक्षाः विक्षिप्ताः च पुनः विवर्णाः हारिताः कृष्णाः पुनः अशुभाः भवन्ति) अस्यार्थः—फैली

हुई—टूटी—ऊंची नीची—खरदरी—बराबर—फटी हुई—रूखी—बिखरी हुई और बुरे रंगकी—हरी—काली ऐसी रेखाओंके लक्षण अशुभ होतेहैं ॥ १४१ ॥

पल्लवितायां क्लेशश्छिन्नायां जीवितस्य सन्देहः ॥
विषमायां धननाशः परुषायां कदशनं तस्याम् ॥ १४२ ॥

अन्वयार्थौ—(पल्लवितायां तस्यां क्लेशो भवति) पत्तेयुक्त शाखाके तुल्य फैली रेखावालेको दुःख होय और (छिन्नायां तस्यां जीवितस्य संदेहो भवति) फटीहुई रेखावालेको जीनेका सन्देह होय और (विषमायां तस्यां धननाशो भवति) ऊंची नीची रेखासे धनका नाश होय और (परुषायां तस्यां कदशनं भवति) खरदरी रेखासे बुरा भोजन होताहै ॥ १४२ ॥

आपाणिकरमूलभागान्निःसृत्यांगुष्ठतर्जनीमध्ये ॥
आद्या भवन्ति तिस्रो गोत्रद्रव्यायुषां रेखाः ॥ १४३ ॥

अन्वयः—(आपाणिकरमूलभागात निःसृत्य अंगुष्ठतर्जनीमध्ये आद्यास्तिस्रः रेखाः गोत्रद्रव्यायुषां भवन्ति) अस्यार्थः—हाथके मूलभागसे निकलकर अँगूठा और तर्जनीके बीचमें पहलेही तीन रेखा क्रमसे जो होंय तो ऐसी रेखा गोत्र द्रव्य आयुकी होतीहैं ॥ १४३ ॥

प्रविच्छिन्नाभिच्छिन्नाभिः स्वल्पानि भवन्ति कुलधनायूंषि ॥
रेखाभिर्दीर्घाभिर्विपरीताभिर्भवति विपरीतम् ॥ १४४ ॥

अन्वयार्थौ—(प्रविच्छिन्नाभिच्छिन्नाभिः रेखाभिः स्वल्पानि कुलधनायूंषि भवन्ति) फटी टूटी रेखाओंमें थोडी संतान और थोडा ही धन और थोड़ी आयु होतीहै और (दीर्घाभिः विपरीताभिः रेखाभिः पिवरीतं भवति बड़ी पूरी रेखा होंय फटी टूटी विपरीत न होंय तो बहुत संतान बहुत धन और बहुत आयुवाला होताहै ॥ १४४ ॥

मणिबन्धनान्निर्गच्छति रेखा यस्य प्रदेशिनीमूलम् ॥
बहुबन्धुजनाकीर्णं तस्य पुनर्जायतेऽभिजनः ॥ १४५ ॥

अन्वयः—(यस्य रेखा मणिबंधात् प्रदेशिनीमूलं निर्गच्छति पुनः तस्य बहुबन्धुजनाकीर्णम् अभिजनः जायते)अस्यार्थः—जिसके पहुँचेसे रेखा प्रदे-

शिनी अर्थात् अँगूठेके पासकी तर्जनी अंगुलीकी जड़तक जाय तो तिस पुरुषके बहुत भाई और बहुत मनुष्यका कुल होय ॥ १४५ ॥

लघ्व्या पुनर्नराणां लघुरिह दीर्घोऽथ दीर्घया वंशः ॥
परिभिन्नो विज्ञेयः प्रतिभिन्नया च्छिन्नया च्छिन्नः ॥ १४६ ॥

अन्वयार्थौ–(पुनः नराणां लघ्व्या रेखया वंशः लघुः) फिर मनुष्योंकी छोटी रेखासे वंश छोटा होय और (दीर्घया रेखया वंशः दीर्घः) बड़ी रेखासे वंश बड़ा होय और (प्रतिभिन्नया परिभिन्नः छिन्नया छिन्नः विज्ञेयः) टूटी फूटी रेखासे वंश बिखरा हुवा होय,और कटी हुई रेखासे वंश भी कटाहुआ विशेषकारि जानिये ॥ १४६ ॥

रेखा कनिष्ठिकाया ज्येष्ठामुल्लंघ्य यस्य याति परम् ॥
अच्छिन्ना परिपूर्णा स नरो वत्सरशतायुः स्यात् ॥ १४७ ॥

अन्वयः–(यस्य कनिष्ठिकाया रेखा ज्येष्ठाम् उल्लंघ्य परं याति स नरः अच्छिन्ना परिपूर्णा वत्सरशतायुः स्यात्) अस्यार्थः–जिस मनुष्यकी क-कनिष्ठिका अंगुलीकी रेखा ज्येष्ठा अर्थात् बीचकी अंगुलीको उलाँघि जाय तो उस मनुष्यकी बराबर पूरी सौवर्षकी आयु होय ॥ १४७ ॥

यावन्मात्राश्छेदाज्जीवितरेखा स्थिरा भवन्ति नृणाम् ।
अपमृत्यवोऽपि तावन्मात्रा नियतं परिज्ञेयाः ॥१४८॥

अन्वयार्थौ–(नृणां जीवितरेखा छेदात् यावन्मात्रष स्थिराः भवन्ति मनुष्योंके जीनेकी रेखा टूटी हुई जितनी स्थि होय ते (तावन्मात्रा अप मृत्यवः अपि नियतं परिज्ञेयाः) उतनीही अल्पमृत्यु निश्चय करि जानने योग्य हैं ॥ १४८ ॥

पुंसामायुर्भागे प्रत्येकं पंचविंशतिः शरदाम् ॥
कल्प्याः कनिष्ठिकांगुलिमूलादिह तर्जनीपरतः ॥ १४९ ॥

अन्वयः–पुंसाम् आयुर्भागे प्रत्येकं शरदां पंचविंशतिः कनिष्ठिकांगुलीमूलात् इह तर्जनीपरतः कल्प्याः) अस्यार्थः–मनुष्योंकी आयुके

भागमें हरएक अंगुलीके नीचेतक पचीस वर्ष और कनिष्ठिकाके मूलसे तर्जनी-तक कल्पना करना चाहिये ॥ १४९ ॥

रेखा मणिबन्धाद्यदि यात्यंगुष्ठप्रदेशिनीमध्यम् ॥
ऋद्धियुतं ख्यापयति विज्ञामविचक्षणं पुरुषम् ॥ १५० ॥

अन्वयार्थौ—(यदि रेखा मणिबन्धात् अगुष्ठप्रदेशिनीमध्यं याति) जो रेखा पहुँचेसे अँगूठा और तर्जनीके बीचमें जाय तो (तदा ऋद्धियुतं विज्ञान-विचक्षणं पुरुषं ख्यापयति) वह ऋद्धिसिद्धि युक्त विशेष ज्ञानमें चतुर पुरुष-को जनाती है ॥ १५० ॥

चेदंगुष्ठं गच्छति सैवं ततो वितनुते महीशत्वम् ॥
यदि सैव तर्जनीं वा साम्राज्यं मंत्रिपदमथवा ॥ १५१ ॥

अन्वयार्थौ—(चेत् सा एव रेखा अंगुष्ठं गच्छति तर्हि महीशत्वं वितनुते) सो वही रेखा जो अँगूठेतक जाय तो पृथ्वीका राजा होय और (यदि सा एव रेखा तर्जनीं वा गच्छति तर्हि साम्राज्यम् अथवा मंत्रिपदं ददाति) जो वही रेखा तर्जनीतक जाय तो राजाओंका राजा अथवा मंत्रीके पदको देती है१५१

निष्क्रान्ता मणिबन्धात्प्राप्ता यदि मध्यमांगुलीरेखा ॥
नृपतिं सेनाधिपतिं सा कुरुते वा तमाचार्यम् ॥१५२॥

अन्वयार्थौ—(यदि मणिबन्धात निष्क्रान्ता रेखा मध्यमांगुलीं प्राप्ता) जो मणिबन्धसे निकलकर रेखा बीचकी अंगुलीतक जाय (तर्हि नृपतिं सेना-पतिं कुरुते वा तम् एव पुरुषम् आचार्य्यं कुरुते)तौ उसे राजा तथा राजाका सेनापति अर्थात् फौजका मालिक करे अथवा उसी पुरुषको आचार्य अर्थात गुरु करे ॥ १५२ ॥

न च्छिन्ना न स्फुटिता दीर्घतरा विगतपल्लवा पूर्णा ॥
ऊर्ध्वा रेखा कुरुते सहस्रजनपोषमेकोऽपि ॥ १५३ ॥

अन्वयः—यस्य ऊर्ध्वरेखा न छिन्ना न स्फुटिता तथा दीर्घतरा विगतपल्लवा पूर्णा भवति एकः अपि स सहस्रजनपोषं कुरुते) अस्यार्थः—एकही जो ऊर्ध्व

रेखा टूटी फूटी न होय और लंबी बडी और शाखा न लागी होय पूरी होय तौ वह हजार मनुष्योंका पालन करनेवाला होय ॥ १५३ ॥

सा ब्राह्मणस्य रेखा वेदकरी क्षत्रियस्य राज्यकरी ॥
वैश्यस्य महार्थकरी सौख्यकरी भवति शूद्रस्य ॥ १५४॥

अन्वयः–(सा एव ऊर्ध्वा रेखा ब्राह्मणस्य वेदकरी--क्षत्रियस्य राज्यकरी वैश्यस्य महार्थकरी–शूद्रस्य सौख्यकरी भवति) अस्यार्थः–सो वही ऊर्ध्वरेखा जो ब्राह्मणके होय तो वेदपाठी, और क्षत्रियके होय तो राज्यकी करनेवाली, और वैश्यके होय तो बहुत धनकी करनेवाली, और शूद्रके होय तो सुखकी करनेवाली होती है ॥ १५४ ॥

करमूलान्निर्याता यदि रेखानामिकांगुलीमेति ॥
विदधाति सार्थवाहं सार्थाढ्यं नृपतिमान्यम्॥ १५५ ॥

अन्वयः–(यदि ऊर्ध्वा रेखा करमूलान्निर्याता तथा अनामिकांगुलिं तदा एति सार्थवाहं सार्थाढ्यं नृपतिमान्यं विदधाति) अस्यार्थः–जो वही ऊर्ध्वरेखा हाथकी जडसे निकलकर अनामिका अंगुलीतक जाय तो सौदागर साहूकार करे अथवा धनी राजाओं करिके पूजने योग्य होय ॥ १५५ ॥

निष्क्रम्य पाणितलात्प्राप्नोति कनिष्ठिकांगुलीं रेखा ॥
धनकनकाढ्यं श्रेष्ठिनमिह कुरुते सा यशोनिष्ठम् ॥१५६॥

अन्वयः–(या रेखा पाणितलान्निष्क्रम्य कनिष्ठिकांगुलीं प्राप्नोति स इह धनकनकाढ्यं श्रेष्ठिनं यशोनिष्ठं कुरुते) अस्यार्थः–जो रेखा हथेलीसे निकलकर कनिष्ठिका अंगुलीतक जाय तो वह उस पुरुषको और सुवर्णसे युक्त यशके काममें लगेहुए सेठको करे अर्थात् वह सेठजी होय ॥ १५६ ॥

आलिखितं काकपदं धनरेखायां तु सदृशतो यस्य ॥
अर्जयति धनानि पुनस्तत्क्षणमपि स व्ययं कुरुते ॥ १५७ ॥

अन्वयः–(यस्य धनरेखायाम् आलिखितं सदृशतः काकपदं भवति स धनानि अर्जयति पुनः तत्क्षणम् अपि स व्ययं कुरुते) अस्यार्थः-जिसकी धन-

रखामें काकपदके तुल्य लिखाहुआ होय सो बहुत धनको इकट्ठा करै फिर उसी समय शीघ्र खर्च करै ॥ १५७ ॥

त्रिपरिक्षेपाव्यक्ता यवमाला यस्य मणिबन्धे ॥
नियतं महार्थपतिः स सार्वभौमो नराधिपतिः ॥१५८॥

अन्वयः—(यस्य मणिबंधे त्रिपरिक्षेपा व्यक्ता यवमाला भवति स नियतं महार्थपतिः तथा सार्वभौमः नराधिपतिर्भवति) अस्यार्थः—जिसके मणिबन्धमें तिहरी प्रकट जौमाला होय सो निश्चय बडे धनका पति और सार्वभौम अर्थात् सब पृथ्वीका राजा होय ॥१५८॥

करमूले यवमाला द्विपरिक्षेपा मनोहरा यस्य ॥
मनुजः स राजमंत्री विपुलमतिर्जायते मतिमान् ॥ १५९ ॥

अन्वयः—(यस्य करमूले द्विपरिक्षेपा मनोहरा यवमाला भवति स मनुजः राजमंत्री विपुलमतिर्मतिमान् जायते) अस्यार्थः--जिसके करमूलमें दुहरी सुंदर जौमाला होय तो पुरुष राजाका मंत्री बडी बुद्धिवाला और बुद्धिमान् अर्थात् चतुर होय ॥ १५९ ॥

सुभगैकपरिक्षेपा यवमाला यस्य पाणिमूले स्यात् ॥
स भवति धनधान्ययुतः श्रेष्ठिजनपूजितो मनुजः॥ १६० ॥

अन्वयः--(यस्य पाणिमूले सुभगा एकपरिक्षेपा यवमाला स्यात् स मनुजः धनधान्ययुतः श्रेष्ठिजनपूजितो भवति) अस्यार्थः--जिसके हाथके मूलमें सुन्दर इकहरी जौमाला होय सो पुरुष धनधान्य करिके युक्त उत्तम पुरुषों अर्थात् सेठों करिके पूजित होय ॥ १६० ॥

यदि तिस्रोऽपरमाला मणिबंधादुभयतो विनिःसृत्य ॥
परिवेष्टयन्ति पृष्ठं तदाधिकतममिह फलं ज्ञेयम् ॥१६१॥

अन्वयः--(यदि मणिबंधात् उभयतः विनिःसृत्य तिस्रः अपरमालाः पृष्ठं परिवेष्टयंति इहतत् अधिकतमं फलं ज्ञेयम्) अस्यार्थः-जो मणिबंधसे दोनों ओर

निकलकर औरभी जौमाला हाथीके पीठको ढक लेय तौ इससे अधिक फल जानना चाहिये ॥ १६१ ॥

इह ताभिः पूर्णाभिः पूर्णां प्राप्नोति संपदं सदसि ॥
मध्याभिर्वा मध्यां ह्रस्वाभिर्वा पुमान् ह्रस्वाम् ॥१६२ ॥

अन्वयः--इह ताभिः पूर्णाभिः पुमान् सदसि पूर्णां संपदं प्राप्नोति ताभिर्मध्याभिः वा मध्यां संपदं प्राप्नोति तथा--ह्रस्वाभिः ह्रस्वां संपदं प्राप्नोति) अस्यार्थः--वही,जौमाला पूरी होय तौ उस पुरुषको पूरी संपदा मिलै और जौमाला कुछ बहुत न थोडी होय तो मध्यम संपदा मिलै और जो थोड़ीही जौमाला होय तौ थोडी संपदा प्राप्त होय १ ॥ १६२ ॥

आयुर्लेखानामांगुलिमूलान्तिर्गता भवेदूर्द्ध्वा ।
यस्य व्यक्ता रेखा स धर्मनिरतः सततं स्यात् ॥ १६३ ॥

अन्वयः–(यस्य आयुर्नाम रेखा अंगुलिमूलान्तर्गता ऊर्ध्वा व्यक्ता–स पुरुषः सततं धर्मनिरतो भवति)अस्यार्थः–जिसकी आयुकी ऊर्द्ध्वरेखा अंगुलियोंकी जडतक जाय और प्रकट होय सो पुरुष सदा धर्ममें तत्पर होय अर्थात् धर्मके काममें लगारहै ॥ १६३ ॥

यदि रेखा सर्वांगुलिसमस्तपर्वान्तरे स्थिता व्यक्ता ॥
स्पष्टो यवोपि पुंसां महीयतां तन्महीशत्वम् ॥ १६४ ॥

अन्वयः–(यदि रेखा सर्वांगुलिसमस्तपर्वान्तरे स्थिता व्यक्ता तथा यवः अपि स्पष्टः महीयतां पुंसां तन्महीशत्वं भवति) अस्यार्थः–जो रेखा सब अंगुलियोंके सब पर्वों अर्थात् टुकडोंपर प्रकट होय और जौभी प्रकट होयँ तौ वह पुरुष पूजनीय पुरुषोंमें पृथ्वीका राजा होय ॥ १६४ ॥

रेखा कनिष्ठिका लेखामध्ये नरस्य यावंत्यः ॥
तावन्त्यो महिलाः स्युर्महिलायाः पुनरपि मनुष्याः ॥ १६५ ॥

अन्वयः–(यस्य नरस्य कनिष्ठिकायुर्लेखायां मध्ये यावन्त्यः रेखाः स्युः तावन्त्यः महिलाः स्युः महिलायाः पुनः अपि मनुष्याः स्युः) अस्यार्थः--

जिस पुरुषकी कनिष्ठा अंगुलीकी आयुकी रेखाके बीचमें जितनी रेखा होयँ उतनी ही स्त्री अथवा विवाह होने चाहियें और स्त्रीके होयँ तौ उतनेही पुरुष जानियें ॥ १६५॥

रेखाभिर्विषमाभिर्विषमा समाभिरथ सुदीर्घाभिः ॥
सुभगा सूक्ष्माभिः स्यात्स्फुटिताभिर्दुर्भगा नारी॥ १६६ ॥

अन्वयः–(विषमाभिः रेखाभिः विषमा अथ दीर्घाभिः समाभिः सुभगा सूक्ष्माभिः स्फुटिताभिः दुर्भगा नारी भवति) अस्यार्थः–विषम अर्थात् कहीं थोडीं कहीं बहुत रेखाओंसे विषम स्त्री होतीहै और बड़ी बराबर रेखाओंसे अच्छे चलनवाली होतीहै–और पतली छोटी फूटी रेखाओंसे कुचालिनी स्त्री होती है ॥ १६६ ॥

मूलेंगुष्टस्य नृणां स्थूला रेखा भवन्ति यावन्त्यः ॥
तावन्तः पुत्राः स्युः सूक्ष्माभिः पुत्रिकास्ताभिः ॥ १६७ ॥

अन्वयः–(नृणाम् अंगुष्ठस्य मूले यावन्त्यः स्थूला रेखाः भवन्ति तावन्तः पुत्राः स्युः सूक्ष्माभिः ताभिः पुत्रिकाः स्युः) अस्यार्थः–मनुष्योंके अंगूठेकी जडमें जितनी मोटी रेखा होयँ उतनेही पुत्र होतेहैं और पतली रेखाओंसे उतनीही पुत्रियां होतीहैं ॥ १६७ ॥

यावन्त्यो मणिबंधायुर्लेखान्तःप्रतीक्षिताः स्थूलाः ॥
तावत्संख्याकान्वैभ्रातॄन् वदन्ति सूक्ष्मा पुनर्भगिनीः ॥१६८॥

अन्वयः–(यावन्त्यः रेखाः मणिबंधात् आयुर्लेखान्तःस्थूलाः प्रतीक्षितास्तावत्संख्याकान्भ्रातॄन्वदन्ति पुनः ता रेखाः सूक्ष्माः भगिनीः वदन्ति) अस्यार्थः–जितनी रेखा पहुँचेके और आयुरेखाके बीचमें मोटी दीखें उतनीही गिनतीके भाई कहेजायँ फिर वेही रेखा जो पतली होयँ तौ बहिनें होयँ ॥ १६८ ॥

रेखाभिश्छिन्नाभिर्भिन्नाभिर्भाविमृत्यवो ज्ञेयाः ॥
यावन्त्यस्ताः पूर्णा नियतं जीवन्ति रेखाभिस्ताभिः ॥१६९॥

अन्वयः--यस्य आयुर्लेखाभिः छिन्नाभिर्भिन्नाभिर्भाविमृत्यवो ज्ञेयाः यावन्त्यस्ताः पूर्णाः ताभिः रेखाभिः नियतं जीवन्ति) अस्यार्थः--जितनी आयुकी रेखा टूटी फूटी होयँ उतनीही होनहार अल्पायु जानियें और जो वही रेखा पूरी होयँ तौ निश्चय करिके उन पूरी रेखाओंसे उतनेही वर्षतक आयु होय अर्थात् निश्चय जीवै ॥१६९॥

मीनो मकरः शंखः पद्मो वांतर्मुखः सदा फलदः ॥
पाणौ बहिर्मुखो यदि तत्फलं पश्चिमे वयसि ॥ १७० ॥

अन्वयः--(यदि पाणौ मीनः मकरः शंखः वा पद्मः अंतर्मुखः तदा सदा फलदः भवति--यदि बहिर्मुखः तत्फलं पश्चिमे वयसि भवति) अस्यार्थः--जो हाथमें मछली मगर शंख वा कमल हाथके भीतर मुख किये होयँ तौ सदा फलके देनेवाले होतेहैं और जो वेही बाहर मुख किये होयँ तौ उसका फल पिछली अवस्थामें होय ॥ १७० ॥

मीनाङ्कशतभागी सहस्रभागी सदैव मकराङ्कः ॥
शंखाङ्को लक्षपतिः कोटिपतिर्भवति पद्माङ्कः ॥ १७१ ॥

अन्वयः--(मीनाङ्कः शतभागी स्यात्--मकराङ्कः सदैव सहस्रभागी स्यात् शङ्खाङ्कः लक्षपतिर्भवति-पद्माङ्कः कोटिपतिर्भवति)अस्यार्थः-मछलीके चिह्न वाला सौका धनी होय और मगरके चिह्नवाला सदा हजारका धनी होय और शंखके चिह्नवाला लक्षपति होय और कमलके चिह्नवाला करोड़पति होय ॥ १७१ ॥

छिन्नैर्भिन्नैः स्फुटितैरव्यक्तैः किमपि नास्ति फलमेतैः ॥
रहितैरविमुखा जायंते पाणितले प्रायोऽमी सार्वभौमानाम् १७२

अन्वयः--(पाणितले एतैश्छिन्नैर्भिन्नैः स्फुटितैः अव्यक्तैः रहितैः किमपि फलं नास्ति-- प्रायः अमी सार्वभौमानाम् अविमुखा जायन्ते) अस्यार्थः--

जो हाथकी हथेलीमें वेही चिह्न टूटे फूटे निर्मल न दीखें तो इनसे कुछ फल नहीं है–बहुधा येही चिह्न राजा महाराजाओंके सीधे सुमुख होतेहैं॥१७२॥

शैलः प्रांशुस्तले यस्य विस्फुटः स्फुरति स पुमान् ॥
प्रायो राज्यं लभते निजभुजसहायोऽपि ॥ १७३ ॥

अन्वयः–(यस्य तले प्रांशुः शैलः विस्फुटः स्फुरति–निजभुजसहायः अपि सः पुमान् प्रायः राज्यं लभते) अस्यार्थः–जिसकी हथेलीमें ऊंचा पर्वत प्रकट होय वह पुरुष अपनी भुजाओंके बलसेभी बहुधा राज्यको पाताहै ॥ १७३ ॥

रथयानकुंजरवाजिवृषाद्याः स्फुटाः करे येषाम् ॥
परसैन्यजयनशीलास्तेसैन्याधिपतयः पुरुषाः ॥ १७४ ॥

अन्वयः–(येषां करे रथयानकुंजरवाजिवृषाद्याः स्फुटाः दृश्यंते–ते पुरुषाः परसैन्यजयनशीलाः सैन्याधिपतयः भवन्ति (अस्यार्थः–जिनके हाथमें रथ पालकी हाथी घोडा बैल आदिके आकार प्रकट दिखाई देयँ वे पुरुष पराई सेनाके जीतनेवाले–सेनाके स्वामी–अर्थात् फौजके मालिक होतेहैं ॥ १७४ ॥

उडुपो वा बेडी वा पोतो वा यस्य करतले पूर्णः ॥
धनकांचनरत्नानां पात्रं सांयात्रिकः स स्यात ॥ १७५ ॥

अन्वयः–(यस्य करतले उडुपः वा वेडी वा पोतः पूर्णः भवति सः धन–काञ्चनरत्नानां पात्रं सांयात्रिकः स्यात) अस्यार्थः–जिसके हाथकी हथेली–में डोंगा बेडा वा नाव पूरी होय वह पुरुष धन सुवर्ण और रत्नोंका पात्र अर्थात् जहाजी सौदागर नावोंका व्यापारी माल भरनेवाला होय ॥१७५॥

श्रीवत्साभा सुखिनां चक्राभा भूभुजां करे रेखा ।
वज्राभा विभववतां सुमेधसां मीनपुच्छाभा ॥ १७६ ॥

अन्वयः–(सुखिनां करे श्रीवत्साभा भ ति–भूभुजां करे चक्राभा भवति विभववतां करे वज्राभा भवति–सुमेधसां करे मीनपुच्छाभा भवति)

अस्यार्थः—सुखी पुरुषोंके हाथमें श्रीवत्स चिह्नके आकार रेखा होतीहै और राजाओंके हाथमें चक्रके आकार रेखा होतीहै और—ऐश्वर्यवालेके हाथमें वज्रकी रेखा होती है और उत्तम बुद्धिवालोंके हाथमें मछलीकी पूंछके आकार रेखा होतीहै ॥ १७६ ॥

वापीकूपजलाद्यैर्धर्मपरः स्यात्त्रिकोणरेखाभिः ॥
सीरेण नरः कृषिमानुलूखलप्रभृतिभिर्यज्वा ॥ १७७ ॥

अन्वयः—(त्रिकोणरेखाभिः वापीकूपजलाद्यैर्धर्मपरः स्यात्—सीरेण नरः कृषकः स्यात्—उलूखलप्रभृतिभिः श्रीमान् यज्वा भवति) अस्यार्थः—जो त्रिकोण रेखा होय तौ बावडी कुँवा तालाब आदिका बनानेवाला—और धर्ममें तत्पर होय-और जो हलकी तुल्यरेखा होय तौ खेती करनेवाला होय-और जो ओखली आदिकी तुल्य रेखा होयँ तौ धनवान् और यज्ञ करानेवाला होय १७७

करवालाङ्कुशकार्मुकमार्गणशक्त्यादयः करे यस्य ॥
नियतं स क्षोणिपतिर्वीरः शत्रुभिरजेयः स्यात् ॥ १७८ ॥

अन्वयः—(यस्य करे करवालांकुशकार्मुकमार्गणशक्त्यादयो रेखाः भवंति—स पुरुषः नियतं क्षोणिपतिर्भवति—स वीरः शत्रुभिः अजेयः स्यात्) अस्यार्थः—जिसके हाथमें तलवार और अंकुश वा धनुषबाणके आकार जो रेखा होय तौ वह पुरुष निश्चय राजा होय और उस वीरपुरुषको शत्रुभी नहीं जीत सकतेहैं ॥ १७८ ॥

जायन्ते श्रीमंतः प्रासादैर्दामभिः स्फुटं मनुजाः ॥
निधिनायकाः कमंडलुकलशस्वास्तिकपताकाभिः ॥१७९॥

अन्वयः—(प्रासादैर्दामभिः रेखाभिः मनुजाः स्फुटं श्रीमन्तो जायन्ते तथा कमंडलुकलशस्वास्तिकपताकाभिः मनुजाः निधिनायकाः जायन्ते) अस्यार्थः—मंदिर और मालारूप रेखाओं करिके नुष्य धनवाले होते हैं— और कमंडलु कलश साँथिया ध्वजाके आकार रेखा होय तौ वे पुरुष नवनिधिके नायक अर्थात् मालिक होतेहैं ॥ १७९ ॥

यस्य सदंडं छत्रं चामरयुग्मं प्रतिष्ठितं पाणौ ॥
सोऽम्बुधिरशनावासां भुनक्ति भूमिं भुजिष्योऽपि ॥१८०॥

अन्वयः—(यस्य पाणौ सदंडं छत्रं चामरयुग्मं प्रतिष्ठितं भवति—सः भुजिष्यः अपि अम्बुधिरशनावासां भूमिं भुनक्ति) अस्यार्थः—जिसके हाथमें दंडसहित छत्र और दो चमर प्रतिष्ठित होयँ सो पुरुष दासभी होय तौ समुद्रही है रशना और वसन जिसके ऐसी पृथ्वीके भोगनेवाला होताहै ॥ १८० ॥

विप्रस्य यस्य यूपो वेदनिभं ब्रह्मतीर्थमपि हस्ते ॥
विश्वाधिपतिर्नियतं स भवेदथवाग्निहोत्रीशः ॥ १८१ ॥

अन्वयः—(यस्य विप्रस्य हस्ते यूपः वेदनिभं—ब्रह्मतीर्थम् अपि स नियतं विश्वाधिपतिः अथवा स अग्निहोत्रीशः भवेत्) अस्यार्थः—जिस ब्राह्मणके हाथमें यज्ञस्तंभके और वेदके तुल्य और ब्रह्मतीर्थके आकार रेखा होयँ तौ वह पुरुष निश्चय जगत्का पति अथवा अग्निहोत्री होता है ॥१८१॥

भाग्येन भवन्ति यवाः पुंसामंगुष्ठपर्वसु स्पष्टाः ॥
पोषविशेषनिमित्तं कर्मकरं यशस्तुरंगः स्यात् ॥ १८२ ॥

अन्वयः—(यस्य अंगुष्ठस्य यवाः पर्वसु पुंसां भाग्येन स्पष्टाः भवंति पोषविशेषनिमित्तं कर्मकरं यशः तथा तुरंगः स्यात्) अस्यार्थः—जिसके अँगूठेके पोरुवेमें जौका चिह्न पुरुषोंके भाग्यवश करिके प्रकट होय तो वे पालन करनेके विशेष कारणसे कर्म करनेके यश और घोडे होतेहैं॥ १८२॥

सुतवंतः श्रुतवन्तो जायन्तेऽगुंष्ठमूलगैस्तु यवैः ॥
मध्यगतैर्धनकाञ्चनरत्नाढ्या भोगिनः सततम् ॥ १८३ ॥

अन्वयः—(अंगुष्ठमूलगैः यवैः सुतवन्तः श्रुतवन्तो जायन्ते तथा मध्यगतैः यवैः धनकांचनरत्नाढ्याः सततं भोगिनो भवंति) अस्यार्थः—जिसके अंगूठेकी जड़में जौका चिह्न होय वह पुत्र और शास्त्रवाला होय और जिसके अंगूठेके बीचमें जौका चिह्न होय वह धन सुवर्ण रत्नों करिके सदा भोगनेवाला होताहै ॥ १८३ ॥

त्रिपरिक्षेपा मूलेऽगुष्ठगता भवति यस्य यवमाला ॥
द्विपसुसमृद्धः स पुमान्राजा वा राजसचिवो वा ॥ १८४ ॥

अन्वयः--(यस्य अंगुष्ठगता मूले यवमाला त्रिपरिक्षेपा भवति--स पुमान् द्विपसुसमृद्धः राजा वा राजसचिवो भवति)अस्यार्थः--जिसके अंगूठेकी जड़में जौमालाकी तिलड़ी होय सो पुरुष हाथियोंकी ऋद्धि समेत राजा वा राजमंत्री होताहै ॥ १८४ ॥

यस्य द्विपरिक्षेपा सैव नरो राजपूजितः स स्यात् ॥
यस्यैकपरिक्षेपा यवमाला सोपि वित्ताढ्यः ॥ १८५ ॥

अन्वयः--(यस्य सा एव यवमाला द्विपरिक्षेपा सः नरः राजपूजितः स्यात्--यस्य यवमाला एकपरिक्षेपा सः अपि वित्ताढ्यः स्यात्) अस्यार्थः--जिसके वही जौमाला दुलड़ी होय सो पुरुष राजाका पूजनीय होय--और जिसके जौमाला एक होय सो धनी होताहै ॥ १८५ ॥

यस्यांगुष्ठाधस्तात्काकपदं भवति विस्पष्टम् ॥
स नरः पश्चिमकाले शूलेन विपद्यते सद्यः ॥ १८६ ॥

अन्वयः--(यस्य नरस्य अंगुष्ठाधस्तात्काकपदं विस्पष्टं भवति स नरः सद्यः पश्चिमकाले शूलेन विपद्यते) अस्यार्थः--जिस पुरुषके अंगूठेके नीचे कौवेके आकारका चिह्न प्रकट होय सो मनुष्य शीघ्रही पिछली अवस्थामें शूलसे माराजाय ॥ १८६ ॥

अव्यक्ताः स्युस्तनवः खंडा रेखाऽथ करे स्थिता यस्य ॥
तिग्मांशोरिव रजनी श्रीस्तस्य पलायते सततम् ॥ १८७॥

अन्वयः--(यस्य करे रेखाः अव्यक्ताः खंडाः तनवः स्थिताः स्युः तस्य श्रीः सततं तिग्मांशोः रजनी इव पलायते) अस्यार्थः--जिसके हाथकी रेखा स्वच्छ नहीं होय खंडित होय और बहुत पतली होय तिसके लक्ष्मीजी सदा नहीं रहे भागिजातीहै जैसे सूर्यसे रात्रि भागिजातीहै ॥ १८७॥

एवमपरापि पाणौ शुभसंस्थाना शुभावहा रेखा ॥
किंबहुना मनुजानामशुभा पुनरशुभसंस्थाना ॥ १८८ ॥

अन्वयः-(एवं मनुजानां पाणौ अपरापि शुभसंस्थाना रेखा शुभावहा बहुना किं पुनः अशुभसंस्थाना रेखा अशुभा) अस्यार्थः-ऐसेही मनुष्योंके हाथमें औरभी शुभ रेखा शुभकी करनेवाली होतीहैं बहुत कहनेसे क्याहै फिर भी अशुभरूप रेखा अशुभ होतीहैं ॥ १८८ ॥

ऋजुरंगुष्ठः स्निग्धस्तुंगो वृत्तः प्रदक्षिणावर्त्तः ॥
अंगुष्ठेऽपि धनवतां सुघनानि समानि पर्वाणि ॥ १८९ ॥

अन्वयः-(धनवताम् अंगुष्ठः अपि ऋजुः स्निग्धः तुंगः वृत्तः प्रदक्षिणावर्त्तो भवति च पुनः धनवतां अंगुष्ठे अपि सुघनानि वा समानि पर्वाणि भवंति) अस्यार्थः-धनवानोंका अंगूठा सीधा चिकना ऊंचा गोल दाहिनी ओर झुकाहुवा होताहै और धनवानोंके अंगूठेमेंभी कठिन और बराबर पोरुवे होतेहैं ॥ १८९ ॥

सततं भवंति वलिताः सौभाग्यवतां सुमेधसां सूक्ष्माः ॥
पाण्यंगुलयः सरला दीर्घा दीर्घायुषां पुंसाम् ॥ १९० ॥

अन्वयः-सौभाग्यवतां सुमेधसां पुंसां पाण्यंगुलयः सततं वलिताः भवन्ति तथा दीर्घायुषां पुंसां सरला वा दीर्घा भवन्ति) अस्यार्थः-भाग्यवान् और बुद्धिमान् पुरुषोंके हाथकी अंगुली निरंतर मिलीहुई होतीहैं और बडी आयुवाले पुरुषोंकी अंगली सूधी और बडी होतीहैं ॥ १९० ॥

नियतं कनिष्ठिकांगुलिरनामिकापर्व उल्लंघ्य ॥
यद्यधिकतरा पुंसां धनमधिकं जायते प्रायः ॥ १९१ ॥

अन्वयः-(यदि पुंसां कनिष्ठिकांगुलिः नियतम् अनामिकापर्व उल्लंघ्य अधिकतरा भवति प्रायः अधिकं धनं जायते) अस्यार्थः-जो पुरुषकी कनिष्ठिका (छोटी अंगुली) निरंतर अनामिका अंगुलीके पोरुवेको उलाँघिकरि अधिक होतो बहुधा धन अधिक होय ॥ १९१ ॥

दीर्घायुरंगुलीभिः सौभाग्ययुतः सुदीर्घपर्वाभिः ॥
विरलाभिः कुटिलाभिः शुष्काभिर्भवति धनहीनः ॥ १९२ ॥

अन्वयः-(दीर्घाभिः अंगुलीभिः दीर्घायुर्भवति च पुनः दीर्घपर्वाभिः अंगुलीभिः सौभाग्ययुतः स्यात् तथा विरलाभिः कुटिलाभिः शुष्काभिःअंगुलीभिः धनहीनो भवति) अस्यार्थः-लंबी अंगुलियों करिके बडी आयुवाला होय और बडे पोरुवोंकी अंगुलीसे भाग्यवान् होय और छीदीं टेढी सूधी पतली अंगुलियोंसे धनहीन अर्थात् दरिद्री होताहै ॥ १९२ ॥

स्थूला धनोज्झितानां शस्त्रान्वितानां बहिर्नताः पुंसाम् ॥
ह्रस्वांगुल्यश्चिपिटाश्चेटानां हन्त जायन्ते ॥ १९३ ॥

अन्वयः-(धनोज्झितानां पुंसां स्थूला भवंति शस्त्रान्वितानां पुंसां बहिर्नताः भवन्ति हंत चेटानां पुंसां ह्रस्वाः चिपिटाः अंगुल्यो भवंति) अस्यार्थः-धनरहित पुरुषोंकी अंगुली मोटी होतीहैं और हथियारवाले पुरुषोंकी अंगुली बाहरको झुकी होतीहैं और बडे खेदकी बात है कि दासोंकी अंगुली छोटी और चपठी होतीहैं ॥ १९३ ॥

अंगुष्ठांगुलयो वा संख्या न्यूनाधिकाः स्फुटं यस्य ॥
धनधान्यैः परिहीनः सोऽल्पायुर्भूतले भवति ॥ १९४ ॥

अन्वयः-(यस्य अंगुष्ठांगुलयः वा स्फुटं न्यूनाधिकाः संख्याः भवंति स भूतले धनधान्यैः परिहीनः अल्पायुर्भवति) अस्यार्थः-जिसके अंगूठेकी अंगुली प्रगट कमती बढती जैसे पांचसे छठी संख्या हो तो पृथ्वीमें धन-धान्य करके हीन और थोडी आयुवाला होताहै ॥ १९४ ॥

छिद्रं मिथः कनिष्ठानामामध्यप्रदेशिनीनां स्यात् ॥
वृद्धत्वे तारुण्ये बाल्ये क्रमशो नरस्य सुखम् ॥ १९५ ॥

अन्वयः-(यस्य कनिष्ठाऽनामिकामध्यमाप्रदेशिनीनां मध्ये यदि छिद्रं स्यात् नरस्य वृद्धत्वे तारुण्यबाल्ये क्रमशः सुखं भवति) अस्यार्थः-जिसकी

कनिष्ठिकामें छिद्र होयतौ बूढेपनमें सुख होय और अनामिकामें छिद्र होयतौ तरुणाईमें सुख होय और मध्यमा प्रदेशिनीके बीचमें जो छिद्र होय तौ बालककपन में सुख होय॥ १९५॥

विद्रुमरुचयः श्लक्ष्णाः पाणिनखा कच्छपोन्नताः स्निग्धाः ॥
सशिखाः क्रमेण विपुलाः पर्वार्द्धमिता महीशानाम् ॥ १९६ ॥

अन्वयः–(महीशानां पाणिनखाः विद्रुमरुचयः श्लक्ष्णाः कच्छपोन्नताः स्निग्धाः सशिखाः विपुलाः क्रमेण पर्वार्द्धमिता भवन्ति) अस्यार्थः–राजाओंके हाथोंके नख मूँगेकेसे रंग और चिकने कछुवेकी पीठके तुल्य ढलाववाले चमकादार बडे बडे पोरुवेके आधेतक होतेहैं ॥ १९६ ॥

दीर्घाः कुटिला रूक्षाः शुक्लनिभा यस्य करनखा विशिखाः ॥
तेजोमृजाविहीनाः स हीयते धान्यधनभोगैः ॥ १९७ ॥

अन्वयः–(यस्य पुरुषस्य करनखाः दीर्घाः कुटिलाः रूक्षाः शुक्लनिभाः तेजोमृजाविहीनाः विशिखाः भवन्ति स धनधान्यभोगैः हीयते) अस्यार्थः–जिस पुरुषके हाथके नख बड़े टेढ़े रूखे सफेद तेजकरिके स्वच्छतासे हीन चमत्काररहित ऐसे होयँ सो धन धान्यके भोगसे हीन होतेहैं ॥ १९७ ॥

पुष्पयुतैर्दुःशीलाः श्वेतैः श्रमणास्तुषोपमैः क्लीबाः ॥
परतर्कका विवर्णैश्चिपिटैः स्फुटितैर्नखैर्निःस्वाः ॥ १९८ ॥

अन्वयः–(पुष्पयुतैर्नखैः दुःशीला भवन्ति तथा श्वेतैः श्रमणास्तुषोपमैः क्लीबाः भवंति वा विवर्णैः परतर्कका: चिपिटैः स्फुटितैः निःस्वाः भवन्ति) अस्यार्थः–पुष्पयुक्त छींटेवाले नखोंसे दुःशील अर्थात् कुटिल स्वभावके होतेहैं और सफेद नखोंसे भिखारी होते हैं और जिनके भूसीके समान नख होयँ वे नपुंसक होतेहैं, और बुरे रंगवाले नख पराई तर्क करनेवाले होतेहैं. और चिपटे टूटे फटे नखोंसे धनहीन अर्थात् दरिद्री होतेहैं ॥ १९८ ॥

अपसव्यसव्यकरयोर्नखेषु सितबिंदवश्चरणयोर्वा ॥
आगन्तवः प्रशस्ताः पुरुषाणां भोजराजमतम् ॥१९९॥

अन्वयः–(पुरुषाणाम् अपसव्यसव्यकरयोः वा चरणयोर्नखेषु आगन्तवः सितबिन्दवः प्रशस्ताः इति भोजराजमतम्) अस्यार्थः–मनुष्योंके बायें वा दायें हाथके वा पांवके नखोंमें आये हुए सफेद बूँद अच्छे होतेहैं यह भोजराजका मत है ॥ १९९ ॥

कच्छपपृष्ठो राजा हयपृष्ठो भोगभाजनं भवति ॥
धनसंपत्तिसुसेनाऽधिपतिः शार्दूलपृष्ठोऽपि ॥ २०० ॥

अन्वयः–(कच्छपपृष्ठः राजा भवति–हयपृष्ठः भोगभाजनं भवति शार्दूलपृष्ठः अपि धनसंपत्तिसुसेनाधिपतिर्भवति) अस्यार्थः–कछुवेकीसी पीठके समान नखवाला राजा होय और घोडेकीसी पीठके समान नखवाला भोगका पात्र अर्थात् भोगी होय और बघेरेकीसी पीठके समान नखवाला धन और संपत्ति युक्त सेनाका स्वामी होताहै ॥ २०० ॥

लभते शिरालपृष्ठो निर्धनतां भुग्नवंशपृष्ठोऽपि ॥
कष्टं रोमशपृष्ठः पृथुपृष्ठो बन्धुविच्छेदम् ॥ २०१ ॥

अन्वयः–(शिरालपृष्ठः भुग्नवंशपृष्ठः अपि निर्धनतां लभते–रोमशपृष्ठः कष्टं लभते– पृथुपृष्ठः बंधुविच्छेदं लभते) अस्यार्थः–नसीली पीठवाला वा टेढ़ीपीठवाला निर्धनताको पाताहै–और रोमयुक्त पीठवाला कष्ट अर्थात् दुःख पाताहै–और मोटी पीठवाला भाइयोंसे नाशको प्राप्त होताहै ॥ २०१ ॥

नियतं कृकाटिकारोमशिरासंयुता नृणां सा ॥
कुरुते कुटिला विकटा विसंकटा रोगदारिद्र्यम् ॥ २०२ ॥

अन्वयः–(रोमशिरायुता कुटिला विकटा विसंकटा कृकाटिका यस्य भवति सा एव कृकाटिका नियतं नृणां रोगदारिद्र्यं कुरुते) अस्यार्थः–रोमभी हों नसेंभी हों टेढ़ी ऊँची सकडी नारि और पीठकी संधि जिसकी होयँ सोई कृकाटिका निश्चय मनुष्योंको रोग और दरिद्री करतीहै ॥२०२॥

ह्रस्वग्रीवः शस्तो वृत्तग्रीवः सुखी धनी सुभगः ॥
कम्बुग्रीवस्तु भवेदेकातपवारणो नृपतिः ॥ २०३ ॥

अन्वयः-(ह्रस्वग्रीवः शस्तः स्यात्-वृत्तग्रीवः सुखी धनी सुभगः स्यात्-कम्बुग्रीवः एकातपवारणो नृपतिर्भवति) अस्यार्थः-छोटी नारिवाला श्रेष्ठ होता है-और गोल नारिवाला सुखी धनवान् सुंदर होता है-तीन रेखावाली शंखकीसी नारिवाला एक छत्रधारी राजा होताहै ॥२०३॥

महिषग्रीवः शूरो लम्बग्रीवोऽपि घस्मरः सततम् ॥
पिशुनो वक्रग्रीवः शस्तविनाशो महाग्रीवः स्यात् ॥ २०४ ॥

अन्वयः-(महिषग्रीवः शूरः स्यात्-लम्बग्रीवः अपि सततं घस्मरः स्यात् वक्रग्रीवः पिशुनः स्यात् महाग्रीवः शस्तविनाशः स्यात्)अस्यार्थः-भैंसेकीसी नारिवाला शूर अर्थात् योद्धा होय और लंबी नारिवाला निरंतर बहुत खानेवाला होय और टेढी नारिवाला चुगली खानेवाला होय और बडी नारिवाला श्रेष्ठ बातको नाश करता है ॥ २०४ ॥

रासभकरभग्रीवो दुःखीस्याद्दांभिको बकग्रीवः ॥
शुष्कशिरालग्रीवश्चिपिटग्रीवश्च धनहीनः ॥ २०५ ॥

अन्वयः-(रासभकरभग्रीवः दुःखी स्यात् बकग्रीवः दांभिकः स्यात चिपिटग्रीवः शुष्कशिरालग्रीवः च धनहीनः स्यात) अस्यार्थः-गधा और ऊंटकीसी नारिवाला दुःखी होय और बगुलाकीसी नारिवाला पाखंडी होय और चपटी सूखीसी नसोंकी नारिवाला धनहीन होताहै ॥ २०५ ॥

पुण्यवतामिह चिबुकं वृत्तं मांसलमदीर्घलघुसुसंयुतं मृदुलम् ॥
अतिकृशदीर्घस्थूलं त्रिधाग्रभागं दरिद्राणाम् ॥ २०६ ॥

अन्वयः- (इह पुण्यवतां चिबुकं वृत्तं मांसलम् अदीर्घलघुमृदुलं सुसंयुतं भवति तथा अतिकृशदीर्घस्थूलं द्विधाग्रभागं चिबुकं दरिद्राणां भवति) अस्यार्थः-इस संसारमें पुण्यवानोंकी ठोडी गोल मांससे भरी बडी न छोटी

नरम सुडोल बनावटकी होती है और पतली दुबली बडी और दो भागवाली अर्थात् गढ़ेलेदार ऐसी ठोडी दरिद्रियोंकी होती है ॥ २०६ ॥

हनुयुगलं सुश्लिष्टं चिबुकोभयपार्श्वसंस्थितं पुंसाम् ॥
दीर्घचक्रं शस्तं पुनरशुभं भवति विपरीतम् ॥ २०७ ॥

अन्वयः-(पुंसां चिबुकोभयपार्श्वसंस्थितं हनुयुगलं दीर्घचक्रं सुश्लिष्टं शस्तं पुनः विपरीतम् अशुभं भवति) अस्यार्थः-पुरुषकी ठोडीके दोनों ओर स्थित दोनों जाबडे अच्छे प्रकार मिले हुए बड़े और गोल श्रेष्ठ होतेहैं फिर वेही जो विपरीत होंय तौ अशुभ होतेहैं ॥ २०७ ॥

कूर्चप्रलम्बमुज्ज्वलमस्फुटिताग्रं निरंतरं मृदुलम् ॥
स्निग्धं पूर्णं सूक्ष्मं मेचकं तु विशिष्यते पुंसाम् ॥ २०८ ॥

अन्वयः-(पुंसां प्रलंबम् उज्ज्वलम् अस्फुटिताग्रं निरंतरं मृदुलं स्निग्धं पूर्णं सूक्ष्मं मेचकं कूर्चं विशिष्यते) अस्यार्थः-पुरुषके लंबे निर्मल जिनकी नोंक फटी नहीं आगेसे केवल नरम चिकने पूरे महीन काले चमकदार बाल हों तौ अच्छे होतेहैं ॥ २०८ ॥

परदाररताश्चोराः श्मश्रुभिररुणैर्नटानखैः स्थूलैः ॥
रूक्षैः सूक्ष्मैः स्फुटितैः कपिलैः केशान्विता बहुशः ॥ २०९ ॥

अन्वयः-अरुणैः श्मश्रुभिः परदाररताश्चराः भवंति तथा स्थूलैः रूक्षैः सूक्ष्मैः स्फुटितैः कपिलैः नखैः बहुशः केशान्विता नटा भवंति) अस्यार्थः-लाल डाढी मूछोंके पुरुष पराई स्त्रीके भोगनेवाले चोर होते हैं और मोटे, रूखे, पतले, टूटे फूटे, कंजाकेसे रंगके नखोंसे बहुतसे बालोंकरियुक्त नट होतेहैं ॥ २०९ ॥

सांतर्द्वितीयदशामिह शुक्रो द्व्येकोऽधिकः क्रमेण नृणाम् ॥
तदयं श्मश्रुभेदस्तद्विकृतिः पोडशे वर्षे ॥ २१० ॥

अन्वयः-(नृणां क्रमेण तदयं श्मश्रुभेदः सांतर्द्वितीयदशं द्व्येकोऽधिक इह शुक्रो भवेत् च पुनः पोडशे वर्षे तद्विकृतिः स्यात्) अस्यार्थः-मनुष्यों-

की क्रम कारिके मूछोंका भेद है—सो बीस वर्षके भीतर वा २१ वर्षके भीतर जो मूछें निकलें तौ वीर्यको उत्पन्न करनेवाली होतीहैं और जो सोलह वर्षके भीतर निकलें तौ वीर्यको रोग करनेवाली होतीहैं ॥ २१० ॥

सुखिनः समुन्नतैः स्युः परिपूर्णा भोगयुताश्च मांसयुतैः ॥
सिंहद्विपेन्द्रतुल्यैर्गंडैर्नराधिपा नरा धन्याः ॥ २११ ॥

अन्वयार्थौ—समुन्नतैः गंडैः नराः सुखिनो भवंति) ऊँचे गंडस्थल होनेसे मनुष्य सुखी होतेहैं और (मांसयुतैः गंडैः परिपूर्णा भोगयुताः स्युः) मांसके भरे गंडस्थलसे भरे पूरे भोगी होतेहैं और (सिंहद्विपेन्द्रतुल्यैः गंडैः धन्याः नराः नराधिपाः स्युः) सिंह वा हाथीके समान गंडस्थल होनेसे उत्तम पुरुष राजा होते हैं ॥ २११ ॥

निम्नौ यस्य कपोलौ निर्मांसौ स्वल्पकूर्चरोमाणौ ॥
पापास्ते दुःखजुषो भाग्यविहीनाः परप्रेष्याः ॥ २१२ ॥

अन्वयः—(यस्य कपोलौ निम्नौ निर्मांसौ स्वल्पकूर्चरोमाणौ ते पापाः दुःखजुषः भाग्यविहीनाः परप्रेष्याः भवंति) अस्यार्थः—जिसके कपोल नीचे मांसरहित छोटी मूछोंवाले और रोमों कारिके युक्त होयँ वे पापी दुःख पानेवाले अभागी और पराये दूत अर्थात् नौकर होतेहैं ॥ २१२ ॥

समवृत्तमचलं सूक्ष्मं स्निग्धं सौम्यं समं सुरभि वदनम् ॥
सिंहेभनिभं राज्यं संपूर्णं भोगिनां चेति ॥ २१३ ॥

अन्वयार्थौ—(यस्य वदनं समवृत्तम् अचलं सूक्ष्मं स्निग्धं सौम्यं समं सुरभि सिंहेभनिभं राज्यं स्यात्) जिसका मुख सबओरसे गोल, डरावना नहीं, छोटा, चिकना, दर्शनीय, बराबर, सुगंध लिये, सिंह और हाथीके तुल्य हो तो वह राज्य करनेवाला होताहै और (च पुनः संपूर्णं भोगिनामपि भवति) संपूर्ण भोगियोंकाभी ऐसाही मुख होताहै ॥ २१३ ॥

जननीमुखानुरूपं मुखकमलं भवति यस्य मनुजस्य ॥
प्रायो धन्यः स पुमानित्युक्तमिदं समुद्रेण ॥ २१४ ॥

अन्वयः-(यस्य मनुजस्य मुखकमलं जननीमुखानुरूपं भवति स पुमान् प्रायः धन्यो भवति समुद्रेण इतीदमुक्तम्) अस्यार्थः-जिस मनुष्यका मुखकमल माताके मुखकासा होय सो पुरुष बहुधा करिके धन्य होताहै यह समुद्रने इस प्रकार कहाहै ॥ २१४ ॥

दौर्भाग्यवतां पृथुलं पुंसां स्त्रीमुखमपत्यरहितानाम् ॥
चतुरस्रं धूर्तानामतिह्रस्वं भवति कृपणानाम् ॥ २१५ ॥

अन्वयार्थौ-(दौर्भाग्यवतां पुंसां मुखं पृथुलं भवति) अभागे पुरुषोंका मुख चौडा भाडसा होताहै और (अपत्यरहितानां स्त्रीमुखं भवति) संतान रहित पुरुषोंका मुख स्त्रीकासा होताहै और (धूर्तानां मुखं चतुरस्रं भवति दगाबाज मायावी पुरुषोंका मुख चौकोर होता है और (कृपणानां मुखम् अतिह्रस्वं भवति) लोभी और कंजुसोंका मुख बहुत छोटा होता है॥ २१५॥

भीरुमुखं पापानां निम्नं कुटिलं च पुत्रहीनानाम् ॥
दीर्घं निर्द्रव्याणां भाग्यवतां मंडलं ज्ञेयम् ॥ २१६ ॥

अन्वयार्थौ-(पापानां भीरु मुखं भवति) पापियोंका डरावना मुख होता है और (पुत्रहीनानां मुखं निम्नं च पुनः कुटिलं भवति) पुत्रहीनोंका मुख नीचा और टेढा होता है और (निर्द्रव्याणां मुखं दीर्घं भवति) धनहीनोंका मुख लंबा होता है और (भाग्यवतां मुखं मंडलं ज्ञेयम्) भाग्यवानोंका मुख गोल होता है ॥ २१६ ॥

रासभकरभप्लवगव्याघ्रमुखा दुःखभागिनः पुरुषाः ॥
जिह्ममुखा विकृतमुखाः शुष्कमुखा हयमुखा निःस्वाः ॥ २१७

अन्वयार्थौ-(रासभकरभप्लवगव्याघ्रमुखाः पुरुषाः दुःखभागिनो भवंति) गधा, ऊंट, बंदर, बघेरेकेसे मुखवाले पुरुष दुःख भोगनेवाले होते हैं और (जिह्ममुखा विकृतमुखाः शुष्कमुखा हयमुखा निःस्वाः भवन्ति) टेढे मुख, बुरे मुख, सूखे घोडेकेसे मुखवाले दारिद्री होते हैं ॥ २१७ ॥

बिम्बाधरो धनाढ्यः प्रज्ञावान् पाटलाधरो भवति ॥
प्रायो राज्यं लभते प्रवालवर्णाधरस्तु नरः ॥ २१८ ॥

अन्वयार्थौ-(बिम्बाधरः धनाढ्यः स्यात्) कुँदुरूकेसे लाल रंगके होठवाला धनवान् होताहै और (पाटलाधरः प्रज्ञावान् स्यात्) गुलाबकेसे होठवाला बुद्धिमान् होता है और (प्रवालवर्णाधरः नरः प्रायः राज्यं लभते) मूंगेके रंगकेसे चमकदार होठवाला पुरुष निश्चय राज्यको पाताहै ॥२१८॥

यस्याधरोत्तरोष्ठौ द्व्यंगुलमानौ सुकोमलौ मसृणौ ॥
मृदुसममसृक्काणौ स जायते प्रायशो धनवान् ॥ २१९॥

अन्वयः-(यस्य अधरोत्तरोष्ठौ द्व्यंगुलमानौ सुकोमलौ मसृणौ मृदुसममसृक्काणौ प्रायशः स धनवान् जायते) अस्यार्थः-जिसके होठ ऊपर नीचेके नापमें दो अंगुलके नरमाई लिये और चिकने, बराबर किनारेके होयँ सो बहुधा धनवान् होता है ॥ २१९ ॥

पीनोष्ठः सुभगः स्याल्लंबोष्ठो भोगभाजनं मनुजः ॥
अतिविषमोष्ठो भीरुर्लघ्वोष्ठो दुःखितो भवति ॥ २२० ॥

अन्वयार्थौ-(पीनोष्ठः सुभगः स्यात्) मोटे होठवाला अच्छे चलनका होताहै और (लम्बोष्ठः मनुजः भोगभाजनं स्यात्) लम्बे होठवाला मनुष्य भोगोंका पात्र होताहै और (अतिविषमोष्ठः भीरुः स्यात्) बहुत छोटे बड़े होठोंवाला डरपोक होता है और (लघ्वोष्ठः दुःखितो भवति) छोटे होठवाला दुःखी होता है ॥२२०॥

रूक्षैः कृशैर्विवर्णैः प्रस्फुटितैः खंडितैरतिस्थूलैः ॥
ओष्ठैर्धनसुखहीना दुःखिनः प्रायशः प्रेष्याः ॥ २२१ ॥

अन्वयः-(रूक्षैः कृशैर्विवर्णैः प्रस्फुटितैः खंडितैः अतिस्थूलैः ओष्ठैः धनसुखहीनाः दुःखिनः प्रायशः प्रेष्याः भवन्ति) अस्यार्थः-रूखे, पतले, बुरे रंगके, फटे हुए, खंडित और मोटे होठोंसे धन और सुखसेहीन और दुःखी बहुधा दूत अर्थात् हरकारे होते हैं ॥ २२१ ॥

कुंदमुकुलोपमाः स्युर्यस्यारुणपीडिकासमाः सुघनाः ॥
दशनाः स्निग्धाः श्लक्ष्णास्तीक्ष्णा दंष्ट्राः स वित्ताढ्यः ॥ २२२॥

अन्वयः–(यस्य दशनाः कुंदमुकुलोपमाः अरुणपीडिकासमाः सुघनाः स्निग्धाः श्लक्ष्णाः सुतीक्ष्णाः दंष्ट्राः स्युः स वित्ताढ्यः भवति) अस्यार्थः– जिसके दाँत कुंदकी कलीके तुल्य या लाल फुंसीके समान, बहुत घने चिकने स्वच्छ और तेज डाढोंसे युक्त होयँ सो धनवान् होता है ॥ २२२ ॥

धनिनः खरद्विपरदा निःस्वा भल्लूकवानररदाः स्युः ॥
निंद्याः करालविरलद्विपंक्तिशितिविषमरूक्षरदाः ॥ २२३ ॥

अन्वयार्थौ–(खरद्विपरदाः धनिनो भवन्ति) गधे और हाथीकेसे लंबे दांतवाले धनी होते हैं और (भल्लूकवानररदाः निःस्वा भवन्ति) रीछ और बंदरकेसे दांतवाले दरिद्री होते हैं और (कराल विरलद्विपंक्तिशिति-विषमरूक्षरदाः निंद्याः स्युः) भयंकर और जुदे जुदे दोपातवाले, काले, ऊंचे, नीचे, रूखे दांतवाले निंद्य अर्थात् बुराई करनेयोग्य होतेहैं ॥ २२३ ॥

द्वात्रिंशता नरपतिर्दशनैस्तैरेकविरहितैर्भोगी ॥
स्यात्रिंशता तनुधनोऽष्टाविंशत्या सुखी पुरुषः ॥ २२४ ॥

अन्वयार्थौ–(द्वात्रिंशता दशनैः पुरुषः नरपतिर्भवति) बत्तीस दांत-वाले पुरुष राजा होते हैं और (एकविरहितैः तैः दशनैः भोगी स्यात्) जो वेही दांत ३१ होयँ तौ भोगी होय और (त्रिंशता दशनैः तनुधनः स्यात्) ३० दांतवाला थोड़े धनवाला होय और (अष्टाविंशतिदशनैः सुखी स्यात्) २८ दांतवाला सुखी होता है ॥ २२४ ॥

दारिद्र्यदुःखभाजनमेकोनत्रिंशता सदा दशनैः ॥
ऊर्द्धमधस्तैरपि विहीनसंख्यैर्नरो दुःखी ॥ २२५ ॥

अन्वयार्थौ–(एकोनत्रिंशता दशनैः सदा दारिद्र्यदुःखभाजनं भवति) २९ दांतवाला सदा दरिद्री और दुःखका भाजन होताहै और (ऊर्द्धम् अधः

तैः विहीनसंख्यैः दशनैः स पुरुषः दुःखी स्यात्) ऊपर नीचेसे वेही दाँत संख्यासे कमती होयँ सो पुरुष दुःखी होता है ॥ २२५ ॥

स्यातां द्विजावधः प्राक् द्वादशगे मासि राजदन्ताख्यौ ॥
शस्तावूर्द्धावशुभौ जन्मन्येवोद्गतौ तद्वत् ॥ २२६ ॥

अन्वयार्थौ–(द्विजौ द्वादशगे मासि प्राक् अधः स्यातां तौ राजदन्ताख्यौ शस्तौ) १२ महीनेके भीतर नीचेके जो दाँत निकलें तो राजदन्त कहावें ये शुभ हैं और (ऊर्द्धौ अशुभौ) जो ऊपरके निकले तो अशुभ हैं और) तद्वत् जन्मनि एव उद्गतौ अशुभौ) जो एक साथ जन्मसेही निकलें तो वेभी अशुभ हैं ॥ २२६ ॥

सर्वे भवन्ति दशनाः पूर्णे वर्षद्वये जनिप्रभृति ॥
आसप्तमदशमान्तं नियतं पुनरुद्गमं यान्ति ॥ २२७ ॥

अन्वयार्थौ–(जनिप्रभृतिवर्षद्वये पूर्णे सति सर्वे दशनाः भवन्ति) जन्मसे लेकर दो वर्षतक पूरे होनेपर सब दाँत होतेहैं और (आसप्तमदशमांतं नियतं पुनः उद्गमं यान्ति) सातवें वर्षमे दशवें वर्षके अंततक निश्चय फिर उत्पन्न होते हैं ॥ २२७ ॥

रसना रक्ता दीर्घा सूक्ष्मा मृदुला तनुसमा येषाम् ॥
मिष्टान्नभोजिनस्ते यदि वा त्रैविद्यवक्तारः ॥ २२८ ॥

अन्वयार्थौ–(येषां रसना रक्ता दीर्घा सूक्ष्मा मृदुला तनुसमा भवति ते मिष्टान्नभोजिनो भवन्ति) जिनकी जीभ लाल बडी छोटी नरम, पतली, बराबर होय वे मीठेके खानेवाले होतेहैं और (यदि वा त्रैविद्यवक्तारो भवन्ति) अथवा तीनों वेदोंके वक्ता (कहनेवाले) होतेहैं ॥ २८८ ॥

संकीर्णाग्रा स्निग्धा रक्ताम्बुजपत्रसन्निभा रसना ॥
न स्थूला न च पृथुला यस्य स पृथ्वीपतिर्मनुजः ॥ २२९ ॥

अन्वयः–(यस्य रसना संकीर्णाग्रा स्निग्धा रक्ताम्बुजपत्रसन्निभा न स्थूला न च पृथुला स मनुजः पृथ्वीपतिर्भवति) अस्यार्थः–जिसमनुष्यकी

जीभके आगेका भाग सकडा होय और चिकना लाल कमलके फूलकी पंखडी अर्थात् पत्तेके समान न मोटी न चौडी होय सो मनुष्य पृथ्वीपति अर्थात राजा होय ॥ २२९ ॥

शौचाचारविहीनाः सितजिह्वाः सततं भवन्ति नराः ॥
धनहीनाः शितिजिह्वाः पापोपगताः शबलजिह्वाः ॥ २३० ॥

अन्वयार्थौ–(सिताजिह्वाः नराः सततं शौचाचारविहीना भवन्ति) सफेद जीभवाले मनुष्य शौच आचारसे सदा भ्रष्ट होतेहैं और (शितिजिह्वाः धनहीनाः भवंति) काली जीभवाले मनुष्य धनहीन होते हैं और (शबलजिह्वाः पापोपगताः स्युः) (कबरी चित्र विचित्र रंगकी) जीभवाले मनुष्य पापयुक्त होतेहैं ॥ २३० ॥

सूक्ष्मा रूक्षा परुषा स्थूला समपृथुला मलसमन्विता यस्य ॥
जिह्वा पीता स पुमान् मूर्खो दुःखाकुलः सततम् ॥ २३१ ॥

अन्वयः–(यस्य जिह्वा सूक्ष्मा रूक्षा परुषा स्थूला समपृथुला मलसमन्विता पीता भवति स पुमान् मूर्खः सततं दुःखाकुलो भवति) अस्यार्थः– जिसकी जीभ पतली रूखी कठोरमोटी बराबर चौडी मलसंयुक्त पीली होय सो पुरुष मूर्ख और सदा दुःखमें व्याकुल रहताहै ॥ २३१ ॥

रक्ताम्बुजतालुदरो भूमिपतिर्विक्रमी भवति मनुजः ॥
वित्ताढ्यः सिततालुर्गजतालुर्मंडलाधीशः ॥ २३२ ॥

अन्वयार्थौ–(रक्ताम्बुजतालुदरो मनुजः विक्रमी भूमिपतिर्भवति) लाल कमलके समान जिसके तलुवेका बीच होय वह पुरुष पराक्रमी पृथ्वीका राजा होताहै और (सिततालुः वित्ताढ्यो भवति) सफेद तलुवेवाला धनवान् होताहै और (गजतालुः मंडलाधीशः स्यात्) हाथीकेसे तलुवेवाला मंडलका स्वामी होताहै ॥ २३२ ॥

रूक्षं शबलं परुषं मलान्वितं न प्रशस्यते तालु ॥
कृष्णं कुलनाशकरं नीलं दुःखावहं पुंसाम् ॥ २३३ ॥

अन्वयार्थौ–(रूक्षं शबलं परुषं मलान्वितं पुंसां तालु न प्रशस्यते) रूखा, चित्र विचित्र, टेढा, मलयुक्त पुरुषोंका तालुवा अच्छा नहीं होता है और (कृष्णं तालु कुलनाशकरं भवति) काला तालुवा कुलके नाश करनेवाला होताहै और (नीलं तालु पुंसां दुःखावहं भवति) नीला तालुवा पुरुषको दुःखदेनेवाला होताहै ॥ २३३ ॥

अरुणतालुर्गुणयुक्तस्तीक्ष्णाग्रा घंटिका शुभा स्थूला ॥
लम्बा कृष्णा कठिना सूक्ष्मा चिपिटा नृणां न शुभा ॥२३४॥

अन्वयार्थौ–(अरुणतालुः गुणयुक्तो भवति) लाल तालुवाला गुण-वान् होताहै और (तीक्ष्णाग्रा नृणां घंटिका शुभा भवति) पैनी नोंककी मनुष्योंकी घाटी शुभ होतीहै और (स्थूला लंबा कृष्णा कठिना सूक्ष्मा चिपिटा न शुभा भवति) मोटी, लंबी, काली, कडी, छोटी, चिपटी शुभ नहीं होती है ॥ २३४ ॥

हसितमलक्षितदशनं किञ्चिद्विकासितकपोलमतिमधुरम् ॥
पुंसां धीरमकंपं प्रायेण स्यात् प्रधानानाम् ॥ २३५ ॥

अन्वयः–(अलक्षितदशनं किंचिद्विकसितकपोलम् अतिमधुरं धीरम् अकंपं हसितं प्रायेण प्रधानानां पुंसां स्यात्) नहीं दीखे दांत जिसमें कुछ विकासितकपोल, बहुत मीठा, धीरजयुक्त काँपनेसे रहित हँसना बहुधा प्रधान (मुखिया)पुरुषोंका होता है ॥ २३५ ॥

उत्कंपितांसकशिरः संमीलितलोचनं निपतदश्रु ॥
विकृष्टस्वरमुद्धतं मध्यमानामसकृदंते स्यात ॥ २३६ ॥

अन्वयः–(उत्कम्पितांसकशिरः संमीलितलोचनं निपतदश्रु विकृष्टस्वरम् अन्ते असकृत् उद्धतं (हास्यं) मध्यमानां स्यात् । अस्यार्थः–कँपते हैं कंधे और शिर जिसमें मूँदिगये हैं नेत्र और गिरते हैं आंसू जिसमें विकृत स्वरवाला वारवार अंतमें भारी ऐसा हास्य मध्यम पुरुषोंका होता है ॥ २३६ ॥

चतुरंगुलप्रमाणा स्थूलपुटांतस्तनुच्छिद्रा ॥
न च प्रपीना त्ववलिता चिरायुषां भोगिनां नासा ॥ २३७ ॥

अन्वयः—(चतुरंगुलप्रमाणा स्थूलपुटा अन्तस्तनुच्छिद्रा न च प्रपीना तु पुनःअवलिता नासा चिरायुषां भोगिनां च स्यात्)। अस्यार्थः—चार अंगुल प्रमाण लंबी,मोटी, भीतर छोटा छिद्र, बहुत मोटी न होय और सुकडी न होय ऐसी नाक बडी आयुवाले भोगी पुरुषकी होती है ॥ २३७ ॥

उन्नतनासः सुभगो गजनासः स्यात्सुखी महार्थाढ्यः ॥
ऋजुनासो भोगयुताश्चिरजीवी शुष्कनासः स्यात् ॥ २३८ ॥

अन्वयार्थौ—(उन्नतनासः सुभगः स्यात्) ऊंची नाकवाला बहुत अच्छे चलनवाला होताहै और (गजनासः सुखी च पुनः महार्थाढ्यः स्यात) हाथीकीसी नाकवाला सुखी और बहुत धनवान् होताहै और (ऋजुनासः भोगयुतः स्यात्) सीधी नाकवाला भोगयुक्त होताहै और (शुष्कनासः चिरजीवी स्यात) सूखी नाकवाला बहुत कालतक जीवताहै ॥ २३८ ॥

तिलपुष्पतुल्यनासः शुकनासो भूपतिर्मनुजः ॥
आढ्योग्रवक्रनासो लघुनासः शीलधर्मपरः ॥ २३९ ॥

अन्वयार्थौ--(तिलपुष्पतुल्यनासः (पुनः शुकनासः मनुजः भूपतिः स्यात) तिलके फूलके समान नाकवाला और तोतेकीसी नाकवाला मनुष्य राजा होताहै और (अग्रवक्रनासः आढ्यः स्यात) अग्रभागमें टेढी नाकवाला धनवान् होताहै और (लघुनासः शीलधर्मपरः स्यात) छोटी नाकवाला शीलधर्ममें तत्पर होताहै ॥ २३९ ॥

क्रमविस्तीर्णसमुन्नतनासा महीशितुर्भवति ॥
द्वेधा स्थिताग्रभागातिदीर्घह्रस्वा च निःस्वस्य ॥ २४० ॥

अस्यार्थः—क्रमसे फैलीहुई उठी नाक राजाकी होती है और दोप्रकारसे जिसका आगेका भाग स्थित होय और बहुत लंबी अथवा बहुत छोटी नाकवाला दारिद्र होताहै ॥ २४० ॥

कुंचत्या चौर्यरतिर्नासिकया चिपिटया युवतिमृत्युः ॥
छिन्नानुरूपया स्यादगम्यरमणीरतः पापः ॥२४१॥

अन्वयार्थौ-(कुंचत्या नासिकया चौर्यरतिः) सुकड़ती हुई नाकवाला चोरीमें प्रीति करनेवाला होताहै और (चिपिटया नासिकया युवतिमृत्युः स्यात्) चपटी नाकवालेकी, स्त्रीसे मृत्यु होती है और (छिन्नानुरूपया नासिकया अगम्यरमणीरतः पापः स्यात्) कटीसी सूरतकी नाकवाला जिनसे भोग उचित नहीं तिन स्त्रियोंसे भोग करनेवाला पापी होताहै॥ २४१॥

विकृता मध्यविहीना स्थूलाग्रा पिच्छिला सा दुःखस्य ॥
दक्षिणवक्रा नासा अभक्ष्यभक्षकक्रूरयोर्ज्ञेया ॥ २४२ ॥

अन्वयार्थौ-(विकृता मध्यविहीना स्थूलाग्रा पिच्छिला सा नासा दुःखस्य भवति) बुरी बीचमें हीन, आगेसे मोटी, और रपटनी ऐसी नाकवाला पुरुष दुःखी होताहै और (दक्षिणवक्रा नासा अभक्ष्यभक्षकक्रूरयोः ज्ञेया) दाहिनी ओरसे टेढी नाकवाला नहीं खाने योग्य वस्तुको खानेवाला और क्रूर होताहै ॥ २४२ ॥

निर्ह्रादि सानुनासादसकृत्क्षुतं भोगिनां धनवतां द्विः ॥
दीर्घायुषां प्रयुक्तं सुसहितं त्रिर्भवंति पुंसाम् ॥ २४३ ॥

अन्वयार्थौ-(भोगिनाम् असकृत् सानुनासात् निर्ह्रादि धनवतां द्विः क्षुतं भवति) भोगी पुरुषोंकी नाकसे बारबार शब्दवाली एक छींक होती है और धनवानोंकी दो छींक होतीहैं और (दीर्घायुषां पुंसां सुसहितं प्रयुक्तं त्रिः क्षुतं भवति) बडी आयुवाले पुरुषोंकी एक साथ करी हुई तीन छींक होतीहैं ॥ २४३ ॥

स्खलितं लघु च नराणां क्षुतं चतुर्भवति भोगवताम् ॥
ईषदनुनादसहितं करोति कुशलं निरंतरं पुंसाम् ॥ २४४ ॥

अन्वयार्थौ-(भोगवतां नराणां स्खलितं तथा लघु चतुः क्षुतं भवति) भोगी पुरुषोंकी कुछ खाली कुछ भरी और हलकी छींक होतीहैं और (ईषद-

नुनादसहितं क्षुतं पुंसां निरंतरं कुशलं करोति) थोडे शब्दयुक्त जो छींक है सो पुरुषोंको निरंतर कुशल करैहै अर्थात् मंगलकारी होतीहै ॥ २४४ ॥

अक्षिणी निर्मलनीलस्फटिकारुणमये ईषत्स्निग्धे ॥
स्यातामंतर्मेचककृशान्तशोणे दृशौ धनिनः ॥ २४५ ॥

अन्वयः-(निर्मलनीलस्फटिकारुणमये ईषत्स्निग्धे अक्षिणी (तथा) अन्तर्मेचककृशान्तशोणे दृशौ धनिनः स्याताम्) । अस्यार्थः--जिस पुरुषके दोनों नेत्र निर्मल और नीले स्फटिककेसे रंगके लालयुक्त कुछ चिकने बीचमें चमकदार काले और छोटे तथा लाल हैं कोर जिनके ऐसे नेत्र धनवानोंके होतेहैं ॥ २४५ ॥

हरितालाभैर्नयनैर्जायन्ते चक्रवर्तिनो नियतम् ॥
नीलोत्पलदलतुल्यैर्विद्वांसो मानिनो मनुजाः ॥ २४६ ॥

अन्वयार्थौ-(हरितालाभैर्नयनैः मनुजाः नियतं चक्रवर्तिनो जायन्ते) हरितालके रंगकेसे नेत्रवाले पुरुष निश्चय चक्रवर्ती होते हैं और (नीलोत्पलदलतुल्यैः नयनैः मनुजाः मानिनः विद्वांसो भवंति) नीलकमलके दलके समान नेत्रवाले पुरुष गर्ववाले और पंडित होते हैं ॥ २४६ ॥

लाक्षारुणैर्नरपतिर्नयनैर्मुक्तासितैः श्रुतज्ञानी ॥
भवति महार्थः पुरुषो मधुकांचनलोचनैः पिङ्गैः ॥ २४७ ॥

अन्वयार्थौ-(लाक्षारुणः नयनैः नरपतिर्भवति) लाखकेसे लालरंगके नेत्रवाला राजा होता है और (मुक्तासितैः नयनैः श्रुतज्ञानी भवति) मोतीकेसे सफेद रंगके नेत्रावाला शास्त्रज्ञानी होताहै और (पिङ्गैः मधुकांचनलोचनैः पुरुषः महार्थो भवति) पीले और शहद सोनेकेसे रंगके नेत्रवाला पुरुष बहुत धनवान् होताहै ॥ २४७ ॥

सेनापतिर्गजाक्षश्चिरजीवी जायते सुदीर्घाक्षः ॥
भोगी विस्तीर्णाक्षः कामी पारावताक्षोपि ॥ २४८ ॥

अन्वयार्थौ-(गजाक्षः सेनापतिः स्यात्) हाथीकेसे नेत्रवाला सेनापति होताहै और (सुदीर्घाक्षः चिरजीवी जायते) बहुत बडे नेत्रवाला बहुत समयतक

ते है और (विस्तीर्णाक्षः भोगी स्यात) लम्बे चौडे नेत्रवाला भोगी होताहै और(पारावताक्षः अपि कामी स्यात)कबूतरकेसे नेत्रवाला कामी होताहै२४८॥

श्यावदृशां सुभगत्वं स्निग्धदृशां भवति भूरिभोगित्वम् ।
स्थूलदृशां धीमत्त्वं दीनदृशां धनविहीनत्वम् ॥ २९४ ॥

अन्वयार्थौ-(श्यावदृशां सुभगत्वं भवति) धूमले नेत्रवाला अच्छा होताहै और (स्निग्धदृशां भूरिभोगित्वं भवति) चिकने नेत्रवाला बडा भोगी होताहै और (स्थूलदृशां धीमत्त्वं भवति) मोटे नेत्रवाला बुद्धिमान् होताहै और (दीनदृशां धनविहीनत्वं भवति) दीनदृष्टिवाला धनहीन होताहै ॥२४९॥

नकुलाक्षमयूराक्षा जायन्ते जगति मध्यमाः पुरुषाः ॥
अधमा मण्डूकाक्षाः काकाक्षा धूसराक्षाश्च ॥ २५० ॥

अन्वयार्थौ-(नकुलाक्षमयूराक्षाः पुरुषाः जगति मध्यमाः जायन्ते) नौले और मोरकेसे नेत्रवाले पुरुषको जगतमें मध्यम कहते हैं और (मंडूकाक्षाः तथा काकाक्षाः धूसराक्षाः अधमा जायन्ते) मेंढक कउवे और धूसर रंगके नेत्रवाले अधम होते हैं ॥ २५० ॥

बहुवयसो धूम्राक्षाः समुन्नताक्षा भवन्ति तनुवयसः ॥
विष्टब्धवर्तुलाक्षाः पुरुषा नातिक्रामन्ति तारुण्यम् ॥ २५१ ॥

अन्वयार्थौ-(धूम्राक्षाः बहुवयसो भवंति) धूमले नेत्रवाले बहुत आयुके होते हैं और (समुन्नताक्षाः तनुवयसो भवंति) ऊंची आँखवाले थोडी आयुके होते हैं और (विष्टब्धवर्तुलाक्षाः पुरुषाः तारुण्यं नातिक्रामन्ति) अकडे और गोलनेत्रवाले पुरुष तरुणाई नहीं उलाँघते अर्थात् तरुणाईके पहलेही मरजातेहैं ॥ २५१ ॥

ऋजु पश्यति सरलमनाः पश्यंत्यूर्द्ध्वं सदैव पुण्याढ्याः ॥
पश्यत्यधः सपापस्तिर्यक्पश्यति नरः क्रोधी ॥ २५२ ॥

अन्वयार्थौ-(सरलमनाः ऋजु पश्यति) सीधे मनवाला सीधा देखता है और (पुण्याढ्याः सदैव ऊर्द्ध्वं पश्यंति) पुण्यवान् सदा ऊपरको देखते हैं

और (सपापः अधः पश्यति) पापी नीचेको देखताहै और (क्रोधी नरः तिर्यक् पश्यति) क्रोधी मनुष्य तिरछा देखताहै ॥ २५२ ॥

सततमबद्धो लक्ष्म्या विघूर्णते कारणं विना दृष्टिः ॥
यस्य म्लाना रूक्षा सपापकर्मा पुमान् नियतम् ॥ २५३ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्य दृष्टिः कारणं विना विघूर्णते स सततं लक्ष्म्या अबद्धो भवति) जिसकी दृष्टि विना प्रयोजन घूमे सो पुरुष सदा लक्ष्मीहीन होताहै और (यस्य दृष्टिः म्लाना रूक्षा स पुमान् नियतं पापकर्मा भवति) जिसकी दृष्टि मलिन और सूखीसी होय सो पुरुष निश्चय पापकर्मका करनेवाला होताहै ॥ २५३ ॥

अंधः क्रूरः काणः काणादपि केकरो मनुजात् ॥
काणात्केकरतोऽपि क्रूरतरः कातरो भवति ॥ २५४ ॥

अन्वयार्थौ–(अंधः काणः क्रूरो भवति) अंधा और काणा क्रूर होताहै और (काणात् अपि मनुजात् केकरः क्रूरो भवति) काणेसे भी अधिक दृष्टि-फेरनेवाला मनुष्य क्रूर होताहै और (काणात् केकरतः अपि कातरः क्रूरतरो भवति) काणे और दृष्टि फेरनेवालेसे अधिक आँख चुरानेवाला बड़ा क्रूर अर्थात् खोटा होताहै ॥ २५४ ॥

अहिदृष्टिः स्याद्रोगी बिडालदृष्टिः सदा पापः ॥
दुष्टो दारुणदृष्टिः कुक्कुटदृष्टिः कलिप्रियो भवति ॥ २५५ ॥

अन्वयार्थौ–(अहिदृष्टिः रोगी स्यात्) सर्पकीसी दृष्टिवाला रोगी होताहै और (बिडालदृष्टिः सदा पापः स्यात्) बिलावकीसी दृष्टिवाला सदा पापी होताहै और (दारुणदृष्टिः दुष्टः स्यात्) भयकारी दृष्टिवाला दुष्ट होताहै और (कुक्कुटदृष्टिः कलिप्रियो भवति) मुरगेकीसी दृष्टिवाला लडाई करनेवाला होताहै ॥ २५५ ॥

अतिदुष्टा घूकाक्षा विषमाक्षा दुःखिताः परिज्ञेयाः ॥
हंसाक्षा धनहीना व्याघ्राक्षाः कोपना मनुजाः ॥ २५६ ॥

अन्वयार्थौ–(घूकाक्षाः अतिदुष्टाः भवंति) उल्लूकीसी आँखोंवाले बड़े दुष्ट अर्थात् दुःख देनेवाले होतेहैं और (विषमाक्षाः दुःखिताः परिज्ञेयाः) छोटी बड़ी आखोंवाले दुःखी जानने और (हंसाक्षाः धनहीनाः भवंति) हंसकीसी आँखोवाले दरिद्री होतेहैं और (व्याघ्राक्षाः मनुजाः कोपनाः भवंति) बघेरेकीसी आँखोंवाले पुरुष क्रोधी होते हैं ॥ २५६ ॥

नियतं नयनोद्धारः पुंसामत्यन्तकृष्णताराणाम् ॥
भूरिस्निग्धदृशः पुनरायुः स्वल्पं भवेत्प्राज्ञः ॥ २५७ ॥

अन्वयार्थौ–(अत्यन्तकृष्णताराणां पुंसां नियतं नयनोद्धारो भवति) बहुत काली आँखके तारेवाले मनुष्यकी आँखें निश्चय निकाली जायँ अर्थात् आँखें बनाई जायँ और (भूरिस्निग्धदृशः पुंसः आयुः स्वल्पं पुनः प्राज्ञः भवेत) बहुत चिकनी आँखवाले पुरुषकी आयु थोडी होतीहै फिरभी पंडित होय ॥ २५७ ॥

अतिपिङ्गलैर्विवर्णैर्विभ्रान्तैर्लोचनैश्चलैरशुभः ॥
अतिहीनारुणरूक्षैः सजलैः समलैर्नरा निःस्वाः ॥ २५८ ॥

अन्वयार्थौ–(अति पिंगलैः विवर्णैः विभ्रान्तैः चलैर्लोचनैः नरो अशुभः भवति) बहुत कंजे बुरे रंगके भ्रान्त चलायमान नेत्रोंसे पुरुष अशुभ होता है और (अतिहीनारुणरूक्षैः सजलैः समलैः लोचनैः नराः निःस्वाः भवंति) बहुत हीन छोटे लाल रूखे जलसे भरे मैलसहित, नेत्रवाले पुरुष दरिद्री होतेहैं ॥ २५८ ॥

इह वदनमर्द्धरूपं वपुषो यदि वा समनुरूपमिदम् ॥
तत्राऽपि वरा नासा ततोऽपि मुख्ये दृशौ पुंसाम् ॥२५९ ॥

अन्वयः–(इह वपुषः अर्द्धरूपं वदनं यदि वा इदं समनुरूपं तत्रापि नासा वरा ततः अपि पुंसां मुख्ये दृशौ भवतः) अस्यार्थः–इस शरीरमें

आधा रूप तो मुख है अथवा यह मुख बराबर है तिस मुखसेभी नाक श्रेष्ठ है और नाकसेभी पुरुषोंके नेत्र मुख्य होते हैं ॥ २५९ ॥

सुदृढैः कृष्णैर्नयनच्छेदस्थितैः पक्ष्मभिर्घनैः सूक्ष्मैः ॥
सौभाग्यं चिरमायुर्लभते मनुजो धनेशत्वम् ॥ २६० ॥

अन्वयः–(मनुजः सुदृढैः कृष्णैः नयनच्छेदस्थितैः घनैः सूक्ष्मैः पक्ष्मभिः सौभाग्यं चिरम् आयुः धनेशत्वं च लभते) अस्यार्थः–मनुष्य सुदृढ काले नेत्रोंके छेदोंमें स्थित घने पतले पक्ष्म (बरौनी) से अच्छा भाग्य बहुत कालकी आयु और धनका स्वामी होताहै ॥ २६० ॥

पक्ष्मभिरधमा विरलैः पिङ्गैः स्थूलैर्विवर्णैश्च ॥
पक्ष्मततिविरहिताः पुनरगम्यनारीरताः पापाः ॥ २६१ ॥

अन्वयार्थौ–(विरलैः पिंगैः स्थूलैः विवर्णैः पक्ष्मभिः अधमाः भवन्ति) विरल पीली, मोटी, बुरी रंगकी बरौनीवाले पुरुष अधम होते हैं और (पुनः पक्ष्मततिविरहिताः पुरुषाः अगम्यनारीरताः पापाः भवंति) फिर बरौनीकी पंक्ति रहित पुरुष जो स्त्री भोगनेयोग्य नहीं तिन स्त्रियोंको भोगनेवाले और पापी होते हैं ॥ २६१ ॥

अनिमेषो रहितः पुरुषः स्यादेकमात्रानिमेषोऽपि ॥
नियतं द्विमात्रनिमेषः परजन्माश्रित्य जीवति सः ॥ २६२ ॥

अन्वयार्थौ–(अनिमेषः एकमात्रानिमेषः अपि पुरुषः रहितः स्यात्) थोडे निमेषवाला और एक मात्रामें निमेष लगानेवाला पुरुष इष्टोंसे रहित होता है और (द्विमात्रनिमेषः सः पुरुषः नियतं परजन्माश्रित्य जीवति) दो मात्रामें जितना समय लगे उतने समयमें निमेषवाला पुरुष निश्चय दूसरे मनुष्यके आसरेसे रहै ॥ २६२ ॥

धनिनस्त्रिमात्रनिमेषास्तथा चतुर्मात्रनिमेषवंतोऽपि ॥
न तु पंचमात्रनिमेषाश्चिरायुषो भोगिनो धनिनः ॥ २६३ ॥

अन्वयार्थौ–(त्रिमात्रनिमेषाः तथा चतुर्मात्रनिमेषवंतः अपि धनिनो भवंति) तीन मात्रामें तथा चार मात्रामें पलक लगनेवाले धनी होते

हैं और (पंचमात्रनिमेषाः चिरायुषः भोगिनः धनिनो न तु भवन्ति) जिसका पाँचमात्रामें पलक लगै वह बड़ी आयुवाले आर भोगी धनी नहीं होतेहैं २६३॥

नयननिमेषैरल्पैर्मध्यैर्दीर्घैश्च जायते पुंसाम् ।
आयुः स्वल्पं मध्यं सुदीर्घमथानुपूर्विकया ॥ २६४ ॥

अन्वयः–(पुंसाम् अल्पैः मध्यैर्दीर्घैः नयननिमेषैः आयुः स्वल्पं मध्यं सुदीर्घं आनुपूर्विकया जायते) अस्यार्थः–जिनपुरुषोंके नेत्र थोड़े पलक लगनेवाले हों उनकी आयु थोड़ी होती है मध्यम हो तो मध्यमायु और जो बहुत देरमें पलक लगनेवाले होयँ उनकी दीर्घ आयु होती है इस क्रममें आयु जाननी चाहिये ॥ २६४ ॥

जानु प्रदक्षिणीकृत्य यावत् करो घण्टिकामादत्ते ।
तदिदमिह समयमानं मात्राशब्देन निगदति ॥ २६५ ॥

अन्वयः–(यावत् करः जानु प्रदक्षिणीकृत्य घंटिकाम् आदत्ते, तदिदं समयमानम् इह मात्राशब्देन निगदति) अस्यार्थः–हाथ जितनी देरमें जानुतक फिरके गलेकी घेंटीको पकड़े उतनेही समयको यहाँ मात्रा कहते हैं ॥ २६५ ॥

मन्दरमन्थानकमथ्यमानजलराशिघोषगंभीरम् ॥
बालस्य यस्य रुदितं स महीं महीयान् संपालयति ॥ २६६ ॥

अन्वयः–(यस्य बालस्य रुदितं मंदरमंथानकमथ्यमानजलराशिघोषगंभीरं स्यात् स महीयान् महीं संपालयति) अस्यार्थः–जिस बालकका रोना मंदराचल पर्वतसे मथे जाते समुद्रके शब्दके तुल्य गंभीर हो वह महान् पृथ्वीका पालनेवाला होताहै ॥ २६६ ॥

बाष्पाम्बुविनिर्मुक्तं स्निग्धमदीनरोदनं शस्तम् ॥
रूक्षं दीनं घर्घरमश्रु पुनर्दुःखदं पुंसाम् ॥ २६७ ॥

अन्वयार्थौ–(पुंसां विनिर्मुक्तं बाष्पाम्बु स्निग्धम् अदीनरोदनं शस्तम्) पुरुषके छोडे हुए आंसू चिकने गरीबोंकेसे नहीं ऐसा रोनेवाला श्रेष्ठ होताहै

और (पुनः रूक्षं दीनं घर्घरं अश्रु दुःखदं भवति) रूखे गरीबीके जिसमें घर्घर शब्दके आंसू निकलें वह दुःखका देनेवाला होताहै ॥ २६७ ॥

बालेन्दुनते वित्तं दीर्घे पृथुलोन्नते श्यामे ॥
नासावंशविनिर्गतदले इव भ्रूदले दिशतः ॥ २६८ ॥

अन्वयः–(बालेन्दुनते दीर्घे पृथुलोन्नते श्यामे नासावंशविनिर्गतदले इव भ्रूदले वित्तं दिशतः) अस्यार्थः–बालचंद्रमासी झुकीहुई, बडी, चौडी, ऊँची काली और नाकके बांशेसे निकली भौंहें बहुत धनको देतीहैं ॥ २६८ ॥

नृणामयुते स्निग्धे मृदुतनुरोमान्विते भ्रुवौ शस्ते ॥
हीने स्थूले सूक्ष्मे खरपिङ्गलरोमके न शुभे ॥ २६९ ॥

अन्वयार्थौ–(नृणां भ्रुवौ अयुते स्निग्धे मृदुतनुरोमान्विते शस्ते) मनुष्योंकी भौंहें मिली न होंय चिकनी और नरम छोटे रोमोंमे युक्त होंतो श्रेष्ठ होतीहैं और (हीने स्थूले सूक्ष्मे खरपिंगलरोमके न शुभे) हीन, मोटी, छोटी, खरदरी तथा पिंगलवर्णके रोमोंवाली भौंहें शुभ नहीं हैं ॥ २६९ ॥

ह्रस्वान्ता बहुदुःखानामगम्ययोषाजुषां च मध्यनताः ॥
स्तोकायुषामतिनता विषमाः खण्डा भ्रुवो दरिद्राणाम् २७० ॥

अन्वयार्थौ–(बहुदुःखानां पुरुषाणां भ्रुवः खंडा ह्रस्वांता भवंति) बहुत दुःखी पुरुषोंकी भौंहके खंड अर्थात् टूक छोटे छोरवाले होते हैं और (अगम्ययोषाजुषां भ्रुवः खंडा मध्यनता भवंति) अगम्य स्त्रियोंके गमन करनेवालोंकी भौंहके टुकडे बीचमें झुके हुए होतेहैं और (स्तोकायुषां भ्रुवः खंडा अतिनताः भवंति) थोडी आयुवालोंकी भौंहके खंड बहुत झुकेहुए होतेहैं और (दरिद्राणां भ्रुवः खंडाः विषमाः भवंति) दरिद्रियोंकी भौंहके खंड ऊंचे नीचे होतेहैं ॥ २७० ॥

धनवन्तः सुतवन्तः शिखरैः पुरुषाः समुन्नतैर्विशदैः ॥
निम्नैः पुनर्भवन्ति द्रव्यसुखापत्यपरिहीनाः ॥ २७१ ॥

अन्वयार्थौ–(पुरुषाः समुन्नतैः विशदैः शिखरैः धनवन्तः सुतवन्तो भवन्ति) पुरुष अच्छी और ऊंची भौंहों कारके धन और संतानवाले होतेहैं और

(पुनः निम्नैः शिखरैः द्रव्यसुखापत्यपरिहीनाः भवन्ति) और नीची भौहों-से धन, सुख, तथा संतानसे रहित होतेहैं ॥ २७१ ॥

परिपूर्णकर्णपाली पिप्पलिकाद्यवयवः सुसंस्थानः ॥
लघुविवरो विस्तीर्णः कर्णः प्रायेण भूमिभुजाम् ॥ २७२ ॥

अस्यार्थः—परिपूर्ण हैं कानके अंग जिसमें पिप्पलिकाको आदि अवयव अच्छे सुडौल बनेहुए, छोटे छेदवाले ऐसे बडे कान बहुधा राजाओंके होतेहैं ॥ २७२ ॥

आद्यः प्रलम्बकर्णः सुखी स्वभावपीनमृदुकर्णः ॥
मतिमान्मूषककर्णश्चमूपतिः शङ्खकर्णः स्यात् ॥ २७३ ॥

अन्वयार्थौ—(प्रलंबकर्णः स्वभावमृदुपीनकर्णः आद्यः सुखी स्यात्) लम्बे कानवाला और स्वभाव करिके नरम तथा मोटे कानोंवाला पहलीही अवस्थामें सुखी होताहै और (मूषककर्णः मतिमान् भवेत) मूसेकेसे कान-वाला बुद्धिमान् होताहै और (शंखकर्णः चमूपतिः स्यात्) शंखकेसे कानों-वाला सेनाका पति अर्थात् स्वामी होताहै ॥ २७३ ॥

चिपिटश्रवणैर्भोगी दीर्घायुर्दीर्घरोमाभिः श्रवणैः ॥
अतिपीनैरतिभोगी श्रवणैर्जननायको भवति ॥ २७४ ॥

अन्वयार्थौ—(चिपिटश्रवणैः भोगी भवति) मनुष्य चिपकेसे कानों-से भोगी होताहै और (दीर्घरोमाभिः श्रवणैः दीर्घायुर्भवति) बडे २ रोमोंवाले कानोंसे बडी आयुवाला होताहै (और अतिपीनश्रवणैः भोगी तथा जननायको भवति) बहुत मोटे कानोंसे भोगी और मनुष्योंका स्वामी होताहै ॥ २७४ ॥

ह्रस्वैर्निःस्वाः कर्णैर्निर्मांसैः पापमृत्यवो ज्ञेयाः ॥
व्यालंबिभिः शिरालैः क्रूराः स्युः प्रायशः कुटिलैः ॥ २७५ ॥

अन्वयार्थौ—(ह्रस्वैः कर्णैः नराः निःस्वाः भवन्ति) छोटे कानोंसे मनुष्य दरिद्री होतेहैं और (तथा निर्मांसैः पापमृत्यवः ज्ञेयाः) मांसरहित का-

नोंसे पापसे मरनेवाले होतेहैं और (व्यालंबिभिः शिरालैः तथा कुटिलैः कर्णैः प्रायशः क्रूराः स्युः) लम्बे नसीले और कुटिल अर्थात् टेढे कानोंसे बहुधा क्रूर अर्थात खोटे होतेहैं ॥ २७५ ॥

येषां पृथुलाः क्षुद्राः कर्णाः स्युः कर्णशष्कुलीहीनाः ॥
स्वल्पायुषो दरिद्रा विलोक्यमाना विरूपास्ते ॥ २७६ ॥

अन्वयार्थौ-(येषां कर्णाः पृथुलास्ते पुरुषाः स्वल्पायुषः स्युः) जिनके कान चौडे होयँ वे पुरुष स्वल्पायु होतेहैं और (येषां कर्णाः क्षुद्राः ते दरिद्रा भवंति) जिनके कान ओछे होवें वे दरिद्र होतेहैं और (येषां कर्णशष्कुलीहीनाः ते पुरुषाः विरूपाः विलोक्यमानाः भवन्ति) बीचकी नसोंसे हीन कानोंवाले पुरुष देखनेमें कुरूप ॥ २७६ ॥

विपुलमूर्द्धमधिकमुन्नतमर्द्धेन्दुसम्मितं राज्यम् ॥
प्रदिशत्याचार्यपदं शुक्तिविशालं नृणां भालम् ॥ २७७ ॥

अन्वयार्थौ-(विपुलम् ऊर्द्धम् अधिकम् उन्नतम् अर्द्धेन्दुसंमितं नृणां भालं राज्यं प्रदिशति) मनुष्यका लिलार चौडा ऊंचा और आधे चंद्रमाके आकार होय तो राज्य देनेवाला होता है और (शुक्तिविशालं नृणां भालम् आचार्यपदं प्रदिशति) सीपीकीनाई चमकदार और बडा मनुष्यका लिलार होय तो आचार्यपदको देनेवाला होता है ॥ २७७ ॥

स्वल्पैर्धर्मप्रवणा धनहीनाः संवृतैस्तथाविषमैः ॥
निम्नैः केवलबंधनवधभाजः क्रूरकर्माणः ॥ २७८ ॥

अन्वयार्थौ-(स्वल्पैः भालैः धर्मप्रवणाः भवंति) छोटे लिलारवाले धर्ममें तत्पर होते हैं और (संवृतैः तथा विषमैः भालैः धनहीनाः भवन्ति) ढके वा औंधे तथा ऊंचे नीचे लिलारवाले धनहीन होते हैं और (निम्नैः भालैः केवलबंधनवधभाजः क्रूरकर्माणो भवंति) नीचे लिलारवाले केवल कैद मार इनके पानेवाले और क्रूरकम अर्थात् खोटे काम करनेवाले होते हैं ॥ २७८ ॥

भालस्थलस्थिताभिः सुशिराभिरधमाः सदैव पापकराः ॥
अभ्युन्नताभिराढ्यास्ताभिरपि स्वस्तिकाकृतिभिः ॥ २७९ ॥

अन्वयार्थौ–(भालस्थलस्थिताभिः सुशिराभिः रेखाभिः अधमाः सदैव पापकराः भवन्ति) लिलारमें स्थित नसों करिके जो रेखा होय तो नीच और सदा पाप करनेवाले होते हैं और (अभ्युन्नताभिः तथा स्वस्तिकाकृतिभिः रेखाभिः अपि ताभिः आढ्याः भवन्ति) ऊंची और सांथियेके आकार उनही लिलारकी नसोंसे जो रेखा होय तो धनवान् अर्थात धनाढ्य होते हैं ॥ २७९ ॥

रेखाभिर्वर्षशतं पञ्चभिरायुर्ललाटसंस्थाभिः ॥
पुरुषाणां स्त्रीणां वा कर्मकरत्वं करोति श्रीः ॥ २८० ॥

अन्वयार्थौ–(ललाटसंस्थाभिः पंचभिः रेखाभिः पुरुषाणां वा स्त्रीणां वर्षशतम् आयुर्भवति) लिलारमें स्थित जो पाँच रेखा होयँ तो पुरुष वा स्त्रीकी सौवर्षकी आयु होतीहै और (श्रीः कर्मकरत्वं करोति) लक्ष्मी उनके कामको करनेवाली अर्थात् टहलनी होती है ॥ २८० ॥

भालस्थलस्थितेन स्फुटेन रेखाचतुष्टयेन नृणाम् ॥
वर्षाण्यशीतिरायुर्वसुधेशत्वं पुनर्भवति ॥ २८१ ॥

अन्वयार्थौ–(भालस्थलस्थितेन स्फुटेन रेखाचतुष्टयेन नृणाम् अशीतिः वर्षाणि आयुर्भवति) लिलारमें स्थित प्रकट चार रेखा करिके मनुष्यकी अस्सीवर्षकी आयु होती है और (पुनः वसुधेशत्वं भवति) और पृथ्वीका राजा होता है ॥ २८१ ॥

स्यादायुर्लेखाभिस्तिसृभिर्द्वाभ्यामथैकया नियतम् ॥
शरदां सप्ततिषष्टिं चत्वारिंशदपि क्रमशः ॥ २८२ ॥

अन्वयार्थौ–तिसृभिः रेखाभिः शरदां सप्ततिः भवति) तीन रेखा करिके ७० वर्षकी आयु होती है और (द्वाभ्यां रेखाभ्यां षष्टिर्भवति) दो रेखा करिके ६० वर्षकी आयु होती है और (एकया रेखया चत्वारिंशत्

अपि क्रमशः नियतम् आयुर्भवति) एक रेखा करिके ४० वर्षकी क्रमसे निश्चय आयु होती है ॥ २८२ ॥

भाले लेखाहीने पंचाधिकविंशतिसमाः ॥
आयुः स्याद्ध्रुवमखिला जायंते संपदः सपदि ॥ २८३ ॥

अन्वयार्थौ–(भाले लेखाहीने सति पंचाधिकविंशतिसमाः आयुः स्यात्) जो रेखारहित लिलार होय तो २५ वर्षका आयु होय और (ध्रुवम् अखिलाः सपदि संपदो जायन्ते) निश्चय संपूर्ण संपदा शीघ्रही होयँ ॥ २८३ ॥

यदि वा तिर्यग्दीर्घास्तिस्रो रेखाः शतायुषां भाले ॥
भूमिजुषां तु चतस्रः पुनरायुः पंचहीनशतम् ॥ २८४ ॥

अन्वयार्थौ–(यदि वा शतायुषां भाले दीर्घा तिर्यक् तिस्रः रेखा भवंति) अथवा सौवर्षकी आयुवालोंके लिलारमें बडी तिरछी तीन रेखा होतीहैं और (पुनः भूमिजुषां तु चतस्रः पंचहीनशतम् आयुर्भवति) फिर भूमिवालोंके लिलारमें बडी तिरछी चार रेखा होय तो पांच कम सौवर्षकी आयु होतीहै २८४॥

जीवति वर्षाण्यशीतिः केशान्तोपगते रेखे ॥
भालेन वर्षनवतिः पुरुषो रेखाचितेन पुनः ॥ २८५ ॥

अन्वयार्थौ–(यदि केशान्तोपगते रेखे भवतः तर्हि अशीतिः वर्षाणि नरो जीवति) जो दो रेखा केशोंके अंततक जाँय तो वह पुरुष ८० वर्ष तक जीवैहै और (पुनः रेखाचितेन भालेन पुरुषः वर्षनवतिर्जीवति) जो फिर अनेक रेखा करिके युक्त लिलार होय तो वह पुरुष ९०वर्ष जीवैहै ॥ २८५ ॥

रेखाः सप्ततिरायुः पंचैवाग्रस्थिताः पुनः षष्टिः ॥
बह्व्यो नृणां शतार्द्धं दशोनमपि भगुरा ददते ॥ २८६ ॥

अन्वयार्थौ–(यदि पंचैव रेखा अग्रस्थिता भवंति तदा सप्ततिर्वा षष्टिरायुर्भवति) जो पांच रेखा आगे स्थित होंय तौ ७० अथवा ६० वर्षकी आयु होतीहै और (नृणां बह्व्यः रेखाः शतार्द्धम् आयुः ददते) मनुष्योंके

बहुत रेखा होंय तो) ५० वर्षकी आयुहोती है और (यदि भंगुराः (पंचरेखा भवंति तदा दशोनम् अपि शतार्द्धम् आयुः ददते) जो वेही पांचरेखा टूटीफूटी होंय तो दश कम पचास अर्थात् ४० वर्षकी आयु होतीहै ॥ २८६ ॥

भ्रूयुग्मोपगताभिस्त्रिंशद्वर्षाणि जीवति शरीरी ।
विंशत्यब्दानि पुनर्लेखाभिर्वा च वक्राभिः ॥ २८७ ॥

अन्वयार्थौ–(भ्रूयुग्मोपगताभिः रेखाभिः शरीरी त्रिंशद्वर्षाणि जीवति) दोनों भौंहेंके ऊपर जो रेखा होंय तो मनुष्य तीस वर्षतक जीवैहै और (पुनः वक्राभिः रेखाभिः विंशत्यब्दानि जीवति) फिर जो वेही टेढी रेखा होंय तो २० वर्ष जीवैहै ॥ २८७ ॥

छिन्नाभिरगम्यस्त्रीगामी क्षुद्राभिरपि नरोऽल्पायुः ॥
रेखाभिर्मनुजः स्यादित्याह सुमंतविप्रेन्द्रः ॥ २८८ ॥

अन्वयार्थौ–(छिन्नाभिः रेखाभिः अगम्य स्त्रीगामी स्यात) टूटी फूटी रेखाओंसे मनुष्य अगम्या स्त्रीसे भोग करनेवाला होय और (क्षुद्राभिः अपि रेखाभिः नरः अल्पायुः स्यात) छोटी रेखाओंसेभी मनुष्य थोडी आयु-वाला होताहै और (रेखाभिः (एवम्) मनुजः स्यात् इति सुमन्तविप्रेन्द्र आह) सुमंत नाम ब्राह्मणने मनुष्यकी ऐसी रेखाओंका यह फल कहाहै ॥ २८८ ॥

श्रीवत्सकार्मुकाद्या यस्य शिरारोमभिः कृता भाले ॥
रेखाभिर्वा नृपतिर्भोगी वा जायते सपदि ॥ २८९ ॥

अन्वयः–(यस्य भाले श्रीवत्सकार्मुकाद्याः शिरारोमभिः रेखाभिः कृता भवंति स नृपतिर्वा भोगी सपदि जायते) अस्यार्थः--जिसके लिलारमें नसों रोमोंकी रेखाओं करिके श्रीवत्स और धनुषको आदि लेकर चिह्न हों सो पुरुष राजा वा भोगी शीघ्रही होता है ॥ २८९ ॥

मस्तकमिभकुम्भनिभं भूमिभुजां मंडलं गवाद्यानाम् ॥
भोगवतां भवति समं क्रमोन्नतं मण्डलेशानाम् ॥२९०॥

अन्वयार्थौ–(भूमिभुजां मस्तकम् इभकुंभनिभं भवति) राजाओंके मस्तक हाथीके मस्तकके तुल्य होते हैं और (गवाद्यानां मंडलं भवति)

होता है और (वननतमौलिः सदा निंद्यः स्यात्) कडे और झुके हुए मस्तकवाला सदा निन्दनीय होता है ॥ २९३ ॥

अत्रुटिताग्राः स्निग्धा ऋजवो मृदवः समास्तनीयांसः ॥
अस्तोकदीर्घबहवस्तरङ्गिणो भूभुजां केशाः ॥ २९४ ॥

अन्वयः—(अत्रुटिताग्राः स्निग्धाः ऋजवः मृदवः समाः तनीयांसः अस्तोकदीर्घबहवः तरंगिणः भूभुजां केशाः भवंति) अस्यार्थः—नहीं टूटे हैं शिरे जिनके और चिकने, सीधे, नरम, बराबर, पतले, बहुत लंबे और बहुत छोटे नहीं व बलदार ऐसे बाल राजाओंके होते हैं ॥२९४॥

ऊर्ध्वा रूक्षाः कपिलाः स्थूला विषमाः खरविभिन्नाग्राः ॥
अतिह्रस्वदीर्घकुटिला जटिला विरला दरिद्राणाम् ॥ २९५ ॥

अन्वयः—(ऊर्ध्वाः रूक्षाः कपिलाः स्थूलाः विषमाः खरविभिन्नाग्राः अतिह्रस्वदीर्घकुटिलाः जटिला विरला दारिद्राणां भवंति) अस्यार्थः—ऊंचे, रूखे, भूरे, ऊंचे नीचे, खरदरे, आगे फटे हुए, बहुत छोटे, बहुत बड़े, बहुत टेढे, बलदार मिलेहुये, जुदे जुदे ऐसे बाल दरिद्रियोंके होते हैं ॥ २९५ ॥

अंगं यद्यपि पुंसां स्त्रीणां वा पिशितविरहितं सूक्ष्मम् ॥
परुषं शिरावनद्धं तत्तदनिष्टं परं ज्ञेयम् ॥ २९६ ॥

अन्वयः—(यद्यपि पुंसाम् अंगं वा स्त्रीणाम् अपि अंगं पिशितविरहितं सूक्ष्मं परुषं शिरावनद्धं तत्तत्परम् अनिष्टं ज्ञेयम्) अस्यार्थः—जिन पुरुषोंका अंग वा स्त्रियोंका अंग मांसरहित, पतला, खरदरा चमकती हैं नसें जिसमें ऐसा हो तो बुरा है ॥ २९६ ॥

आयुःपरीक्षा पूर्वं नृणां लक्षणं तदा ज्ञेयम् ॥
व्यर्थं लक्षणज्ञानं लोके क्षीणायुषां यस्मात् ॥ २९७ ॥

अन्वयः—(नृणाम् आयुःपरीक्षा पूर्वं तदा लक्षणं ज्ञेयं यस्माल्लोके क्षीणायुषां लक्षणज्ञानं व्यर्थं भवति) अस्यार्थः—मनुष्योंकी आयु परीक्षापूर्वक होय तो वह लक्षणभी ठीक है जिससे कि लोकमें बहुत कमती आयुवालोंके लक्षण झूंठे होतेहैं ॥ २९७ ॥

उनके यहां गौ आदिका समूह होता है और (भोगवतां मस्तकं समं भवति) भोगनेवालोंका मस्तक बराबर होता है और (मंडलेशानां मस्तकं क्रमोन्नतं भवति) मंडलेशोंका मस्तक क्रम करिके ऊंचा होता है ॥ २९० ॥

विकसच्छत्राकारं यस्य शिरो युवतिकुचनिभं वापि ॥
नृपतिः स सार्वभौमो निम्नं वा यस्य स महीशः ॥२९१॥

अन्वयार्थौ–(यस्य शिरः विकसच्छत्राकारं वा युवतिकुचनिभं भवति स सार्वभौमः नृपतिर्भवति) जिसका मस्तक खुलेहुए छातेके आकार वा स्त्रीके कुचके आकार हो वह सर्वभूमिका राजा होता है और (यस्य शिरः निम्नं स महीशो भवति) जिसका मस्तक नीचा होय सो भूमिका राजा होता है ॥ २९१ ॥

विषमो धनहीनानां करोटिकाभश्चिरायुषो मूर्द्धा ॥
द्राघिष्ठो दुःखवतां चिपिटो मातृपितृघ्नानाम् ॥ २९२ ॥

अन्वयार्थौ–(धनहीनानां मूर्द्धा विषमो भवति) दरिद्रोंका मस्तक ऊंचानीचा होता है और (चिरायुषः मूर्द्धा करोटिकाभो भवति) बडी आयुवालेका मस्तक खोपडीके आकार होता है और (दुःखवतां मूर्द्धा द्राघिष्ठो भवति) दुःख पानेवालोंका मस्तक बहुतही लम्बा होता है और (मातृपितृघ्नानां मूर्द्धा चिपिटो भवति) माता पिताके मारनेवालोंका मस्तक चिपटासा होताहै ॥ २९२ ॥

धनविरहितो द्विमौलिः पापरतो मीनमौलिरतिदुःखी ॥
अधमरुचिर्घटमौलिर्घननतमौलिः सदा निन्द्यः ॥ २९३ ॥

अन्वयार्थौ–(द्विमौलिः धनविरहितः स्यात्) दो मस्तकवाला दरिद्री होता है और (मीनमौलिः पापरतः वा अतिदुःखी स्यात्) मछलीकेसे मस्तकवाला पाप करनेमें चाह रक्खै और बहुत दुःखी होता है और (घट-मौलिः अधमरुचिः स्यात) घडेकेसे मस्तकवाला नीचोंमें संगति करनेवाला

होता है और (घननतमौलिः सदा निंद्यः स्यात्) कडे और झुके हुए मस्तकवाला सदा निन्दनीय होता है ॥ २९३ ॥

अत्रुटिताग्राः स्निग्धा ऋजवो मृदवः समास्तनीयांसः ॥
अस्तोकदीर्घबहवस्तरङ्गिणो भूभुजां केशाः ॥ २९४ ॥

अन्वयः—(अत्रुटिताग्राः स्निग्धाः ऋजवः मृदवः समाः तनीयांसः अस्तोकदीर्घबहवः तरंगिणः भूभुजां केशाः भवंति) अस्यार्थः—नहीं टूटे हैं शिरे जिनके और चिकने, सीधे, नरम, बराबर, पतले, बहुत लंबे और बहुत छोटे नहीं व बलदार ऐसे बाल राजाओंके होते हैं ॥ २९४ ॥

ऊर्ध्वा रूक्षाः कपिलाः स्थूला विषमाः खरविभिन्नाग्राः ॥
अतिह्रस्वदीर्घकुटिला जटिला विरला दरिद्राणाम् ॥ २९५ ॥

अन्वयः—(ऊर्ध्वाः रूक्षाः कपिलाः स्थूलाः विषमाः खरविभिन्नाग्राः अतिह्रस्वदीर्घकुटिलाः जटिला विरला दरिद्राणां भवंति) अस्यार्थः—ऊंचे, रूखे, भूरे, ऊंचे नीचे, खरदरे, आगे फटे हुए, बहुत छोटे, बहुत बड़े, बहुत टेढे, बलदार मिलेहुये, जुदे जुदे ऐसे बाल दारिद्रियोंके होते हैं ॥ २९५ ॥

अंगं यद्यपि पुंसां स्त्रीणां वा पिशितविरहितं सूक्ष्मम् ॥
परुषं शिरावनद्धं तत्तदनिष्टं परं ज्ञेयम् ॥ २९६ ॥

अन्वयः—(यद्यपि पुंसाम् अंगं वा स्त्रीणाम् अपि अंगं पिशितविरहितं सूक्ष्मं परुषं शिरावनद्धं तत्तत्परम् अनिष्टं ज्ञेयम्) अस्यार्थः—जिन पुरुषोंका अंग वा स्त्रियोंका अंग मांसरहित, पतला, खरदरा चमकती हैं नसें जिसमें ऐसा हो तो बुरा है ॥ २९६ ॥

आयुःपरीक्षा पूर्वं नृणां लक्षणं तदा ज्ञेयम् ॥
व्यर्थं लक्षणज्ञानं लोके क्षीणायुषां यस्मात् ॥ २९७ ॥

अन्वयः—(नृणाम् आयुःपरीक्षा पूर्वं तदा लक्षणं ज्ञेयं यस्माल्लोके क्षीणायुषां लक्षणज्ञानं व्यर्थं भवति) अस्यार्थः—मनुष्योंकी आयु परीक्षापूर्वक होय तो वह लक्षणभी ठीक है जिससे कि लोकमें बहुत कमती आयुवालोंके लक्षण झूंठे होतेहैं ॥ २९७ ॥

यल्लक्ष्म पुनः शुभमपि करे रेखाप्रभृतिकं च संवदति ॥
बाह्याभ्यन्तरमपरं तत्र समुद्रेण निर्दिष्टम् ॥ २९८ ॥

अन्वयः—(यल्लक्ष्म शुभम् अपि पुनः करे रेखाप्रभृतिकं च पुनः संवदति अपरं लक्षणं बाह्याभ्यंतरं तत्र समुद्रेण निर्दिष्टम्) अस्यार्थः—जो लक्षण शुभभीहैं और हाथकी रेखाओंका लक्षणभी कहताहै तिन दोनोंमें बाहिरी और भीतरी लक्षणोंको औरभी जानने चाहियें यह समुद्रने कहाहै ॥ २९८ ॥

इति महत्तमश्रीनरसिंहात्मजदुर्लभराजविरचिते तिलकापरनाम्नि
नरस्त्रीलक्षणशास्त्रे शारीरिकाधिकारः प्रथमः ॥ १ ॥

संहतिसारानूकस्नेहोन्मानप्रमाणमानानि ॥
क्षेत्राणि प्रकृतिरथो मिश्रमेतदपि शारीरम् ॥ १ ॥

अन्वयः—(संहतिसारानूकस्नेहोन्मानप्रमाणमानानि क्षेत्राणि प्रकृतिः अपि एतत् मिश्रं शारीरम्) अस्यार्थः—बनावट जोड बल आचरण प्रीति उँचाई संख्या चौडाई आकार स्वभाव इनके मिलनेका नाम क्षेत्र और शारीर है॥ १ ॥

यत्र मिथः श्लिष्टत्वं मांसस्नाय्वस्थिसंधिबंधानाम् ॥
संहननं संघातः संहतिरिति कथ्यते सद्भिः ॥ २ ॥

अन्वयः—(यत्र मांसस्नाय्वस्थिसंधिबंधानां मिथः श्लिष्टत्वं संहननं संघातः इति सद्भिः संहतिः कथ्यते) अस्यार्थः—मांस बडी बडी नसें और हाड जोडकी जगह बंधान आपसमें मिलना इसीका न संहनन और संघात है सत्पुरुष इसको संहति कहतेहैं ॥ २ ॥

यंत्रारिष्टमिवांगं प्रत्यंगं दृश्यते देहे ॥
संस्थानेन सुरूपं संहतिर्भवति सा महेच्छ ॥ ३ ॥

अन्वयः—(देहे यंत्रारिष्टम् इव अंगं प्रत्यंगं दृश्यते संस्थानेन सुरूपं हे महेच्छ सा संहतिर्भवति) अस्यार्थः—शरीरमें यंत्रकीसी भांति शुभाशुभ

लक्षण अंग अंगमें दीखतेहैं सोई बनावट करिके रूप होवाहै हे महेच्छ अर्थात् महाशय सोई संहति होतीहै ॥ ३ ॥

मांसास्थिसन्धिबंधो ह्यशिथिलो हि लक्ष्यते यस्य ॥
स च संहतिमान्धन्यो दीर्घायुर्जायते नियतम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—(यस्य मांसास्थिसन्धिबंधः अशिथिलः लक्ष्यते स संहतिमान् नियतं धन्यः दीर्घायुर्जायते) अस्यार्थः—जिसका मांस, हाड, सन्धिबंधन, ढीले नहीं दीखें सो संहतिमान्, ऐसे शरीरवाला निश्चय धन्य और बडी आयुवाला होताहै ॥ ४ ॥

संहतिरहितो रूक्षः पिशितविहीनः शिरायुतः शिथिलः ॥
स्थूलास्थिसन्निवेशो भवति क्लेशावहः स पुमान् ॥ ५ ॥

अन्वयः-(यः पुरुषः संहतिरहितः रूक्षः पिशितविहीनः शिरायुतः शिथिलः स्थूलास्थिसन्निवेशः स पुमान् क्लेशावहः भवति) अस्यार्थः—जिस पुरुषका शरीर अच्छी बनावटका नहीं होय और रूखा, मांसरहित थोड़े मांसका, बड़ी बड़ी नसें दीखें और ढीला, मोटे हाड़ होयँ जिसमें सो ऐसा पुरुष दुःख भोगनेवाला होताहै ॥ ५ ॥

अथ सारः ।

त्वग्रक्तमांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राण्यनुक्रमेण नृणाम् ॥
साराः सप्त भवेयुः समासतस्तत्फलं ब्रूमः ॥ ६ ॥

अन्वयः—(अनुक्रमेण नृणां सप्त साराः भवेयुः त्वक् रक्तं मांस मेदः अस्थि मज्जा शुक्रं समासतः तत्फलं वयं ब्रूमः) अस्यार्थः—क्रमसे मनुष्योंके ७ सार होतेहैं-चर्म, रक्त, मांस, चर्बी, हाड़, मज्जा, वीर्य, सो संक्षेपसे उनका फल हम कहतेहैं ॥ ६ ॥

स्निग्धत्वचो बोधनाढ्यास्तनुत्वचः कुबुद्धयो मनुजाः ॥
सुभगा मृदुत्वचः स्युः प्रागुक्तत्रित्वचः सुखिनः ॥ ७ ॥

अन्वयः—(स्निग्धत्वचः मनुजाः बोधनाढ्याः, तनुत्वचः मनुजाः कुबुद्धयः, मृदुत्वचः सुभगाः स्युः, प्रागुक्तत्रित्वचः सुखिनो भवन्ति) अस्यार्थः—चिकनी खालवाले मनुष्य ज्ञानवान् होतेहैं और पतली खालवाले मनुष्य खोटी बुद्धिके होतेहैं और नरम खालवाले सुंदर होतेहैं और पहले कहीगई तीन त्वचावाले सुखी होतेहैं ॥ ७ ॥

रसनोष्ठदन्तपीठकरांघ्रिगुदतालुलोचनान्तेन ॥
रक्तेन रक्तसारा धनतनयस्त्रीसुखोपेताः ॥ ८ ॥

अन्वयः—(रसनोष्ठदंतपीठकरांघ्रिगुदतालुलोचनान्तेन रक्तेन मनुजाः रक्तसाराः धनतनयस्त्रीसुखोपेताः भवंति) अस्यार्थः—जीभ, होठ, मसूड़े, हाथ, पाँव, गुदा, तालुवा, नेत्रोंके अंत, जो ये सात लाल होयँ तो वह पुरुष रक्तसार कहातेहैं, वे धन, संतान, स्त्री करिके युक्त सुखी होतेहैं ॥ ८ ॥

सर्वाङ्गीणने चितो यथाप्रदेशं घनेन मांसेन ॥
उक्तः स मांससारो विद्याधनरूपपरिकलितः ॥ ९ ॥

अन्वयः—(यथाप्रदेशं घनेन सर्वाङ्गीणेन मांसेन चितः स मांससारः उक्तः विद्याधनरूपपरिकलितो भवति) अस्यार्थः—जैसा जिस जगह चाहिये वैसे कडे मांस करके जो पुरुष युक्त होय सो मांससार कहाताहै और वह विद्या, धन, रूप इन करिके युक्त होताहै ॥ ९ ॥

नखदन्तदृष्टिस्निग्धो मेदःसारः सुखान्वितः सुतवान् ॥
स्थूलास्थिरस्थिसारः कान्तो विद्यां गतः सबलः ॥ १० ॥

अन्वयार्थौ—(नखदांतदृष्टिस्निग्धःमनुजः मेदः सारो भवति सुखान्वित सुतवान् स्यात्) नख, दाँत, दृष्टि, यह जिस पुरुषके चिकने होयँ वह मेद सार कहाताहै, वह सुखी और पुत्रवान् होताहै और (स्थूलास्थिरस्थिसार मनुजः कान्तः विद्यां गतः सबलः स्यात्) मोटे हाडवाला अस्थिसार कहाताहै वह पुरुष विद्यावान् और बलवान् होताहै ॥ १० ॥

घनशुक्रोपचययुतः संस्थितियों महाबलः स्निग्धः ॥
कथितः समज्जसारो बहुतनयः स्त्रैणसुखभागी ॥ ११ ॥

अन्वयः—(यः घनशुक्रोपचययुतः संस्थितिः स्निग्धः महाबलः स मज्जसारः कथितः स एव बहुतनयः स्त्रैणसुखभागी स्यात्) । अस्यार्थः—जो बहुत वीर्यके समूहसे स्थित है, जिसकी मज्जा चिकनी बहुत बल करिके युक्त होय, सो मज्जसार कहाताहै सो पुरुष बहुत पुत्र और स्त्रियोंके सुखका भोगनेवाला होताहै ॥ ११ ॥

यो भवति शुक्रसारो विद्यासौभाग्यरूपपरिकलितः ॥
प्रायेण सत्तसारः सर्वोत्कर्षप्रदः पुरुषः ॥ १२ ॥

अन्वयार्थौ—(यः पुरुषः शुक्रसारो भवति स विद्यासौभाग्यरूपपरिकलितः स्यात) जो पुरुषके शुक्रसार अर्थात् वीर्यका बल होय तो विद्या और सौभाग्य रूप करिके युक्त होताहै और (यः पुरुषः प्रायेण सत्तसारो भवति सः सर्वोत्कर्षप्रदो भवति) जो पुरुषके बहुत करिके सत्तसार होय तो सब प्रकार करिके अधिकताका देनेवाला होताहै ॥ १२ ॥

अथाऽनूकम् ।

पूर्वभवे ह्यनवरतं सत्त्वस्वरूपगतिभिरभ्यस्तम् ॥
पुनरिह यदनुक्रियते तदनूकं कथ्यते सद्भिः ॥ १३ ॥

अन्वयः—(सत्त्वस्वरूपगतिभिः पूर्वभवे अभ्यस्तम् अनवरतम् इह पुनः यत् अनुक्रियते सद्भिः तत् अनूकं कथ्यते) । अस्यार्थः—जैसे सत्त्वस्वरूप गति मनुष्योंने पहिले जन्ममें, अभ्यास किया था वही इस जन्ममें भी बराबर होय तो उसीके नामको पंडित अनूक कहतेहैं ॥ १३ ॥

सिंहव्याघ्रगरुत्मद्वृषभानूका भवन्ति ये मनुजाः ॥
अप्रतिहतप्रतापा जितरथास्ते नराधीशाः ॥ १४ ॥

अन्वयः—(ये मनुजाः सिंहव्याघ्रगरुत्मद्वृषभानूका भवंति ते अप्रतिहतप्रतापा जितरथाः नराधीशाः भवन्ति)। अस्यार्थः—जिन मनुष्योंके सिंह,

बघेरे, गरुड, बैलकेसे आचरण होयँ तो नहीं रुका है तेज जिनका और जीते हैं रथी आदि योद्धा जिन्होंने सो ऐसे मनुष्य राजा होतेहैं ॥ १४ ॥

वानरमहिषक्रोडच्छगलानूकाः सुखार्त्तसुसहिताः ॥
रासभकरभानूका धनहीना दुःखिताः प्रायः ॥ १५ ॥

अन्वयः–(वानरमहिषक्रोडच्छगलानूकाः सुखार्त्ताः सुसहिता भवंति तथा रासभकरभानूकाः प्रायः धनहीनाः दुःखिताः भवन्ति) । अस्यार्थः– बंदर, भैंसा, शूकर, बकरा, इनकेसे आचरणवाले सुख, अर्थ सहित होतेहैं; और गधा, ऊंट, इनकेसे आचरणवाले निश्चय दरिद्री और दुःखी होतेहैं ॥ १५ ॥

अथ स्नेहः ।

चित्तप्रसत्तिजननं प्रीणनमिति कथ्यते ध्रुवं स्नेहः ॥
तन्मूलमिह ज्ञेयं सुखसौभाग्यादिकं सर्वम् ॥ १६ ॥

अन्वयः–(चित्तप्रसत्तिजननं प्रीणनं ध्रुवं स्नेह इति कथ्यते इह तन्मूलं सर्वं सुखसौभाग्यादिकं ज्ञेयम्) । अस्यार्थः–चित्तकी प्रसन्नताको उत्पन्न करनेवाला स्नेह है, सो इस लोकमें इससे सकल सुख सौभाग्य आदि प्राप्त होतेहैं ॥ १६ ॥

रसनायां दशनेषु त्वचि लोचनयोर्नखेषु केशेषु ॥
पुण्यवतां प्रायेण स्नेहोयं षड्विधो ज्ञेयः ॥ १७ ॥

अन्वयः–(पुण्यवतां रसनायां दशनेषु त्वचि लोचनयोः नखेषु केशेषु प्रायेण अयं स्नेहः षड्विधः ज्ञेयः) अस्यार्थः–पुण्यवानोंके जीभमें दाँतोंमें त्वचामें, नेत्रोंमें, नखोंमें, बालोंमें यह स्नेह अर्थात् चिकनाई छः प्रकारसे जानने योग्य है ॥ १७ ॥

प्रियभाषित्वं रसनास्निग्धत्वं सुभोजनं रदाः स्निग्धाः ॥
अतिसौख्यं त्वक् स्निग्धा नियतं भजते भुजिष्योऽपि ॥ १८ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्य रसनास्निग्धत्वं स भुजिष्योऽपि नियतं प्रियभाषित्वं भजते) जिसकी जीभ चिकनी हो वह दासभी निश्चय प्रिय बोलनेवाला हो ।

(यस्य रदाः स्निग्धाः स भुजष्योऽपि नियतं सुभोजनं भजते) जिसके दाँत चिकने हों वह दासभी सुभोजन पाताहै । और (यस्य त्वक् स्निग्धा स भुजिष्योऽपि नियतम् अतिसौख्यं भजते) जिसकी त्वचा चिकनी हो वह (दासभी) निश्चित अतिसुख पाता है ॥ १८ ॥

जनस्निग्धो नयनस्निग्धः समधिकधनं नखस्निग्धः ॥
केशस्निग्धो बहुविधसुगन्धमाल्यं नरो लभते ॥ १९ ॥

अन्वयार्थौ–(नयनस्निग्धः जनस्निग्धः भवति) नेत्रोंमें चिकनाईसे मनुष्योंमें प्रीति करनेवाला होता है (नखस्निग्धः समधिकधनं लभते) और नखोंमें चिक्कणता होय तो अधिक धनवाला होता है और (केशस्निग्धः नरः बहुविधसुगंधमाल्यं लभते) बालोंमें जिसके चिकनाई होय वह पुरुष अनेक प्रकारकी सुगंधमालाको प्राप्त करताहै ॥ १९ ॥

मंजिष्ठादीनामिव तुलया यत्तोलनं भवति पुंसाम् ॥
उन्मीयतेऽत्र नियतं तदुच्यते सद्भिरुन्मानम् ॥ २० ॥

अन्वयः–(पुंसां मंजिष्ठादीनाम् इव तुलया यत्तोलनं भवति अत्र नियतं उन्मीयते सद्भिः तत् उन्मानम् उच्यते) अस्यार्थः–मंजीठ आदि चीजोंका जैसे तराजूमें तौलना होताहै तैसेही पुरुषोंका भी, उन्मान किया जाताहै इसलिये निश्चय बुद्धिमान् पुरुष उसको उन्मान कहतेहैं ॥ २० ॥

यो ब्यर्द्धभारदेहः स विश्वम्भरेश्वरो भवति ॥
भारवपुर्यः पुनरिह जगति स कोटिध्वजो भवति ॥ २१ ॥

अन्वयार्थौ–(यः द्व्यर्द्धभारदेहः स विश्वम्भरेश्वरो भवति)जिसका शरीर ढाई भार तोलमें हो वह संपूर्ण पृथ्वीका पालनेवाला राजा होय और (पुनः इह भारवपुः यः जगति स कोटिध्वजो भवति) जिस पुरुषका शरीर एक भार तोलमें हो वह करोड़पति होताहै ॥ २१ ॥

भारार्द्धं यस्याङ्गं स सुखाढ्यो भोगभाजनवान् ॥
भारार्द्धार्द्धतनुर्यः स दुर्गतो दुःखितः प्रायः ॥ २२ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्य अंगं भारार्द्धं स पुरुषः सुखाढ्यो भोगभाजनवान् भवति) जिसका अंग आधा भार तोलमें होय सो पुरुष सुख और भोगका पानेवाला होय और (यः पुरुषः भारार्द्धार्द्धतनुः प्रायः स दुर्गतः दुःखितः स्यात्) जिसपुरुषका शरीर चौथाई भार तोलमें होय तो निश्चय दरिद्र और दुःख भोगनेवाला होताहै ॥ २२ ॥

काष्ठेषु मणिषु वज्रेष्वाकरधातुषु तथान्यवस्तुषु च ॥
स्निग्धं यत्तद्गुरु यद्रूक्षं च लघु तद्वदिदम् ॥ २३ ॥

अन्वयः–(काष्ठेषु मणिषु वज्रेषु आकरधातुषु तथा अन्यवस्तुषु यत् स्निग्धत्वं रूक्षत्वं तद्वत् गुरु च पुनः तत् इदं लघु भवति) अस्यार्थः–काठमें मणिमें हीरामें जितनी खानिकी धातु हैं उनमें वा और वस्तुओंमें जो चिकनाई और रूखापन तैसे इनमें भारीपन और हलकापन सो वह चिकनापन ही जानना चाहिये ॥ २३ ॥

अथ प्रमाणम् ।

आपार्ष्णितलाशिरोन्तं यदिह वपुर्मीयते प्रकर्षेण ॥
प्रवदन्ति तत्प्रमाणं केप्यायामं पुनः प्राहुः ॥ २४ ॥

अन्वयः–(आपार्ष्णितलं शिरोन्तं यत् इह वपुः प्रकर्षेण मीयते पुनः केपि तत् प्रमाणम् आयामं प्राहुः प्रवदंति) अस्यार्थः–पाँवके तलुवेसे लेकर शिरतक जो यह शरीर तोलकर नापा जाय उसी प्रमाणको कोई आयाम कहतेहैं ॥ २४ ॥

शतमष्टाभिः समधिकं ज्येष्ठः स्यान्मध्यमोपिषण्णवतिः ।
चतुरधिकाशीतिरथांगुलानिदैर्घ्यात्पुमानधमः ॥ २५ ॥

अन्वयार्थौ–(यः पुमान् दैर्घ्यात् अंगुलानि अष्टभिः अधिकं शतं स ज्येष्ठः स्यात्) जिस पुरुषकी लम्बाई १०८ अंगुलकी होय सो ज्येष्ठ

अर्थात् उत्तम होताहै और (षण्णवतिः दैर्घ्यात् अंगुलानि अपि मध्यमः स्यात्) जिसकी लम्बाई ९६ अंगुलकी होय सो मध्यम अर्थात् बीचका होता है और (चतुरधिकाशीतिः दैर्घ्यात् अंगुलानि अधमः स्यात्) जिसकी लम्बाई ८४ अंगुलकी होय सो अधम अर्थात नीचा होता है ॥ २५ ॥

दैर्घ्या गुल्फोपगता चतुरंगुलिका भवेदथो जंघा ॥
दैर्घ्ये चतुर्विंशतिरथोङ्गुलचतुष्टयं जानु ॥ २६ ॥

अन्वयः—(गुल्फोपगता दैर्घ्या चतुरंगुलिका भवेत अथो जंघा दैर्घ्ये चतुर्विंशतिर्भवेत् अथो जानु अंगुलचतुष्टयं भवेत्) अस्यार्थः—जिसके टकनेकी लंबाई ४ अंगुल होय और पिंडलीकी लंबाई २४ अंगुल होय और जानुकी लंबाई ४ अंगुल होती है ॥ २६ ॥

ऊरू जंघातुल्यौ बास्तिः स्याद्वादशांगुलायामा ॥
तदर्द्धमितं नाभियुतमुदरं च कुचसहितम् ॥ २७ ॥

अन्वयः—(ऊरू जंघातुल्यौ द्वादशांगुलायामा बस्तिः स्यात्—नाभियुतम् उदरं कुचसहितं तदर्द्धमितं स्यात्) अस्यार्थः—ऊरू और जंघा बराबर होती हैं और १२ अंगुलकी लंबी बस्ति कहते हैं—और नाभियुक्त उदर कुचसहितकी लंबाई उससे आधी होती है ॥ २७ ॥

चत्वारि ग्रीवा स्याच्चिबुककुचान्तमंगुलानि मुखम् ॥
द्वादश पुंसां भवतीत्यायामोष्टाधिकं शतकम् ॥ २८ ॥

अन्वयः—(चत्वारि ग्रीवा स्यात् चिबुककुचांतं द्वादश अंगुलानि मुखं भवति पुंसां अष्टाधिकशतकम् आयामः) अस्यार्थः--गर्दनकी लंबाई चार अंगुलकी—और ठोढी कुचके अंतकी लंबाई १२ अंगुलकी मुखसे होती है, और पुरुषकी लंबाई १०८ अंगुलकी कहते हैं ॥ २८ ॥

एतदपि मतं केषामष्टोत्तरमुत्तमस्य भवति शतम् ॥
मध्यस्याष्टविहीनं ततो दशोनं जघन्यस्य ॥ २९ ॥

अन्वयः—(उत्तमस्य पुरुषस्य अष्टोत्तरं शतम् अंगुलं शरीरं—मध्यस्य

पुरुषस्य अष्टविहीनं—जघन्यस्य ततः दशोनम् अंगुलं शरीरम्—एतत् केषाम् अपि मतं भवति)। अस्यार्थः—उत्तम पुरुषका १०८ अंगुलका शरीर होता है और मध्यम पुरुषका १०० अंगुलका और अधम पुरुषका ९८ अंगुलका शरीर होता है यहभी किसीका मत है ॥ २९ ॥

इदं मतमप्यन्यस्योत्तममुत्तमे नरे भवति ॥
मध्ये मध्यं हीने तदपि विहीनं परिज्ञेयम् ॥ ३० ॥

अन्वयः—(उत्तमे नरे उत्तमम् आयुः मध्यमे नरे मध्यमम् आयुः ततोऽपि हीनं मतमिदमप्यन्यस्य परिज्ञेयम्) अस्यार्थः—उत्तम पुरुषकी १०८ वर्ष और ५ दिनकी आयु होतीहै और मध्यम पुरुषकी मध्यम आयु होती है—और अधम पुरुषकी अधम आयु होती है यहभी और किसीका मत है ॥ ३० ॥

उत्तममध्यमहीनाः कालक्षेत्रानुमानतो ये स्युः ॥
निजपर्वांगुलिसंख्या नियतं तेषां विबोद्धव्या ॥ ३१ ॥

अन्वयः—(कालक्षेत्रानुमानतः ये नराः उत्तममध्यमहीनाः स्युः तेषां निजपर्वांगुलिसंख्या नियतं विबोद्धव्या)। अस्यार्थः—समय क्षेत्रके अनुमानसे जो मनुष्य उत्तम मध्यम अधम होतेहैं, तिन पुरुषोंकी अपने पोरुओंके अंगुलोंसे गिनती निश्चय जाननी चाहिये ॥ ३१ ॥

रामो दशरथसूनुर्बलिरपि विंशतिशतांगुलौ चैव ॥
पूर्वं मानाधिक्याद्वावपि पुनरेतौ दुःखितौ तदिह ॥३२॥

अन्वयः—(दशरथसूनुः रामः तथा बलिः अपि विंशतिशतांगुलौ बभूवतुः पूर्वं मानाधिक्यात् द्वौ अपि पुनः तत् इह एतौ दुःखिता जातौ)। अस्यार्थः—दशरथका पुत्र राम और राजा बलि ये दोनों १२० अंगुलके पहले मानसे अधिक हुए सोई वे इतने दुःखी हुए ॥३२॥

अथ मानम् ।

जलभृतकटाहमध्यासीनस्य चतुर्दिशं नरस्य बहिः ॥
पतति यदम्बुद्रोणं परिहाणत्वेन तन्मानम् ॥ ३३ ॥

अन्वयः-(जलभृतकटाहमध्यासीनस्य नरस्य चतुर्दिशं बहिः यत् द्रोणम् अम्बु पतति परिहाणत्वेन तत् मानम्)।अस्यार्थः-(जलकी भरी हुई कढाईके बीचमें जिस मनुष्यके बैठनेसे चारों ओर बाहरको जो ३२ सेर पानी गिरे उस प्रमाण करिके उसे मान कहतेहैं ॥ ३३ ॥

मानोपेतशरीराश्चिरायुषः संपदान्विताः पुरुषाः ॥
तद्धीनाधिक्ययुताः पुनर्भजन्ते सदा दुःखम् ॥ ३४ ॥

अन्वयार्थौ-(मानोपेतशरीराः पुरुषाः चिरायुषः संपदान्विताः भवन्ति) मानके शरीर युक्त जो ऐसे पुरुष होयँ वे बड़ी आयुवाले और संपदायुक्त होतेहैं और (पुनः तद्धीनाधिक्ययुताः सदा दुःखं भजन्ते) फिर उससे कमती बढती मानके शरीरवाले होयँ तो सदा दुःखको भजतेहैं ॥ ३४ ॥

यदि वा तिर्यग्मानं नरस्य पद्मासनोपविष्टस्य ॥
जानुयुगलबाह्यपक्षांतराश्रितं सोऽत्र परिणाहः ॥ ३५ ॥

अन्वयार्थौ-(पद्मासनोपविष्टस्य नरस्य यदि वा तिर्यग्मानं भवति) जो पद्मासन अर्थात् कमलके आसनमें बैठे उस पुरुषके मानको तिर्यग्मान कहतेहैं और (तथा जानुयुगलबाह्यपक्षांतराश्रितं सः अत्र परिणाहः) जो दोनों जानु बाहरको और बगलकोभी रहें तो उस मानका नाम परिणाह है ॥ ३५ ॥

आसनतो भालान्तं शरीरमध्ये तथोपविष्टस्य ॥
यन्मानं स्यादूर्ध्वं सचोच्छ्रयः कथ्यते सद्भिः ॥ ३६ ॥

अन्वयः-(शरीरमध्ये तथोपविष्टस्य आसनतः भालान्तं यन्मानं स्यात् तत् ऊर्ध्वं सः सद्भिः उच्छ्रयः कथ्यते) अस्यार्थः-शरीरके बीचमें बैठा

जो पुरुष उसके आसनसे ललाटके अंततक जो प्रमाण है सोई कहिये ऊर्ध्वमान उसीके नामको पंडित उच्छ्रय कहतेहैं ॥ ३६ ॥

यस्योच्छ्रयः समः स्यात्परिणाहेणोदितेन भाग्यवशात् ॥
नियतं जगति प्रायः स पुमान् पुरुषोत्तमो भवति ॥ ३७ ॥

अन्वयः—(यस्य उच्छ्रयः भाग्यवशात उदितेन परिणाहेन समः स्यात्—स पुमान् जगति प्रायः नियतं पुरुषोत्तमो भवति) अस्यार्थः—जिस पुरुषका उच्छ्रयमान भाग्यके वशसे उदित जो परिणाह तिसके बराबर होय सो पुरुष जगतमें बहुधा निश्चय उत्तम पुरुष होताहै ॥ ३७ ॥

अंगोपांगानामिह विस्तारायामपरिधिभेदेन ॥
मानं यथानुरूपं संक्षेपेण प्रवक्ष्यामि ॥ ३८ ॥

अन्वयः—(इह अंगोपाङ्गानां विस्तारायामपरिधिभेदेन यथानुरूपं मानं संक्षेपेण प्रवक्ष्यामि)।अस्यार्थः—जो इस ग्रंथमें अंग उपांगमें विस्तार,आयाम, परिधि इन तीन भेदों करके जैसेका तैसा मान संक्षेपसे कहता हूं ॥ ३८ ॥

आपार्ष्णिज्येष्ठान्तं तलमत्र चतुर्दशांगुलायामम् ॥
विस्तारेण षडंगुलमंगुष्ठो द्व्यंगुलायामः ॥ ३९ ॥

अन्वयार्थौ—(आपार्ष्णितलं ज्येष्ठान्तम् अत्र चतुर्दशांगुलायामं स्यात्) पाँवके तलुवेकी लम्बाई १४ अंगुलकी अंततक होतीहै और (विस्तारेण षडंगुलं द्व्यंगुलायामः अंगुष्ठः स्यात्) चौड़ाई ६ अंगुलकी है—और दो अंगुलकी अंगूठे तक होतीहै ॥ ३९ ॥

पञ्चांगुलपरिणाहः पादान्तं तन्नखांगुलं दैर्घ्यात् ॥
अंगुष्ठसमा ज्येष्ठा मध्या तत्षोडशांशोना ॥ ४० ॥

अन्वयः—(दैर्घ्यात् पादांतं तन्नखांगुलं पंचांगुलपरिणाहः अंगुष्ठसमा ज्येष्ठा मध्या तत षोडशांशोना स्यात)। अस्यार्थः—लंबाईसे पाँवके अंततक नखोंके अंगुल ५ प्रमाणका होताहै और अंगूठेके प्रमाणसे बराबर बड़ी

अंगुली होतीहै—और बीचकी अंगुलीसे जो प्रमाण कहा उससे १६ वें भाग होतीहै ॥ ४० ॥

अष्टांशोनानामा कनिष्ठिका षष्ठभागपरिहीना ॥
सर्वासामप्यासां नखाः स्वस्वपर्वत्रिभागमिता ॥ ४१ ॥

अन्वयः—(अनामा अष्टांशोना कनिष्ठिका षष्ठभागपरिहीना सर्वासाम् अप्यासां नखाः स्वस्वपर्वत्रिभागमिताः स्युः) । अस्यार्थः—अनामिका अंगुली ८ वें भागहीन होय और कनिष्ठिका अंगुली ६ वें भागहीन होय और सब इन अंगुलियोंके नख अपने अपने पोरुवोंसे तीन भाग प्रमाण होतेहैं॥४१॥

सत्र्यंगुलपरिणाहा प्रथमांगुलविस्तृतांगुली भवति ॥
अष्टाष्टभागहीनाः शेषाः क्रमशः परिज्ञेयाः ॥ ४२ ॥

अन्वयः—(प्रथमांगुली सत्र्यंगुलपरिणाहा विस्तृतांगुली भवति—शेषाः अंगुलयः क्रमशः अष्टाष्टभागहीनाः परिज्ञेयाः) अस्यार्थः—पहली अंगुलीकी तीन अंगुलके प्रमाण करके लंबाई होतीहै और जो बाकी अंगुलोंके क्रमसे हैं वे आठ आठवें भाग हीन होतीहैं ॥ ४२ ॥

जंघातः परिणाहो ध्रुवमष्टाधिकदशांगुलानि स्यात् ॥
विंशतिरेकोपगतो जानुर्द्वात्रिंशदूरूरपि ॥ ४३ ॥

अन्वयः—(जंघातः ध्रुवं परिणाहः अष्टाधिकदशांगुलानि स्यात्—विंशतिः एकोपगतः जानुः स्यात् अपि द्वात्रिंशत् ऊरुः भवंति) । अस्यार्थः—जंघाका प्रमाण १८ अंगुलका है—और २१ अंगुलका प्रमाण जानुका होताहै—और ३२ अंगुलका प्रमाण ऊरुका होताहै ॥ ४३ ॥

अष्टादशांगुलमिता विस्तारा जायते कटिः ॥
पुंसां नाभेरन्तः परिधि षट्चत्वारिंशदंगुलतः ॥ ४४ ॥

अन्वयः—(पुंसां कटिः अष्टादशांगुलमिता विस्तारा जायते-तथा नाभेः अंतःपरिधिः षट्चत्वारिंशदंगुलतः स्यात् । (अस्यार्थः—पुरुषोंकी

कमर प्रमाण १८ अंगुलकी लंबी होतीहै और नाभिसे अंततक प्रमाण ४० लंगुलकी लंबाई होतीहै ॥ ४४ ॥

पुंसां द्वादश कुचयोरभ्यन्तरमंगुलानि दैर्घ्येण ॥
उरसि च युगोपनिष्ठात्षडंगुलो भवति कक्षांतः ॥ ४५ ॥

अन्वयः-(पुंसां दैर्घ्येण कुचयोः अभ्यंतरं द्वादश अंगुलानि स्यात्-च पुनः उरसि युगोपनिष्ठात् षडंगुलः कक्षान्तो भवति) अस्यार्थः-पुरुषोंकी कुचोंकी लंबाई बीचमें १२ अंगुलके प्रमाणकी होतीहै और हृदयसे दोनों कुचोंकी जगहसे ६ अंगुल प्रमाण कक्षाका अंग होताहै ॥ ४५ ॥

विंशत्युरःस्थलं स्याद्विस्तारादंगुलानि चतुरधिकः ॥
पृष्ठया सह परिणाहे षडधिकं पंचाशदंगुलिकम् ॥ ४६ ॥

अन्वयः-(उरःस्थलं विस्तारात् अंगुलानि चतुरधिकः विंशतिः स्यात्-पृष्ठया सह परिणाहे पट् अधिकं पंचाशदंगुलिकं स्यात) । अस्यार्थः-हृदयके जगहकी लंबाईका प्रमाण २४ अंगुलका होताहै और पीठकी लंबाईका प्रमाण ५६ अंगुलका होताहै ॥ ४६ ॥

पर्व प्रथमं बाह्वोरष्टादशांगुलानि दैर्घ्येण ॥
षोडश पुनर्द्वितीयं सप्ततलं मध्यमांगुलिका॥ ४७ ॥

अन्वयः-बाह्वोः प्रथमं पर्व दैर्घ्येण अष्टादशांगुलानि स्यात-पुनः द्वितीयं षोडश स्यात-मध्यमांगुलिका सप्ततलं स्यात्) । अस्यार्थः-भुजाके पहले खंडकी लंबाई १८ अंगुल प्रमाणकी होतीहै और दूसरे खंडकी लंबाई १६ अंगुलकी है और बीचकी अंगुलीतक हथेलीकी लंबाई ७ अंगुलकी होतीहै ४७॥

इति समुदायेन भुजः षट्चत्वारिंशदंगुलानि स्यात् ॥
पञ्चांगुलविस्तारं पाणितलं शस्तरेखान्तम् ॥ ४८ ॥

अन्वयार्थौ-(इति समुदायेन भुजः षट्चत्वारिंशदंगुलानि स्यात्) इस समुदाय करके भुजा ४६ अंगुलके प्रमाणकी होती है और (पाणितलं रेखान्तं पंचांगुलविस्तारं शस्तं स्यात्) हथेलीकी रेखाके अंततक लम्बाई ५ अंगुलकी श्रेष्ठ होतीहै ॥ ४८ ॥

मध्यांगुलीविहीना प्रदेशिनी भवति पर्वणार्द्धेन ॥
तत्समनामानामा कनिष्ठिका पर्वपरिहीना ॥ ४९ ॥

अन्वयार्थौ–अर्द्धेन पर्वणा मध्यांगुलीविहीना प्रदेशिनी भवति) आधे पोरुवाके प्रमाण बीचकी अंगुलीसे हीन तर्जनी होती है और (तत्समनामानामा कनिष्ठिका पर्वपरिहीना भवति) तिसके समान है नाम अनामिका जिसका कनिष्ठिका १ पोरुवा उससे कमती होतीहै ॥ ४९ ॥

अंगुष्ठस्यायामोंगुलानि चत्वारि जायते पुंसाम् ॥
निजपर्वार्द्धपरिमिता भवन्ति सर्वेपि पाणिनखाः ॥ ५० ॥

अन्वयार्थौ–(पुंसाम् अंगुष्ठस्य आयामः चत्वारि चांगुलानि जायते) पुरुषके अँगूठेकी लंबाई ४ अंगुलकी होतीहै और (सर्वेपि पाणिनखाः निजपर्वार्द्धपरिमिताः भवन्ति) सब हाथके नख अपने पोरुवेके आधे प्रमाणके होतेहैं ॥ ५० ॥

ग्रीवायाः परिणाहोऽगुलानि चतुरधिकविंशतिः शस्तः ॥
नासापुटद्वयान्तर्विस्तारो द्व्यंगुलं मानम् ॥ ५१ ॥

अन्वयार्थौ–(ग्रीवायाः परिणाहः अंगुलानि चतुरधिकविंशतिः शस्तः स्यात्) गर्दनकी लंबाई चारों ओरसे २४ अंगुलकी श्रेष्ठ होतीहै और (नासापुटद्वयान्तः द्व्यंगुलं मानं विस्तारो भवति) नाकके नथुने दोनों अंततक २ अंगुल प्रमाणके लंबे होतेहैं ॥ ५१ ॥

आचिबुकपश्चिमकचप्रान्तं द्वात्रिंशदंगुलो मूर्द्धा ॥
कर्णद्वयस्य मध्ये पुनरष्टाधिकदशांगुलिकः ॥ ५२ ॥

अस्यार्थः–ठोडीसे लेकर पिछले बालोंतक ३२ अंगुल मूर्द्धा है और दोनों कानोंके बीचमें फिर अठारह अंगुल प्रमाणसे मूर्द्धा है ॥ ५२ ॥

पुंसामंगे मानं स्पष्टं शिष्टैः पुरा विनिर्दिष्टम् ॥
इह पुनरुपयोगाद्वै दिङ्मात्रमिदं मयाप्युक्तम् ॥ ५३ ॥

अन्वयः–(शिष्टैः पुंसाम् अंगे मानं पुरा स्पष्टं विनिर्दिष्टम्–पुनः इह उपयोगात् वै दिङ्मात्रम् इदं मया उक्तम्)। अस्यार्थः–श्रेष्ठ पुरुषोंके अंगमान

तो सब स्पष्ट पहिलेही कहदिया और फिर इस स्थानमें कार्यवशसे निश्चय करके दिशाके दिखानेमात्र यह मैंने वही कहाहै ॥ ५३ ॥

विंशतिवर्षा नारी स पंचविंशतिसमो नरो योग्यः ॥
जीवति तुर्यांशो वा मानोन्मानप्रमाणानाम् ॥ ५४ ॥

अन्वयः–(विंशतिवर्षा नारी स पंचविंशतिसमः नरः योग्यः स्यात्–मानोन्मानप्रमाणानां तुर्यांशः वा जीवति) अस्यार्थः–बीस वर्षकी स्त्रीको पचीस वर्षके समान पुरुष योग्य होताहै–और मान उन्मान प्रमाण इनका चौथा भाग तौभी जीवेगा ॥ ५४ ॥

अथ क्षेत्रकथनम् ।

वर्षाणां शतमायुस्तस्यैवं दश दशा विभागेन ॥
क्षेत्राणि दश नराणां तदाश्रितं लक्षणं ज्ञेयम् ॥ ५५ ॥

अन्वयः–(वर्षाणां शतम् आयुः प्रमाणं तस्य एवं विभागे दश दशाः नराणां दशक्षेत्राणि तदाश्रितं लक्षणं ज्ञेयम्) । अस्यार्थः–सौ वर्षकी आयुका प्रमाण है तिसमें दश भाग करके मनुष्योंकी दश दशा जानना तिसके दश क्षेत्र हैं तिसीके आसरेसे लक्षण जानने चाहिये ॥ ५५ ॥

आद्यं पादौ सगुल्फौ सजानु जंघाद्वयं द्वितीयं स्यात् ॥
ऊरू गुह्यं मुष्कद्वितयं क्षेत्रं तृतीयमिदम् ॥ ५६ ॥

अन्वयः–(सगुल्फौ पादौ आद्यं सजानु जंघाद्वयं द्वितीयं स्यात्–ऊरू गुह्यं मुष्कद्वितयम् इदं तृतीयं क्षेत्रम्) । अस्यार्थः–टकने सहित पाँव पहला क्षेत्र है–और जानुसहित दोनों जंघा दूसरा क्षेत्र है–और ऊरू गुह्य मुष्क यह तीसरा क्षेत्र है ॥ ५६ ॥

नाभिः कटिश्चतुर्थं पंचममपि जायते पुनर्जठरम् ॥
षष्ठं स्तनान्वितमुरः सप्तममंसौ सजत्रुयुगौ ॥ ५७ ॥

अन्वयः–(नाभिः कटिश्चतुर्थं क्षेत्रम्–पुनः जठरं क्षेत्रम् अपि पंचमं जायते–स्तनान्वितम् उरः षष्ठं क्षेत्रम्–सजत्रुयुगौ अंसौ सप्तमं क्षेत्रम्)

अस्यार्थः—नाभिसे कटिका चौथा क्षेत्र है—फिर उदर पाँचवाँ क्षेत्र है--कुचोंसे छाती तक छठा क्षेत्र है--दोनों हँसली सहित कंधे सातवाँ क्षेत्र है ॥ ५७ ॥

ओष्ठौ ग्रीवाष्टममिह नवमं स्याद्भ्रूयुगं नयनयुगलम् ॥
सललाटमुत्तमांगं दशमं लक्षणविदः प्राहुः ॥ ५८ ॥

अन्वयार्थौ—(ओष्ठौ ग्रीवा अष्टमं क्षेत्रम्) होंठ और गर्दनका आठवाँ क्षेत्र है (भ्रूयुगं नयनयुगलम् इह नवमं क्षेत्रं स्यात्) दोनों भौंह और दोनों नेत्र इनका नवमां क्षेत्र है और (लक्षणविदः सललाटम् उत्तमाङ्गं दशमं क्षेत्रं प्राहुः) लक्षणके जाननेवाले ललाट सहित शिरको दशवां क्षेत्र कहतेहैं ॥ ५८ ॥

क्षेत्रवशाज्जायन्ते मनुजानां जगति दश दशाः क्रमशः ॥
क्षेत्रेष्वशुभेष्वशुभा दशाः शुभेषु च शुभाः प्रायः ॥ ५९ ॥

अन्वयार्थौ—(मनुजानां क्षेत्रवशात् जगति दश दशाः क्रमशः जायन्ते) मनुष्योंके क्षेत्रके वशसे जगतमें १० दशा क्रमसे होतीहैं और (क्षेत्रेषु अशुभेषु अशुभाः दशा भवंति) जो क्षेत्र अशुभ हैं वह दशाभी अशुभ होतीहैं और (क्षेत्रेषु शुभेषु च पुनः शुभाः प्रायः दशा भवंति) जो क्षेत्र शुभ हैं वह बहुधा दशाभी शुभ होतीहैं ॥ ५९ ॥

बाल्यं वृद्धिरथ बलं धीत्वक्शुक्रविक्रमाः पुंसाम् ॥
दशकेन निवर्त्तन्ते चेतः कर्मेन्द्रियाणि तथा ॥ ६० ॥

अन्वयः—(बाल्यं वृद्धिः अथ बलं धीत्वक्शुक्रविक्रमाः तथा चेतः कर्मेन्द्रियाणि पुंसां दशकेन निवर्त्तन्ते)। अस्यार्थः—बाल्यावस्था १ और वृद्धि बढवारी २ और बल ३ बुद्धि ४ त्वचा ५ वीर्य ६ पराक्रम ७ चित्त ८ कर्म ९ इंद्रिय १० पुरुषोंकी १० दशाही करके वरतें हैं ॥ ६० ॥

अथ प्रकृतिकथनम् ।

क्षितिजलशिखिपवनांबरसुरनररक्षःपिशाचतिर्यग्भिः ॥
तुल्या प्रकृतिः पुंसां क्रमेण तल्लक्षणं ब्रूमः ॥ ६१ ॥

अन्वयः—(पुंसां क्षितिजलशिखिपवनांबरसुरनररक्षःपिशाचतिर्यग्भिः तुल्या प्रकृतिः क्रमेण तल्लक्षणं वयं ब्रूमः) । अस्यार्थः—पुरुषोंके पृथ्वी १ जल २ अग्नि ३ पवन ४ आकाश ५ देवता ६ मनुष्य ७ राक्षस ८ प्रेत ९ चतुष्पद १० इनकेसे स्वभाव क्रम करके जो होय तिनके लक्षण हम कहतेहैं ॥ ६१ ॥

सुरभिः प्रसूनगंधः सुखवान्भोगी स्थिरः क्षितिप्रकृतिः ॥
प्रियवाग्घनाम्बुपायी नीरप्रकृतिर्नरो रसभुक् ॥ ६२ ॥

अन्वयार्थौ—सुरभिः प्रसूनगंधः सुखवान् भोगी स्थिरः क्षितिप्रकृतिः भवति) चंदन और फूलोंकीसी गंधवाला—सुखवाला—भोगनेवाला—स्थिरतावाला—जिसमें ये लक्षण पाये जाँय जिसकी पृथ्वीकीसी प्रकृति होतीहै और (प्रियवाक् घनाम्बुपायी रसभुक् नीरप्रकृतिः नरो भवति) मीठी बोली—बहुत जलका पीनेवाला—रसोंका खानेवाला ऐसे मनुष्यकी जलकीसी प्रकृति होतीहै॥ ६२॥

चपलः खण्डस्तीक्ष्णः क्षुद्वान् घनभोजनः शिखिप्रकृतिः ॥
चटुलः क्षामः क्षिप्रः सकोपनः स्यान्मरुत्प्रकृतिः ॥ ६३ ॥

अन्वयार्थौ—(चपलः खंडः तीक्ष्णः क्षुद्वान् घनभोजनः शिखिप्रकृतिर्भवति) चंचल—मीठा तेज—बहुत भूँखा—बहुत भोजन करनेवाला इनकी अग्निकीसी प्रकृति होतीहै और (चटुलः क्षामः क्षिप्रः सकोपनः मरुत्प्रकृतिर्भवति) चलायमान दुर्बल—शीघ्र क्रोधरहित ये पवनप्रकृतिके होतेहैं॥ ६३ ॥

विद्वान्सुस्वरकुशलो विवृताक्षः शिक्षितोम्बरप्रकृतिः ॥
त्यागरतिः सस्नेहः सुस्वभावेन पृथुकोपः ॥ ६४ ॥

अन्वयार्थौ—(विद्वान् सुस्वरः कुशलः विवृताक्षः शिक्षितः अंबरप्रकृतिर्भवति) पंडित होय—अच्छी वाणी— कुशल— खुली आँखें—पढ़ाहुवा जिसने

शिक्षा पाई—ये आकाशप्रकृतिवाले होतेहैं और (सुरस्वभावेन त्यागरतिः सस्नेहः पृथुकोपः भवति) देवताकीसी प्रकृतिवाला दानके प्रति—प्रीतिसहित—बहुत क्रोध करनेवाला होताहै ॥ ६४ ॥

भूषणगीतप्रवणो नरः स्वभावेन संविभागी स्यात् ॥
दुर्जनचेष्टः पापो रक्षःप्रकृतिः खरक्रोधः ॥ ६५ ॥

अन्वयार्थौ—(नरः स्वभावेन भूषणगीतप्रवणः संविभागी स्यात्) मनुष्यकीसी प्रकृतिवाला—भूषण पहरनेवाला—गानेमें कुशल—विभाग करनेवाला होताहै और (रक्षःप्रकृतिः नरः दुर्जनचेष्टः पापः खरक्रोधः स्यात्) राक्षस प्रकृतिवाला मनुष्य—खोटी चेष्टावाला—पाप करनेवाला—बडाक्रोध करनेवाला होताहै ॥ ६५ ॥

भवति पिशाचप्रकृतिः स्थूलो मलिनश्चलः प्रलापी च ॥
क्षुद्रानुगतस्तिर्यक्प्रकृतिर्बहुभुग्भवेन्मनुजः ॥ ६६ ॥

अन्वयर्थौ—(पिशाचप्रकृतिः स्थूलः मलिनः चलः च पुनः प्रलापी भवति) प्रेतकी प्रकृतिवाला; मोटा—मलीन—चलायमान—और बकवादी होताहै और (तिर्यक्प्रकृतिः क्षुद्रानुगतः बहुभुक् मनुजः भवेत्) चौपायोंकीसी प्रकृतिवाला—नीचोंकी संगतिवाला—बहुत खानेवाला—पुरुष होताहै ॥६६॥

इति दशविधा नराणां निर्दिष्टाः प्रकृतयो यथा दृष्टाः ॥
किञ्चिन्मिश्रकलक्षणमधुनावक्ष्याम्यतो लोके ॥ ६७ ॥

अन्वयार्थौ—(नराणाम् इति दशविधा प्रकृतयः यथा दृष्टा निर्दिष्टाः) मनुष्योंकी यह १० प्रकारकी प्रकृति जैसी देखनेमें आई तैसी कही और (अतः परं लोके किंचित् मिश्रकलक्षणम् अधुना वक्ष्यामि) इससे आगे लोकमें कुछ मिश्रक लक्षण अब कहूँगा ॥ ६७ ॥

अथ मिश्रकलक्षणम् ।

विभवसमृद्धिपरत्वं व्यंजनलाभः प्रभुत्वमव्याजम् ॥
वयसि भवन्ति प्रथमे प्रायः स्वल्पायुषां पुंसाम् ॥ ६८ ॥

अन्वयार्थौ—(स्वल्पायुषां पुंसां प्रथमे वयसि प्रायः एतानि भवन्ति) थोड़ी आयुवाले पुरुषोंकी पहिली अवस्थामें बहुधा इतने कार्य होतेहैं(विभवसमृद्धिपरत्वं व्यंजनलाभः अव्याजं प्रभुत्वम्) ऐश्वर्यता—ठाटबाटमें तत्पर—अनेक प्रकारके भोजनोंका लाभ—छलरहित-मालिकपन होताहै॥६८॥

अंगानि धीपटुत्वं शक्तिर्दशनाः शनैर्विशीर्यंते ॥
निखिलेन्द्रियाणि येषां चिरायुषस्ते नरा ज्ञेयाः ॥ ६९ ॥

अन्वयः—(येषाम् अंगानि सुंदराणि धीपटुत्वं शक्तिः दशनाः शनैर्विशीर्यन्ते निखिलेन्द्रियाणि पूर्णानि ते मनुजाः चिरायुषो ज्ञेयाः)अस्यार्थः—जिनके अंग तो सुंदर और बुद्धिकी चतुरता-पराक्रम—दाँत धीरे धीरे उखड़ जायँ संपूर्ण इंद्रिय पूरी होयँ वे मनुष्य बडी आयुवाले होतेहैं ॥ ६९ ॥

शुभलक्षणमंगेभ्यः सौन्दर्येणाधिकं मुखं यस्य ॥
स्वज्ञातिप्राधान्यं प्राप्नोति स धान्यधनवत्त्वम् ॥ ७० ॥

अन्वयः—(यस्य अंगेभ्यः शुभलक्षणं सौंदर्येण अधिकं मुखं स्वज्ञातिप्राधान्यं सः पुरुषः धान्यधनवत्त्वं प्राप्नोति)। अस्यार्थः—जिसके अंग शुभलक्षणयुक्त होय-और सुंदरताके योग्य अधिक मुख होय अपनी जातिमें प्रधान होय सो पुरुष धनधान्यवान् होताहै उसीको धन धान्य मिलताहै ॥ ७० ॥

अतिकृष्णेष्वतिगौरेष्वतिपीनेष्वतिकृशेषु मनुजेषु ॥
अतिदीर्घेष्वतिलघुषु प्रायेण न विद्यते सत्यम् ॥ ७१ ॥

अन्वयः—(अतिकृष्णेषु अतिगौरेषु अतिपीनेषु अतिकृशेषु अतिदीर्घेषु अतिलघुषु—मनुजेषु प्रायेण सत्यं न विद्यते)। अस्यार्थः—बहुत काले बहुत गोरे, बहुत मोटे, बहुत दुबले, बहुत लंबे, बहुत छोटे ऐसे मनुष्य बहुधा सच्चे नहीं होतेहैं ॥ ७१ ॥

चपलः स्थूलो रूक्षः पुरुषो घनमांसलः शिरोविचितः ॥
स पुमान्वैतरणाख्यस्समुद्रमपि शोषयत्यखिलम् ॥ ७२ ॥

अन्वयः—(यः पुरुषः चपलः स्थूलः रूक्षः घनमांसलः शिरोविचितः स पुमान् वैतरणाख्यः अखिलं समुद्रमपि शोषयति)। अस्यार्थः—जो पुरुष

चंचल, मोटा, रूखा बहुत मांसवाला, दृढशिरका है वह वैतरण कहाताहै सो सब समुद्रको भी सोखनेवाला होता है ॥ ७२ ॥

यस्य शरीरं पुष्टिं गृह्णात्यन्नेन येनकेनापि ॥
स नरो दुंदुबकाख्यः कलयति कल्याणवैराग्यम् ॥ ७३ ॥

अन्वयः–(यस्य शरीरं पुष्टिम् अन्नेन येनकेनापि गृह्णाति स नरः दुंदुबकाख्यः कल्याणवैराग्यं कलयति)। अस्यार्थः–जिसका शरीर मोटापन जिस किसी अन्न करके पकडे सो वह पुरुष दुंदुबक नाम है कल्याण, और वैराग्यको करताहै ॥ ७३ ॥

सत्त्वं रजस्तमश्चेत्यमी नराणां त्रयो भवंति गुणाः ।
क्वचिदेकः कुत्र द्वौ त्रयः समं क्वापि दृश्यन्ते ॥ ७४ ॥

अन्वयार्थौ–(सत्त्वं रजः तमः इति अमी नराणां त्रयो गुणाः भवंति) सत्त्वगुण, रजोगुण, तमोगुण, ये पुरुषोंके तीन गुण होतेहैं और (क्वचित् एकः कुत्र द्वौ त्रयः समं क्वापि दृश्यन्ते) कहीं एक, कहीं दो और कहीं तीनों बराबर दीख पडतेहैं ॥ ७४ ॥

यः सत्त्वगुणोपेतः स दयालुः सत्यवाक् स्थिरः सरलः ॥
देवगुरुभक्तियुक्तो व्यसनेभ्युदये च कृतधैर्य्यः ॥ ७५ ॥

अन्वयः–(यः सत्त्वगुणोपेतः स दयालुः सत्यवाक् स्थिरः सरलः देवगुरुभक्तियुक्तः व्यसने अभ्युदये च कृतधैर्यो भवति)। अस्यार्थः–जो सत्त्वगुणवाला पुरुष है सो दयावान् और सत्य बोलनेवाला स्थिरतायुक्त, सीधा, देवता और गुरुकी भक्तिवाला, दुःख और आनंदमें धीरज धरनेवाला होताहै ॥ ७५ ॥

काव्यकलासु प्रवणः कुलनारीकृतरतिस्सदा शूरः ॥
प्रायेणैवं सततं रजोधिकः कथ्यते स पुमान् ॥ ७६ ॥

अन्वयः–(काव्यकलासु प्रवणः कुलनारीकृतरतिः सदा शूरः रजोधिकः स पुमान् सततं कथ्यते प्रायेण एवं भवति) । अस्यार्थः-काव्य बनानेमें चतुर

और कुलकी स्त्रीसे रति और प्रीति करनेवाला सदा शूरवीर— रजोगुण जिसमें अधिक— सो पुरुष निरन्तर बहुधा ऐसा होताहै ॥ ७६ ॥

मूर्खस्तमोन्वितः स्यान्निद्रां कुर्वंश्च सालसः क्रोधी ॥
एतैर्मिश्रैर्बहुशो भेदाश्चान्यैर्नृणां मिश्राः ॥ ७७ ॥

अन्वयार्थौ— तमोन्वितः पुरुषः मूर्खः निद्रां कुर्वन् सालसः क्रोधी स्यात्) तमोगुणयुक्त पुरुष मूर्ख और निद्राकरनेवाला और आलसी और क्रोधी होता- है और (नृणाम् एतैर्मिश्रैः बहुशः अन्येपि मिश्राः भेदाः भवन्ति) पुरुषोंके यही मिले हुए बहुधा और अनेक भेद होतेहैं ॥ ७७ ॥

प्रायो रजोगुणः स्यात्प्राप्तोत्कर्षस्तमोगुणः कोपः ॥
पुंसां विशेषः पुराख्यास्यामो ह्यग्रतः सत्त्वम् ॥ ७८ ॥

अन्वयार्थौ—(तमोगुणः प्राप्तोत्कर्षः रजोगुणः प्रायः कोपः स्यात्) तमो- गुणकी है अधिकता जिसमें ऐसा रजोगुण बहुधा कोपको प्राप्त होता है और (पुंसाम् अग्रतः विशेषः सत्त्वं पुराख्यास्यामः) पुरुषोंके आगे अधिक सत्त्वगुण पहिले कहेंगे ॥ ७८ ॥

देहस्थितेषु सततमशुभेषु शुभेषु लक्षणेषु नृणाम् ॥
ज्ञात्वानवरतभावं तत्फलमपि निर्दिशेत्प्राज्ञः ॥ ७९ ॥

अन्वयः—(नृणां देहस्थितेषु अशुभेषु वा शुभेषु लक्षणेषु सततम् अनवरतभावं ज्ञात्वा प्राज्ञः तत्फलम् अपि निर्दिशेत्)। अस्यार्थः-मनुष्योंके देहमें स्थित जो हैं अशुभ वा शुभ लक्षण इनमेंसे निरंतर भाव जान करके पंडित उसका फल कहते हैं ॥ ७९ ॥

बुद्धियुतो यो दीर्घो ह्रस्वो यो जायते नरो मूर्खः ॥
पिङ्गः शुचिः सुशीलः कालाक्षो यस्तदाश्चर्यम् ॥ ८० ॥

अन्वयः—(यः दीर्घः बुद्धियुतो भवति) जो लंबा है सो बुद्धियुक्त होताहै और (यः ह्रस्वः नरः स मूर्खो जायते) जो छोटा पुरुष है सो मूर्ख होता है और (यः पिंगः कालाक्षः शुचिः सुशीलः तत् आश्चर्यम्) जो कुछ

पीली वा काली आँखोंवाला पवित्र और शीलवान् होता है यह बडे आश्चर्यकी बात है ॥ ८० ॥

यद्दन्तुरोपि मूर्खो रोमयुतो जायते यदल्पायुः ॥
यन्निष्ठुरः स दीर्घस्तदद्भुतं जृम्भते भुवने ॥ ८१ ॥

अन्वयः–(यत् दन्तुरः अपि मूर्खः) जिसके बडे दांत हैं वह मूर्ख होय और (रोमयुतः यत् अल्पायुः जायते) रोम युक्त है उसकी थोडी आयु होय और (यत् दीर्घः स निष्ठुरः) जो लंबा है सो निर्दय होय और (भुवने तत् अद्भुतं जृंभते) जगत्में यह बड़े अचरजकी बातहै–अर्थात् बडे दांतवाला तो विद्यावान् होना चाहिये और रोमवाला बडी आयुवाला होना चाहिये और जो लंबा है उसे दयावान होना चाहिये और इससे विपरीत होय तो आश्चर्य करना चाहिये ॥ ८१ ॥

न च दुर्भगः सुनेत्रः सुग्रीवो भारवाहको न स्यात् ॥
रूक्षो नास्ति सुभोगी परुषत्वङ्‌ नास्ति सुखसहितः ॥ ८२ ॥

अन्वयार्थौ–(सुनेत्रः दुर्भगो न स्यात) सुंदर नेत्रवाला कुरूप नहीं होता और (सुग्रीवः भारवाहकः न स्यात) सुंदर गर्दनवाला बोझ ढोनेवाला नहीं होता और (रूक्षः सुभोगी नास्ति) जो रूखा है सो सुंदर भोगवाला नहीं होता और (परुषत्वक् सुखसहितो नास्ति) कठोर त्वचावाल सुख पानेवाला नहीं होता ॥ ८२ ॥

पृथुपाणिः पृथुपादः पृथुकर्णः पृथुशिराः पृथुस्कंधः ॥
पृथुवक्षाः पृथुजठरः पृथुभालः पूजितः पुरुषः ॥ ८३ ॥

अस्यार्थः–बडे हाथ, बडे पाँव, बडे कान, बडा मस्तक, बडे कंधे बडी छाती, बडा पेट, बडा ललाटवाले ऐसे पुरुष पूजित अर्थात् पूजनेयोग्य होतेहैं ॥ ८३ ॥

रक्ताक्षं भजति श्रीः प्रलम्बबाहुं भजत्यधीशत्वम् ॥
पीनाङ्गं भजति कृषिर्मांसोपचितं च भजति सौभाग्यम् ॥ ८४ ॥

अन्वयार्थौ–(रक्ताक्षं श्रीः भजति) लाल नेत्रवालेको श्री सेवन करतीहै और (अधीशत्वं प्रलंबबाहुं भजति) मालिकपना लंबी बाहुवालेको भजता है और (कृषिः पीनाङ्गं भजति) खेती मोटे शरीरवालेको भजती है और (सौभाग्यं मांसोपचितं भजति) अच्छा भाग्य मांसल पुरुषको भजैहै अर्थात होताहै ॥ ८४ ॥

सुश्लिष्टसंधिबन्धो यः कश्चिन्मांसलो मृदुः स्निग्धः ॥
अतिसुंदरः प्रकृत्या स सुखाढ्यो जायते प्रायः ॥ ८५ ॥

अन्वयः–(यः कश्चित सुश्लिष्टसंधिबंधः मांसलः मृदुः स्निग्धः प्रकृत्या अतिसुंदरः प्रायः स सुखाढ्यो जायते)। अस्यार्थः–जिसकिसी पुरुषके अच्छे मिले हुए जोड़ मांससे भरे, कोमल, चिकने बहुत अच्छे स्वभाववाले हों वह बहुधा सुखी होता है ॥ ८५ ॥

स्निग्धतिलो मशकं वा चिह्नं वा भवति किमपि चान्यत् ॥
पुंसां दक्षिणभागे तच्छुभमित्याह भोजनृपः ॥ ८६ ॥

अन्वयार्थौ–(स्निग्धः तिलः मशकं वा किमपि अन्यत् चिह्नं पुंसां दक्षिणभागे भवति) अच्छा तिल मस्सा वा कोई और चिह्न पुरुषके दाहिने भागमें होय तौ (तत् शुभम् इति भोजनृपः आह) वह शुभ है यह राजा भोजने कहा है ॥ ८६ ॥

नखशंखकेशरोमजिह्वालोचनास्यरदनेषु ॥
नास्ति स्नेहो येषामकारणं सत्त्वमिह तेषाम् ॥ ८७ ॥

अन्वयार्थौ--(येषां नखशंखकेशरोमजिह्वालोचनास्यरदनेषु स्नेहः नास्ति) जिसके नख शंख अर्थात् कनपटी बाल रोंगटे–जीभ–नेत्र–मुख–दाँत–इनमें सचिक्कणता नहीं होय तौ (इह तेषाम् अकारणं सत्त्वम्) इस लोकमें तिनके विना कारणका पराक्रम होताहै ॥ ८७ ॥

इह भवति सप्तरक्तः षडुन्नतः पंचसूक्ष्मदीर्घो यः ॥
त्रिविपुललघुगंभीरो द्वात्रिंशल्लक्षणः स पुमान् ॥ ८८ ॥

अन्वयः—इह सप्तरक्तः षडुन्नतः पंचसूक्ष्मः यः दीर्घः त्रिविपुललघुगंभीरः स पुमान् द्वात्रिंशल्लक्षणो भवति)। अस्यार्थः—इस लोकमें ७तौ लाल—६ ऊंचे—५ पतले—५ लंबे—३ चौडे—३ छोटे ३—गहरे सो पुरुष ३२ लक्षणोंका होताहै ॥ ८८ ॥

नखचरणपाणिरसनादशनच्छदतालुलोचनांतेषु ॥
स्याद्यो रक्त सप्तसु सप्तांगां स लभते लक्ष्मीम् ॥ ८९ ॥

अन्वयः—(यः नखचरणपाणिरसनादशनच्छदतालुलोचनान्तेषु सप्तसु रक्तः स्यात्—स च सप्ताङ्गां लक्ष्मीं लभते)। अस्यार्थः—जो नख चरण—हाथ—जीभ—होठ—तालु—नेत्रोंके अंत इन सात अंगोंमें ललाई होय तौ लक्ष्मीको प्राप्त होता है ॥ ८९ ॥

षट्कं कक्षावक्षःकृकाटिका नासिकानखास्यमिति ॥
यस्येदमुन्नतं स्यादुन्नतयस्तस्य जायन्ते ॥ ९० ॥

अन्वयः—(यस्य इदं षट्कम् कक्षा वक्षः कृकाटिका नासिका नखाः आस्यम् इति उन्नतं भवति तस्य उन्नतयः जायन्ते)। अस्यार्थः—जिस पुरुषकी बगल, छाती, गर्दनकी घेंटी, नाक, नख, मुख ये ६ अंग ऊंचे होंय तिसको उच्चपद अर्थात् बढवारी प्राप्त होती है ॥ ९० ॥

दंतत्वक्केशांगुलिपर्वनखं चेति पंच सूक्ष्माणि ॥
धनलक्षणैरुपेता भवन्ति ते प्रायशः पुरुषाः ॥ ९१ ॥

अन्वयः—(येषां पुरुषाणां दंतत्वक्केशांगुलिपर्वनखाः एतानि पंच सूक्ष्माणि ते पुरुषाः प्रायशः धनलक्षणैः उपेता भवन्ति)। अस्यार्थः—जिन पुरुषोंके दाँत—त्वचा—बाल—अंगुलियोंके पोरुवे और नख ये पाँच पतले होंय तौ वे पुरुष बहुधा धनलक्षणयुक्त होते हैं अर्थात् धनवान् होते हैं ॥ ९१ ॥

नयनकुचौ रसनाहनुभुजमिति यस्य पंचकं दीर्घम् ॥
दीर्घायुर्वित्तकरः पराक्रमी जायते स नरः ॥ ९२ ॥

अन्वयः—(यस्य इति पंचकं दीर्घं नयने कुचौ रसना—हनु—भुजं स नरः पराक्रमी वित्तकरः दीर्घायुर्जायते) । अस्यार्थः—जिसके ये पाँच अंग बडे होंय नेत्र चूँची जीभ कपोलोंके हाड और भुजा सो मनुष्य बलवान् धनवान् बड़ी आयुवाला होता है ॥ ९२ ॥

भालमुरोवदनमिति त्रितयं भूमीश्वरस्य विपुलं स्यात् ॥
ग्रीवाजंघामेहनमिति त्रिकं लघु महीशस्य ॥ ९३ ॥

अन्वयार्थौ—(भूमीश्वरस्य एतत्रितयं भालम् उरः वदनम् इति विपुलं स्यात्) राजाके ये तीन ललाट १ छाती २ मुख ३ चौडे होते हैं और (महीशस्य एतत्त्रयं ग्रीवा जंघा मेहनम् इति लघु स्यात्) राजाकी ये तीन गर्दन जाँघ इंद्री आदि छोटी होती हैं ॥ ९३ ॥

यस्य स्वरोथ नाभिः सत्त्वमिदं च त्रयं गभीरं स्यात् ॥
सप्तांबुधिकांच्या हि भूमेः स करग्रहं कुरुते ॥ ९४ ॥

अन्वयार्थौ—(यस्य स्वरः अथ नाभिः सत्त्वम् इदं त्रयं गभीरं स्यात्) जिसका शब्द टूंडी पराक्रम ये तीन गहरे होंय तो (स सप्ताम्बुधिकांच्या भूमेः करग्रहं कुरुते) सो ७ समुद्र हैं कांची क्षुद्रघंटिका जिसके अर्थात् कटिबंधिनी पृथ्वीको व्याहता है अर्थात् पृथ्वीका मालिक होता है ॥ ९४ ॥

स्मरशास्त्रविनिर्दिष्टाः शशो वृषो हय इति त्रयो भेदाः ॥
जायन्ते मनुजानां क्रमेण तल्लक्षणं वयं ब्रूमः ॥ ९५ ॥

अन्वयार्थौ—(स्मरशास्त्रविनिर्दिष्टाः मनुजानां शशः वृषः हयः इति त्रयो भेदाः जायन्ते) कामशास्त्रके कहे हुए मनुष्योंके खरगोश बैल घोडा ये तीन भेद होते हैं और (क्रमेण तल्लक्षणं वयं ब्रूमः) उनके क्रमसे लक्षण हम कहते हैं ॥ ९५ ॥

लिङ्गं षडंगुलानि स्यादष्टौ वा शशः स पुमान् ॥
नव दश चैकादश वा तदपि पुनर्यस्य स वृषाख्यः ॥९६॥

अन्वयार्थौ–(यस्य लिंगं षट् वा अष्टौ अंगुलानि स स्फुटं शशः पुमान् स्यात्) जिसका लिंग ६ वा ८ अंगुलका प्रकट होय वह खरगोशकी संज्ञाका पुरुष होता है और (यस्य नव दश वा एकादश अंगुलानि तदपि लिंगं स पुरुषः वृषाख्यः स्यात्) जिसका ९--१०--११ अंगुलका लिंग होय सो पुरुष बैलकी संज्ञाका होताहै ॥ ९६ ॥

द्वादश वा लिंगं स्यात्रयोदशादीनि चांगुलानि भवेत् ॥
जातोद्भवस्य मानं हयाख्यया निगदितः सोऽपि ॥९७॥

अन्वयार्थौ–(यस्य जातोद्भवस्य लिंगं द्वादश वा त्रयोदशादीनि अंगुलानि मानं स्यात्) जिस पुरुषका आदि समयसेही लेकरके लिंग १२--१३ अंगुलके प्रमाणका होय सो (सः अपि हयाख्यया निगदितः कथितः) उसको घोड़ेकी संज्ञाका कहा है ॥ ९७ ॥

रतिषु शशवृषहयानां सह भृत्यादिभिरकृत्रिमा प्रीतिः ॥
मेहनं वराङ्गनार्योः परस्परेण प्रमाणैक्यात् ॥९८ ॥

अन्वयार्थौ–(शशवृषहयानां रतिषु मेहनं वराङ्गनार्योः प्रमाणैक्यात्) खरगोश बैल घोड़ा पुरुषोंकी रतिमें इंद्री और योनिके एक समान प्रमाण होनेसे (भृत्यादिभिः सह परस्परेण कृत्रिमा प्रीतिर्भवति) सेवक आदिके साथ करी हुई प्रीति जैसेको तैसी रति अच्छी होती है ॥ ९८ ॥

अन्नं क्षुधि पानं तृषि पथि श्रमे वाहनं भवेद्रक्षा ॥
इति भवति यस्य समये धन्यं प्रवदंति तं संतः ॥ ९९ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्य समये क्षुधि अन्नं तृषि पानं पथि श्रमे वाहनं भवेत्) जिसको समयके विषे भूखमें तौ अन्न और प्यासमें जल और थकावटमें सवारी होय तौ (इति रक्षा भवेत्) ये बडी रक्षा होतीहै और (संतः तं पुरुषं धन्यं प्रवदंति) पंडित उस पुरुषको धन्य कहते हैं ॥ ९९ ॥

इति श्रीमहत्तमश्रीनृसिंहात्मजदुर्लभराजविरचिते सामुद्रतिलकाख्य-
परनाम्नि नरलक्षणशास्त्रे शरीराधिकारो द्वितीयः ॥ २ ॥

अंगप्रत्यंगयुतं सकलं शारीरमिदामिति प्रोक्तम् ॥
आवर्तप्रभृतीनामनुक्रमाल्लक्षणं वयं ब्रूमः ॥ १ ॥

अन्वयार्थौ–(अंगप्रत्यंगयुतं सकलम् इदं शारीरम् इति प्रोक्तम्) छोटे सब अंगप्रत्यंग सहित यह यही शारीरलक्षण कहाहै सो (अनुक्रमात् आवर्त्तप्रभृतीनां लक्षणं वयं ब्रूमः) अब क्रमसे चक्र वा भौंरी आदिके लक्षण हम कहते हैं ॥ १ ॥

रोमत्वग्बालभवः स्यादावर्तः शुभस्त्रेधा ॥
शस्तो दक्षिणवलितः स्निग्धो व्यक्तः परो न शुभः ॥ २ ॥

अन्वयार्थौ–(रोमत्वग्बालभवः आवर्त्तः त्रेधा स्यात्) रोंगटे–त्वचा–बाल इनसे उत्पन्न हुई जो भौंरी तीन प्रकारकी होतीहै और (दक्षिणवलितः स्निग्धः व्यक्तः शुभः शस्तः परो न शुभः) जो दाहिनी ओरकी अच्छी प्रकट होय तौ शुभ है और जो बांई ओर होय तो अशुभ है ॥ २ ॥

करतलपदश्रुतियुग्मे नाभौ वा त्वग्भवो नृणाम् ॥
सस्यादपरौ द्वावपि लक्षणविद्भिर्ज्ञेयौ यथास्थानम् ॥ ३ ॥

अन्वयार्थौ–(नृणां करतलपदश्रुतियुग्मे वा नाभौ त्वग्भवः सः आवर्तः स्यात्) मनुष्योंके दोनों हाथ, दोनों पाँव, दोनों कान और टूँडी–त्वचामें उत्पन्न भौंरी होतीहै और (अपरौ द्वौ अपि लक्षणविद्भिः यथास्थानं ज्ञेयौ) जो दो हैं उनके भी लक्षण जाननेवालोंको यथास्थान जैसी जगह हो वैसे जानने चाहियें ॥ ३ ॥

सव्यापसव्यभागे शिरसि स्याद्यस्य दक्षिणावर्तः ॥
श्वेतातपत्रलक्ष्मा लक्ष्मीः करवर्तिनी तस्य ॥ ४ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्य शिरसि सव्यापसव्यभागे दक्षिणावर्तः स्यात्) जिसके मस्तकमें बामे दाहिने विभागमें जो दक्षिणावर्त चक्र वा भौंरी होय (तस्य श्वेतातपत्रलक्ष्मा लक्ष्मीः (करवर्तिनी भवति) तिसके उज्वल छत्रकी शोभायुक्त लक्ष्मी हाथमें आती है ॥ ४ ॥

रोमावर्तः स्निग्धो भ्रूयुगमध्ये प्रदक्षिणो व्यक्तः ॥
यस्योर्णाख्यः पूर्णः सोम्बुधिकांचेर्भुवो भर्ता ॥ ५ ॥

अन्वयार्थौ–यस्य भ्रूयुगमध्ये व्यक्तः प्रदक्षिणः स्निग्धः रोमावर्तः पूर्णः ऊर्णाख्यः स्यात) जिस पुरुषकी दोनों भौंहके बीचमें प्रकट दाहिनी ओर झुकी हुई अच्छी भौंरी वा चक्र पूरा ऊर्णाख्य नामका होय (सः अम्बुधि-काञ्चीभुवः भर्ता भवति) सो पुरुष समुद्र है कांची कटिवन्धिनी जिसकी ऐसी पृथ्वीका स्वामी अर्थात् संपूर्ण पृथ्वीका पालनेवाला होताहै ॥ ५ ॥

भुजयुग्मे यस्य स्यादावर्तं द्वितीयमंगदप्रतिमम् ॥
नियतं सोखिलभूमिं पुरुषो निजवाहनां वहति ॥ ६ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्य भुजायुग्मे द्वितीयम् अंगदप्रतिमम् आवर्तं स्यात) जिसकी दोनों भुजाओंके बीचमें दूसरे बाजूकासा चक्र चिह्न वा भौंरी होय तो (सः पुरुषः नियतम् अखिलभूमिं निजवाहनां वहति) सो पुरुष निश्चय करिके संपूर्ण पृथ्वीको अपनी भुजाओंसे धारण करे ॥ ६ ॥

यस्य करांभोजतले दक्षिणवलितो भवेदतिव्यक्तः ॥
परिचितशौचाचारो धर्मपरः स्यात्स वित्ताढ्यः ॥ ७ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्य कराम्भोजतले दक्षिणवलितः अतिव्यक्तः भवेत) जिसके करकमल अर्थात हथेलीमें दाहिनी ओर चिह्न वा साथिया बहुत प्रकट होय तो (सः परिचितशौचाचारः धर्मपरः वित्ताढ्यः स्यात्) सो पुरुष जानाहै पवित्रताका आचार जिसने ऐसा धर्ममें तत्पर और धनवान् होय॥ ७॥

भाग्यवतां पंचांगुलिशिरःसु सौख्याय दक्षिणावर्तः ॥
प्रायः पुंसां वामावर्तो दुःखाय पुनरेषः ॥ ८ ॥

अन्वयार्थौ–(भाग्यवतां पुंसां पंचांगुलिशिरःसु दक्षिणावर्तः सौख्याय भवति) धनवान् पुरुषोंके शिरमें ५ अंगुल प्रमाण दाहिनी ओरको झुका हुवा चक्र वा चिह्न अर्थात् भौंरी सुखदायक होतीहै और (पुनः एषः वामावर्तः

प्रायः दुःखाय भवति) जो वही बाँई ओरको झुकी हुई भौंरी होय तो बहुधा दुःखदाई होतीहै ॥ ८ ॥

श्रुतियुगनाभ्यावर्ताः प्रदक्षिणाः श्रेयसे भवंति नृणाम् ॥
चूडावर्तोऽप्येकः श्रेष्ठतरो दक्षिणः शिरसि ॥ ९ ॥

अन्वयार्थौ–(नृणां प्रदक्षिणाः श्रुतियुगनाभ्यावर्ताः श्रेयसे भवन्ति) मनुष्योंके दाहिनी ओर झुके हुए दोनों कान और नाभिके चक्र शुभकारक होतेहैं और (नृणां शिरसि एकः अपि चूडावर्तः दाक्षिणः श्रेष्ठतरो भवति) मनुष्योंके शिरमें एकही चूडावर्त्त नाम चक्र दाहिनी ओरका बहुत श्रेष्ठ होताहै॥९॥

शीर्षे वामे भागे वामावर्तो भवेत्स्फुटो यस्य ॥
स क्षुत्क्षामो भिक्षां रूक्षां निर्लक्षणो लभते ॥ १० ॥

अन्वयार्थौ–यस्य शीर्षे वामे भागे वामावर्तः स्फुटः भवेत) जिसके शिरमें बाँई ओरको चक्र अर्थात् भौंरी प्रकट होय तो (क्षुत्क्षामः सः निर्लक्षणः रूक्षां भिक्षां लभते) भूँखका मारा अभागा रूखी भीखको प्राप्त होताहै ॥ १० ॥

वामो दक्षिणपार्श्वे प्रदक्षिणो वामपार्श्वके यस्य ॥
न तु तस्य चरमकाले भोगो नास्त्यत्र सन्देहः ॥ ११ ॥

अन्वयः–(यस्य दक्षिणपार्श्वे वामः वामपार्श्वे प्रदक्षिणः भवति–तस्य चरमकाले भोगो नास्ति अत्र सन्देहो न तु)। अस्यार्थः-जिसकी दाहिनी ओर तौ बाँई होय–और बाँई ओर दाहिनी होय–तिसको पिछली अवस्थामें भोग नहीं होय इसमें सन्देह नहीं ॥ ११ ॥

अंतर्ललाटपट्टं व्यक्तावर्त्तो ललामवद्यस्य ॥
वामोऽथ दक्षिणो वा स्वल्पायुर्दुःखितश्च स्यात् ॥ १२ ॥

अन्वयार्थौ-(यस्य ललाटपट्टम् अन्तः ललामवत् व्यक्तावर्तः वामः अथवा दक्षिणः भवति) जिसके लिलारके ऊपर प्रकट है भौंरी–जिसमें ऐसा रत्नके

समान बाँयाँ अथवा दाहिना चक्र होय तो (सः स्वल्पायुः दुःखितश्च स्यात्) वह थोडी आयुवाला और दुःखी होय ॥ १२ ॥

यस्यावर्तद्वितयं सुव्यक्तं भवति पादतलमध्ये ॥
नक्तंदिनमतिदीनो भूमिं स भ्रमति मतिहीनः ॥ १३ ॥

अन्वयार्थौ-(यस्य पादतलमध्ये आवर्तद्वितयं सुव्यक्तं भवति) जिसके पांवके तलुवेमें दो आवर्त नाम चक्र प्रकट होंय तो (अतिदीनः मतिहीनः सः नक्तंदिनं भूमिं भ्रमति) सो अतिदीन अर्थात् बहुत गरीब--मतिहीन--मूर्खसा रातदिन पृथ्वीमें घूमता रहे ॥ १३ ॥

अथ गतिकथनम् ।

सुखसंचारितपादा मयूरमार्जारसिंहगतितुल्या ॥
दीर्घक्रमा सुलीला, भाग्यवतां स्याद्गतिः सुभगा ॥१४॥

अन्वयः-(भाग्यवतां सुखसंचारितपादा मयूरमार्जारसिंहतुल्या दीर्घक्रमा सुलीला सुभगा गतिः भवति) । अस्यार्थः-भाग्यवानोंका सुखसे है पैरोंका चलना जिसमें मोर-बिल्ली-सिंह इनकीसी चालके समान लम्बा है डँगका रखना जिसमें अच्छी लीलायुक्त सुंदर चाल होतीहै ॥१४॥

गतिभिर्भवन्ति तुल्या ये च समा द्विरदनकुलहंसानाम् ॥
वृषभस्यापि नरास्ते सततं धर्मार्थकामपराः ॥ १५ ॥

अन्वयार्थौ-(ये गतिभिः द्विरदनकुलहंसानां वृषभस्यापि समाः भवन्ति) जो मनुष्य चालसे हाथी--नौला--हंस-बैलकीसी समान होतेहैं (ते नराः सततं धर्मार्थकामपरा भवन्ति) वे मनुष्य निरंतर धर्म, अर्थ,काममें तत्पर होतेहैं ॥ १५ ॥

गोमायुकरभरासभकृकलासशशकभेकमृगैः ॥
येषां गतिः समाना ते गतसुखराजसन्मानाः ॥ १६ ॥

अन्वयः-(येषां गतिः गोमायुकरभरासभकृकलासशशकभेकमृगैः समाना ते गतसुखराजसन्मानाः भवन्ति)। अस्यार्थः--जिनकी चाल गीदड--ऊंट--

गधा--गिरगिट--खरगोश--मेंढक--हिरण--इनकी समान होय तो--वे, गया है सुख और राजसन्मान जिनका ऐसे होते हैं ॥ १६ ॥

विषमा विकटा मंदा लघुक्रमा चंचला द्रुता स्तब्धा ॥
आभ्यंतराऽथ बाह्या लग्नपदा वा गतिर्न शुभा ॥१७॥

अन्वयः-(यस्य विषमा विकटा मंदा लघुक्रमा चंचला द्रुता स्तब्धा आभ्यन्तरा अथ बाह्या वा लग्नपदा ईदृशी गतिः शुभा न)। अस्यार्थः- जिसकी ऊंची नीची, भयकारी, धीरजकी छोटी डँग--फुरतीकी--शीघ्र--रुकरुकके भीतर बाहर जिसमें पांव भिडते जायँ ऐसी चाल अशुभ अर्थात् बुरी होतीहै ॥ १७ ॥

धनिनां गमनं स्तिमितं समाहितं शब्दहीनमस्तब्धम् ॥
ह्रस्वप्लुतानुविद्धं विलम्बितं स्याद्दरिद्राणाम् ॥ १८ ॥

अन्वयार्थौ--(धनिनां गमनं स्तिमितं समाहितं शब्दहीनम् अस्तब्धं स्यात्) धनवानोंकी चाल अच्छी एकसी--शब्द करिके हीन--रुकावटकी नहीं ऐसी होतीहै और (ह्रस्वप्लुतानुविद्धं विलंबितं दारिद्राणां स्यात्) छोटी छोटी डँगयुक्त, धीरे धीरे ऐसी चाल दरिद्रियोंकी होतीहै ॥ १८ ॥

अथ छायाकथनम् ।

छादयति नरस्याङ्गे लक्षणमत्यन्ततो नरश्छाया ॥
सा पार्थिवा तथाऽथ ज्वलनभवा वायवी व्योम्नी ॥१९॥

अन्वयार्थौ--(छाया नरस्य अंगे लक्षणं छादयति सा छाया पार्थिवी अत्यन्ततः नरः भवति) छाया अर्थात् तेज मनुष्यके अंगमें लक्षणको ढक देय सो छायाका नाम पार्थिवी अर्थात् पृथ्वी सम्बन्धिनी है सो मनुष्य बहुत अच्छा होताहै और (तथा ज्वलनभवा अथ व्योम्नी वायवी भवति) जैसे अग्निसे आकाशसे और पवनसे उत्पन्न हुई होतीहै ॥ १९ ॥

भवति शुभाशुभफलदा निजतेजस्तन्वती बहिर्देहात् ॥
विमलस्फाटिकवनान्तर्विलसति सा दीपकलिकेव ॥ २० ॥

अन्वयार्थौ–(छाया शुभाशुभफलदा भवति) छाया शुभ और अशुभ फलकी देनेवाली होतीहै और (देहात् बहिर्निजतेजस्तन्वती भवति) देहसे बाहिर वही छाया अपने तेजको फैलाती है और (सा विमलस्फटिकघटान्तः-दीपकलिका इव विलसति) कैसे कि निर्मल स्फटिकके घड़ेमें दीपककी ज्योति जैसे प्रकाशवान् अर्थात् शोभित होतीहै ॥ २० ॥

स्निग्धद्विजनखलोमत्वक्केशा पार्थिवी स्थिरा रेखा ॥
नयनहृदयाभिरामा दत्ते धनधर्मसुखभोगान् ॥ २१ ॥

अन्वयः–(स्निग्धद्विजनखलोमत्वक्केशा रेखा स्थिरा नयनहृदयाभिरामा एतादृशी पार्थिवी छाया धनधर्मसुखभोगान् दत्ते) । अस्यार्थः–अच्छे दांत–नख–रोम–त्वचा–बाल और स्थिर रेखा जिसमें होतेहैं और नेत्र–चित्तको सुंदर लगे ऐसी पार्थिवी छाया धन धर्म और सुख भोग इनको देनेवाली होतीहै ॥ २१ ॥

आप्याऽभिनवाम्भोदप्रच्छन्नजलसन्निभा छाया ॥
सर्वार्थसिद्धिजननी जनयति सौभाग्यमिह पुंसाम् ॥ २२ ॥

अन्वयार्थौ–(अभिनवाम्भोदप्रच्छन्नजलनिभा छाया आप्या) नवीन जो मेघ जिससे गिरा जो जल-उसकी तुल्य जो छाया है तिसका नाम आप्या है (सा छाया सर्वार्थसिद्धिजननी) सो छाया सर्व अर्थके सिद्धिके उत्पन्न करनेवाली है ॥ २२ ॥

ज्वलनप्रभा च बालार्कप्रवालकनकाग्निपद्मरागनिभा ॥
पौरुषपराक्रमैर्वा जयमर्थं तनुभृतां तनुते ॥ २३ ॥

अन्वयार्थौ–(या बालार्कप्रवालकनकाग्निपद्मरागनिभा भवति) जो उदय-हुआ सूर्य–मूँगा–सोना–अग्नि–रत्न इनकी तुल्य होय (सा छाया ज्वलनप्रभा भवति) सो छाया ज्वलनप्रभा नाम है (सा ज्वलनप्रभा तनुभृतां पौरुष-

पराक्रमैर्जयम् अर्थं तनुते) वही ज्वलनप्रभा छाया मनुष्योंके पौरुष और पराक्रम करके जय और अर्थको फैलाती है ॥ २३ ॥

रूक्षा मलिना दीना चला खला मारुती भवेच्छाया ॥
बधबंधबंधनपरा वित्तविनाशं नृणां कुरुते ॥ २४ ॥

अन्वयार्थौ—(या छाया रूक्षा मलिना दीना चला खला सा छाया मारुती भवति) जो छाया—मैली हीन--चलायमान--बुरी इनकी तुल्य जो होय सो छाया मारुती नाम है (सा छाया बधबंधबंधनपरा नृणां वित्तविनाशं कुरुते) सो छाया मारण और बंधनकी करनेवाली और मनुष्योंके धनका नाश करनेवाली है ॥ २४ ॥

स्वच्छा स्फटिकमणिनिभा प्रोद्दामा देहिनामिह व्योम्नी ॥
प्रायः श्रेयोनिधिसुखधनसुतसौभाग्यदा पुंसाम् ॥ २५ ॥

अन्वयार्थौ—(पुंसां या छाया स्वच्छा स्फटिकमणिनिभा प्रोद्दामा सा छाया व्योम्नी) पुरुषोंकी जो छाया निर्मल—स्फटिकमणिकी तुल्य अत्यन्त सुंदर ऐसी होय सो व्योम्नी नाम छाया है (सा छाया इह देहिनां प्रायः श्रेयोनिधिसुखधनसुतसौभाग्यदा भवति) सो छाया मनुष्योंको बहुधा कल्याण, लक्ष्मी, सुख, धन, पुत्र, सौभाग्य इनके देनेवाली है ॥ २५ ॥

अर्काच्युतेन्द्रयमशशिप्रतीकाशा लक्षणैस्तु फलैः ॥
अन्याः पंच पुनस्ताः प्रवदंत्यपरे समसंपदो नैतत् ॥ २६ ॥

अन्वयः—(अर्काच्युतेन्द्रयमशशिप्रतीकाशा अन्याः ताः पंच छायाः लक्षणैस्तु फलैः पुनः अपरे समसंपदः इति प्रवदन्ति एतत् न) । अस्यार्थः— सूर्य, विष्णु, इंद्र, यम, चंद्रमा-इनकी तुल्य ये और पांच छाया हैं वे लक्षणों और फलों करिके दूसरे मतवाले इनको समान संपत्तिवाले कहतेहैं—परंतु यह बात नहीं किन्तु इनके पृथक् पृथक् फल हैं ॥ २६ ॥

अथ स्वरः ।

स्निग्धः स्वरोऽनुमोदी निर्ह्रादी खंडितः कलो मन्द्रः ॥
तारः स्वरश्च विपुलो पुंसां संपत्करः सततम् ॥ २७ ॥

अन्वयः–(पुंसां स्निग्धः स्वरः अनुमोदी निर्ह्रादी खंडितः कलः मंद्रः तारः स्वरः विपुलः सततं संपत्करो भवति)। अस्यार्थः-पुरुषोंकी अच्छी जो बोली-है सोई प्रसन्न करतीहै सारसकीसी कुछ कही कुछ न कही मीठी अप्रकट मृदंगकीसी बहुत ऊंची बडी ये सब निरंतर संपत्तिकी करनेवाली हैं ॥२७॥

दुंदुभिवृषभाम्बुदमृदंगशिखिशंबररथांगैः स्यात ॥
यस्य स्वरः समानः स भूपतिर्भवति भोगाढ्यः ॥ २८ ॥

अन्वयः–(यस्य स्वरः दुंदुभिवृषभाम्बुदमृदंगशिखिशंबररथाङ्गैः समानः स्यात्--स भूपतिः भोगाढ्यो भवति)। अस्यार्थः–जिसकी बोली नगारा, बैल, मेघ, मृदंग, मोर, हिरण, चकवा इनकी तुल्य होय सो राजा और भोगी होताहै ॥ २८ ॥

भिन्नः क्षीणः क्षामो विकुष्टो गद्गदस्वरो दीनः ॥
रूक्षो जर्जरितोपि च निःस्वानां निस्वनः प्रायः ॥ २९ ॥

अन्वयः–(निःस्वानां स्वरः भिन्नः क्षीणः क्षामः विकुष्टः गद्गदः दीनः रूक्षः जर्जरितः प्रायः निस्वनः भवति)। अस्यार्थः–दरिद्रियोंकी बोली फूटीटूटी, कुछ कही कुछ न कही बहुत धीरेकी दुबले मनुष्य कीसी, खैंची हुई बडे जोरसे, रुकरुकके, गरीबीसे रूखीसी, बूढोंकीसी ऐसी बोली बहुधा दरिद्रियोंकी होतीहै ॥ २९ ॥

वृककाकोलूकप्लवगोष्ट्रक्रोष्टुरासभवराहैः ॥
तुल्यः स्वरो न शस्तो विशेषतो हि स्वरो दुष्टः ॥ ३० ॥

अन्वयः–(यस्य स्वरः वृककाकोलूकप्लवगोष्ट्रक्रोष्टुरासभवराहैः तुल्यो भवति स न शस्तः विशेषतः स्वरः दुष्टो भवति)। अस्यार्थः–जिसका स्वर;

भेडिया, कौवा, उलूक, बंदर, ऊंट, गीदड, गधा, सूअर इनकीसी तुल्य जो होय तो अच्छा नहीं है–और इनसे अधिक स्वर वाला दुष्ट होताहै ॥३०॥

अथ गंधः।

गंधो भुवि नराणां प्रजायते नासिकेन्द्रियग्राह्यः ॥
श्वासः स्वेदादिभवो ज्ञेयः स शुभाशुभो द्विविधः ॥ ३१ ॥

अन्वयः--(भुवि नराणां नासिकेन्द्रियग्राह्यः गंधः प्रजायते स्वेदादिभवः गंधः श्वासः स शुभाशुभो द्विविधो ज्ञेयः)। अस्यार्थः–पृथ्वीमें मनुष्योंकी गंध नासिका इंद्रियकरिके लीनी जाय ऐसी जो गंध होय सो–पसीना आदिसे और श्वाससे जो उत्पन्न गन्ध सोई गंध शुभ और अशुभ दो प्रकारकी जानिये ॥ ३१ ॥

कर्पूरागुरुमलयजमृगमदजातीतमालदलगन्धाः ॥
द्विपमदगंधा भूमौ पुरुषाः स्युर्भोगिनः प्रायः ॥ ३२ ॥

अन्वयः--(कर्पूरागुरुमलयजमृगमदजातीतमालदलगंधाः वा द्विपमदगंधा भूमौ प्रायः भोगिनः स्युः)। अस्यार्थः–कपूर, अगर, चंदन कस्तूरी, चमेली, तमाल अर्थात् आमनूसके पत्तेकीसी, वा हाथीकेसे मदकीसी, गंध जिन मनुष्योंकी पृथ्वीमें होय वे मनुष्य बहुधा भोगी होतेहैं ॥ ३२ ॥

मत्स्याण्डपूतिशोणितनिम्बवसाकाकनीडबकगन्धाः ॥
दुर्गन्धाश्च नरास्ते दुर्भगतानिःस्वताभाजः ॥ ३३ ॥

अन्वयः–मत्स्यांडपूतिशोणितानिम्बवसाकाकनीडबकगंधाः ते नराः दुर्गन्धाः प्रायः दुर्भगतानिःस्वताभाजो भवंति)। अस्यार्थः–जिनकी गंध मच्छीके अंडे–सड़–रुधिर–नीम–चरबी–कौवेके अंडे–बगुले–इनके तुल्य होय वे मनुष्य बुरे गंधवाले हैं बहुधा कुरूप और दरिद्रताके भोगनेवाले होतेहैं ॥ ३३ ॥

अथ वर्णः ।

गौरः श्यामः कृष्णो वर्णः संभवति देहिनां त्रेधा ॥
आद्यौ द्वावपि शस्तौ शुभो न कृष्णो न संकीर्णः ॥ ३४ ॥

अन्वयार्थौ–(देहिनां वर्णः त्रेधा संभवति) मनुष्योंके शरीरका रंग तीन प्रकारका होताहै जैसे–(गौरः श्यामः कृष्णः द्वौ अपि आद्यौ शस्तौ) गोरा, सांवरा काला जो आदिके दोनों हैं सो अच्छे हैं और (कृष्णः न शुभः वा संकीर्णः शुभो न) काला अच्छा नहींहै और कुछ काला कुछ गोरा यह भी शुभ नहीं है ॥ ३४ ॥

पङ्कजकिञ्जल्कनिभो गौरश्यामः प्रियंगुकुसुमसमः ॥
कृष्णस्तु कज्जलाभः स्निग्धः शुद्धोऽपि नो शस्तः ॥ ३५ ॥

अन्वयार्थौ–(पंकजकिंजल्कनिभः गौरः) कमलके फूलके जीरेके तुल्य तो गोरा और ((प्रियंगुकुसुमसमः श्यामः) धायकेसे फूलके तुल्य सांवरा और (कज्जलाभः समः कृष्णः) काजलके तुल्य है सो काला है और (स्निग्धः शुद्धः अपि कृष्णः नो शस्तः) चिकना चमकना जो काला है सो अच्छा नहीं है ॥ ३५ ॥

अथ सत्त्वम् ।

व्यसने वाभ्युदये वा गतशंकाशोकमुकुलितोत्साहम् ॥
उन्मीलनधीरत्वं गंभीरमिह कीर्त्यते सत्त्वम् ॥ ३६ ॥

अन्वयः–(व्यसने वाऽभ्युदये वा गतशंकाशोकमुकुलितोत्साहम् उन्मीलनधीरत्वम् इह सत्त्वं गंभीरं कीर्त्यते) । अस्यार्थः–दुःखमें वा सुखमें वा गईहै शंका–शोक रहित–उत्सवमें प्रसन्नता और धीरज होय सो इस लोकमें ऐसे सत्त्वको गंभीर कहतेहैं ॥ ३६ ॥

एकमपि सत्त्वमेतैः सर्वाणि संति लक्षणैस्तुल्यम् ॥
यस्मिन्कपिमनुजानां न कदाचन दुर्लभा लक्ष्मीः ॥ ३७ ॥

अन्वयार्थौ–(एकमपि सत्त्वमेतैः लक्षणैः तुल्यमस्ति, किंपुनर्यास्मिन् सर्वाणि कपिमनुजानां मध्ये सत्त्वादीनि सन्ति)एकही सत्त्व इन सब लक्षणोंके तुल्यहै फिर जिस पुरुष या बंदरके सब सत्त्व और वे लक्षण भी स्थित हैं; (तस्य कदाचन लक्ष्मीः दुर्लभा न) उसे तो कभी लक्ष्मी दुर्लभ नहीं है ३७

त्वचि भोगा मांसे सुखमस्थिषु धनमीक्षणषु सौभाग्यम् ॥
यानं गतौ स्वरे स्यादाज्ञा सत्त्वे पुनः सर्वम् ॥ ३८ ॥

अन्वयः–(त्वचि भोगाः मांसे सुखम् अस्थिषु धनम् ईक्षणेषु सौभाग्यम् गतौ यानम् स्वरे आज्ञा पुनः सत्त्वे सर्वं स्यात्) । अस्यार्थः--त्वचामें जो सत्त्व है सो भोगोंको--मांसमें सुखोंको--हाडोंमें धनको नेत्रोंमें सौभाग्यको–चलनेमें सवारीको–शब्दमें आज्ञाको--फिरभी जो कुछ है सो सब सत्त्वमेंही है ॥ ३८ ॥

सौभाग्यमिव स्त्रीणां पुरुषाणां भूषणं भवति सत्त्वम् ॥
तेन विहीना भुवने भजन्ति परिभवपदं प्रायः ॥ ३९ ॥

अन्वयः–(स्त्रीणां सौभाग्यमिव–पुरुषाणां सत्त्वं भूषणं भवति भुवने तेन विहीनाः प्रायः परिभवपदं भजंति)। अस्यार्थः–स्त्रियोंका सौभाग्य जैसे भूषण है--ऐसेही पुरुषोंका सत्त्व भूषण है--जगत्में जो सत्त्व करिके हीन हैं वे बहुधा निरादर पदको पातेहैं ॥ ३९ ॥

वर्णः शुभो गतेः स्याद्वर्णादपि शुभतरः स्वरः पुंसाम् ॥
अतिशुभतमं स्वरादपि सत्त्वं सत्त्वाधिका धन्याः ॥ ४० ॥

अन्वयः–(पुंसां गतेः वर्णः शुभः, वर्णादपि स्वरः शुभतरः स्यात्-स्वरात् अपि अतिशुभतमं सत्त्वम् तथा--सत्त्वाधिकाः पुरुषाः धन्याः) । अस्यार्थः–पुरुषोंकी गतिसे तो वर्ण शुभ है, वर्णोंसे स्वर अत्यंत उत्तम (अच्छा) है स्वरसेभी उत्तम सत्त्व है–और जिनमें सत्त्व अधिक है वेही पुरुष धन्य हैं ॥ ४० ॥

वक्त्रानुगतं रूपं रूपानुगतं नृणां भवति वित्तम् ॥
वित्तानुगतं सत्त्वं सत्त्वानुगता गुणाः प्रायः ॥ ४१ ॥

अन्वयः-(नृणां वक्त्रानुगतं रूपम्-रूपानुगतं वित्तम्-वित्तानुगतं सत्त्वं--प्रायः सत्त्वानुगताः गुणाः भवंति)। अस्यार्थः-मनुष्योंके मुखके तुल्य तो रूप है और रूपके तुल्य वित्त है और वित्तके तुल्य सत्त्व है और बहुधा सत्त्वके ही तुल्य गुणभी होतेहैं ॥ ४१ ॥

इह सत्त्वमेव मुख्यं निखिलेष्वपि लक्षणेषु मनुजानाम् ॥
सद्भावो भवति पुनश्चिंता शाम्यं समुपयाति ॥ ४२ ॥

अन्वयार्थौ-(इह मनुजानां निखिलेषु लक्षणेषु अपि सत्त्वमेव मुख्यम्) इस लोकमें मनुष्योंके इन सब लक्षणोंमें सत्त्वही लक्षण मुख्य है और (पुनः सद्भावो भवति) इसमें सद्भाव अर्थात् अच्छा विचार होताहै और (चिंता शाम्यं समुपयाति) चिंता शांत होजातीहै ॥ ४२ ॥

नापि तु येषां नमनं मनो विकारं कथंचनाभ्येति ॥
आपद्यपि संपद्यपि ते सत्त्वविभूषिताः पुरुषाः ॥ ४३ ॥

अन्वयार्थौ--(येषां नमनं न तु--आपद्यपि संपद्यपि मनो विकारं कथंच न अभ्येति) जिनका झुकना नहीं है और आपत्तिमें और संपत्तिमें जिनके मनको कभी विकार नहीं होताहै (ते पुरुषाः सत्त्वविभूषिताः भवन्ति) वे पुरुष सत्त्वविभूषित होतेहैं अर्थात् सत्त्व ही जिनके भूषणहै ॥ ४३ ॥

शुभलक्षणमप्येवं बाह्यं न विलोक्यते स्फुटं यस्य ॥
अपि दृश्यते पुनः श्रीस्तस्य तदाऽध्रुवेतिसत्यम् ॥४४॥

अन्वयार्थौ-(यस्य एवं शुभलक्षणं बाह्यमपि स्फुटं न विलोक्यते) जिसके ये शुभलक्षण बाहिरी प्रकट नहीं दीखें (तस्य पुनः श्रीरध्रुवापि दृश्यते-इति सत्यम्) तिसके फिर लक्ष्मी चलायमान दीखतीहै अर्थात् उसके स्थिर नहीं रहे यह बात सत्य है ॥ ४४ ॥

स्थूलैस्तनुभिः परुषैर्मृदुभिः स्वल्पैरथायतैरंगैः ॥
यः सत्त्ववान्स पूज्यस्तत्सकलं गुणाधिकं सत्त्वम् ॥ ४५ ॥

अन्वयार्थौ—(स्थूलैः तनुभिः परुषैः मृदुभिः स्वल्पैः अथ आयतैरंगैः) मोटा, पतला, खरदरा, नरम, छोटा, लंबा, शरीर होय तो इन करके कुछ नहीं (यः सत्त्ववान् स पूज्यः) जो सत्त्ववान् है सोई पूज्य है (तत्सकलं गुणाधिकं सत्त्वं भवति) तिससे सब गुणोंमें अधिक सत्त्वही है ॥ ४५ ॥

शुभलक्षणमंगं यदि सुपूजितः स्यान्नरस्य सत्त्ववतः ॥
तदुभयसंपर्कादिह सौभाग्ये मंजरीभेदः ॥ ४६ ॥

अन्वयार्थौ—(सत्त्ववतः नरस्य यदि अंगं शुभलक्षणं सुपूजितं स्यात्) सत्त्ववाले मनुष्यका यदि अंग शुभलक्षणयुक्त है सोई पूजित है और (तदुभयसंपर्कात् इह सौभाग्ये मंजरीभेदः) उन दोनोंके मिलापसे अर्थात् सत्त्व—अंगके इस लोकमें और भाग्यमें कुछ मंजरीका अर्थात् बालिकासा भेद है ॥ ४६ ॥

इति श्रीमहत्तमश्रीनृसिंहात्मजदुर्लभराजविरचिते सामुद्रतिलकापरनाम्नि आवर्ताद्यधिकारस्तृतीयः ॥ ३ ॥

संस्थानवर्णगंधावर्ताः सत्त्वं स्वरो गतिश्छाया ॥
तन्नरवन्नारीणामिति लक्षणमष्टधा भवति ॥ १ ॥

अन्वयः—(संस्थानवर्णगंधा आवर्ताः सत्त्वं स्वरः गतिः छाया नारीणामिति नरवत् तत् लक्षणमष्टधा भवति)। अस्यार्थः—आकार, रंग, सुगंध, चक्र, सत्त्व, बोली, चाल, कांति, जैसे मनुष्योंके लक्षण हैं तैसेही स्त्रियोंके भी लक्षण यह आठ प्रकारके होतेहैं ॥ १ ॥

इह देहसन्निवेशः संस्थानं तस्य लक्षणमिदानीम् ॥
आपादतलशिरोन्तं जातस्य शुभाशुभं फलं वक्ष्ये ॥ २ ॥

अन्वयः—(इह देहसंनिवेशः संस्थानम् इदानीं जातस्य अपादतलशिरोन्तं शुभाशुभं फलं वक्ष्ये तस्य लक्षणं ज्ञेयम्)। अस्यार्थः—इस लोकमें शरी-

रका जो आकार है उसीका नाम संस्थान है–अब पुरुषकेसे पाँवसे लेकर शिरतक स्त्रियोंके शुभ वा अशुभ फल कहता हूं–तिसके लक्षण जानने चाहियें ॥ २ ॥

प्रथमं पादस्य तले रेखाश्चक्रादयस्ततोंगुष्ठः ॥
अंगुल्यस्तदनु नखाः पृष्ठं गुल्फद्वयं पार्ष्णिः ॥ ३ ॥

अन्वयः–(प्रथमं पादस्य तले रेखाः ततः चक्रादयः अंगुष्ठः तदनुनखा अंगुल्यः पादपृष्ठं गुल्फद्वयं पार्ष्णिः) ।अस्यार्थः–पाहिले तो पाँवके तलुवेकी रेखा तिसके पीछे चक्र आदि और अंगूठा तिसके पीछे नख फिर अंगुली तिस पीछे पाँवकी पीठ और दो टकना और पार्ष्णि नाम पाँवका फावा अर्थात् पंजा ॥ ३ ॥

जंघाद्वयं रोमाणि जानूरूचूचुकगंडयुगलमथो ॥
कटिरथ नितंबबिम्बः स्फिचौ भगं जघनमथ बस्तिः ॥ ४ ॥

अस्यार्थः–(जंघाद्वयम्) पिंडली दोनों । (रोमाणि) बाल, (जानु) घुटनेके ऊपर (ऊरू) जंघा (चूचुक) चूंचीकी नोंकें, (गंडयुगलम् कपोलोंकी दोनों हड्डियाँ (अथो कटिः) और कमर (अथ नितंबबिम्बः) कूलेके मोटेपन । (स्फिचौ) कमरके पिं (भगम्) भग, (जघनम्) कूलेका आगा (अथ बस्तिः) ये पेडू आदि अंग हैं ॥ ४ ॥

नाभिः कुक्षिद्वितयं ततश्च पार्श्वद्वयं तथा जठरम् ॥
मध्यं त्रिवलीरोमावलिसहितं हृदयमथ वक्षः ॥ ५ ॥

अस्यार्थः–(नाभिः) टूंडी, (कुक्षिद्वितयम्) बगलें दोनों, (ततः पार्श्वद्वयम्) तिसकी पांसू दोनों, तथा (जठरम्) और पेट, (मध्यम्) त्रिवली (बीचकी सलवटें) (रोमावलीसहितम्) बालोंकी पंगतिसहित । (हृदयम्) नाभिके ऊपर । (अथ वक्षः) बगल आदि अंग हैं ॥ ५ ॥

उरसिजजत्रुयुगलं तदनु स्कन्धयोर्युग्मम् ॥
अंसद्वयमथ कक्षाद्वितयं भुजयोस्तथा द्वन्द्वम् ॥६॥

अस्यार्थः-(उरसिजम्) चूँची (जत्रुयुगलम्) कंधोंकी हँसली, (तदनु स्कंधयोर्युग्मम्) तिस पीछे दोनों कंधे, (अंसद्वयम्) कंधोंके दोनों भाग, (अथ कक्षद्वितयम्) ये दोनों काखें, (तथा भुजयोर्द्वन्द्वम्) और दोनों भुजा जानियें६॥

मणिबंधपाणियुगलं तस्य च पृष्ठं तलं ततो रेखा ॥
अंगुष्ठांगुलयो नखलक्षणमथवानुपूर्विकया वक्ष्ये ॥ ७ ॥

अस्यार्थः-(मणिबंधः) पहुँचा, (पाणियुगलम्) दोनों हाथ, (तस्य पृष्ठम्) तिस हथेलीकी पीठ, (तलम्) हथेली (ततो रेखा) तिसके पीछे रेखा, (अंगुष्ठः) अंगूठा, (अंगुलयः) अंगुली, नख आदि अंगके लक्षण क्रमपूर्वक कहेंगे ॥ ७ ॥

कृकाटिकाऽथ कंठश्चिबुकं कपोलयुगलं च ॥
वक्रमधरोत्तरोष्ठौ दंता जिह्वा ततश्च तालु ॥ ८ ॥

अस्य र्थः-(कृकाटिका) गलेकी घंटी, (कंठः) गला, (चिबुकम्) ठोडी, (कपोलयुगलम्) दोनों गाल, (वक्रम्) मुख (अधरोत्तरोष्ठौ) ऊपर नीचेके होंठ, (दंताः) दाँत, (जिह्वा) जीभ, (ततश्च तालु) तिसके बाद तालु आदि अंग जानियें ॥ ८ ॥

घंटी हसितं नासा क्षुतमक्षिद्वितयमथ च पक्ष्माणि ॥
भ्रूकर्णयुगलललाटं सीमंतं शीर्षमथ केशाः ॥ ९ ॥

अस्यार्थः-(घंटी) तलुदेके ऊपरका भाग (हसितम्) हँसना, (नासा) नाक, (क्षुतम्) छींक, (अक्षिद्वितयम्) आंखें दोनों, (पक्ष्माणि) नेत्रोंकी वरोनी तथा बाफणी। (भ्रूः) भौंह, (कर्णयुगम्) दोनों कान, (ललाटम्) लिलार, (सीमंतम्) बालोंकी मांग, (शीर्षम्) शीस, (अथ केशाः) बाल आदि ये अंग हैं ॥ ९ ॥

अथ पादतलम् ।

पादतलमुष्णमरुणं समांसलं मृदु समं स्निग्धम् ॥
सुप्रतिष्ठितं यासां स्त्रीणां भोगप्रतिष्ठायै ॥ १० ॥

अन्वयः—यासां स्त्रीणाम् पादतलम् उष्णमरुणं समांसलं मृदु समं स्निग्धं सुप्रतिष्ठितं भवति तासां भोगप्रतिष्ठायै भवति । अस्यार्थः—जिन स्त्रियोंका पैरका तलुवा, गरम, लाल, मांससे भरा, नरम, बराबर, चिकना, एकसा बैठा जाय ऐसा होवे तो उन स्त्रियोंके भोग और प्रतिष्ठा अर्थात् बडाईके लिये होता है ॥ १० ॥

रूक्षं खरं विवर्णं चरणतलं भवति भोगनाशाय ॥
असितं दौर्भाग्याय श्वेतं दुःखाय योषाणाम् ॥ ११ ॥

अन्वयार्थौ—(रूक्षं खरं विवर्णं चरणतलं भोगनाशाय भवति) रूखा, खरदरा, बुरे रंगका ऐसा पाँवका तलुवा भोगोंके नाश करनेके लिये होता है और (योषाणां पादतलमसितं दौर्भाग्याय भवति) स्त्रियोंके पांवका तलुवा जो काला होय तो अभाग्यके लिये होताहै और (श्वेतं दुःखाय भवति) जो सफेद होय तो दुःखके लिये होताहै ॥ ११ ॥

शूर्पाकृतिभिः श्वेतैः कुटिलैः स्युर्दुर्भगाश्चरणतलैः ॥
शुष्कैर्निःस्वा विषमैः शोकजुषो दुःखिताऽमृदुभिः ॥ १२ ॥

अन्वयार्थौ—(शूर्पाकृतिभिः श्वेतैः कुटिलैः चरणतलैः नार्यो दुर्भगाः स्युः) जो सूपके आकार और सफेद टेढा ऐसा पाँवका तलुवा होय तो स्त्री कुरूपा और अभागिनी होतीहै—और (शुष्कैः निःस्वाः भवंति) जो सूखा होय तो दरिद्रिणी होय और (विषमैः शोकजुषो भवंति) जो टेढा और ऊंचा नीचा होय तो शोकका सेवन करनेवाली होय और (अमृदुभिः दुखिताः भवंति) जो कडा होय तो दुःखी होतीहैं ॥ १२ ॥

चक्रस्वस्तिकशंखध्वजांकुशच्छत्रमीनमकराद्याः ॥
जायन्ते पादतले यस्याः सा राजपत्नी स्यात् ॥ १३ ॥

अन्वयः--(यस्याः पादतले चक्र--स्वस्तिक--शंख--ध्वजा--अंकुश--छत्र--मीन--मकराद्याः जायन्ते सा राजपत्नी स्यात्) । अस्यार्थः--जिस स्त्रीके पाँवके तलुवेमें चक्र, सांथियां शंख, ध्वजा, अंकुश, छत्र, मछली, मगरको आदि ले करिके ये शुभ रेखा होंय सो शुभ स्त्री राजाकी रानी होतीहै ॥ १३ ॥

चक्रादिचिह्नमध्ये स्यादेकं द्वे बहूनि वा यासाम् ॥
ऐश्वर्यसौख्यमपि वा तासां तदनुमानेन ॥ १४ ॥

अन्वयः--(यासां चक्रादिचिह्नमध्ये एकं स्यात् द्वे वा बहूनि संति तदनुमानेन तासामैश्वर्यसौख्यमपि स्यात्) । अस्यार्थः--जिन स्त्रियोंके चक्रादि चिह्नोंमेंसे एक होय वा दो वा बहुत होंय--तिनके अनुमान करिके तिन्हीं स्त्रियोंको ऐश्वर्य और सौख्य होता है ॥ १४ ॥

ऊर्द्ध्वा रेखांघ्रितले यावन्मध्यांगुलिगता यस्याः ॥
सा लभते पतिमाढ्यं प्रिया पुनर्भवति तस्यापि ॥१५ ॥

अन्वयः--(यस्याः अंघ्रितले ऊर्द्ध्वा रेखा यावत् मध्यांगुलिगता भवति सा आढ्यं पतिं लभते, पुनः तस्यापि प्रिया भवति) । अस्यार्थः--जिस स्त्रीके पाँवके तलुवेमें जो ऊर्ध्व रेखा जितनी बीचकी अंगुलीतक गई होय सो स्त्री धनवान् पतिको पातीहै और सोई तिसकी प्यारी होतीहै ॥ १५ ॥

श्वशृगालमहिषमूषककाकोलूकाहिकोककरभाद्याः ॥
चरणतले जायन्ते यस्याः सा दुःखमाप्नोति ॥ १६ ॥

अन्वयः--(यस्याः चरणतले श्वशृगालमहिषमूषककाकोलूकाहिको-ककरभाद्याः जायन्ते सा दुःखमाप्नोति) । अस्यार्थः--जिस स्त्रीके पाँवके तलुवेमें कुत्ता, गेदडी, भैंसा, चूहा, कौवा, उल्लू, सर्प, भेड़िया, ऊँट आदिके चिह्न होंय सो स्त्री दुःख पाती है ॥ १६ ॥

अथांगुष्ठः ।

मांसोपचितोंगुष्ठः समुन्नतो वर्तुलः शुभो यः स्यात् ॥
ह्रस्वश्चिपिटो वक्रः कुलक्षयाय ध्रुवं स्त्रीणाम् ॥ १७ ॥

अन्वयः-(यस्याः यः पादांगुष्ठः मांसोपचितः समुन्नतः वर्तुलः स शुभः तथा-ह्रस्वः चिपिटः वक्रः स्त्रीणां ध्रुवं कुलक्षयाय भवति) । अस्यार्थः-जिस स्त्रीका जो पाँवका अँगूठा मांससे भरा ऊंचा गोल ऐसा होय सो शुभ है और छोटा चिपटा टेढा होय तो स्त्रियोंका ऐसा अँगूठा कुलका नाश करनेवाला होताहै ॥ १७ ॥

वैधव्यं विपुलेन द्वेष्यत्वं स्वल्पवर्त्तुले स्त्रीणाम ॥
रमणादृतायमाना पुनरंगुष्ठेनातिदीर्घेण ॥ १८ ॥

अन्वयार्थौ-(स्त्रीणां विपुलेन अंगुष्ठेन वैधव्यं स्यात्) स्त्रियोंके चौड़े अँगूठेसे विधवापन होताहै और (स्वल्पवर्तुलेन अंगुष्ठेन द्वेष्यत्वं स्यात) थोडे गोल अँगूठेसे वैरभाव होताहै और (अतिदीर्घेण अंगुष्ठेन रमणादृतायमाना भवति) बहुत लंबे अंगूठेसे स्त्री पतिसे आदर पानेवाली होतीहै ॥ १८ ॥

अथांगुल्यः ।

मृदवोंगुलयः शोणाः पादाम्बुजस्य च कोमलदलानि ॥
सरला घनाः सुवृत्ताः समुन्नता भोगलाभाय ॥ १९ ॥

अन्वयः-(पादांबुजस्य अंगुलयः मृदवः शोणाःअम्बुजस्य कोमलदलानि इव सरलाः घनाः सुवृत्ताःसमुन्नताः भोगलाभाय भवंति)। अस्यार्थः-पांवकी अंगुलियें नरम, लाल कमलकी पत्तियोंकीसी नरम और सूधी, सघन आस पास गोल, उँचाई लिये ऐसी भोगके लाभके अर्थ होतीहैं ॥ १९ ॥

वितरंति प्रौढभुग्ना दौर्भाग्यत्वं हि किंकरीत्वं च ॥
पृथवः स्थूलाः दुःखं विरला रूक्षाः पुनर्नैःस्व्यम् ॥२०॥

अन्वयार्थौ-(प्रौढभुग्नाः अंगुल्यः दौर्भाग्यत्वं वितरंति) बहुत टेढी अंगुली कुरूपको देतीहैं और (पृथवः अंगुल्यः किङ्करीत्वं वितरंति) फैलीहुई चौड़ी

अंगुली दासीपनको देतीहैं और (स्थूलाःअंगुल्यः दुःखं वितरंति) मोटी अंगुली दुःखको देतीहैं और (विरलाः रूक्षाः अंगुल्यः पुनः नैःस्व्यं वितरंति) छितरी और रूखी अंगुली फिर दरिद्रपनको देती हैं ॥ २० ॥

पूर्वं वृत्ता यस्यास्तनवोंगुलयः परस्परारूढाः ॥
हत्वा बहूनपि पतीन् सा दासी जायते नियतम् ॥ २१ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः अंगुल्यः पूर्वं वृत्ताः तनवः परस्परारूढाः भवंति) जिस स्त्रीकी अंगुली पहले गोल फिर पतली एककेऊपर एक चढी हुई होय (सा बहून् अपि पतीन् हत्वा नियतं दासी जायते) सो स्त्री बहुत पतिनको मारिके निश्चय करके दासी होतीहै ॥ २१ ॥

यस्याः पथि प्रयांत्या रेणुकणाः क्षितितलात्समुच्छलंति ॥
सा च कदापि न शस्ता कुरुते कुटिला विनाशं च ॥ २२ ॥

अन्वयार्थौ–(पथि प्रयांत्या यस्याः क्षितितलात् रेणुकणाः समुच्छलंति) जिसके मार्ग चलनेसे धरतीसे धूलके कण उछलें (सा कदापि न शस्ता) सो स्त्री कभी अच्छी नहीं और च पुनः सा कुटिला विनाशं कुरुते) सो खोटी स्त्री नाश करती है ॥ २२ ॥

यांत्या नियतं यस्या न स्पृशति कनिष्ठिकांगुली भूमिम् ॥
सा हत्वा पतिमाद्यं रहो रमते द्वितीयेन ॥ २३ ॥

अन्वयार्थौ–(यांत्या यस्याः कनिष्ठिकांगुली नियतं भूमिं न स्पृशति) जिस स्त्रीकी चलती हुई अंगुली निश्चय पृथ्वीको नहीं छुवे (सा आद्यं पतिं हत्वा रहः द्वितीयेन रमते) सो स्त्री पहले पतिको मारिके एकांतमें दूसरे पतिके साथ भोगविलास करतीहै ॥ २३ ॥

यस्या न स्पृशति भूतलमनामिका सा पतिद्वयं हन्ति ॥
अतिहीनायां तस्यां नित्यं कलहप्रिया सा च ॥ २४ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः अनामिका भूतलं न स्पृशति) जिस स्त्रीकी अनामिका अंगुली चलतेमें धरतीसे न लगे (सा पतिद्वयं हन्ति) सो दो

पतिको मारतीहै (तस्यामतिहीनायां सत्यां सा नित्यं कलहप्रिया भवति) तिसके अत्यंत छोटे होनेसे सो स्त्री नित्यही कलहकी प्यारी होतीहै ॥२४॥

हीना मध्या यस्याः सा योषित्पौरुषं करोति सततम् ॥
अस्पृष्टायां भुवि तस्यां मारयति पुनः पतित्रितयम् ॥२५॥

अन्वयार्थौ-(यस्याः मध्या हीना भवति सा योषित् सततं पौरुषं करोति) जिस स्त्रीके पांवकी बीचकी अंगुली छोटी होय सो स्त्री निरंतर पराक्रमको करतीहै (पुनः भुवि तस्यामस्पृष्टायां सा योषित् पतित्रितयं मारयति) और जो धरतीको बीचकी अंगुली न छुए सो स्त्री तीन पतिको मारतीहै ॥ २५ ॥

अंगुष्ठादधिका स्याद्यस्याः पादप्रदेशिनी नियतम् ॥
सा भवति दुश्चरित्रा कन्यैव च कोऽत्र सन्देहः ॥ २६ ॥

अन्वयार्थौ-(यस्याः पादप्रदेशिनी नियतमंगुष्ठात् अधिका स्यात्) जिस स्त्रीके पांवके अँगूठेके पासकी अँगुली अंगूठेमें निश्चय बडी होय (सा कन्या एव दुश्चरित्रा भवति अत्र कः संदेहः) सो कन्याहीपनमें व्यभिचारणी होतीहै-इसमें क्या संदेह है ॥ २६ ॥

अथ नखलक्षणम् ।

आताम्ररुचयः स्निग्धाः समुन्नताः शुभा नखराः ॥
वृत्ता मसृणाः स्त्रीणां न पुनः शस्ता विपर्यस्ताः ॥ २७ ॥

अन्वयार्थौ-(आताम्ररुचयः स्निग्धाः समुन्नताः वृत्ताः मसृणाः स्त्रीणां नखराः शुभाः) कुछ लाल है रंग जिनके अच्छे चमकदार ऊंचे गोल चिकने ऐसे स्त्रियोंके नख अच्छे हैं और पुनः विपर्यस्ताः न शस्ताः) इससे विपरीत जो होयँ तो अच्छे नहीं हैं ॥ २७ ॥

अथ पृष्ठलक्षणम् ।

कमठोन्नतेन मृदुना चेच्छिरारहितेन पीनेन ॥
राज्ञीत्वं पृष्ठेन न स्त्रीणां स्यात्पादपीठेन ॥ २८ ॥

अन्वयः–(कमठोन्नतेन मृदुना चेत् शिरारहितेन पीनेन एतादृशेन पृष्ठेन स्त्रीणां मध्ये राज्ञीत्वं स्यात्–पादपीठेन पृष्ठेन न)। अस्यार्थः–कछुवे-कीसी ऊंची मुलायम और नसें नहीं निकली होयँ और मोटी ऐसी पीठसे स्त्रियोंके बीचमें स्त्री रानी होतीहै और–चौकीकीसी भाँतिसे पीठ होय तो रानीपन नहीं होय ॥ २८ ॥

रोमान्वितेन दासी निर्मांसेनाधमा भवति नारी ॥
मध्यनतेन दरिद्रा दौर्भाग्यवती शिरालेन ॥ २९ ॥

अन्वयार्थौ–(रोमान्वितेन पृष्ठेन दासी भवति) जिसकी पीठपर रोम बहुत होय वह दासी होय और (निर्मांसेन पृष्ठेन नारी अधमा भवति) जो मांसरहित पीठ होय तो वह स्त्री नीच होती है और (मध्यनतेन पृष्ठेन दरिद्रा भवति) जो बीचमें नीची पीठ होय तो दरिद्रिणी होय औ (शिरालेन पृष्ठेन नारी दौर्भाग्यवती भवति) जिसमें नसें निकली हुई चमकती होयँ ऐसी पीठवाली स्त्री अभागिनी होतीहै ॥ २९ ॥

अथ गुल्फलक्षणम् ।

गूढौ सुखाय गुल्फौ वर्तुलौ शिरारहितावशिथिलौ ॥
विषमौ विकटौ ख्यातौ गुल्फौ दौर्भाग्याय नियतम् ॥ ३० ॥

अन्वयार्थौ–(गूढौ वर्तुलौ शिरारहितौ अशिथिलौ एतादृशौ गुल्फौ सुखाय भवतः) मांससे दबेहुए गोलाई लिये नसें न प्रकट होयँ जिसमें और ढीले नहीं कड़े होय तो ऐसी टँघनेवाली स्त्री सुखी रहतीहै और (विषमौ विकटौ ख्यातौ एतादृशौ गुल्फौ नियतं दौर्भाग्याय भवतः) जो ऊंचे नीचे कडे प्रकट होय तो ऐसी टँघनेवाली स्त्री निश्चय अभागिनी रहतीहै ॥ ३० ॥

अथ पार्ष्णिलक्षणम् ।

सौख्यवती समपार्ष्णिः पृथुपार्ष्णिर्दुर्भगा नारी ॥
उन्नतपार्ष्णिः कुलटा दुःखवती दीर्घपार्ष्णिः स्यात् ॥ ३१ ॥

अन्वयार्थौ–(समपार्ष्णिः नारी सौख्यवती स्यात्) बराबर पाँवके फाबे-वाली स्त्री सुखी रहे और (पृथुपार्ष्णिः नारी दुर्भगा स्यात्) जो चौड़े छितरे पाँवके फाबेवाली स्त्री होय वह कुरूपिणी होतीहै और (उन्नतपार्ष्णिः नारी कुलटा स्यात) ऊंचे पाँवके फाबेवाली स्त्री व्यभिचारिणी अर्थात् घर घर फिरनेवाली होतीहै और (दीर्घपार्ष्णिः नारी दुःखवती स्यात) लंबे पाँवके फाबेवाली स्त्री दुःखी रहतीहै ॥ ३१ ॥

प्रथमदशी पूर्णा ।

अथ जंघालक्षणम् ।

स्निग्धे रोमविहीने यस्याः क्रमवर्तुले समे विशिरे ॥
पादाम्बुजमाले इव जंघे सा भवति नृपपत्नी ॥ ३२ ॥

अन्वयः--(यस्याः जंघे स्निग्धे रोमविहीने क्रमवर्तुले समे विशिरे पादांबुजमाले इव सा नृपपत्नी भवति) । अस्यार्थः–जिस स्त्रीकी पिंडली अच्छी चिकनी रोमरहित, क्रमसे गोल बराबर नसें न चमकतीहों और चरणकमलकीसी माला होय सो राजाकी रानी होतीहै ॥ ३२ ॥

शुष्के पृथू विशाले शिरान्विते स्थूलपिंडके यस्याः ॥
जंघे मांसोपचिते श्लथजानू पांशुला सा स्यात् ॥ ३३ ॥

अन्वयः--(यस्याः जंघे पृथू विशाले शिरान्विते शुष्के मांसोपचिते श्लथजानू स्थूलपिण्डके भवतः सा पांशुला स्यात) । अस्यार्थः–(जिस स्त्रीकी पिंडली चौडी बडी, नसें चमकती हुई सूखी थोडे मांसकी ढीले हैं घुटनेके ऊपरके भाग जिनमें और मोटे पिंड होंय सो स्त्री व्यभिचारिणी होतीहै ३३ ॥

जंघे खररोमे वै वायसजंघोपमेऽथवा यस्याः ॥
मारयति पतिं यदि वा प्रायः सा स्वैरिणी भवति ॥ ३४ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः जंघे खररोमे वा वायसजंघोपमे द्वे भवतः सा पतिं मारयति) जिस स्त्रीकी पिंडली खरदरे रोमवाली अथवा कौवेकी पिंड-

लीके तुल्य जो निश्चय करके होयँ सो स्त्री पतिको मारतीहै और (यदि वा प्रायः स्वैरिणी भवति) जो बहुधा करके व्यभिचारिणी होतीहै ॥ ३४ ॥

एकैकमेव भूपतिपत्नीनां रोमकूपेषु रोम स्यात् ॥
सामान्यानामथवा द्वित्र्यादीनि तथैव विधवानाम् ॥ ३५ ॥

अन्वयार्थौ–(भूपतिपत्नीनां रोमकूपेषु एकैकमेव रोम स्यात्) राजाओंकी रानीके बालोंके छेदोंमें एकही एक रोम होताहै और (सामन्यानाम् अथवा विधवानां रोमकूपेषु तथैव द्वित्र्यादीनि रोमाणि भवन्ति) जो सामान्य और स्त्रियोंके अथवा विधवाओंके उन्हीं बालोंके छेदोंमें दो तीन आदि करके रोम होतेहैं ॥ ३५ ॥

अथ जानुकथनम् ।

यस्या जानुयुगं स्यादनुल्वणं पिशितमग्नमतिवृत्तम् ॥
सा लक्ष्मीरिव नियतं सौभाग्यसमान्विता वनिता ॥ ३६ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः जानुयुगम् अनुल्वणं पिशितमग्नमतिवृत्तं स्यात्) जिस स्त्रीके दोनों घुटनोंके ऊपरके भाग बडे और बुरे न होयँ और मांसमें गढ और बहुत गोल होयँ (सा वनिता नियतं सौभाग्यसमान्विता लक्ष्मीरिव भवति) सो स्त्री निश्चय करके सौभाग्य युक्त लक्ष्मीकी भांति होतीहै ॥ ३६ ॥

निर्मांसैः स्वैरिण्यो विविधाभैः सदाध्वगा नार्यः ॥
विश्लिष्टैर्धनहीना जायन्ते जानुभिः प्रायः ॥ ३७ ॥

अन्वयार्थौ–(निर्मांसैः जानुभिः नार्यः स्वैरिण्यो भवन्ति) थोडे मांसवाली जानु करके स्त्री व्यभिचारिणी होतीहैं और (विविधाभैः नार्यः सदाऽध्वगा भवन्ति) अनेक सूरतकी जानु करके स्त्री सदा मार्ग चलनेवाली होतीहैं और (विश्लिष्टैः जानुभिः नार्यः प्रायः धनहीनाः जायन्ते) जो छितरीसी जानुवाली होयँ वे स्त्री बहुधा धनहीन होतीहैं ॥ ३७ ॥

अथोरुकथनम् ।

मदनगृहस्तंभौ यौ कदलीकाण्डोपमावूरू ॥
यस्याः करिकरवृत्तावरोमशौ भूपपत्नी स्यात् ॥ ३८ ॥

अन्वयः—(यस्याः यौ ऊरू मदनगृहस्तंभौ कदलीकांडोपमौ करिकरवृत्तौ अरोमशौ सा भूपपत्नी स्यात्) । अस्यार्थः—जिस स्त्रीकी जो दोनों जाँघें कामदेवके घरके खंभे—केलेके वृक्षके तुल्य और हाथीकी सूंडकी बराबर गोल और रोमरहित होयँ सो राजाकी स्त्री अर्थात् रानी होतीहैं ॥ ३८ ॥

मांसोपचितैर्विशिरैः कलभकरोपमैररोमभिर्मृदुभिः ॥
आसादयन्ति सततं मदनक्रीडासुखं नार्यः ॥ ३९ ॥

अन्वयः—(नार्यः मांसोपचितैः विशिरैः अरोमभिः घनैः मृदुभिः कलभकरोपमैः ऊरुभिः सततं मदनक्रीडासुखम् आसादयन्ति) । अस्यार्थः—जिन स्त्रियोंकी दोनों जाँघें मांससे भरी हुईं नसें चमकती न होयँ रोमरहित होंय मोटी कोमल हाथीकी सूंडके तुल्य होयँ तो ऐसी जाँघोंसे स्त्री निरंतर कामदेवके सुखको भोगती है ॥ ३९ ॥

चलमांसैर्दौर्भाग्यं वैधव्यं लोमशैः खरैर्नैःस्व्यम् ॥
मध्यक्षुद्रैर्दुःखं तनुभिर्वधमूरुभिर्याति ॥ ४० ॥

अन्वयार्थौ—(चलमांसैः ऊरुभिः नारी दौर्भाग्यं याति) मांससे ढीली दोनों जाँघें जो स्त्रीकी होयँ तो अभागिनी होतीहै और (लोमशैः खरैरूरुभिः नारी नैःस्व्यं वा वैधव्यं याति) रोमों सहित खादरी जाँघोंसे स्त्री दरिद्रिणी और विधवा होती है और (मध्यक्षुद्रैः तनुभिरूरुभिः नारी दुःखं तथा वधं याति) बीचमें छोटी और पतली जाँघों करके स्त्री दुःख और मरणको पातीहै ॥ ४० ॥

इति द्वितीयदशी पूर्णा ।

अथ कटिलक्षणकथनम् ।

दक्षा चतुरन्वितविंशत्यंगुलविनता कटिः समा कठिना ॥
उन्नतनितम्बबिम्बा चतुरस्रा शोभना स्त्रीणाम् ॥ ४१ ॥

अन्वयः–(स्त्रीणां कटिः चतुरन्वितविंशत्यंगुलविनता समा कठिना उन्नतनितम्बबिम्बा चतुरस्रा शोभना दक्षा भवति)। अस्यार्थः–स्त्रियोंकी कमर जो २४ अंगुलकी झुकीहुई बराबर कडी और ऊंचे हैं कूले जिसके और चौकोर ऐसी कमर शोभायमान अच्छी होतीहै ॥ ४१ ॥

विनता दीर्घा चिपिटा निर्मांसा संकटा कटिर्विकटा ॥
ह्रस्वा रोमयुता या सा वनितादौर्भाग्यदुःखकरी ॥ ४२ ॥

अन्वयः–(स्त्रीणां या कटिः विनता दीर्घा चिपिटा निर्मांसा संकटा विकटा ह्रस्वा रोमयुता स्यात्, सा वनितादौर्भाग्यदुःखकरी भवति) अस्यार्थः–स्त्रियोंकी कमर जो बहुत झुकी हुई और लंबी चपटी मांसरहित सूखी भयंकर बुरी छोटी रोमयुक्त होय सो कमर स्त्रियोंकी अभाग्य और दुःखकी करनेवाली होतीहै ॥ ४२ ॥

अथ नितम्बबिम्बलक्षणम् ।

सुदृशां नितम्बबिम्बः समुन्नतो मांसलः पृथुः पीनः ॥
स्मरभूपस्य सुवर्णक्रीडाचुलुक इव रतिनिमित्तम् ॥४३॥

अन्वयः–(सुदृशां नितम्बबिंबः समुन्नतः मांसलः पृथुः पीनः स्यात् रतिनिमित्तं स्मरभूपस्य सुवर्णक्रीडाचुलुक इव)। अस्यार्थः–स्त्रियोंके कूले बराबर ऊंचे मांससे भरे चौड़े मोटे होयँ तो रति करनेके निमित्त कामदेव राजाके खेलनेका मानों सुवर्णका बाजा है ॥ ४३ ॥

विकटश्चिपिटो नतिमान्निर्मांसो रोमशः खरः शुष्कः ॥
कुरुते नितम्बफलको दरिद्रतां दुःखदौर्भाग्यम् ॥ ४४ ॥

अन्वयः–(विकटः चिपिटः नतिमान् निर्मांसः रोमशः खरः शुष्कः नितम्बफलकः दरिद्रतां च दुःखदौर्भाग्यं कुरुते)। अस्यार्थः–भयानक चिपटे

झुके हुए नीचे थोडे मांसके रोमवाले खरदरे सूखे ऐसे जो कूले होंय तो दरिद्री वा दुःख वा अभाग्यको करतेहैं ॥ ४४ ॥

अथ स्फिक्कथनम् ।

बलिभिर्मुक्तौ पीनौ कपित्थफलवर्तुलौ स्फिचौ नार्याः ॥
मृदुलौ घनमांसयुतौ रतिसौख्यं वितरतः सततम् ॥ ४५ ॥

अन्वयः-(बलिभिर्मुक्तौ पीनौ कपित्थफलवर्तुलौ मृदुलौ घनमांसयुतौ नार्याः स्फिचौ सततं रतिसौख्यं वितरतः) । अस्यार्थः--विना सलवटके कडे मांसके कैथाकेसे फलके तुल्य गोल कोमल बहुत मांसयुक्त जो स्त्रीकी कमरके दोनों ओरके मांसके पिंड होंय तो निरंतर रतिके सुखको देतेहैं ॥ ४५ ॥

परुषं रूक्षं चिपिटं स्फिग्युग्मं मांसरहितं न शुभम् ॥
तदपि च बिम्बमानं धत्ते वैधव्यमचिरेण ॥ ४६ ॥

अन्वयार्थौ-(परुषं रूक्षं चिपिटं मांसरहितं स्फिग्युग्मं शुभं न) खरदरे रूखे चिपटे मांसरहित जो कमरके दोनों ओरके पिंड होंय तो शुभ नहीं हैं और (तदपि स्फिग्युग्मं विलम्बमानं भवति तर्हि अचिरेण वैधव्यं धत्ते) जो वेही दोनों ओरके मांसके पिंड लम्बे और लटकते ढीले होंय तो शीघ्रही विधवापनको करतेहैं ॥ ४६ ॥

प्राक् सव्येन निषीदति पदेन सा सुखं सदा लभते ॥
या पुनरपसव्येन स्फुटं सा कष्टमेणाक्षी ॥ ४७ ॥

अन्वयार्थौ-(या एणाक्षी प्राक् सव्येन पदेन निषीदति सा सदा सुखं लभते) जो स्त्री पहले बायें पगकरके बैठे सो सदा सुखको पातीहै और (या अपसव्येन निषीदति सा स्फुटं कष्टं लभते) जो पहले दाहिने पगसे बैठै सो कष्ट दुःखको पातीहै ॥ ४७ ॥

अथ भगलक्षणम् ।

अश्वत्थदलाकारः कुम्भिस्कंधोपमो भगः पृथुलः ॥
पूर्णेन्दुबिंबतुल्यः कच्छपपृष्ठः शुभः सुदृशाम् ॥ ४८ ॥

अन्वयः--(अश्वत्थदलाकारः कुंभिस्कंधोपमः पृथुलः पूर्णेन्दुबिम्बतुल्यः कच्छपपृष्ठः एतादृशः सुदृशां भगः शुभः) । अस्यार्थः--पीपलके पत्तेके आकार--और हाथीके कंधेके तुल्य चौड़ी मांसल चंद्रमाके बिम्बके तुल्य कछुवेकी पीठकीसी ऐसी स्त्रियोंकी योनि होय तो शुभ है अच्छी है ॥ ४८ ॥

स्निग्धो मृदुकृशरोमा मांसोपचितो भगोभवेद्यस्याः ॥
सा पुत्रवती नियतं लभते रतिसौख्यसौभाग्यम् ॥ ४९ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः भगः स्निग्धः मृदुकृशरोमा मांसोपचितः भवेत्) जिस स्त्रीकी योनि अच्छी चिकनी नरम और थोड़े हैं रोम जिस–पर–मांससे भरीहुई होय (सा पुत्रवती नियतं वा रतिसौख्यसौभाग्यं लभते) सो पुत्रवती निश्चय होय और रतिके सुख और सौभाग्यको पातीहै ॥ ४९ ॥

नियतं भगोङ्गनायाः प्रसूयते दक्षिणोन्नतः पुत्रान् ॥
वामोन्नतस्तु कन्या जगति समुद्रस्य वचनमिदम् ॥ ५० ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः अंगनायाः भगः नियतं दक्षिणोन्नतः स्यात्) सा पुत्रान् प्रसूयते) जिस स्त्रीकी योनि निश्चय दाहिनी ओरको ऊंची होय सो पुत्रोंको उत्पन्न करै है और (वामोन्नतः भगः कन्याः प्रसूयते) जो बाँई ओरकी योनि ऊंची होय तो कन्याओंको उत्पन्न करे (जगति इ समुद्रस्य वचनम्) लोकमें यह समुद्रका वचन है ॥ ५० ॥

यस्याः स्याच्चतुरस्रा कच्छपपृष्ठा स्थिरा श्रोणी ॥
सा वै प्रबलान्पुरुषान्रोहिणी भूरिव रमणी सूते ॥५१॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः श्रोणी चतुरस्रा कच्छपपृष्ठा स्थिरा स्यात्) स्त्रीकी योनि चौकोन और कछुवेकी पीठके तुल्य उठी हुई कड़ी होय रमणी रोहिणी भूरिव वै प्रबलान् पुरुषान् सूते) सो स्त्री रोहिणी पृथ्वीकी भाँति प्रबल पुरुषोंको उत्पन्न करै है ॥ ५१ ॥

बहुलोर्द्ध्वकृष्णरोमा सुश्लिष्टः संहितो भगः शस्तः ॥
गूढमणिश्चिंतामणिरिव भुवि विततं धनं तनुते ॥ ५२ ॥

अन्वयार्थौ—(बहुलोर्द्ध्वकृष्णरोमा सुश्लिष्टः संहितः गूढमणिः भगः शस्तः) बहुत हैं ऊंचे काले रोम जिसपै और मिली हुई अच्छी बनावटकी और छिपी है मणि कहिये टोंटनी जिसकी ऐसी योनि अच्छी होतीहै (सः भगः भुवि चिंतामणिरिव विततं धनं तनुते) वही योनि पृथ्वीमें चिंतामणिकी भाँति बहुत धनको पैदा करतीहै ॥ ५२ ॥

विस्तीर्णोऽम्बुजवर्णो मृदुतनुरोमाल्पनासिकस्तुङ्गः ॥
द्विरदस्कन्धसमः स्यात्स्त्रीणां षडमी भगाः सुभगाः ॥ ५३ ॥

अन्वयः—(विस्तीर्णः अम्बुजवर्णः मृदुतनुरोमा अल्पनासिकः तुङ्गः द्विरदस्कन्धसमः स्त्रीणाममी षट् भगाः सुभगाः) । अस्यार्थः—चौड़ी और कमलके रंग, नरम, थोड़े रोमवाली और छोटी है नासिका जिसकी, ऊंची, हाथीके कंधेकी समान, स्त्रियोंकी ऐसी यह छः योनि अच्छी होतीहैं ॥ ५३ ॥

रुचिरोऽत्युष्णः सुघनो गोजिह्वाकर्कशोऽथवा मृदुलः ॥
अत्यन्तसुसंवृत्तः सुगंधिश्च सप्त भगा वर्द्धयंति रतिम् ॥ ५४ ॥

अन्वयः—(रुचिरः अत्युष्णः सुघनः गोजिह्वाकर्कशः मृदुलः अत्यंतसुसंवृत्तः सुगंधिरेते सप्त भगाः रतिं वर्द्धयन्ति) अस्यार्थः—अच्छी, बहुत गरम, कड़ी, गायकी जीभकीसी खरदरी, नरम, बहुत गोल, अच्छी गंधवाली—ये सात प्रकारकी योनि सुखभोगको बढ़ातीहैं ॥ ॥ ५४ ॥

विस्पष्टः स्थूलमणिः संकीर्णः खर्पराकृतिः स्त्रीणाम् ॥
खरकुटिलः खररोमा मांसविहीनो भगो न शुभः ॥ ५५ ॥

अन्वयः—(विस्पष्टः स्थूलमणिः संकीर्णः खर्पराकृतिः खरकुटिलः खररोमा मांसविहीनः स्त्रीणामीदृशो भगः न शुभः) । अस्यार्थः—दीखैहै मोटी मणि जिसमें, सँकड़ी, खपरेके आकार, खरदरी टेढ़ी, खरदरे मोटे बाल, मांसरहित सूखीसी—ऐसी स्त्रियोंकी योनि शुभ नहीं है ॥ ५५ ॥

---

१ विपुलम् ।

चुल्लीकोटरतुल्यस्तिलपुष्पनिभः कुरंगखुररूपः ॥
विश्वप्रेष्यां निःस्वां प्रकुर्वते त्रयो भगाः स्त्रियं नूनम् ॥ ५६ ॥

अन्वयः—(चुल्लीकोटरतुल्यः तिलपुष्पनिभः कुरंगखुररूपः एते त्रयो भगाः स्त्रियं नूनं विश्वप्रेष्यां निःस्वां प्रकुर्वते)।अस्यार्थः—चुल्हेसी, वृक्षकी खोंडरके तुल्य और तिलके फूलके तुल्य और हिरणकी खुरीके आकार ऐसी तीन प्रकारकी योनि स्त्रीको निश्चय पूरी टहलनी चलनेवाली और दरिद्रिणी करतीहैं ५६ ॥

विसृतमुखो नारीणामुलूखलाभो भगः सुदुर्गन्धः ॥
कुञ्जररोमा सततं कुरुते दुःशैल्यदौर्भाग्यम् ॥ ५७ ॥

अन्वयः—(विसृतमुखः उलूखलाभः सुदुर्गन्धः कुञ्जररोमा एतादृशः नारीणां भगः सततं दुःशैल्यदौर्भाग्यं कुरुते) । अस्यार्थः—खुले हुए मुखकी ओखलीसी बुरी गंधवाली हाथीकेसे रोम होंय तो ऐसी स्त्रियोंकी योनि निरंतर दुःख और अभाग्यको करे हैं ॥ ५७ ॥

श्रोणीबिम्बेनालं सल्कीचकनवदलसमाश्रिया नारी ॥
सुखिता प्रायः प्रथमं पश्चात्सा दुःखिता भवति ॥ ५८ ॥

अन्वयः—(सल्कीचकनवदलसमाश्रिया श्रोणीबिम्बेन नारी प्रायः प्रथममलं सुखिता भवेत् सा पश्चाद्दुःखिता भवति) । अस्यार्थः—बाँसके नवीन पत्तेकीसी है शोभा जिसकी ऐसी योनि करके स्त्री बहुधा पहले तो सुख पाती है—और पीछे दुःखको प्राप्त होतीहै ॥ ५८ ॥

शंखावर्त्तसमाना श्रोणी प्रायः प्रजायते यस्याः ॥
धारयति सा न गर्भं निषेव्यमाणा च दुःखकरा ॥ ५९ ॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः श्रोणी शंखावर्त्तसमाना प्रायः प्रजायते सा गर्भं न धारयति) जिस स्त्रीकी योनि शंखके आकार होय सो गर्भको नहीं धारण करै है और (सा निषेव्यमाणा सती दुःखकरा भवेत्) वह सेवन करी हुई भी दुःखकी करनेवाली होतीहै ॥ ५९ ॥

वेतसपर्णसमानः संकीर्णः श्रोणिविम्ब इव यस्याः ॥
असती सा न कदाचन कल्याणपरंपरा नियतम् ॥ ६० ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः संकीर्णः श्रोणिविम्बो वेतसपर्णसमान इव भवेत) जिस स्त्रीकी सँकडी योनि बेंतके पत्तेकी समान होय (सा असती) सो स्त्री अच्छी नहीं होगी और (कदाचन नियतं कल्याणपरंपरा न) कभीभी निश्चय करके भलाईकी करनेवाली नहींहै ॥ ६० ॥

तनुरेताः खररोमा संक्षितो दीर्घनासिको विकटः ॥
विवृतास्यो नारीणां जगति भगा दुर्भगाः षडमी ॥ ६१ ॥

अन्वयार्थौ–(नारीणां जगति अमी षड् भगाः दुर्भगाः भवन्ति) स्त्रियोंकी लोकमें ये छः प्रकारकी योनि बुरी होतीहैं (तनुरेताः खररोमा संक्षिप्तः दीर्घनासिकः विकटः विवृतास्यः न शस्तः) थोड़े वीर्यवाली खरदरे रोमवाली बहुत छोटी बडी नाकवाली और भयंकर खुले मुखवाली ये अच्छी नहीं हैं ॥ ६१ ॥

वलिसहितोद्भवसहितो प्रलम्बमानोथ शीतलः शिथिलः ॥
नीचमुखोप्यथ पृथुलः सप्तामी रतिषु दुःखकृताः ॥ ६२ ॥

अन्वयः–(वलिसहितः उद्भवसहितः प्रलम्बमानः शीतलः शिथिलः नीचमुखः पृथुलः रतिषु अमी सप्त भगाः दुःखकृताः भवंति)। अस्यार्थः– मलवटवाली कुछ दिनोंके गर्भवाली लंबी ठंढी पिलपिली लटकी हुई ढीली चौडी मोटी भोगमें ये ७ प्रकारकी योनि दुःखके करनेवालीहैं ॥ ६२ ॥

जघने भगस्य भालं विस्तीर्णं मांसलं समुत्तुंगम् ॥
तनुकृष्णमृदुलरोम प्रदक्षिणावर्त्तमिह शस्तम् ॥ ६३ ॥

अन्वयः–(इह जघने भगस्य भालमेतादृशं शस्तम् । विस्तीर्णम्, मांसलम् समुत्तुंगम् तनुकृष्णमृदुलरोम प्रदक्षिणावर्त्तम्) । अस्यार्थः–इस लोकमें पेडूके ऊपरी भागकी जो भग है उसका जो भाल ऐसा होय तो अच्छाहै लंबा

चौडा, मांसका भरा गुदगुदा, ऊंचा, थोडे काले नरम रोमोंसहित दाहिनी ओरको झुकाहुवा—ऐसा भगका भाल अच्छा है ॥ ६३ ॥

विषमं वामावर्तं निर्मांसं संकटं खरं विनतम् ॥
भवति तदेव स्त्रीणां वैधव्यविधायकं प्रायः ॥ ६४ ॥

अन्वयः—(स्त्रीणां तदेव भगस्य भालं विषमं वामावर्त्तं निर्मांसं संकटं खरं विनतं भवेत् प्रायः तत् वैधव्यविधायकं भवति) । अस्यार्थः—स्त्रियोंका सोई भगका भाल ऊंचा, नीचा बाईओरको झुका हुवा, मांसरहित सुकडा-हुवा खरदरा झुकाहुवा होय तौ बहुधा करके विधवापनको करनेवाला होताहै ॥ ६४ ॥

अथ बस्तिकथनम् ।

विपुला बस्तिः शस्ता युवतीनामीषदुन्नता मृद्वी ॥
अभ्युन्नता शराभा लेखा किन्तु रोमशा न शुभा ॥ ६५ ॥

अन्वयार्थौ—(युवतीनां बस्तिः विपुला ईषत् उन्नता मृद्वी शस्ता) स्त्रियोंका पेडू बडा चौडा थोडा ऊंचा नरम होय तौ अच्छाहै और (किन्तु अभ्युन्नता शराभा रोमशा लेखा न शुभा) जो बहुत ऊंचा, तीरके तुल्य बहुत रोमोंकी धारी होय तौ शुभ नहीं है ॥ ६५ ॥

इति तृतीयदशी पूर्णा ।

अथ नाभिशुभाशुभलक्षणम् ।

नाभिः शुभा गभीरा सुदृशां वृत्ता प्रदक्षिणावर्ता ॥
स्मरनृपमुद्रेवोपरि रतिमणिकोशस्य रमणस्य ॥ ६६ ॥

अन्वयार्थौ—(सुदृशां वृत्ता नाभिः गभीरा प्रदक्षिणावर्ता शुभा) स्त्रियोंकी गोल टूंडी गहरी दाहिनी ओर झुकीहुई शुभहै और (रतिमणिकोशस्य रमणस्य उपरि स्मरनृपमुद्रा इव) रतिके मणिके खजानेके ऊपर पतिकी कामदेव राजाकी ये मानो मुहर अर्थात् छाप है ॥ ६६ ॥

यस्या विस्तीर्णा स्यान्नवपंकजकर्णिकाकृतिर्नाभिः ॥
सा स्फुटसौभाग्यधनं लभते सुखसंपदां सपदि ॥ ६७ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः नाभिः विस्तीर्णा स्फुटनवपंकजकर्णिकाकृतिः स्यात्) जिस स्त्रीकी नाभि बहुत लंबी चौड़ी है, मुख जिसका प्रकट नये कमलकासा है भीतरी अंकडेदार ऐसा आकार जिसका होय (सा स्त्री सपदि सुखसंपदां सौभाग्यधनं लभते) सो स्त्री शीघ्रही संपूर्ण सुसंपत्तियोंको धन सौभाग्यको पावे है ॥ ६७ ॥

नाभिर्गभीरविवरा तरुणजनोमनहरा भवति यस्याः ॥
सा जायते मृगाक्षी नियतं पुरुषप्रिया प्रायः ॥ ६८ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः नाभिः गभीरविवरा तरुणजनमनोहरा भवति) जिस स्त्रीकी टूंडी गहरी अच्छी और तरुणजनोंके मनको हरनेवाली होय (सा मृगाक्षी प्रायः नियतं पुरुषप्रिया जायते) सो स्त्री बहुधा निश्चय करके पतिकी प्यारी होतीहै ॥ ६८ ॥

वामावर्ता यस्या व्यक्ता ग्रंथिः समुत्ताना ॥
सा दुर्भगा पुरंध्री विगर्हिता स्यात्परप्रेष्या ॥ ६९ ॥

अन्वयार्थौ--(यस्याः वामावर्ता व्यक्ता ग्रंथि, समुत्ताना स्यात्) जिस स्त्रीकी टूंडीकी गांठि अर्थात् टुंड बाईं ओरको झुकीहुई प्रकट ऊँची गाँठि होय तो (सा पुरंध्री विगर्हिता परप्रेष्या तथा दुर्भगा भवति) सो स्त्री निंदा करनेयोग्य बुरी और दूसरोंकी टहलनी बुरी सूरतवाली होतीहै ॥ ६९ ॥

इति नाभिकटिचतुर्थदशी पूर्णा ।

अथ कुक्षिः ।

धनतनया जायन्ते सुकुमारैः कुक्षिभिः पृथुभिः ॥
मंडूककुक्षिरबला धन्या नृपतिं सुतं सूते ॥ ७० ॥

अन्वयार्थी–(सुकुमारैः पृथुभिः कुक्षिभिः बनतनया जायन्ते) अच्छी गुलगुली नरम लंबी चौड़ी कोखों करके बहुत पुत्र होतेहैं और (मंडूककुक्षिः अबला धन्या तथा नृपतिं सुतं सूते) मेंडककीसी कोखमें स्त्री धन्यहै और राजपुत्रको उत्पन्न करतीहै ॥ ७० ॥

वंध्या भवंति वनिताः कुक्षिभिरत्युन्नतैर्वलिभिः ॥
रोमावर्तयुतैस्ताः प्रव्रजिताः पांशुलास्तदा दास्यः ॥ ७१ ॥

अन्वयार्थी–(वलिभिर्युतैः अत्युन्नतैःकुक्षिभिः वनिताः वंध्या भवंति) सलवटोंकरके युक्त और बहुत ऊंची कोखों करके स्त्रियें बाँझ होतीहैं और (रोमावर्त्तयुतैः कुक्षिभिःतदा ताः वनिताः प्रव्रजिताः पांशुलाः दास्यो भवंति) रोमोंकी भौंरी अर्थात् चक्करीके युक्त कोखें होंय तो वेही स्त्रियां वैरागिणी व्यभिचारिणी और दासी होतीहैं ॥ ७१ ॥

अथ पार्श्वलक्षणम् ।

मग्नास्थिभिः समांसैः पार्श्वैर्मृदुभिः समैर्मृजावद्भिः ॥
यास्यादेभिः सहिता प्रीतिसुभगा जगति जायते नियतम् ७२॥

अन्वयार्थी–(मग्नास्थिभिः समांसैः मृदुभिः समैः मृजावद्भिः) गडे हुए हैं हाड मांसमें जिसके मुलायम और बराबर, उजले (या स्त्री एतादृशैः पार्श्वैः सहिता स्यात् सा जगति नियतं प्रीतिसुभगा जायते) जो स्त्री ऐसे पाँसुओं सहित होय सो लोकमें निश्चय करके प्रीतियुक्त सौभाग्यवती होतीहै ॥७२॥

यस्याः सशिरे पार्श्वे समुन्नते रोमसंयुते परुषे ॥
सा निरपत्या रमणी भवति प्रायेण दुःशीला ॥ ७३ ॥

अन्वयार्थी–यस्याः पार्श्वे सशिरे समुन्नते रोमसंयुते परुषे भवतः) जिस स्त्रीकी पांसू नसोंसहित और ऊँची, रोमसहित खरदरी होंय (सा रमणी निरपत्या प्रायेण दुःशीला भवति सो स्त्री संतान रहित बहुधा खोटे स्वभाववाली होतीहै ॥ ७३ ॥

अथोदरलक्षणम्।

उदरेण मार्दववता तनुत्वचा पीननाभिसहितेन ॥
रोमरहितेन नारीनराधिपतिवल्लभा भवति ॥ ७४ ॥

अन्वयः—(मार्दववता तनुत्वचा पीननाभिसहितेन रोमरहितेन उदरेण नारी नराधिपतिवल्लभा भवति)। अस्यार्थः—जिसके पेटमें मुलायमी और पतली खाल अच्छी टूँडीसहित, विना रोमोंके ऐसे उदरकरके स्त्री राजाकी वल्लभा अर्थात् प्यारी होतीहै ॥ ७४ ॥

तुच्छं दुर्जनमानसमिव जठरं भवति भूपपत्नीनाम् ॥
जनहर्षोत्कर्षकरं सज्जनचेष्टितमिव मनोज्ञम् ॥७५॥

अन्वयार्थौ—(भूपपत्नीनां जठरं दुर्जनमानसमिव तुच्छं भवति) राजाकी रानीका पेट खोटे मनुष्योंके चित्तकी भाँति हलका होताहै और (जनहर्षोत्कर्षकरं सज्जनचेष्टितमिव मनोज्ञं भवति) मनुष्योंको हर्षकरनेवाला और अच्छे पुरुषोंकी चेष्टाकी भाँति सुंदर होताहै ॥ ७५ ॥

कुम्भाकारं जठरं निर्मांसं वा शिरायुतं यस्याः ॥
अतिदुःखिता क्षुधार्ता सा नारी जायते प्रायः ॥ ७६ ॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः जठरं कुंभाकारं निर्मांसं वा शिरायुतं भवति) जिस स्त्रीका उदर घड़ेके आकार विना मांस वा नसोंकरके युक्त होय (सा नारी प्रायः क्षुधार्ता अतिदुःखिता भवति) सो स्त्री बहुधा भूँखी और अतिदुःखी होतीहै ॥ ७६ ॥

कूष्मांडफलाकारैरुदरैः पणवोपमैर्मृदंगाभैः ॥
यवतुल्यैर्दुःशीलाः क्लेशायासं स्त्रियो यान्ति ॥ ७७ ॥

अन्वयः—(स्त्रियः कूष्मांडफलाकारैः पणवोपमैः मृदंगाभैः यवतुल्यैः उदरैः दुःशीलाः भवंति, तथा क्लेशायासं यान्ति)। अस्यार्थः—स्त्री जे हैं ते कुम्हडाके फलके आकार, तबला और मृदंगके तुल्य और जौंके समान उदर करके खोटे आचरणकी होतीहैं और क्लेश वा परिश्रमको पातीहैं ॥ ७७ ॥

भवति प्रलम्बमुदरं यस्याः सा श्वशुरमाहन्ति ॥
यस्याः पुनर्विशालं चिरापत्या दुर्भगा सापि ॥ ७८ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः उदरं प्रलम्बं भवति सा श्वशुरम् आहंति (जिस स्त्रीका उदर लम्बा होय सो श्वशुरको मारतीहै और (यस्याः उदरं विशालं भवति सा चिरापत्या दुर्भगा च भवति) जिस स्त्रीका उदर लंबा चौड़ा होय सो बहुत देरमें संतानवाली होतीहै और (सा दुर्भगा अपि भवति) सोई खोंटी (बुरी) होतीहै ॥ ७८ ॥

अथ वलीरोमराजिकथनम् ।

असमपयोधरभाराक्रान्तेव सुबंधुरं मध्यम् ॥
मुष्टिग्राह्यं यस्याः सा सौभाग्यश्रियं श्रयते ॥ ७९ ॥

अन्वयः–(यस्याः मध्यं मुष्टिग्राह्यं सुबंधुरं भवति, असमपयोधरभाराक्रांता इव सा सौभाग्यश्रियं श्रयते)। अस्यार्थः–जिस स्त्रीका मध्यस्थल मुठिमें आजाय ऐसा छोटा सुंदर होय सो स्त्री भारी कुचोंके बोझसे मानों दबी हुई सौभाग्यकी शोभा लक्ष्मीको पातीहै ॥ ७९ ॥

शुभगानां वै वलयं वलित्रयेणान्वितं समग्रेण ॥
नाभीलावण्याब्धेरुत्कालिकां भूमिकां वहते ॥ ८० ॥

अन्वयार्थौ–(वै इति निश्चयेन सुभगानां वलयं समग्रेण वलित्रयेण अन्वितं भवति) निश्चय करके सौभाग्यवती स्त्रियोंका मध्यस्थल संपूर्ण तीन सलवटोंकरके युक्त होय तो (नाभीलावण्याब्धेः उत्कालिकां भूमिकां वहते) नाभीकी शोभाके समुद्रकीसी है लहरी जिसमें ऐसी पृथ्वीको धारण करताहै ८० ॥

रोमलता तनुऋज्वी हृदयांतादुत्थिता शुभा श्यामा ॥
विशतीव नाभिकुहरे मुखेन्दुभीता यथा तिमिररेखा ॥ ८१ ॥

अन्वयार्थौ–(हृदयांतात् उत्थिता तनुऋज्वी रोमलता श्यामा शुभा) छातीके अंतसे उत्पन्नहुई जो पतली सीधी रोमोंकी बेलि काली शुभ है

(का इव मुखेन्दुभीता यथा तिमिररेखा नाभिकुहरे विशति इव) मुखचंद्रमासे डरी जैसे अँधेरेकी रेखा मानों टूंडीके बुलेमें घुसी जाती है ॥ ८१ ॥

कुटिला स्थूला कपिला व्युच्छिन्ना रोमवल्लरी यस्याः ॥
विधवात्वं दौर्भाग्यं लभते प्रायेण सा रमणी ॥ ८२ ॥

अन्वयार्थौ-(यस्याः रोमवल्लरी कुटिला कपिला विच्छिन्ना भवति) जिस स्त्रीकी रोमोंकी बेलि टेढी कुछ कबरी कई रंगकी, बीचमें टूटी होय तो (सा रमणी प्रायेण विधवात्वं च दौर्भाग्यं लभते) सो स्त्री बहुधा करके विधवापन और अभाग्यको पातीहै ॥ ८२ ॥

अथ हृदयम् ।

निर्लोम व्रणरहितं हृदयं यस्याः समं मनोहारि ॥
ऐश्वर्यमवैधव्यं पतिप्रियत्वं भवति तस्याः ॥ ८३ ॥

अन्वयार्थौ-(यस्याः हृदयं निर्लोम व्रणरहितं समं मनोहारि स्यात्) जिस स्त्रीका हृदय विना रोमोंके हो और किसी प्रकारका दाग अर्थात् फोडा फुन्सी नहीं होय और बराबर मनको हरनेवाला होय (तस्याः ऐश्वर्यम् अवैधव्यं पतिप्रियत्वं भवति) तिस स्त्रीका सब प्रकारके आनंदका ठाट और सौभाग्यपन तथा-पतिकी प्यारी होतीहै ॥ ८३ ॥

उद्भिन्नरोमकीर्णं विस्तीर्णं हृदयमिह भवेद्यस्याः ॥
सा प्रथमं भर्तारं हत्वा वेश्यात्वमुपयाति ॥ ८४ ॥

अन्वयार्थौ-(इह यस्याः हृदयम् उद्भिन्नरोमकीर्णं विस्तीर्णं भवेत्) इस लोकमें जिस स्त्रीका हृदय फटा टूटा बहुत रोमयुक्त और बहुत लंबा चौडा होय (सा प्रथमं भर्तारं हत्वा वेश्यात्वम् उपयाति) सो स्त्री पहले पतिको मारिके फिर वेश्यापनको पाती है अर्थात् वेश्या होकर चली जातीहै॥८४॥

पिशितविवर्जितमुन्नतविनतं हृदयं व्रणान्वितं विषमम् ॥
कर्मकरात्वं तनुते वनितानां तत्क्षणादेव ॥ ८५ ॥

अन्वयार्थौ-(यस्याः हृदयं पिशितविवर्जितम् उन्नतं विनतं व्रणान्वितं विषमं भवेत्) जिस स्त्रीका हृदय मांसरहित ऊँचा झुका हुवा और

फोडा फुन्सी आदि चिह्न युक्त ऊँचा नीचा होय तौ (वनितानां मध्ये तत् हृदयं कर्मकरात्वं तत्क्षणादेव तनुते) स्त्रियोंके बीचमें वह हृदय दासीपनको शीघ्रही करैहै ॥ ८५ ॥

अथोरःस्थलम् ।

पीवरमुन्नतमायतमुरःस्थलं न मृदुलं न कठिनं विशिरम् ॥
अष्टादशांगुलमितं रोमविहीनं शुभं स्त्रीणाम् ॥ ८६ ॥

अन्वयः-(स्त्रीणाम् उरःस्थलं पीवरम् उन्नतम् आयतं न मृदुलम् न कठिनं विशिरम् अष्टादशांगुलमितं रोमविहीनं शुभं भवति) । अस्यार्थः- स्त्रियोंकी छातीकी जगह मांससे भरी हुई, ऊंची, लंबी, चौडी, न नरम, न कडी और नसें न दीखती होंय अठारह अंगुलके प्रमाण विना रोमोंके शुभ होतीहै ॥ ८६ ॥

विषमेण भवति हिंस्रा निर्मांसेनोरसा भवति विधवा ॥
अतिपृथुना प्रियकलहा दुःशीला रोमशेनापि ॥ ८७ ॥

अन्वयार्थौ-(विषमेण उरसा नारी हिंस्रा भवति) ऊंची, नीची छाती करिके स्त्री हिंसा करनेवाली होती है और (निर्मांसेन उरसा नारी विधवा भवति) विना मांसकी छातीसे स्त्री विधवा होती है और (अतिपृथुना उरसा नारी प्रियकलहा भवति (बहुत चौडी छातीसे स्त्री कलहकी प्यारी होती है और (रोमशेन उरसा नारी अपि दुःशीला भवति) रोमोंवाली छातीसे स्त्री खोटे स्वभाववाली होतीहै ॥ ८७ ॥

अथ स्तनौ ।

शस्तौ वृत्तौ सुदृढौ पीनौ कठिनौ घनौ स्तनौ सुदृशाम् ।
स्नानाय स्मरनृपतेः काञ्चन कलशाविव प्रगुणौ ॥ ८८ ॥

अन्वयार्थौ-(सुदृशां स्तनौ वृत्तौ सुदृढौ पीनौ कठिनौ घनौ शस्तौ भवतः) स्त्रियोंके कुच गोल अच्छे कडे मांसके भरे बहुत अच्छे होवेहैं

(कौ इव स्मरनृपतेः स्नानाय प्रगुणौ काञ्चनकलशौ इव) कैसे कि मानों कामदेव राजाके स्नानके अर्थ सुंदर सोनेके वे कलशेहैं ॥ ८८ ॥

सुखसौभाग्यनिधानं समुन्नतं स्तनयुगं समं कान्तम् ॥
धत्ते सुवर्णवनिता कुम्भं रुचिरं स्मरेभस्य ॥ ८९ ॥

अन्वयः-(या सुवर्णवनिता समुन्नतं स्तनयुगं समं कान्तं सुखसौभाग्यनिधानम् रुचिरं स्मरेभस्य कुंभं धत्ते)। अस्यार्थः-जिस स्त्रीके ऊंचे दोनों कुच बराबर, सुंदर, सुखसौभाग्यके निधान कहिये स्थान और सुंदर रंगकी स्त्री मानों कामदेव हाथीके कुंभ (गंडस्थल) को धारण करता है८९॥

पुत्रः प्रथमे गर्भे पयोधरे दक्षिणोन्नते स्त्रीणाम् ॥
वामोन्नतेन पुत्री निरपत्यं चैव विषमेण ॥ ९० ॥

अन्वयार्थौ-(स्त्रीणां दक्षिणोन्नते पयोधरे प्रथमे गर्भे पुत्रो भवति) स्त्रियोंके दाहिनी ओरको झुकेहुए कुचोंसे पहिले गर्भसे पुत्र होताहै और (वामोन्नतेन पयोधरेण प्रथमं पुत्री भवति) बांई ओरके झुके हुए कुचों से पहिले गर्भसे पुत्री होती है और (विषमेण पयोधरेण एव निरपत्यं भवति) ऊंचे नीचे कुचोंसे वह विना संतान की होती है ॥ ९० ॥

शुष्के विहीनमध्ये स्थूलाग्रे स्तनयुगेऽङ्गना नैःस्व्यम् ॥
लभते विरले तस्मिन्वैधव्यं पुत्रनाशं च ॥ ९१ ॥

अन्वयार्थौ-(अंगना शुष्के विहीनमध्ये स्थूलाग्रे स्तनयुगे सति नैःस्व्यं लभते) स्त्रीके सूखे; बीचमें ऊंचे नीचे मोटे हैं आगेके भाग जिसके ऐसे दोनों कुचोंके होनेसे दरिद्रताको पावै है और (तस्मिन् स्तनयुगे विरले सति वैधव्यं च पुनः पुत्रनाशं लभते) वेही दोनों कुचोंके बहुत दूर होनेसे विधवापन और पुत्रके नाशको पावै है ॥ ९१ ॥

कुरुते वक्षोजद्वयमरघटघटीनिभं पुरंध्रीणाम् ॥
सततं पूर्वसुखं तत्पश्चादत्यर्थदुःखकरम् ॥ ९२ ॥

अन्वयार्थौ-(पुरंध्रीणां वक्षोजद्वयम् अरघटघटीनिभं चेद् भवति) स्त्रियोंके जो दोनों कुच रहँटके घडियेकी तुल्य होंय तौ (सततं पूर्वसुखं कुरुते)

निरंतर पहले सुखको करते हैं और पश्चात् (अतिदुःखकरं भवति) पीछे बहुत दुःखके करनेवाले होते हैं ॥ ९२ ॥

अतिनिविडं कुचयुगलं यत्स्त्रियाः पथि च यांत्या हि ॥
सौख्यं सारसवदना सौभाग्यं हन्ति शस्तकरम् ॥ ९३ ॥

अन्वयः-(पथि यान्त्याः स्त्रियाः यत् कुचयुगलम् अतिनिविडं स्यात् तत् सारसवदना सौख्यं शस्तकरं च पुनः सौभाग्यं हंति)। अस्यार्थः-मार्गमें चलती हुई स्त्रीके दोनों कुच जो मिल जायँ तो कमलवदना जो स्त्री है उसका जो कल्याणकारी सुख और सौभाग्य है तिसको फिर नाश करैहै ॥ ९३ ॥

सुदृशां चूचुकयुग्मं शस्तं श्यामं सुवृत्तमतिपीनम् ॥
स्मरनृपतेर्मुद्रेयं रतिसुखनिधिकोशभवनस्य ॥ ९४ ॥

अन्वयः-(सुदृशां चूचुकयुग्मं श्यामं सुवृत्तम् अतिपीनं शस्तं स्मरनृपतेः रतिसुखनिधिकोशभवनस्य इयं मुद्रा)। अस्यार्थः-स्त्रियोंके दोनों कुचोंकी टोटनी साँवरी, गोल और बहुत मोटी मांससे भरी हुई अच्छी होतीहैं और कामदेव राजाके क्याहैं मानों रतिसुखनिधिकोशके घरकी ये मुहर अर्थात छाप हैं ॥ ९४ ॥

दीर्घं चूचुकयुग्मं यस्याः सा प्रियरतिर्भवति ॥
धूर्ता चान्तर्मनसा पुनस्तेनैव द्वेष्टि सा मनुजम् ॥ ९५ ॥

अन्वयार्थौ-(यस्याः चूचुकयुग्मं दीर्घं भवति सा प्रियरतिर्भवति) जिस स्त्रीके कुचोंकी दोनों नोकें बहुत लंबी होंय, सो स्त्री रति में सुख वा प्यार करनेवाली होतीहै और (पुनः अन्तर्मनसा धूर्ता सा तेनैव मनुजं द्वेष्टि) फिर वही भीतरे मनसे धूर्त्त और छलसे उसी मनुष्यसे वैर करतीहै ॥ ९५ ॥

बहिरवनतेन चूचुकयुगलेनातीव सूक्ष्मविषमेण
संप्राप्य च महद्दुःखं दुःशीला जायते योषित् ॥ ९६ ॥

अन्वयः-(बहिरवनतेन अतीव सूक्ष्मविषमेण चूचुकयुगलेन योषित् महद्दुःखं संप्राप्य च पुनः दुःशीला जायते) अस्यार्थः-बाहरकी ओर

झुके हुए और बहुत छोटे पतले ऊंचे नीचे कुचोंकी दोनों नोकोंसे स्त्री बड़े दुःखको पाकर फिर व्यभिचारिणी होतीहै ॥ ९६ ॥

इति स्तनषष्ठदशी संपूर्णा ।

अथ जत्रुकथनम् ।

जत्रुभ्यां पीनाभ्यां धनधान्यसुतान्विता भवेद्वनिता ॥
उन्नतिसंहतिमद्भ्यां पुनरेषा भूरिभोगाढ्या ॥ ९७ ॥

अन्वयः–(एषा वनिता पीनाभ्यां जत्रुभ्याम् उन्नतिसंहतिमद्भ्यां धनधान्यसुतान्विता पुनः भूरिभोगाढ्या भवति) । अस्यार्थः–जो स्त्री ऊंचे मांसके भरे अच्छे बनावटके कंधोंके जोड़ोंसे युक्त हो वह धन धान्यवती और बहुत भोग करिके युक्त अर्थात् भोगवती होतीहै ॥ ९७ ॥

श्लथकीकससंधिमता निम्नेन द्रविणलेशपरिहीना ॥
जत्रुयुगलेन योषिद्विषमेण पुनर्भवति विषमा ॥ ९८ ॥

अन्वयार्थौ–(श्लथकीकससंधिमता निम्नेन जत्रुयुगलेन योषित् द्रविणलेशपरिहीना भवति) ढीले हाडोंकी संधिवाले नीचे ऐसे कंधोंके जोड़ोंसे स्त्री थोड़ेसे धनकरिकेभी हीन होतीहै और (पुनः विषमेण जत्रुयुगलेन योषित् विषमा भवति) फिर ऊंचे नीचे कंधोंके जोडों करके स्त्री नटखट खोटी विषके तुल्य होतीहै ॥९८॥

यस्या वंध्या वनिता स्कंधयुगं किंचिदुन्नतं मूले ॥
नातिकृशपीनदीर्घं सुखसौभाग्यप्रदं सुदृशाम् ॥ ९९ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः स्कंधयुगं मूले किंचित् उन्नतं सा वनिता वंध्या भवति) जिस स्त्रीके दोनों कंधे जड़में कुछ ऊंचे होंय सो स्त्री बाँझ होतीहै और (सुदृशां नातिकृशपीनदीर्घं स्कंधयुगं सुखसौभाग्यप्रदं भवति) स्त्रियोंके न तो बहुत पतले, न मोटे, न लंबे, दोनों कंधे हों तो सुख सौभाग्यके देनेवाले होतेहैं ॥ ९९ ॥

ऊर्द्ध्वस्कंधा कुलटा स्थूलस्कंधापि भारवाहनपरा ॥
चक्रस्कंधा वंध्या दुःखवती रोमशस्कंधा ॥ १०० ॥

अन्वयार्थौ–(ऊर्द्ध्वस्कंधा वनिता कुलटा भवेत्) ऊंचे कंधोंवाली स्त्री खोटी होतीहै और (स्थूलस्कंधा वनिता भारवाहनपरा अपि भवेत्) मोटे कंधोंवाली स्त्री बोझ ढोनेवाली होतीहै और (चक्रस्कंधा वनिता वंध्या भवेत्) चक्रवाले कंधोंसे स्त्री बाँझ होती है (रोमशस्कंधा वनिता दुःखवती भवेत्) बहुत रोमवाले कंधोंसे स्त्री दुःखपानेवाली होती है ॥ १०० ॥

अथांसकथनम् ।

निगूढसंधिबंधौ सुसंहतौ पिशितसंयुतौ शस्तौ ॥
अंसौ स्यातां यस्याः सा नारी भूरिसौभाग्या ॥ १०१ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः अंसौ निगूढसंधिबंधौ सुसंहतौ पिशितसंयुतौ शस्तौ भवतः) जिस स्त्रीके कंधे छिपे हैं जोड़ोंके बंध जिसके और खूब जोडोंसे बँधे-हुए मांससे भरे हुए हों (सा नारी भूरिसौभाग्या भवति) सोइ स्त्री बडी सौभाग्यवती अर्थात् पतिकी प्यारी होतीहै ॥ १०१ ॥

सुदृशां नीचौ स्कंधौ दौर्भाग्यसमन्वितौ च भवतो वै ॥
अत्युच्चैर्वैधव्यं निर्मांसैर्दुःखदारिद्र्यम् ॥ १०२ ॥

अन्वयार्थौ–(सुदृशां नीचौ स्कंधौ वै इति निश्चयेन दौर्भाग्यसमन्वितौ भवतः) स्त्रियोंके नीचे कंधे होंय तो निश्चय करके दौर्भाग्ययुक्त होतेहैं और (अत्युच्चैः स्कंधैः वैधव्यं स्यात्) बहुत ऊंचे होंय तो विधवापन होय और (निर्मांसैः स्कंधैः दुःखदारिद्र्यं भवति) मांस रहित कंधोंसे स्त्री दुःखी और दरिद्रिणी होतीहै ॥ १०२ ॥

अथ कक्षाकथनम् ।

कक्षायुगं सुगंधि स्निग्धं च समुन्नतं पिशितपूर्णम् ॥
तनुमृदुलरोमसहितं प्रशस्यते प्रायशः सुदृशाम् ॥ १०३ ॥

अन्वयः–(सुदृशां कक्षायुगं सुगंधि स्निग्धं समुन्नतं पिशितपूर्णं तनुमृदुलरोमसहितं प्रायशः प्रशस्यते)। अस्यार्थः–स्त्रियोंकी कार्खें दोनों सुगंधित और अच्छी चिकनी, ऊंची, मांससे भरीहुई पतले और मुलायम रोमों करिके युक्त बहुधा बडाईके योग्य होतीहैं ॥ १०३ ॥

अतिनिम्ने निर्मांसे प्रस्वेदमलान्विते शिराकीर्णे ॥
सोलूखलबहुरोमे कक्षे दौर्भाग्यमावहतः ॥ १०४ ॥

अन्वयः–(अतिनिम्ने निर्मांसे प्रस्वेदमलान्विते शिराकीर्णे सोलूखलबहुरोमे कक्षे दौर्भाग्यम् आवहतः)। अस्यार्थः–बहुत नीचे, विना मांसके, पसीने और मलकरके युक्त नसें जिसमें चमकती हों सो ओखलीकी भाँति बहुत रोमवाली ऐसी कार्खें अभाग्यको करतीहैं ॥ १०४ ॥

इति सप्तदशी पूर्णा ।

अथ बाहुलक्षणम् ।

शस्तौ बाहू सुदृशां शिरीषतरुपुष्पकोमलौ दीर्घौ ॥
मानुषकुरंगहेतोः पाशाविव पुष्पचापस्य ॥ १०५ ॥

अन्वयार्थौ–(सुदृशां बाहू शिरीषतरुपुष्पकोमलौ दीर्घौ शस्तौ भवतः) स्त्रियोंकी दोनों भुजा शिरसके फूलकी समान कोमल और बडी लंबी होंय तो श्रेष्ठ होतीहैं (कौ इव–मानुषकुरंगहेतोः पुष्पचापस्य पाशौ इव) मानों क्या-हैं कि मनुष्य हरिणके हेतु कामदेवकी यह फाँसी है ॥ १०५ ॥

निर्लोम बाहुयुगलं गूढास्थिग्रंथि करिकराकारम् ॥
विश्लिष्टशिरासंधि स्त्रीणां सौभाग्यमधिशेते ॥ १०६ ॥

अन्वयः–(स्त्रीणां बाहुयुगलं निर्लोमगूढास्थिग्रंथि करिकराकारं विश्लिष्टशिरासंधि सौभाग्यम् अधिशेते)। अस्यार्थः–स्त्रियोंकी दोनों भुजा विना रोमोंके और छिपी हैं हाडकी गाँठि जिनकी, हाथीकी सूंडके आकार, नसोंके जोड जिनमें न दीखें ऐसी भुजाओंसे सौभाग्य होताहै ॥ १०६ ॥

वैधव्यं वनितानां बाहुभ्यां स्थूलरोमशाभ्यां स्यात् ॥
दौर्भाग्यं ह्रस्वाभ्यां शिरायुताभ्यां परिक्लेशः ॥ १०७ ॥

अस्यार्थः-(स्थूलरोमशाभ्यां बाहुभ्यां वनितानां वैधव्यं स्यात) मोटे रोमों करके युक्त भुजा स्त्रियोंकी होंय तो विधवा होय और (ह्रस्वाभ्यां बाहुभ्यां वनितानां दौर्भाग्यं स्यात) छोटीभुजाओंसे स्त्रियाँ खोटे भाग्यकी होतीहैं और (शिरायुताभ्यां बाहुभ्यां परिक्लेशः स्यात) नसों करके युक्त भुजाओंसे स्त्रियोंको दुःख होताहै ॥ १०७ ॥

अम्भोजगर्भसुभगं मृदु नवसहकारकिसलयाकारम् ॥
तनु विप्रकृष्टसर्वांगुलिकं पाणिद्वयं शस्तम् ॥ १०८ ॥

अन्वयः-(अंभोजगर्भसुभगं मृदु नवसहकारकिसलयाकारं तनुविप्रकृष्टसर्वांगुलिकम् एतादृशं पाणिद्वयं शस्तम्) । अस्यार्थः-कमलके पुष्पके गर्भके समान सुंदर मुलायम, नये आमकी कौंपलोंके तुल्य पतली जुदी जुदी सब अंगुली जिसमें ऐसे दोनों हाथ श्रेष्ठ अर्थात् अच्छे होतेहैं ॥ १०८ ॥

रोमशिरापरिहीनं घनमांसं पाणितलयुगं स्निग्धम् ॥
बहुशुभमनुन्नतमनिम्नं रूक्षं खरं विवर्णं क्लेशदं भवति ॥१०९॥

अन्वयार्थौ-(रोमशिरापरिहीनं घनमांसं स्निग्धं पाणितलयुगं बहुशुभं भवति) रोम और नसों करिके हीन बहुत मांसवाली चिकनी ऐसी दोनों हथेली बहुत शुभ होतीहैं और (अनुन्नतम् अनिम्नं रूक्षं खरं विवर्णं पाणितलयुगं क्लेशदं भवति) ऊंची न हों, नीची गहरी न हों, रूखी, खरदरी, बुरेरंगकी होंय तौ ऐसी दोनों हथेली दुःखके देनेवाली होतीहैं ॥ १०९ ॥

यस्याः पाणितलं स्याद्बहुरेखं सा निहंति भर्तारम् ॥
दौर्भाग्यं भाग्यहीनां रेखारहितं पुनस्तनुते ॥ ११० ॥

अन्वयार्थौ-(यस्याः पाणितलं बहुरेखं स्यात् सा भर्तारं निहंति)जिस स्त्रीकी हथेलीपै बहुत रेखा होंय सो स्त्री पतिको मारती है और (पुनः

रेखारहितं पाणितलं दौर्भाग्यं भाग्यहीनां तनुते) फिर विना रेखाकी हथेली खोटाभाग्य और भाग्यहीन करै है ॥ ११० ॥

नरलक्षणाधिकारे नारीणामप्यशेषमेवोक्तम् ॥
कररेखालक्ष्म पुनः किंचित्प्रस्तावतो वक्ष्ये ॥ १११ ॥

अन्वयः-(नरलक्षणाधिकारे नारीणाम् अपि अशेषं लक्षणम् उक्तं पुनः कररेखालक्ष्म किंचित प्रस्तावतः वक्ष्ये) । अस्यार्थः-जैसे पुरुषके अधिकारमें लक्षण कहे तैसेही स्त्रियोंके संपूर्ण लक्षण उक्तसे कहे फिर हाथकी रेखाओंके चिह्न कुछ प्रसंगसे कहताहूं ॥ १११ ॥

रक्ता व्यक्ता स्निग्धा गंभीरा वर्तुलाः समाः पूर्णाः ॥
रेखास्तिस्रः स्त्रीणां पाणितले सौख्यलाभाय ॥ ११२ ॥

अन्वयः-(रक्ताः व्यक्ताः स्निग्धाः गंभीराः वर्तुलाः समाः पूर्णाः स्त्रीणां पाणितले तिस्रो रेखाः सौख्यलाभाय भवंति) । अस्यार्थः-लाल, अच्छी प्रकट, चिकनी, गहरी, गोल, बराबर, पूरी स्त्रियोंकी हथेलीमें तीन रेखा जो दीखती हों, तौ-सुखलाभके हेतु होतीहैं ॥ ११२ ॥

मत्स्येन भवति सुभगा हस्तस्थस्वस्तिकेन वित्ताढ्या ॥
श्रीवत्सेन पुनः स्त्री नृपपत्नी नृपतिमाता वा ॥ ११३ ॥

अन्वयार्थौ-(स्त्री हस्ततलस्थेन मत्स्येन सुभगा भवति) स्त्रीकी हाथकी हथेलीमें जो मच्छीकी रेखा होय तौ सौभाग्यवती होतीहै और (हस्ततलस्थस्वस्तिकेन वित्ताढ्या भवति) जो हथेलीमें साथियेका चिह्न होय तौ धनवती होती है और (हस्ततलस्थेन श्रीवत्सेन नृपपत्नी वा नृपतिमाता भवति) जो हथेलीमें श्रीवत्स चिह्न होय तौ राजाकी रानी अथवा राजाकी माता होतीहै ॥ ११३ ॥

पाणितले यस्याः स्यान्नंद्यावर्तः प्रदक्षिणो व्यक्तः ॥
भुवि चक्रवर्तिनः तत्स्त्रीरत्नं भवति भोगार्हम् ॥ ११४ ॥

अन्वयः-(यस्याः पाणितले प्रदक्षिणः व्यक्तः नंद्यावर्त्तः स्यात् तत्स्त्रीरत्नं भुवि चक्रवर्तिनः भोगार्हं भवति)। अस्यार्थः-जिस स्त्रीकी

हथेलीमें दाहिनी ओर प्रकट नंद्यावर्त साथियेका चिह्न होय तौ वह स्त्रीरत्न-(स्त्रियोंमें श्रेष्ठ) पृथ्वीमें चक्रवर्ती राजाके भोगनेके योग्य होताहै ॥ ११४ ॥

या करतले कनिष्ठां निर्गत्यांगुष्ठमूलतो याति ॥
सा रेखा भर्तृघ्नी तद्युक्तां नोद्वहेत्कन्याम् ॥ ११५ ॥

अन्वयार्थौ-(करतले या रेखा अंगुष्ठमूलतः निर्गत्य कनिष्ठां याति) हथेलीमें जो रेखा अँगूठेके मूलसे निकल कनिष्ठातक जाय तो (सा रेखा-भर्तृघ्नी भवेत्) सो रेखा पतिको मारनेवाली होतीहै और (तद्युक्तां कन्यां न उद्वहेत्) ऐसी रेखायुक्त कन्याको न विवाहै ॥ ११५ ॥

रेखाभिर्मानतुल्याभिर्जायते सा वणिग्जाया ॥
भवति कृषीवलपत्नी युगसीरोलूखलाकृतिभिः ॥ ११६ ॥

अन्वयार्थौ-(मानतुल्याभिः रेखाभिः सा वणिग्जाया जायते) तौलनेकी वस्तुके प्रमाणके तुल्य रेखाओंकारिके युक्त हो सो वैश्यकी स्त्री होतीहै और (युगसीरोलूखलाकृतिभिः रेखाभिः कृषीवलपत्नी भवति) जुवा, हल,ओखलीके आकारकी रेखाओंसे किसानकी स्त्री होतीहै ॥ ११६ ॥

गजवाजिवृषभपद्माः प्रासादधनुर्भागैर्दुर्वर्ज्याः ॥
यस्याः पाणितले स्युः सा तीर्थकरस्य भुवि जननी ॥११७॥

अन्वयार्थौ-(यस्याः पाणितले गजवाजिवृषभपद्माः प्रासादधनुर्भागैर्दुर्वर्ज्याः या रेखाः स्युः) जिस स्त्रीकी हथेलीमें हाथी, घोड़ा, बैल, कमल, महल, धनुष् इन करके रहित जो चिह्न होय तो (भुवि सा तीर्थकरस्य जननी भवति) पृथ्वीमें सो स्त्री तीर्थंकर अर्थात् धर्मके करनेवालेकी माता होतीहै ॥ ११७ ॥

शंखस्वस्तिकसागरनंद्यावर्तातपत्रातिमिकूर्मैः ॥
वामकरतलनिविष्टैः प्रजायते चक्रिणो माता ॥ ११८ ॥

अन्वयः-(वामकरतलनिविष्टैः शंखस्वस्तिकसागरनंद्यावर्तातपत्रातिमिकूर्मैः चक्रिणः माता प्रजायते) । अस्यार्थः-बायें हाथकी हथेलीमें जो

स्थित शंख, चक्र, समुद्र, नंद्यावर्त चिह्न, आतपत्र कहिये छत्र मछली, कछुवा ऐसे चिह्नों करके चक्रवर्ती राजाकी माता होतीहै ॥ ११८ ॥

ध्वजतोरणभद्रासनचामरभृंगारशीर्षरेखाद्याः ॥
यस्या भवन्ति पाणौ सा जननी वासुदेवस्य ॥ ११९ ॥

अन्वयः—(यस्याः पाणौ ध्वजतोरणभद्रासनचामरभृंगारशीर्षरेखाद्याः भवंति सा स्त्री वासुदेवस्य जननी भवति)। अस्यार्थः—जिस स्त्रीके हाथमें ध्वजा तोरण, राजाका आसन, चमर, जलकी झारी, मस्तकपरके आकार रेखा आदि होंय तो सो स्त्री वासुदेव अर्थात् कृष्णबलदेवकी माता होतीहै ॥ ११९ ॥

श्रीवत्सवर्धमानांकुशगदादित्रिशूलतुल्याभिः ॥
रेखाभिर्जयशब्दो वनितानां जायते सपदि ॥ १२० ॥

अन्वयः—(श्रीवत्सवर्धमानांकुशगदादित्रिशूलतुल्याभिः रेखाभिः वनितानां जयशब्दः सपदि जायते)। अस्यार्थः—श्रीवत्स, वर्धमान, अंकुश, गदा आदि, त्रिशूल इनकेसे आकार रेखा होंय तो स्त्रियोंका जयजय बोलना शीघ्रही होताहै ॥ १२० ॥

मंडूककंकजंबुकवृषकाकोलूकवृश्चिकाः सुदृशाम् ॥
रासभसैरिभकरभाः करस्थिता दुःखमाददते ॥ १२१ ॥

अन्वयः—(सुदृशां करस्थिताः मंडूककंकजंबुकवृषकाकोलूकवृश्चिकाः रासभसैरिभकरभाद्याः दुःखम् आददते)। अस्यार्थः—स्त्रियोंके हाथमें स्थित मेढ़क, कंकपक्षी, गीदड़, बैल, कौवा, उल्लू, बिच्छू, गधा, भैंसा, ऊंट आदि जो ये चिह्न होंय तो दुःखको देतेहैं ॥ १२१ ॥

अथांगुष्ठः ।

स्त्रीणां सरलोऽङ्गुष्ठः स्निग्धो वृत्तः शुभस्तथांगुलयः ॥
मृदुलत्वचः सुदीर्घाः क्रमशो वर्तुलाः सुपर्वाणः ॥ १२२ ॥

अन्वयार्थौ—(स्त्रीणाम् अंगुष्ठः सरलः स्निग्धः वृत्तः शुभो भवति) स्त्रियोंका अंगूठा सीधा, सुंदर, चिकना, गोल होय तो शुभ है और

(अंगुलयः मृदुलत्वचः सुदीर्घाः क्रमशः वर्तुलाः सुपर्वाणः शुभा भवंति) अंगुलियाँ मुलायम, पतली त्वचावाली, अच्छी, लम्बी, क्रमशः गोल, अच्छे पोरुवोंकी शुभ होतीहैं ॥ १२२ ॥

चिपिटाः स्फुटाश्च रूक्षाः पृष्ठे रोमान्विताः खराः वक्राः ॥
अतिह्रस्वकृशा विरला विदधति दारिद्र्यमंगुलयः ॥ १२३ ॥

अन्वयः—(चिपिटाः स्फुटाः रूक्षाः पृष्ठे रोमान्विताः खराः वक्राः अतिह्रस्वाः कृशाः विरलाः स्त्रीणाम् एतादृशा अंगुलयः दारिद्र्यं विदधति) । अस्यार्थः—चपटी, प्रकट, रूखी, अंगुलियोंकी पीठपर रोमयुक्त, खरदरी, टेढ़ी, बहुत छोटी, पतली, जुदी जुदी स्त्रियोंकी अंगुली होंय तो दारिद्र्यकी करनेवाली हैं ॥ १२३ ॥

अथ नखाः ।

स्निग्धा बंधूकरुचः सशिखास्तुंगाः शुभा नखराः ॥
सुदृशां बिभर्त्यंकुशलीलामनंगगन्धद्विपेन्द्रस्य ॥ १२४ ॥

अन्वयार्थौ—(सुदृशां नखराः स्निग्धाः बंधूकरुचः सशिखाः तुंगाः शुभाः भवंति) स्त्रियोंके नख चिकने, दुपहरियाके पुष्पकी तरह, उजले, चोटीके जो ऊंचे होंय तो शुभ होतेहैं और (अनंगगंधद्विपेन्द्रस्य अंकुशलीलां बिभर्ति) वे ही नख कामदेवसे मतवाले हाथीके अंकुशकी शोभाको धारण करतेहैं ॥ १२४ ॥

रूक्षैर्वक्रैः पीनैः सितैर्विवर्णैः शिखाविरहितैः ॥
शुक्त्याकारैर्वनिता भवंति सौभाग्यधनहीनाः ॥ १२५ ॥

अन्वयः—(रूक्षैः वक्रैः पीनैः सितैः विवर्णैः शिखाविरहितैः शुक्त्याकारैः नखैः वनिताः सौभाग्यधनहीनाः भवंति)। अस्यार्थः—रूखे, टेढे, मोटे, सफेद, बेरंगके, उजली चोटीके, सीपीके आकारवाले नख होयँ तो स्त्री सौभाग्य और धनसे हीन होतीहैं ॥ १२५ ॥

पाणिचरणयोर्यस्या जायन्ते बिन्दवो नखेषु सिताः ॥
सा जगति सुसितनखा दुःखाय स्वैरिणी रमणी ॥ १२६ ॥

अन्वयः-(यस्याः पाणिचरणयोः नखेषु सिता बिंदवो जायंते जगति सुसितनखा सा रमणी स्वैरिणी तथा-दुःखाय भवति)। अस्यार्थः- जिस स्त्रीके हाथ पाँवके नखोंमें सफेद छींटें होंय तो संसारमें ऐसे नखवाली स्त्री व्यभिचारिणी और दुःखके अर्थ होतीहै ॥ १२६ ॥

अथ पृष्ठिः ।

सरला शुभसंस्थाना निर्लोमा मध्यमाग्रवंशास्थिः ॥
पृष्ठिः पिशितोपचिता सुखसौभाग्यप्रदा स्त्रीणाम् ॥ १२७ ॥

अन्वयार्थौ-(स्त्रीणां पृष्ठिः सरला शुभसंस्थाना निर्लोमा मध्यमाग्रवंशास्थिः शुभा भवति) स्त्रियोंकी पीठ सूधी, अच्छे आकारकी, विना रोमोंकी, बीचमेंसे आगेतककी हड्डीकी शुभ होतीहै और (पिशितोपचिता पृष्ठिः सुखसौभाग्यप्रदा भवति) मांससे खूब भरी पीठसे सुख और सौभाग्यकी देनेवाली होतीहै ॥ १२७ ॥

भुग्नवलितेन दासी भर्तृघ्नी भामिनी विशालेन ॥
साशिरेण सदुःखा स्याद्विधवा पृष्टेन रोमभृता ॥ १२८ ॥

अन्वयार्थौ-(भामिनी भुग्नवलितेन पृष्ठेन दासी स्यात्) स्त्री टेढी सलवटोंवाली पीठसे दासी होती है और (विशालेन पृष्ठेन भर्तृघ्नी स्यात्) बडी और लंबी पीठसे पतिके मारनेवाली होती है और (सशिरेण पृष्ठेन सुदुःखा स्यात्) जिसमें नसें चमकती हों ऐसी पीठसे दुःख सहित होती है और (रोमभृता पृष्ठेन विधवा स्यात्) रोमोंवाली पीठसे विधवा होती है ॥ १२८ ॥

अथ कृकाटिकालक्षणम् ।

ऋज्वी कृकाटिका स्यात्समांसपीना समुन्नता यस्याः ॥
दीर्घायुर्विधवात्वं लभते सा सौख्यसौभाग्यम् ॥ १२९ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः कृकाटिका ऋज्वी स्यात् सा दीर्घायुर्लभते) जिस स्त्रीका गलेका गट्टा अर्थात् गलेकी घेंटी सूधी होय सो स्त्री बडी आयु पावे और (समांसपीना कृकाटिका विधवात्वं लभते) जिसकी मांससे भरी मोटी गलेकी घेंटी होय सो विधवापनको पावै और (यस्याः कृकाटिका समुन्नता स्यात् सा स्त्री सौख्यसौभाग्यं लभते) जिस स्त्रीकी गलेकी घेंटी उँचाई लिये होय सो स्त्री सुख सौभाग्यको पाती है ॥ १२९ ॥

बहुपिशिता निष्पिशिता शिराचिता रोमशा विशाला च ॥
कुटिला विकटा कुरुते दौर्भाग्यं प्रायशः सुदृशाम् ॥ १३० ॥

अन्वयः–(सुदृशां बहु पिशिता निष्पिशिता शिराचिता रोमशा कुटिला विकटा कृकाटिका स्यात् सा प्रायशः दौर्भाग्यं कुरुते) । अस्यार्थः– स्त्रियोंकी बहुत मांसवाली वा विनामांसकी, नसें चमकती हों, रोमवाली, बडी लंबी, बुरी, भयंकर जो गलेकी घेंटी होय सो बहुधा अभाग्यको करती है ॥ १३० ॥

मांसोपचितः कंठो वृत्तश्चतुरंगुलः शुभो विशदः ॥
उच्चविलासं कथयति वदनांभोजस्य वनितानाम् ॥ १३१ ॥

अन्वयार्थौ–(वनितानां वदनाम्भोजस्य कंठः मांसोपचितः वृत्तः चतुरंगुलः विशदः शुभः) स्त्रियोंका कंठ मांससे भरा, गोल, चार अंगुलका, उज्वल शुभ है और (उच्चविलासं कथयति) बडे आनंद भोगको कहता है ॥ १३१ ॥

यस्याः सुसंहिता स्फुटरेखात्रितयांकिता भवेद्ग्रीवा ॥
सालंकारं कनकं मुक्तारत्नान्यंगना दधते ॥ १३२ ॥

अन्वयः–(यस्याः ग्रीवा सुसंहिता स्फुटरेखात्रितयांकिता भवेत् सा अंगना कनकालंकारमुक्तारत्नानि दधते) । अस्यार्थः–जिस स्त्रीकी नाड

मिलीहुई प्रकट तीन रेखा चिह्नोंसे अंकित होय सो स्त्री सुवर्णका गहना मोती और रत्नोंको पहरती है ॥ १३२ ॥

व्यक्तास्थिर्निर्मांसा चिपिटा स्फुटा कुरूपसंस्थाना ॥
सोपदिशति ग्रीवा योषाणां दुःखदौर्भाग्यम् ॥ १३३ ॥

अन्वयः-(योषाणां ग्रीवा व्यक्तास्थिः निर्मांसा चिपिटा स्फुटा कुरूपसंस्थाना स्यात्, सा ग्रीवा दुःखदौर्भाग्यम् उपदिशति)। अस्यार्थः-स्त्रियोंकी नाड प्रकट हाडोंकी, बिनामांसकी, चपटी, फटी, बुरे स्वरूपकी होय सो नाड दुःख और अभाग्यका उपदेश करती है ॥ १३३ ॥

ग्रीवा स्थूला विधवां चक्रावर्ता स्त्रियं वंध्याम् ॥
सशिरा ह्रस्वा निःस्वां कुरुते दीर्घा पुनः कुटिलाम् ॥ १३४ ॥

अन्वयार्थौ-(स्थूला ग्रीवा स्त्रियं विधवां कुरुते) मोटी नाडी स्त्रीको विधवा करतीहै और (चक्रावर्ता ग्रीवा स्त्रियं वंध्यां कुरुते) चक्रचिह्नवाली नाड स्त्रीको बाँझ करती है और (ह्रस्वा सशिरा ग्रीवा स्त्रियं निःस्वां कुरुते) छोटी और नसोंवाली नाड स्त्रीको दरिद्रिणी करतीहै और (दीर्घा ग्रीवा स्त्रियं कुटिलां कुरुते) बड़ी और लंबी नाड स्त्रीको खोटी करतीहै ॥ १३४ ॥

इति ग्रीवाष्टदशी संपूर्णा ।

अथ चिबुकम् ।

द्व्यंगुलमानं चिबुकं वृत्तं पीनं सुकोमलं शस्तम् ॥
स्थूलं द्विधा विभक्तं रोमशमत्यायतं शुभं न स्यात् ॥ १३५ ॥

अन्वयार्थौ-(द्व्यंगुलमानं वृत्तं पीनं सुकोमलं चिबुकं शस्तम्) दो अंगुल प्रमाण, गोल, मांसल, मुलायम ऐसी ठोड़ी अच्छीहै और (स्थूलं द्विधा विभक्तं रोमशम् अत्यायतं चिबुकं न शुभं स्यात्) मोटी, दुहरीसी रोमवाली, बहुत लंबी, ठोडी अच्छी नहीं होतीहै ॥ १३५ ॥

अथ हनुकथनम् ।

निर्लोम शुभं सुघनं हनुयुगलं चिबुकपार्श्वसंलग्नम् ॥
अतिवक्रकृशं स्थूलं पुनरशुभं रोमशं दृश्यम् ॥ १३६ ॥

अन्वयार्थौ–(निर्लोमसुघनं चिबुकं पार्श्वसंलग्नं हनुयुगलं शुभम्) विनारोमोंके, अच्छे, कडे, ठोड़ीके पास ही लगेहुए ऐसे दोनों हनु शुभ हैं और (पुनः अतिवक्रकृशं स्थूलं रोमशं दृश्यम् अशुभं भवति) फिर बहुत टेढ़े, सूखेसे मोटे, रोमवाले दीखें तो अशुभ होतेहैं ॥ १३६ ॥

अथ कपोललक्षणम् ।

शस्ते कपोलफलके पीने वृत्ते समुन्नते विमले ॥
पुलिन इव त्रिस्रोतसः कुसुमायुधयादसां स्त्रीणाम् ॥१३७ ॥

अन्वयार्थौ–(पीने वृत्ते समुन्नते विमले स्त्रीणां कपोलफलके शस्ते) मांससे भरे, गोल, बराबर ऊंचे, उजले स्त्रियोंके कपोलफलक अच्छे होतेहैं (के इव) क्याहैं मानों (कुसुमायुधयादसां त्रिस्रोतसः पुलिने इव) कामदेव जलजीवोंके गंगाके पुलिन अर्थात् रेतके गुदगुदे टीले हैं ॥ १३७॥

यस्याः कपोलयुगलं विच्छायं रोमसंयुतं परुषम् ॥
रूक्षं स्वभावनिम्नमसितं सा दुःखिनी च स्यात् ॥ १३८ ॥

अन्वयः–(यस्याः कपोलयुगलं विच्छायं रोमसंयुतं परुषं रूक्षं स्वभावनिम्नम् असितं स्यात, सा च स्त्री दुःखिनी भवेत्) । अस्यार्थः–जिस स्त्रीके दोनों कपोल विना रंग, रोमयुक्त, टेढे, रूखे, स्वभावकरिके नीचे, काले होंय तो सो स्त्री दुखिया होतीहै ॥ १३८ ॥

अथ वदनम् ।

वर्तुलममलं स्निग्धं सुपूर्णशीतांशुमंडलविडंबि ॥
सौम्यं सम समांसं सुपरिमलं प्रशस्यते वदनम् ॥ १३९ ॥

अन्वयः–(वर्तुलम् अमलं स्निग्धं सुपूर्णशीतांशुमंडलविडंबि सौम्यं समं समांसं सुपरिमलं वदनं प्रशस्यते) । अस्यार्थः–गोल, निर्मल, सचिक्कण

पूरे चंद्रमाके बिम्बकी तुल्य सुंदर बराबर, मांससे भरा, सुगंधित जो ऐसा मुख होय तो प्रशंसाके योग्य है॥ १३९ ॥

जनकवदनानुरूपं यस्या मुखपंकजं सदाह्लादि ॥
सा कल्याणी प्रायेणेति समुद्रः पुरा वदति ॥ १४० ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः मुखपंकजं जनकवदनानुरूपं सदाह्लादि) जिस स्त्रीका मुखकमल पिताके मुखके तुल्य होय तो सदा प्रसन्न करनेवाला है (प्रायेण सा कल्याणी भवति इति समुद्रः पुरा वदति) बहुधा सो स्त्री कल्याणकी करनेवाली होतीहै समुद्रने यह बात पहलेसे कहीहै ॥ १४० ॥

तुरगोष्ट्रखरबिडालव्याघ्रच्छागाननाकारम् ॥
पृथुलं निम्नं स्फुटितं दुर्गन्धं शस्यते न मुखम् ॥ १४१ ॥

अन्वयः–(तुरगोष्ट्रखरबिडालव्याघ्रच्छागाननाकारं पृथुलं निम्नं स्फुटितं दुर्गन्धं मुखं न शस्यते)। अस्यार्थः–घोडा, ऊंट, गधा, बिलाव, सिंह, बकरा इनके तुल्य होय और चौडा, नीचा, फटासा, दुर्गंधवाला मुख निन्दित है ॥ १४१ ॥

अथौष्ठबिम्बम् ।

रेखाखंडितमध्यो मसृणः परिपक्वबिम्बफलतुल्यः ॥
अधरोष्ठः स्निग्धोऽसौ मनोहरो हरिणशावदृशाम् ॥ १४२ ॥

अन्वयः–(रेखा खंडितमध्यः मसृणः परिपक्वबिम्बफलतुल्यः स्निग्धः हरिणशावदृशाम् अधरोष्ठः मनोहरः भवति)। अस्यार्थः–रेखा करके खंडित है बीच जिसका चिकना, पके हुए, कुँदुरूके फलके तुल्य अच्छे, चिकने, हिरणके बच्चोंकेसे नेत्र जिनके ऐसी मृगांगनाओंके होठ मनके हरनेवाले होतेहैं अर्थात् अच्छे हैं ॥ १४२ ॥

शस्तः सुधानिधानं सततमधरोष्ठपल्लवो व्यक्तः ॥
हृदयोत्थसदनुरागच्छटाभिरिव रंजितः स्त्रीणाम् ॥ १४३ ॥

अन्वयः–(सुधानिधानं व्यक्तः हृदयोत्थसदनुरागच्छटाभिः रंजित इव स्त्रीणाम् अधरोष्ठपल्लवः शस्तः)। अस्यार्थः–अमृतका स्थान, प्रकट हृदयसे जो उठा है अच्छा अनुराग जिसकी कांतिसे रँगाहुवा ऐसा स्त्रियोंका होठ नवीन पत्तेके तुल्य निरंतर अच्छा होताहै ॥ १४३ ॥

विषमोऽलघुः प्रलम्बः प्रस्फुटितः खंडितः कृशो रूक्षः ॥
दन्तच्छदोऽङ्गनानां दत्ते दौर्भाग्यदुःखत्वे ॥ १४४ ॥

अन्वयः–(विषमः अलघुः प्रलम्बः प्रस्फुटितः खंडितः कृशः रूक्षः अंगनानां दन्तच्छदः दुःखदौर्भाग्यं दत्ते)। अस्यार्थः–ऊंचा, नीचा, बडा, लंबा, फटा, टूटा हुआ, कटा, पतला, रूखा स्त्रियोंका ऐसा होठ होय तो दुःख और अभाग्यको देताहै ॥ १४४ ॥

श्यामेन भर्तृहीना स्थूलेन कलिप्रिया भवति नारी ॥
अधरोष्ठेन प्रायो दौर्गत्ययुता विवर्णेन ॥ १४५ ॥

अन्वयार्थौ-(श्यामेन अधरोष्ठेन नारी भर्तृहीना भवति) काले होठोंसे स्त्री पतिहीन होतीहै और (स्थूलेन अधरोष्ठेन नारी कलिप्रिया भवति) मोटे होठों करिके स्त्री कलह करनेवाली होतीहै और (विवर्णेन अधरोष्ठेन प्रायः दौर्गत्ययुता भवति) बुरे रंगके होठोंसे बहुधा दरिद्रिणी होतीहै ॥ १४५ ॥

सुदृशामिहोत्तरोष्ठः पर्यायनतः सकोमलो मसृणः ॥
स्निग्धो रोमविरहितः किंचिन्मध्योन्नतः शस्तः ॥ १४६ ॥

अन्वयः–(इह सुदृशाम् उत्तरोष्ठः पर्यायनतः सकोमलः मसृणः स्निग्धः रोमविरहितः किंचिन्मध्योन्नतः शस्तः) । अस्यार्थः–इस लोकमें स्त्रियोंके ऊपरका होठ क्रम करके झुका हुवा, मुलायम, चिकना, विना रोमका कुछ बीचमें उँचाई लिये होय तो अच्छाहै ॥ १४६ ॥

भवति पृथुरुत्तरोष्ठः समुन्नतो लोमशो लघुर्यस्याः ॥
स्थूलः सा रमणी स्याद्विधवा कलहप्रिया प्रायः ॥ १४७ ॥

अन्वयः–(यस्याः उत्तरोष्ठः पृथुः समुन्नतः लोमशः लघुः स्थूलः भवति, सा रमणी प्रायः विधवा वा कलहप्रिया स्यात्)। अस्यार्थः–

जिस स्त्रीका ऊपरका होठ चौंडा मोटा, ऊँचा, रोमवाला, छोटा, होय सो बहुधा विधवा वा कलह करनेवाली होतीहै ॥ १४७ ॥

अथ दशनलक्षणम्।

स्निग्धैः समैः शिखरिभिः समुन्नतैर्विशदकुंदसमशुभ्रैः ॥
दशनैर्घनैस्तरुण्यः सौभाग्यैश्वर्यभोगिन्यः ॥ १४८ ॥

अन्वयः–(स्निग्धैः समैः शिखरिभिः समुन्नतैः विशदकुंदसमशुभ्रैः घनैः दशनैः तरुण्यः सौभाग्यैश्वर्यभोगिन्यो भवन्ति)। अस्यार्थः–चिकने,चमकने, बराबर नोंके निकली हों, ऊंचे हों और उजले कुंदके फूलके तुल्य सफेद, एकसे एक भिडे होंय तो ऐसे दाँतोंसे स्त्रियाँ सौभाग्य वा ऐश्वर्यकी भोगने-वाली होतीहैं ॥ १४८ ॥

शुचिरुचयो द्वात्रिंशद्दशना गोक्षीरसन्निभाः सर्वे ॥
अध उपरि समा यस्याः सा क्षितिपतिवल्लभा बाला ॥ १४९ ॥

अन्वयः–(यस्याः सर्वे दशनाः शुचिरुचयः गोक्षीरसन्निभाः अध उपरि समाः द्वात्रिंशत् भवंति, सा बाला क्षितिपतिवल्लभा भवति)। अस्यार्थः–जिस स्त्रीके सब दाँत उजले, रुचिकारी, गौके दूधके तुल्य, नीचे ऊपर बरा-बर, बत्तीस होंय सो स्त्री पृथ्वीपति (राजा)की प्यारी होतीहै ॥१४९॥

अतिह्रस्वदीर्घसूक्ष्माः स्थूला द्विपंक्तयो दशनाः ॥
विषमाः शुक्त्याकाराः श्यामास्तन्वन्ति दौर्गत्यम् ॥ १५० ॥

अन्वयः–(अतिह्रस्वदीर्घसूक्ष्माः स्थूलाः द्विपंक्तयः विषमाः शुक्त्याकाराः श्यामा ईदृशाः दशनाः दौर्गत्यं तन्वंति)। अस्यार्थः–बहुत छोटे, लम्बे पतले मोटे, दुहरी पंक्तिके, ऊंचे नीचे, सीपीके आकार, काले होंय तो ऐसे दाँतों-से स्त्री दारिद्रिणी वा दुखिया होतीहै ॥ १५० ॥

नियतं रदैरधस्तादधिकैर्निजमातृभक्षिणी रमणी ॥
अध उपरि पुनर्विरलैः कुटिला विकटैश्च पतिरहिता ॥१५१॥

अन्वयार्थौ–(अधस्तात् रदैः अधिकैः नियतं रमणी निजमातृभक्षिणी भवति) नीचेके दाँत बहुत होनेसे निश्चय स्त्री अपनी माताकी मारनेवाली

होतीहै और (पुनः अथ उपरि विरलैः रदैः कुटिला भवति) जो नीचे ऊपर जुदे जुदे दाँत होंय तो खोटी होतीहै और (वा विकटैः रदैः पतिरहिता भवति) जो भयंकर दाँत होंय तो विना पतिकी अर्थात् विधवा होतीहै ॥ १५१ ॥

सितपीठिकास्थिरदा सक्लेशा दंतुरा पुनः कुटिला ॥
चलितरदा पतिरहिता निरपत्या घनमतिर्युवतिः ॥ १५२ ॥

अन्वयार्थौ–(सितपीठिकास्थिरदा नारी सक्लेशा भवति) सफेद मसूडे नीचेके हाडके दाँतसे स्त्री क्लेशसहित रहती है और (पुनः दंतुरा नारी कुटिला भवति) फिर खूब बडे दाँतवाली स्त्री खोटी होतीहै और (चलितरदा नारी पतिरहिता वा निरपत्या घनमतिर्युवतिः भवति) चलायमान हैं दाँत जिसके ऐसी स्त्री पति पुत्र रहित और कठोर बुद्धिवाली होतीहै१५२॥

अथ जिह्वालक्षणम् ।

जिह्वा स्निग्धा मृद्वी शोणा मसृणा तनुर्भवति यस्याः ॥
मिष्टान्नभोजना स्यात्सौभाग्ययुता सा सदा रमणी ॥ १५३ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः जिह्वा स्निग्धा मृद्वी शोणा मसृणा तनुर्भवति) जिस स्त्रीकी जीभ अच्छी, मुलायम, लाल, चिकनी, पतली होय (सा रमणी सौभाग्ययुता सदा मिष्टान्नभोजना स्यात्) सो स्त्री सौभाग्ययुक्त और सदा मीठे भोजनके पानेवाली होतीहै ॥ १५३ ॥

स्यादंते संकीर्णा कुशस्येवाग्रविस्तीर्णा वा ॥
श्वेतापि न प्रशस्ता कृष्णा प्रायेण रमणीनाम् ॥ १५४ ॥

अन्वयः–(जिह्वा अंते कुशस्येव संकीर्णा वा अग्रविस्तीर्णा, श्वेता कृष्णा जिह्वा प्रायेण रमणीनाम् अपि न प्रशस्ता)। अस्यार्थः–जीभ अंतमें सकडी और डाभकी भाँति आगेको चौडी, सफेद और काली जीभ बहुधा स्त्रियोंकी अच्छी नहींहै ॥ १५४ ॥

खरया तोये मरणं प्राप्नोति विवाहमेति पाटलया ॥
वर्णच्छेद कलहं श्यामलया जिह्वया युवती ॥ १५५ ॥

अन्वयार्थौ–(युवती खरया जिह्वया तोये मरणं प्राप्नोति) स्त्री खरदरी जीभकरके पानीमें डूबके मरे और (पाटलया जिह्वया विवाहम् एति) कुछ श्वेत कुछ लाल जीभ करके विवाहको पातीहै और (श्यामलया जिह्वया वर्णच्छेदं तथा कलहं प्राप्नोति) काली जीभ करके अपनी जातिसे दूसरी जाति होय और कलहको पातीहै ॥१५५॥

दारिद्र्यं मांसलया विशालया रसनया पुनः शोकः ॥
अतिलम्बयापि सततमभक्ष्यभक्षणरतिः स्त्रीणाम् ॥ १५६ ॥

अन्वयार्थौ–(मांसलया रसनया दारिद्र्यं पुनः विशालया रसनया शोकं प्राप्नोति) मोटी जीभसे दरिद्रताको पावे और फिर बडी लंबी जीभसे शोकको पातीहै और (अतिलंबया अपि सततं स्त्रीणाम् अभक्ष्यभक्षणरतिर्भवति) बहुतलंबी जीभसे निरंतर स्त्रियोंकी जो खाने योग्य वस्तु नहीं उसे खानेमें चाहना अर्थात् प्रीति होतीहै ॥ १५६ ॥

अथ तालुलक्षणम् ।

स्निग्धं कोकनदच्छवि प्रशस्यते तालु कोमलं विमलम् ॥
श्यामं पीनं च पुनः सुदृशां दुःखावहं बहुशः ॥ १५७ ॥

अन्वयार्थौ–(सुदृशां स्निग्धं कोकनदच्छवि कोमलं विमलं तालु प्रशस्यते) स्त्रियोंका सुंदर, चिकना, लाल, कमलकीसी कांतिवाला, मुलायम, उज्ज्वल तालु प्रशंसाके योग्य अर्थात् अच्छा है और (पुनः श्यामं पीनं तालु बहुशः दुःखावहम्) फिर वही काला मोटा तालु होय तो बहुत दुःखको करनेवालाहै ॥ १५७ ॥

तालुनि सिते दरिद्रा पतिहीना दुःखिता भवति कृष्णे ॥
प्रव्रज्यासंयुक्ता रूक्षे समले पुनर्नारी ॥ १५८ ॥

अन्वयार्थौ–(तालुनि सिते सति नारी दरिद्रा) सफेद तालु होनेसे स्त्री दरिद्रिणी और (तालुनि कृष्णे सति पति हीना दुःखिता भवति) काले

तालु होनेसे पतिरहित, दुःखी होतीहै (पुना रूक्षे समले सति प्रव्रज्या-संयुक्ता जायते) रूखे मलिन तालु हुए वैरागिणी या पतिसंयोगरहित होतीहै ॥ १५८ ॥

अथ घंटीलक्षणम् ।

कंदस्थूला वृत्ता क्रमशस्तीक्ष्णलोहिता शुभा घंटी ॥
स्थूला सूक्ष्मा लम्बा कृष्णा श्वेता शुभा नैव ॥ १५९ ॥

अन्वयार्थौ–(कंदस्थूला वृत्ता क्रमशः तीक्ष्णलोहिता घंटी शुभा) जमीकंदकी भाँति मोटी, गोल, क्रमसे पैनी, लाल रंगकी घेंटी शुभ है और (स्थूला सूक्ष्मा लम्बा कृष्णा श्वेता घंटी नैव शुभा) मोटी, पतली, लंबी, काली, सफेद घेंटी शुभ नहीं है ॥ १५९ ॥

अथ हास्यलक्षणम् ।

ईषद्विकासितगंडं हसितमलक्ष्यद्विजं कलं शस्तम् ॥
प्रान्ते मुहुः सकंपं संमीलितलोचनं निंद्यम् ॥ १६० ॥

अन्वयार्थौ–(ईषद्विकसितगंडम् अलक्ष्यद्विजं कलं हसितं शस्तम् थोडे खुले हैं गंडस्थल जिसमें, नहीं दीख पडें दाँत जिसमें ऐसा सुंदर हँसना अच्छा है और (प्रान्ते मुहुः सकंपं संमीलितलोचनं हसितं निंद्यं भवति) अंतमें बारंबार हाथ पाँव कँपै हिलें जिसमें और मुँदगयेहैं नेत्र जिसमें ऐसा हँसना निन्दित अर्थात् बुरा होताहै ॥ १६० ॥

अथ नासालक्षणम् ।

निःस्वां द्विधाग्रभागा कर्मकरां नासा स्त्रियं लघ्वी ॥
भर्तृविहीनां चिपिटा दीर्घा बहुकोपनां कुरुते ॥ १६१ ॥

अन्वयार्थौ–(द्विधाग्रभागा नासा स्त्रियं निःस्वाम्) दोसी दीखैहैं नाक आगेके भागमें जिसकी ऐसी नाक स्त्रीको दरिद्रिणी करे और (लघ्वी नासा स्त्रियं कर्मकराम्) छोटी नाक स्त्रीको गुलामिनि करे और (चिपिटा

दीर्घा नासा स्त्रियं भर्तृविहीनां तथा बहुकोपनां कुरुते) चिपटी लंबी नाक स्त्रीको पतिरहित और बहुत क्रोधवाली करैहै ॥ १६१ ॥

अथ क्षुतलक्षणम् ।

दीर्घं दीर्घायुक्तं क्षुतं कृतपिंडितं ह्लादि ॥
अनुनादयुतं शस्तं ततोऽन्यथा भवति विपरीतम् ॥ १६२ ॥

अन्वयार्थौ–(दीर्घं क्षुतं दीर्घायुक्तं कृतपिंडितं ह्लादि) बडी छींक भारी बडी न छोटी गोलाकार हुई ऐसी आनंदकारी है और (अनुनादयुतं क्षुतं शस्तम्) शब्द सहित अथवा पिछला शब्दयुक्त छींक अच्छी है और (ततः अन्यथा विपरीतं भवति) इनसे और लक्षणकी छींक बुरी होतीहै॥ १६२॥

अथाक्षियुगलक्षणम् ।

गोक्षीरचारुलसिते रक्तांते कृष्णतारके तीक्ष्णे ॥
प्रच्छन्नं कथयितुमिव कर्णविलग्ने शुभे नयने ॥ १६२ ॥

अन्वयः–(गोक्षीरचारुलसिते रक्तान्ते कृष्णतारके तीक्ष्णे शुभे नयने प्रच्छन्नं कथयितुम् इव कर्णविलग्ने भवतः)। अस्यार्थः–गौके दूधके समान श्वेत रंग शोभायमान लाल हैं अंत जिनके काले हैं तारे जिनमें गुप्त कहनेको मानों कानके पास आयके लगे हैं ऐसे नेत्र शुभ होतेहैं ॥ १६३ ॥

नीलोत्पलदलतुल्यैर्विमलैः सूक्ष्मपक्ष्मभिः स्निग्धैः ॥
नयनैरिहार्ककमलैर्भवन्ति सौभाग्यभोगिन्यः ॥ १६४ ॥

अन्वयः–(नीलोत्पलदलतुल्यैः विमलैः सूक्ष्मपक्ष्मभिः स्निग्धैः अर्ककमलैः इव नयनैः नार्यः सौभाग्यभोगिन्यो भवंति) । अस्यार्थः–नील कमलकी पँखुरीके तुल्य निर्मल, पतली हैं वरोनी जिनकी, अच्छे चिकने, जैसे सूर्यसे कमल खिले हुए ऐसे नेत्रों करिके स्त्री सौभाग्यके भोग करनेवाली होतीहै १६४

मृगनेत्रा शशनेत्रा वराहनेत्रा मयूरनेत्रा च ॥
पृथुनेत्राम्बुजनेत्रा निर्मलनेत्रा शुभा नारी ॥ १६५ ॥

अन्वयः–(मृगनेत्रा शशनेत्रा वराहनेत्रा मयूरनेत्रा पृथुनेत्रा अम्बुजनेत्रा निर्मलनेत्रा नारी शुभा भवति) । अस्यार्थः–हरिणकेसे नेत्रवाली, खरगोशकेसे नेत्रवाली सूकरकेसे नेत्रवाली, मोरकेसे नेत्रवाली, बडे लम्बे चौडे नेत्रवाली, कमलकेसे नेत्रवाली और उजले नेत्रवाली, स्त्री अच्छी होतीहै ॥ १६५ ॥

उद्भ्रान्तचित्ता केकरविषमाक्षी निन्दिताक्षी भवेद्युवतिः ॥
मेषाक्षी बिडालाक्षी वृत्ताक्षी समुन्नताक्षी न दीर्घायुः ॥ १६६ ॥

अन्वयार्थौ–(केकरविषमाक्षी निन्दिताक्षी उद्भ्रान्तचित्ता युवतिर्भवेत्) काणी, ऊंचे नीचे, निंदित नेत्रवाली, उडेसे चित्तवाली होतीहै और (मेषाक्षी विडालाक्षी वृत्ताक्षी समुन्नताक्षी नारी दीर्घायुः न) मेढेकीसी नेत्रवाली, बिलावकीसी नेत्रवाली, गोल नेत्रवाली, ऊंचे नीचे नेत्रवाली स्त्री बडी आयुवाली नहीं होतीहै ॥ १६६ ॥

यस्याः पिङ्गलनेत्रद्वितयं सा सुरतसुखकौशलं लभते ॥
दुःशीलत्वेन समं वैधव्यं वा ध्रुवं रमणी ॥ १६७ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः पिंगलनेत्रद्वितयं भवति सा रमणी सुरतसुखकौशलं लभते) जिस स्त्रीके पीले रंगकेसे दोनों नेत्र होंय सो स्त्री भोगके सुखको पातीहै अथवा (दुःशीलत्वेन समं ध्रुवं वैधव्यं लभते) वह खोटे स्वभावके साथ निश्चय करके विधवापनको पातीहै ॥ १६७ ॥

गोपिङ्गलनेत्रयुता पितरं श्वशुरं च मातुलं च पुत्रम् ॥
भ्रातरमप्यधिगच्छति कामग्रथिला च मोहपरा ॥ १६८ ॥

अन्वयः–(या नारी गोपिङ्गलनेत्रयुता भवति सा कामग्रथिला च पुनः मोहपरा वै पितरं श्वशुरं मातुलं पुत्रं भ्रातरम् अपि अधिगच्छति) ।

अस्यार्थः–जो गौकेसे रंग बराबर पीले नेत्रवाली होय सो स्त्री कामकी अधिकताके कारण और मोहके मदमें तत्पर होनेसे निश्चय पिता, श्वशुर, मामा, पुत्र और भाईसे अधिक कामकी चाहना करतीहै अर्थात् इनसे भोग चाहतीहै ॥ १६८ ॥

कोकनदच्छदरक्तच्छायं नयनद्वयं भवति यस्याः ॥
सा परपुरुषाकांक्षिणी रमणी च नित्यं स्यात् ॥ १६९ ॥

अन्वयः–(यस्याः कोकनदच्छदरक्तच्छायं नयनद्वयं स्यात्, सा रमणी परपुरुषाकांक्षिणी नित्यं भवति)। अस्यार्थः–जिस स्त्रीके लाल कमलकी पँखुरीके रंगके तुल्य दोनों नेत्र होंय उस स्त्रीको दूसरे पुरुषकी चाहना नित्य होतीहै ॥ १६९ ॥

सजलनयना न शस्ता स्फारितनयना विहीनतरा ॥
नरनयना कोटरनयना चंचलनयना गभीरनयनापि ॥१७०॥

अन्वयार्थौ–(सजलनयना नारी न शस्ता) जलसे भरे नेत्रवाली स्त्री अच्छी नहीं और (स्फारितनयना नारी विहीनतरा) फटेसे नेत्रवाली स्त्री बहुत खोटी होतीहै और (नरनयना कोटरनयना गंभीरनयना चंचलनयना अपि नारी अशुभा भवति) मनुष्यकेसे नेत्रवाली, चलायमान नेत्रवाली, वृक्ष-कोटरके तुल्य नेत्रवाली, गहरे गढेसे नेत्रवाली स्त्री अशुभ होतीहै ॥१७०॥

या सव्यकाणचक्षुः सा परपुरुषाभिचारिणी रमणी ॥
अपसव्यकाणचक्षुः सा जन्मन्येव निरपत्या ॥ १७१ ॥

अन्वयार्थौ–(या नारी सव्यकाणचक्षुः स्यात्, सा रमणी परपुरुषाभिचारिणी भवति) जो स्त्री बाईं आँखसे काणी होय सो स्त्री दूसरे पुरुषके भोगनेकी चाहसे व्यभिचारणी होतीहै और (या नारी अपसव्यकाणचक्षुः भवति सा रमणी जन्मन्येव निरपत्या स्यात्) जो स्त्री दाहिनी आँखसे काणी होय सो स्त्री जन्मसे विना संतानके होतीहै अर्थात् बाँझ होतीहै ॥ १७१ ॥

अथ पक्ष्मलक्षणम् ।

सुदृढैः स्निग्धैः कृष्णैः सूक्ष्मैः स्यात्पक्ष्माभिर्घनैः सुभगा ॥
सूक्ष्मैर्विरलैः कपिलैः स्थूलैर्निंद्या ध्रुवमजाभैः ॥ १७२ ॥

अन्वयार्थौ–(सुदृढैः स्निग्धैः कृष्णैः सूक्ष्मैः पक्ष्मभिः नारी सुभगा स्यात्) कड़ी, चिकनी, काली, पतली, बहुत पास लगीहुई बरोनियोंसे स्त्री अच्छी सुंदर सौभाग्यवती होतीहै और (सूक्ष्मैः विरलैः कपिलैः स्थूलैः अजाभैः ध्रुवं पक्ष्मभिः नारी निंद्या स्यात्) पतली, जुदी जुदी, पीली मोटी, बकरीकीसी कांतिवाली निश्चय ऐसी बरोनियोंसे स्त्री निन्द्य अयोग्य अर्थात् अशुभ होतीहै ॥ १७२ ॥

रोदनमनिमेषलक्षणमासामपि पुरुषवत्परिज्ञेयम् ॥
ग्रंथप्रपंचभयतः पुनरिह दिङ्मात्रमपि नोक्तम् ॥ १७३ ॥

अन्वयार्थौ–(रोदनम् अनिमेषलक्षणम् आसाम् अपि पुरुषवत् परिज्ञेयम्) रोना और पलकोंके न लगनेके लक्षण पुरुषकी भाँति इनके भी जानने चाहियें और (पुनः इह ग्रंथप्रपंचभयतः दिङ्मात्रम् अपि न उक्तम्) फिर यहां ग्रंथके बढनेके भयसे दिशा मात्रकेभी लक्षण नहीं कहे ॥ १७३ ॥

अथ भ्रूलक्षणम् ।

शस्ता वृत्ता तन्वी भ्रूयुगली[1] कज्जलच्छाया ॥
नयनांभोरुहवलायितरूपा नालं समाश्रयति ॥ १७४ ॥

अन्वयार्थौ–(वृत्ता तन्वी कज्जलच्छाया भ्रूयुगली शस्ता) गोलरूप काली कांतिकी दोनो भौंहें अच्छी हैं और (नयनांभोरुहवलयितरूपा भ्रूयुगली अलं न समाश्रयति) नेत्रोंके कमलोंको घेरनेवाली दोनों भौंहें अच्छी नहीं होतीहैं ॥ १७४ ॥

लघुमृदुरोममयी भ्रूरधिज्यधनुरिव शुभा सुदृशाम् ॥
कीर्णा पिंगलवृत्ता पृथुला खररोमशा न शुभा ॥ १७५ ॥

अन्वयार्थौ–(सुदृशां लघुमृदुरोममयी अधिज्यधनुरिव भ्रूः शुभा स्यात्)

१–अस्य नपुंसकत्वेऽपि छन्दोऽपूर्तेः सन्देहान्स्त्रीत्वमुक्तं कविनेति प्रतिभाति ।

स्त्रियोंकी छोटी, नरम रोमवाली और चढी हुई कमानके रूप भौंहैं शुभ हैं और (कीर्णा पिंगलवृत्ता पृथुला खररोमशा भ्रू न शुभा भवति) जुदे जुदे बिखरेसे बालवाली पीले रंगवाली गोल चौडी खरदरे रोमवाली भौंहें नहीं शुभ हैं ॥ १७५ ॥

वित्तविहीनां ह्रस्वा मिलिता स्थूला सदैव दुःशीलाम् ॥
वंध्यां सुदीर्घरोमा रमणीं भ्रूवल्लरी कुरुते ॥ १७६ ॥

अन्वयार्थौ–(ह्रस्वा भ्रूवल्लरी रमणीं वित्तविहीनाम्) छोटे भौंह स्त्रीको धनरहित करै और (मिलिता स्थूला भ्रूवल्लरी रमणीं सदैव दुःशीलाम्) मिली हुई मोटी भौंहरूप बेलि स्त्रीको सदा खोटे चलनवाली करे और (सुदीर्घरोमा भ्रूवल्लरी रमणीं वंध्यां कुरुते) बड़े लंबेरोमवाली भौंह रूप बेलि स्त्रीको बांझ करै है ॥ १७६ ॥

अथ कर्णलक्षणम्।

लम्बा विपुला कर्णद्वयी मिलिता शुभावर्त्तसंयुक्ता ॥
दोलायुगलाविरतिप्रीतिं दंपतिकृते युगपत् ॥ १७७ ॥

अन्वयार्थौ–(कर्णद्वयी लम्बा विपुला मिलिता आवर्तसंयुक्ता शुभा) दोनों कान लंबे बडे मिले हुए चक्र युक्त होंय तौ शुभ हैं और (दोला युगलाविरतिप्रीतिं दंपतिकृते युगपत् कुरुते) दोझूलोंके चक्ररूपसे स्त्री पुरुष-के लिये आपसमें प्रीति करैहै ॥ १७७ ॥

रोमोपगता यस्याः शष्कुलिरहिता च नो शस्ता ॥
कुटिला कृशा शिराला नारी सा जायते निंद्या ॥ १७८ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः कर्णद्वयी रोमोपगता शष्कुलिरहिता नो शस्ता) जिस स्त्रीके दोनो कानमें रोमयुक्त विना प्यालीके होंय तौ अच्छ नहीं और (कुटिला कृशा शिराला कर्णद्वयी नारी सा निंद्या जायते) टेढे, पतले, नसोंवाले दोनों कानोंसे स्त्री बुराईके योग्य होतीहै ॥ १७८ ॥

इति आचिबुंककर्णमंतः संपूर्णो मंददशी।

अथ ललाटलक्षणम् ।

निर्लोमशिराविरहितमर्द्धेन्दुसमं ललाटतलम् ॥
त्र्यंगुलमानमनिम्नं स्त्रीणां सौभाग्यमावहति ॥ १७९ ॥

अन्वयः—(निर्लोम शिराविरहितम् अर्द्धेन्दुसमं त्र्यंगुलमानम् अनिम्नं ललाटतलं स्त्रीणां सौभाग्यम् आवहति) । अस्यार्थः--रोमरहित, नसों विना, आधे चंद्रमाके समान, तीन अंगुल प्रमाण, ऊंचा, ऐसा ललाट स्त्रियोंके सौभाग्यको करता है ॥ १७९ ॥

रेखारहितं व्यक्तं स्वस्तिकसमलंकृतं शुभं भालम् ॥
प्रगुणं पट्टमिव स्मरनृपस्य राज्याभिषेकाय ॥ १८० ॥

अन्वयार्थौ—(व्यक्त रेखारहितं स्वस्तिकसमलंकृतं भालं शुभम्) प्रकट रेखा करके रहित स्वस्तिक(साथिया) करके भूषित ऐसा ललाट शुभ है और (स्मरनृपस्य राज्याभिषेकाय प्रगुणं पट्टम् इव) कामदेव राजाके राज्याभिषेकके अर्थ मानों यह दृढ़ वस्त्र है ॥ १८० ॥

यस्याः प्रलम्बमलिकं सा तु नारी देवरं निजं हंति ॥
तदपि शिरारोमयुतं सा भवेत्पांसुला बाला ॥ १८१ ॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः अलिकं प्रलम्बं सा नारी निजं देवरं हंति) जिस स्त्रीका ललाट लम्बा होय सो स्त्री अपने देवरको मारतीहै और (तदपि भालं शिरारोमयुतं भवेत् सा बाला पांसुला भवति) जो वही लम्बा ललाट नसें और रोमयुक्त होय तो सो स्त्री व्यभिचारिणी होती है ॥ १८१ ॥

अथ सीमंतलक्षणम् ।

सीमन्तो ललनानां ललाटपट्टाश्रितः शुभः सरलः ॥
प्रगुणित इवार्द्धचंद्राकृतिः कृतः पुष्पचापेन ॥ १८२ ॥

अन्वयार्थौ--(ललनानां ललाटपट्टाश्रितः सरलः सीमन्तः शुभः) स्त्रियोंके ललाटपट्टके आश्रित सीधी सीमंत अर्थात् माँग शुभ है और (पुष्पचापेन अर्द्धचंद्राकृतिः प्रगुणितः कृतः इव) कामदेवने आधे चंद्रमाके आकार मानों यह दृढ किया है ॥ १८२ ॥

अथ शीर्षलक्षणम् ।

कुंजरकुम्भनिभं स्याद्वृत्तं शीर्षं समुन्नतं यस्याः ॥
सा भवति भूपपत्नी सौभाग्यैश्वर्यसुखसहिता ॥ १८३ ॥

अन्वयः-(यस्याः शीर्षं समुन्नतं वृत्तं कुंजरकुंभनिभं स्यात् सा भूपपत्नी सौभग्यैश्वर्यसुखसहिता भवति)। अस्यार्थः-जिस स्त्रीका मस्तक उँचाई लिये गोल हाथीके शिरकी तुल्य होय सो राजाकी स्त्री सुख सौभाग्य सब सुहागवनी होतीहै ॥ १८३ ॥

स्थूलेन भवति शिरसा विधवा दीर्घेण बंधकी युवतिः ॥
विषमेण विषमदुःखा दौर्भाग्यवती विशालेन ॥ १८४ ॥

अन्वयार्थौ-(स्थूलेन शिरसा विधवा स्यात्) बड़े मोटे मस्तकवाली विधवा होय और (दीर्घेण शिरसा युवतिः बंधकी भवति) लम्बे चोड़े मस्तकसे स्त्री व्यभिचारिणी अर्थात् खोटी होतीहै और (विषमेण शिरसा विषमदुःखा भवति) ऊंचे नीचे मस्तक करिके अत्यन्त दुःखी होतीहै और (विशालेन शिरसा दौर्भाग्यवती भवति) बहुत बड़े मस्तकवाली स्त्री अभागिनी होती है ॥ १८४ ॥

अथ केशलणक्षम् ।

रोलम्बसमच्छायाः सूक्ष्माः समुन्नताः स्निग्धाः ॥
केशाः एकैकभवा जायन्ते भूपपत्नीनाम् ॥ १८५ ॥

अन्वयः-(रोलम्बसमच्छायाः सूक्ष्माः समुन्नताः स्निग्धाः एकैकभवाः भूपपत्नीनाम् ईदृशाः केशाः जायन्ते)। अस्यार्थः-भौंरेकी समान काले, पतले और ऊंचे चमकदार, चिकने सुन्दर इकहरे होंय तो राजाकी स्त्रियोंके ऐसे बाल होतेहैं ॥ १८५ ॥

आकुंचिताग्रभागाः स्निग्धांबुजकालकान्तयः सुभगाः ॥
चिकुरा हरंति यमुनातरंगभंगीं वरस्त्रीणाम् ॥ १८६ ॥

अन्वयः (आकुंचिताग्रभागाः स्निग्धाम्बुजकालकान्तयः सुभगाः वरस्त्रीणां चिकुराः यमुनातरंगभंगीं हरन्ति) । अस्यार्थः–सिकुड रहे हैं आगेके भाग जिनके अर्थात् घुँघरारे ऐसे सचिक्कण काले कमलके रंग चमकदार, सुंदर (अच्छे) स्त्रियोंके ऐसे बाल मानों यमुनाकी तरंगकी रचनाको हरतेहैं ॥ १८६ ॥

यस्याः प्रस्फुटिताग्राः सूक्ष्माः परुषाः शिरोरुहा लघवः ॥
उच्चा विरला जटिला विषमा सा दुःखिनी युवतिः ॥१८७॥

अन्वयः–(यस्याः शिरोरुहाः प्रस्फुटिताग्राः सूक्ष्माः परुषाः लघवः उच्चा विरला जटिला विषमा भवंति युवतिः दुःखिनी स्यात्) । अस्यार्थः–जिस स्त्रीके बाल फटे हुए हैं आगेके भाग जिसके ऐसे और पतले, रूखे, खरदरे, छोटे, ऊंचे, बिखरे हुए, लिपटे, ऊंचे नीचे होंय सो स्त्री दुखिया होतीहै ॥१८७॥

अतिशयदीर्घस्थूलैर्भर्तृघ्नी कामिनी भवति ॥
केशैः कपिलैरमनस्कारस्कंधप्रभवैः पुनर्निंद्या ॥ १८८ ॥

अन्वयार्थौ–(अतिशयदीर्घस्थूलैः केशैः कामिनी भर्तृघ्नी भवति) बहुत बड़े, लम्बे, मोटे बालोंसे स्त्री पतिको मारनेवाली होतीहै और (पुनः कपिलैः अमनस्कारस्कंधप्रभवैः केशैः नारी निंद्या भवति) फिर भूरे, बुरे, कंधोंतक छिटके हुए बालोंसे स्त्री बुराईके योग्य अर्थात् बुरी होतीहै॥ १८८॥

इति श्रीमहत्तमश्रीनृसिंहात्मजदुर्लभराजविरचिते सामुद्रिकतिलकेऽपरनाम्नि नरस्त्रीलक्षणशास्त्रे संस्थानाधिकारश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

अथ व्यंजनलक्षणम् ।

व्यंजनमथ प्रकृतयो मिश्रकमेतदपि भवति संख्यानम् ॥
संक्षेपाल्लक्षणमथ ह्यनुक्रमेणैव वक्ष्यामि ॥ १ ॥

अन्वयः–(अथ व्यंजनं प्रकृतयः मिश्रकम् एतत् अपि संक्षेपाल्लक्षणम् अनुक्रमेण एव संख्यानं वक्ष्यामि) । अस्यार्थः–आगे व्यंजन और प्रकृति और मिश्रक इनके संक्षेप लक्षण क्रम करके इसी संख्यासे मैं कहूँगा ॥ १ ॥

जन्मान्तरं व्यंजनमिह शुभाशुभं व्यज्यते ध्रुवं येन ॥
तनुमयमहत्त्वगादि व्यंजनमाख्यायते सद्भिः ॥ २ ॥

अन्वयार्थौ–(इह येन जन्मान्तरं शुभाशुभं ध्रुवं व्यज्यते तत् व्यंजनम्) इस ग्रंथमें जिसकरके पहले जन्मका शुभ अशुभ लक्षण निश्चय करके प्रकट किया होय तिसका नाम व्यंजन है और (तनुमयमहत्त्वगादि सद्भिः व्यजनम् आख्यायते) शरीरसंबंधी बडी चर्म आदिकको पंडित व्यंजन कहतेहैं ॥ २ ॥

अथ मशकलक्षणम् ।

रक्तः कृष्णो धूम्रो बिन्दुसमो मशक एव विज्ञेयः ॥
तिलकं तिलकाकारं ततोऽन्यदपि लांछनं स्त्रीणाम् ॥ ३ ॥

अन्वयार्थौ–(रक्तः कृष्णः धूम्रः बिन्दुसमः मशक एव विज्ञेयः) लाल काला, धूएँकासा, बूँद समान होय उसीका नाम मशक जानिये और (तिलकं तिलकाकारं ततः स्त्रीणाम् अन्यदपि लांछनं भवति) तिलके आकार तिल, तिसके पीछे कोई और चिह्न स्त्रियोंके होय उसका नाम लांछन होताहै ॥ ३ ॥

अन्तर्भ्रूयुग्मे वा ललाटमध्ये विलोक्यते यस्याः ॥
सुस्निग्धाभो मशकः सा भवति महीपतेः पत्नी ॥ ४ ॥

अन्वयः–(यस्याः अंतर्भ्रूयुग्मे वा ललाटमध्ये सुस्निग्धाभः मशकः विलोक्यते सा स्त्री महीपतेः पत्नी भवति) । अस्यार्थः–जिस स्त्रीकी

दोनों भौंहोंके बीचमें वा ललाटके बीचमें सुंदर मशक देख पडे सो स्त्री राजाकी रानी होतीहै ॥ ४ ॥

अन्तर्वामकपोले स्फुटता मशकन लोहिता भवति ॥
मिष्टान्नभोजनमत्ति प्रायेण सा नितम्बिनी लोके ॥ ५ ॥

अन्वयार्थौ–(या अन्तर्वामकपोले मशकेन स्फुटता लोहिता भवति) जो स्त्री बाँयेंकपोलमें प्रकट मसासे लाल होय (सा नितंबिनी लोके प्रायेण मिष्टान्नभोजनम् अत्ति) सो स्त्री लोकमें बहुधा मीठे भोजनको पातीहै ॥ ५ ॥

अथ तिलकलक्षणम् ।

तिलकं लांछनमथवा हृदि रक्ताभं विलोक्यते यस्याः ॥
सा धनधान्योपेता पतिप्रिया जायते पत्नी ॥ ६ ॥

अन्वयः–(यस्याः हृदि रक्ताभं तिलकम् अथवा लांछनं विलोक्यते सा पत्नी धनधान्योपेता पतिप्रिया जायते)। अस्यार्थः–जिस स्त्रीके हृदयमें लाल तिल वा और कोई चिह्न दीखें सो स्त्री धन धान्यसे युक्त और पतिकी प्यारी होतीहै ॥ ६ ॥

रक्तं तिलकं लांछनमपसव्यपयोधरे भवति यस्याः ॥
पुत्रीचतुष्टयं सा सुतत्रयं चांगना सूते ॥ ७ ॥

अन्वयः- (यस्याः अपसव्यपयोधरे रक्तं तिलकं लांछनं भवति, सा अंगना पुत्रीचतुष्टयं च पुनः सुतत्रयं सूते)। अस्यार्थः–जिस स्त्रीके दाहिने कुचमें लाल तिल अथवा कोई और चिह्न होय सो स्त्री चार पुत्री और तीनपुत्रको उत्पन्न करैहै ॥ ७ ॥

तिलके शुभवामकुचे विलासवती तदा स्वनालेन ॥
स्फुटमेकपुत्रजननी सा विधवा दुःखिनी भवति ॥ ८ ॥

अन्वयः–(शुभवामकुचे तिलके सति विलासवती स्वनालेन स्फुटम् एकपुत्रजननी पश्चात् विधवा तथा दुःखिनी भवति) । अस्यार्थः–जो सुंदर बायें

कुचमें तिल होय तो अपने नाल करिके प्रकट एक पुत्रकी जननेवाली होके पीछे विधवा और दुखिया होतीहै ॥ ८ ॥

गुह्यस्य कुंकुमाभस्तिलकः प्रान्तेऽथ दक्षिणे भागे ॥
सा भवति भूपपत्नी नृपजननी जायते वापि ॥ ९ ॥

अन्वयः-(यस्या गुह्यस्य प्रान्ते अथ दक्षिणे भागे कुंकुमाभः तिलको भवति सा भूपपत्नी वा नृपजननी अपि भवति) । अस्यार्थः-जिस स्त्रीकी योनिके पास या दाहिने तिल हो वह राजाकी पत्नी या माता होतीहै ॥९॥

मशको लोहितवर्णो नासाग्रे दृश्यते स्फुटो यस्याः ॥
सा भूपपट्टराज्ञी राजानं सूयते सूनुम् ॥ १० ॥

अन्वयः-(यस्या नासाग्रे लोहितवर्णः मशकः स्फुटः दृश्यते सा भूपपट्टराज्ञी वा राजानं सूनुं सूयते) । अस्यार्थः-जिस स्त्रीकी नाकके आगेके भागमें लाल रंगका तिल वा मस्सा प्रकट दीख पडे सो राजाकी पटरानी वा राजा पुत्रको उत्पन्न करे ॥ १० ॥

विस्फुरति नासिकाग्रे यस्यास्तिलकः सकज्जलच्छायः ॥
भर्तृघ्नी सा नारी विशेषतः पांसुला भवति ॥ ११ ॥

अन्वयः-(यस्याः नासिकाग्रे सकज्जलच्छायः तिलकः विस्फुरति सा नारी भर्तृघ्नी वा विशेषतः पांसुला भवति)अस्यार्थः-जिस स्त्रीकी नाकके आगेके भागमें काला तिल प्रकट होय सो स्त्री पतिको मारे और विशेष करके वह व्यभिचारिणी होतीहै और खोटी होतीहै ॥ ११ ॥

नाभेरधोविभागे मशको वा तिलकलांछने स्याताम् ॥
यस्या भवतः स्निग्धे सा रमणी वहति कल्याणम् ॥१२॥

अन्वयः-(यस्याः नाभेरधोविभागे मशकः वा तिलकलांछने स्निग्धे भवतः सा रमणी कल्याणं वहति)। अस्यार्थः-जिस स्त्रीकी टूंडीके नीचेके भागमें मस्सा अथवा तिल वा और कोई चिह्न चमकता होय तो सो स्त्री कल्याणको प्राप्तकरनेवाली होतीहै ॥ १२ ॥

स्यातां गुल्फौ यस्याः स्फुटलांछनमशकतिलकसंयुक्तौ ॥
सा धनधान्यविहीना दुःखवती जीवति प्रायः ॥ १३ ॥

अन्वयः-(यस्याः गुल्फौ स्फुटलांछनमशकतिलकसंयुक्तौ स्यातां सा धनधान्यविहीना प्रायः दुःखवती जीवति)। अस्यार्थः-जिस स्त्रीके टकनेमें प्रकट चिह्न मस्सा वा तिल युक्त होय सो धनधान्य रहितसे बहुधा दुखिया होकर जीवतीहै ॥ १३ ॥

वामे हस्ते कंठे वा काये जायते ध्रुवं यस्याः ॥
मशको यदि वा तिलकः प्राग्गर्भे सा सुतं सूते ॥ १४ ॥

अन्वयः-(यस्याः काये वामे हस्ते वा कंठे मशकः यदि वा तिलकः ध्रुवं जायते, सा प्राक् गर्भे सुतं सूते) । अस्यार्थः-जिस स्त्रीके शरीरमें बायें हाथमें वा कंठमें मस्सा वा तिलक निश्चय होय सो स्त्री पहलेही गर्भमें पुत्रको उत्पन्न करतीहै ॥ १४ ॥

मशकं तिलकं लांछनमुक्तस्थाने कृताशुभं यासाम् ॥
अंगे पुनरपसव्ये सुदृशां क्लेशावहं बहुशः ॥ १५ ॥

अन्वयार्थौ-(यासां सुदृशाम् उक्तस्थाने मशकं तिलकं लांछनम् अशुभं कृतम्) जिन स्त्रियोंके कहे हुऐ स्थानोंमें मस्सा तिल और कोई चिह्न होय तो अशुभ है और (पुनः अपसव्ये अंगे बहुशः क्लेशावहं भवति) फिर जो दाहिने अंगमें चिह्न न होय तो अतिदुःखके करनेवाले होतेहैं ॥ १५ ॥

अथ प्रकृतिलक्षणम् ।

प्रकृतिर्द्विविधा गदिता स्त्रीणां श्लेष्मादिका स्वभावाख्या ॥
प्रथमा सापि त्रेधा द्वादशधा भवति पुनरन्या ॥ १६ ॥

अन्वयः-(स्त्रीणां प्रकृतिर्द्विविधा गदिता श्लेष्मादिका च पुनः स्वभावाख्या, सापि प्रथमा त्रेधा पुनः अन्या द्वादशधा भवति)। अस्यार्थः-स्त्रियोंकी प्रकृति दो प्रकारकी कही है श्लेष्मादिक और स्वभाव; सो पहली तीन प्रकारकी है, फिर दूसरी १२ प्रकारकी होतीहै ॥ १६ ॥

नारीमतेऽस्ति प्रकृतिः सत्यप्रियभाषिणी स्थिरस्नेहा ॥
बहुप्रसूतिं लभते नीलोत्पलदूर्वांकुरश्यामा ॥ १७ ॥

अन्वयार्थौ–(नारीमते प्रकृतिः अस्ति, सा नारी स्थिरस्नेहा भवति) स्त्रीके मतमें स्वभाव है सो स्त्री स्थिर स्नेह अर्थात् स्थिरप्रीति वाली होतीहै और (सत्यप्रियभाषिणी भवति) सची और मीठा बोलनेवाली होतीहै और तथा (नीलोत्पलदूर्वांकुरश्यामा बहुप्रसूतिं लभते) नील कमल और दूबके अंकुरके समान श्यामरंग, बहुत जननेवाली होतीहै ॥ १७ ॥

स्निग्धनखरोमत्वंनारी सुविलोचना क्षमायुक्ता ॥
सुविभक्तसमावयवा बहुसत्यापत्यवीर्ययुता ॥ १८ ॥

अन्वयार्थौ–(स्निग्धनखरोमत्वक् सुविलोचना नारी क्षमायुक्ता भवति) चिकने हैं नख, रोम और त्वचा जिसके और सुंदर नेत्रोंक-रके युक्त ऐसी स्त्री क्षमावाली होतीहै और (सुविभक्तसमावयवा बहुसत्यापत्यवीर्ययुता भवति) जुदे जुदे हैं बराबर हाथ पाँव आदि अंग जिसके ऐसी स्त्री बहुत सत्य और संतान और पराक्रम युक्त होतीहै ॥ १८ ॥

अस्थूला सरसा त्वक्प्रसूनतुल्यानुलेपना सुभगा ॥
धर्मार्थिनी कृतज्ञा दयान्विता कमलपदा सुमुखी ॥ १९ ॥

अस्यार्थः–मोटी न होय, पतली होय, सूखी खरदरी न होय रसदार होय ऐसी त्वचा फूलकासा है अनुलेपन जिसमें और धर्मसेही है प्रयोजन जिसमें, कहेको माननेवाली और दयावती कमलकेसे हैं पाँव जिसके और सुंदर है मुख जिसका ऐसी स्त्री अच्छी होतीहै ॥ १९ ॥

प्रच्छन्न धृतवेषा क्षुत्तृष्णाक्षमात्रपोपेता ॥
मितवचना पानभोजनसमया क्ष्मातले पृथुलनयना ॥ २० ॥

अन्वयः–(क्ष्मातले पृथुलनयना नारी प्रच्छन्नं धृतवेषा, क्षुत्तृष्णाक्षमात्र-पोपेता मितवचना पानभोजनसमया स्यात)। अस्यार्थः-पृथ्वीमें बड़े नेत्रवाली

स्त्री गुप्त धरे हैं अनेक वेष जिसने, भूँख प्यास सहनशीलता और लज्जा इन चारों करिके युक्त, प्रमाणके वचन हैं जिसके, अन्न जल है समयपै जिसके ऐसी होतीहै ॥ २० ॥

साधारणसुरतेच्छा निद्रालुः शीतमांसलश्रोणिः ॥
जलदजलाशयजलजकृतवांछा या भवेत्स्वप्ने ॥ २१ ॥

अस्यार्थः—साधारण है सुरतकी इच्छा जिसकी, निद्रावती अर्थात् जिसको निद्रा अधिक होय, ठंढी है मांससे भरी योनि जिसकी और स्वप्नेमें (सोनेमें) मेघ और पानीके स्थान और पदार्थ इनमें वांछा करनेवाली होतीहै २१ ॥

योषित्पित्तप्रकृतिः गौरी कृष्णाऽथ वा हृष्टा ॥
आताम्रा नयनकररुहरसनापाणितलतालुतलाः ॥ २२ ॥

अन्वयार्थौ—(पित्तप्रकृतिः योषित् गौरी कृष्णा अथवा हृष्टा) पित्तके सुभाववाली स्त्री गोरेरंग वा काली प्रसन्न रहती है और (नयनकररुहरसनापाणितलतालुतला आताम्रा भवंति) नेत्र, नख, जीभ, हाथकी हथेली, तालु, पाँवका तलुवा ये जिसके लाल होतेहैं वह अच्छी है ॥ २२ ॥

क्षणक्षणविकसच्चेष्टाऽभीष्टशीतमधुरसा पुनर्मृद्वी ॥
विरलकपिलमूर्द्धजरोमा मेधावती प्रायः ॥ २३ ॥

अन्वयार्थौ—(क्षणक्षणविकसचेष्टा) छिनाछिनमें खिले आते हैं देहव्यापार जिसके और (अभीष्टशीतमधुरसा) प्यारा है शीत और मीठा रस जिसका (पुनर्मृद्वी) फिर मुलायम है शरीर जिसका (प्रायः विरलकपिलमूर्द्धजरोमा मेधावती भवति) बहुधा जुदे जुदे भूरे रंगके बाल और रोम जिसके सो बुद्धिमती होतीहै ॥ २३ ॥

प्रियशुचिवसनमाल्या उपनाड्युष्णशिथिलमृदुगुह्या ॥
अभिमानिनी शुचिरतां विशदास्मितवल्लभा शूरा ॥ २४ ॥

अस्यार्थः—प्यारे हैं पवित्र कपड़े और माला जिसके फिर कैसी है वह उपनाडी (छोटी नसे) युक्त और गरम है गुदगुदी ढीली नरम योनि जिसकी

गर्ववती और पवित्र बातोंकी चाहनेवाली, निर्मल है हँसना प्यारा जिसका और जो शूरा है वह शुभ है ॥ २४ ॥

धृतवलिपलितक्षुत्तृट् तनुवीर्या मृदुलमोहनक्रीडा ॥
किंशुकादिग्दाहतडिद्दहनादीन्पश्यति स्वप्ने ॥ २५ ॥

अस्यार्थः—धारण करी हैं सलवट और छींक, प्यास थोड़ा है साहस, मुलायम भोग जिसका वह टेसूके फूल और दिशाओंका जलना और बिजली आग आदिको देखती है ॥ २५ ॥

वनिता वातप्रकृतिः स्फुटितकचा भग्नपादतला ॥
रूक्षा वै नखदशनाश्चलवृत्ता चंचलप्रकृतिः ॥ २६ ॥

अन्वयार्थौ—(स्फुटितकचा भग्नपादतला) फटे टूटे हैं बाल और पाँवके तलुवे जिसके और (वै इति निश्चयेन नखदशना रूक्षाः) रूखे हैं नख और दाँत जिसके और (चलवृत्ता चंचलप्रकृतिः) चलायमान है आचरण और चंचल स्वभाव जिसका (वातप्रकृतिः वनिता ईदृशी भवति) वातप्रकृतिवाली स्त्री ऐसी होती है ॥ २६ ॥

अजितेन्द्रिया खरांगी गंधर्वविलासहासकलहरतिः ॥
बहुभोजनाल्पनिद्रा बहुलालापभ्रमणशीला ॥ २७ ॥

अस्यार्थः—नहीं वशमें हैं इंद्रिय जिसके और खरदरा है अंग जिसका गाने और भोग हँसी कलह करनेमें है प्रीति जिसकी और बहुत भोजन और थोड़ा सोनेवाली—बहुत बोलने और फिरनेका है स्वभाव जिसका ॥ २७ ॥

धूसरशरीरवर्णा छायाविद्वेषमधुरसा शिशिरा ॥
किंचिद्विवृत्ताक्षमुखी शेते विलपति निशि त्रसति ॥ २८ ॥

अस्यार्थः—धूलके रंगके तुल्य है शरीरका रंग जिसका और छायासे वैर और मीठे रस, ठंढकी चाहनेवाली और थोड़ी खुली हुई आँख और मुख जिसका रातमें सोनेमें रोती, डरती हुई, विलाप करतीहै ॥ २८ ॥

बह्वम्ललवणतिक्तास्निग्धकषायप्रिया सुरतिकठिना ॥
गोजिह्वाकर्कशतनुरोमा सुश्रोणिबिम्बयुता ॥ २९ ॥

अस्यार्थः—बहुत खट्टा, नमकीन, चरपरा, चिकना, कसैला ऐसे हैं स्वाद प्यारे जिसको और गायकी जीभकासा खरदरा और कडा शरीर अथवा बाल जिसके और कमरके बिम्बयुक्त रतिमें कडी होतीहै ॥ २९ ॥

उद्यानवनक्रीडारातिरत्युष्णाप्रिया स्थिरक्रोधा ॥
तरुपर्वताधिरोहं स्वप्ने कुरुते न भोगमना ॥३०॥

अस्यार्थः—बाग बगीचे और बनमें खेलने वा जानेकी है प्रीति जिसकी और बहुत गरम है प्रिय जिसके और स्थिर क्रोध है जिसका वह वृक्ष और पर्वतोंपर चढनेका स्वप्न देखनेवाली और भोगमें मन नहीं करैहै ॥ ३० ॥

प्रायेणैषा प्रकृतिः शुद्धैव विलोक्यते स्फुटं क्वापि ॥
भेदाः पुनरेतासां बहवोपि भवंति मनुजानाम् ॥ ३१ ॥

अन्वयार्थौ—(प्रायेण एषा प्रकृतिः शुद्धैव स्फुटं क्वापि विलोक्यते) बहुधा करके यह शुद्ध प्रकृति प्रकट कहीं देखी जातीहै और (पुनः मनुजानाम् एतासां भेदाः अपि बहवः भवन्ति) फिर मनुष्योंकी इन्हीं प्रकृतियोंके बहुतसे भेद होतेहैं ॥ ३१ ॥

सुरविद्याधरगंधर्वयक्षराक्षसपिशाचवानरकपिभिः ॥
अहिखरबिडालसिंहैस्तुल्यान्या प्रकृतिरत्रैषा ॥ ३२ ॥

अस्यार्थः—सुर, विद्याधर, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, पिशाच, वानर, कपि, अहि, खर, बिडाल, सिंह आदि ये सब देवताओंके भेद हैं ऐसी इनकी समान और भी प्रकृति हैं ॥ ३२ ॥

अल्पाशिनी सुगंधा समुज्ज्वला चारुमानसा शुद्धा ॥
प्रियवसना तनुनिद्रा निर्दिष्टा सा सुरप्रकृतिः ॥ ३३ ॥

अन्वयार्थौ—(अल्पाशिनी सुगंधा) थोडा भोजन करनेवाली और अच्छी है गंध जिसमें और (समुज्ज्वला चारुमानसा शुद्धा) निर्मल कान्तियुक्त सुन्दर चित्त शुद्ध स्वभाववाली और (प्रियवसना तनुनिद्रा) प्यारे हैं वस्त्र और थोडी है नींद जिसको (सा नारी सुरप्रकृतिः निर्दिष्टा) सो स्त्री देवताकी प्रकृतिवाली कही है ॥ ३३ ॥

विद्याधरस्वभावा भवति कलागुणविचक्षणा शांता ॥
चन्द्रानना सुभोगा मनोहरस्थानबद्धरतिः ॥ ३४ ॥

अन्वयार्थों—(कलागुणविचक्षणा शांता) कला और गुण इनमें चतुर शांत है चित्त जिसका और (चन्द्रानना सुभोगा) चंद्रमाकासा है मुख जिसका, सुंदर भोगवाली (मनोहरस्थानबद्धरतिः) सुंदर स्थानमें बांधी है प्रीति जिसने (ईदृशी नारी विद्याधरस्वभावा भवति) ऐसी स्त्री विद्याधर-स्वभाववाली होतीहै ॥ ३४ ॥

उद्यानवनासक्ता कलस्वरा गीतनृत्यरक्तमनाः ॥
परिचितसुगंधमाल्या गंधर्वप्रकृतिरबला सा ॥ ३५ ॥

अन्वयार्थों—(उद्यानवनासक्ता) बाग बगीचे और वनमें है चित्त जिसका और (कलस्वरा गीतनृत्यरक्तमनाः) सुंदर है शब्द और गीत और नृत्यमें है मन जिसका (परिचितसुगंधमाल्या) सुगंध और मालामें पहिचान करनेवाली (सा अबला गंधर्वप्रकृतिः ज्ञेया) सो स्त्री गंधर्वस्वभाववाली जानिये ॥ ३५ ॥

आरामजलक्रीडारता विभूषणपरायणा कान्ता ॥
प्रायो यक्षप्रकृतिर्धनरक्षणकांक्षिणी रमणी ॥ ३६ ॥

अन्वयार्थों—(आरामजलक्रीडारता) बाग बगीचेकी सैरमें तत्पर (विभूषणपरायणा) भूषण पहरनेमें तत्पर रहे (धनरक्षणकांक्षिणी रमणी) धनकी रक्षा करने और चाहने और भोगकरनेवाली (सा कान्ता प्रायः यक्ष-प्रकृतिर्भवति) सो स्त्री बहुधा यक्षस्वभाववाली होती है ॥ ३६ ॥

बह्वशना क्रुद्धमना हन्ति पतिं प्राणलग्नमप्युग्रा ॥
सा राक्षसस्वभावाकटुकालापा दुराचारा ॥ ३७ ॥

अन्वयार्थों—(बह्वशना) बहुत खानेवाली (क्रुद्धमनाः लड़नेमें है मन जिसका (प्राणलग्नम् अपि पतिं हंति) प्राणमें लगे भी पतिको मारनेवाली (उग्रा कटुकालापा दुराचारा) भयंकर और कडुवा बोलने और बुरे आचरणवाली (सा नारी राक्षसस्वभावा भवति) सो स्त्री राक्षसी स्वभाववाली होतीहै ॥ ३७ ॥

शौचाचारभ्रष्टा रूपविहीना भयंकरा सततम् ॥
प्रस्वेदमलोपेता भवति पिशाचप्रकृतिरशुभा ॥ ३८ ॥

अन्वयार्थौ–(शौचाचारभ्रष्टा) पवित्र आचरणसे रहित (रूपविहीना) सूरतसे बुरी (सततं भयंकरा) निरंतर डर करनेवाली (प्रस्वेदमलोपेता) पसीना और मलकरिके युक्त (सा नारी अशुभा पिशाचप्रकृतिर्भवति) सो स्त्री अशुभ पिशाचिनी स्वभावकी होतीहै ॥ ३८ ॥

दानदयानियमरतिः पतिव्रता देवगुरुकृताज्ञा च ॥
कार्याकार्यविविक्ता नरस्वभावा भवति नारी ॥ ३९ ॥

अन्वयार्थौ–(दानदयानियमरतिः) दान दया और नियममें है प्रीति जिसकी (पतिव्रतादेवगुरुकृताज्ञा च) पतिके मानने और देव, गुरुकी करीहै आज्ञा जिसने (कार्याकार्यविविक्ता) भले बुरे कामका विचार करने वाली (सा नारी नरस्वभावा भवति) सो स्त्री मनुष्य स्वभावकी होतीहै ॥ ३९ ॥

स्थैर्यं क्वापि न कुरुते समस्तदिग्वीक्षणेक्षणासक्ता ॥
उत्फालगतिर्लुब्धा दुर्वेषा सा कपिप्रकृतिः ॥ ४० ॥

अन्वयार्थौ–(क्वापि स्थैर्यं न कुरुते)कहीं ठहर न सके(समस्तदिग्वीक्षणेक्षणासक्ता)सब दिशाओंके देखनेमें नेत्रोंके फेरनेवाली (उत्फालगतिः) उछलके चलनेवाली (लुब्धा) लोभवाली (दुर्वेषा) बुरे वेषकी (खोटे रूपवाली) (सा नारी कपिप्रकृतिर्भवति) सो स्त्री बंदरके स्वभाववाली होती है ॥ ४० ॥

अन्यच्छिद्रान्वेषणपरायणा कुटिलगामिनी रौद्रा ॥
धृतवैरा क्रोधरुचिरहिस्वभावा च वनिता स्यात् ॥ ४१ ॥

अन्वयार्थौ–(अन्यच्छिद्रान्वेषणपरायणा) औरोंके दोष ढूँढनेमें तत्पर (कुटिलगामिनी रौद्रा) टेढी चाल और खोटे भयंकर स्वभाववाली (धृतवैरा) वैरकी करनेवाली (क्रोधरुचिः) क्रोधमें है रुचि (चाह) जिसकी (सा वनिता अहिस्वभावा स्यात्) सो स्त्री सांपके स्वभाववाली होती है ॥ ४१ ॥

सहते परां विभूतिं खरमैथुनसेविनी मुसलनादा ॥
अन्नेन येन केनचिदुपचितगात्रा खरप्रकृतिः ॥ ४२ ॥

अन्वयार्थों-(परां विभूतिं सहते) दूसरेके ठाटको सहनेवाली (खरमैथुनसेविनी) बहुत जोरसे भोगके चाहनेवाली अर्थात् गधेकेसे गमनेवाली (मुसलनादा) भयंकर बोलनेवाली (येन केनचित् अन्नेन उपचितगात्रा) किसी अन्नकरके मोटा होगया है शरीर जिसका (सा नारी खरप्रकृतिर्भवति) सो स्त्री गधेके स्वभाववाली होती है ॥ ४२ ॥

छन्नं कुरुते पापं परपीडान्यस्तमानसा सततम् ॥
स्त्री सापवादरक्षणपरा बिडालस्वभावा च ॥ ४३ ॥

अन्वयार्थों-(या स्त्री छन्नं पापं कुरुते) जो स्त्री छिपके पाप करे (या स्त्री सततं परपीडान्यस्तमानसा) जो स्त्री दूसरेके मनको दुःख देनेवाली (या स्त्री अपवादरक्षणपरा) जो स्त्री बुराईके साथ रक्षामें तत्पर (सा स्त्री बिडालस्वभावा भवति) सो स्त्री बिलावके स्वभाववाली होती है ॥ ४३ ॥

एकान्तस्थानरतिश्चिरेण मैथुननिषेवणस्था च ॥
निद्रालसा गतभया सिंहप्रकृतिर्भवति युवतिः ॥ ४४ ॥

अन्वयार्थों-(या स्त्री एकान्तस्थानरतिः) जो स्त्री एकान्त स्थानमें रहनेकी इच्छावालीहै (या स्त्री चिरेण मैथुननिषेवणस्था) जो स्त्री बहुत भोग करनेवाली (निद्रालसा) नींद और आलसवाली (गतभया) गया है भय जिसका (सा युवतिः सिंहप्रकृतिर्भवति) सो स्त्री सिंहके स्वभाववाली होतीहै ॥ ४४ ॥

अथ मिश्रकलक्षणम्।

या मंडूककुक्षिर्भवति न्यग्रोधमंडला युवतिः ॥
सा सूते सुतमेकं सोपि पुनश्चक्रवर्ती स्यात् ॥ ४५ ॥

अन्वयार्थों-(या युवतिः मंडूककुक्षिः तथा न्यग्रोधमंडला भवति) जो स्त्रीके मेंडककीसी कोख और नीचेसे हलकी ऊपरसे भारी बडवृक्षकासा आकार होय (सा एकं सुतं सूते) सो एक पुत्रको उत्पन्न करती है (पुनः सोपि पुनः चक्रवर्ती स्यात) फिर वही पुत्र चक्रवर्ती राजा होता है ॥ ४५ ॥

भालस्थले त्रिशूलं विलोक्यते देवनिर्मितं यस्याः ॥
तस्याः स्वामित्वं स्याद्भुवने वनितासहस्राणाम् ॥ ४६ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः भालस्थले दैवनिर्मितं त्रिशूलं विलोक्यते) जिस स्त्रीके ललाटमें दैवका बनाया हुवा त्रिशूल दीखे तो (तस्याः भुवने सहस्राणां वनितानां स्वामित्वं स्यात्) तिस स्त्रीको लोकमें हजार स्त्रियोंका मालिकपना होता है ॥ ४६ ॥

या हरिणाक्षी हरिणग्रीवा हरिणोदरी हरिणजंघा ॥
जातापि दासवंशे सा युवतिर्भवति नृपपत्नी ॥ ४७ ॥

अन्वयार्थौ–(या युवतिः हरिणाक्षी, हरिणग्रीवा, हरिणोदरी हरिणजंघा स्यात्) जिस स्त्रीकी हिरणकीसी आँख और हिरणकीसी नाड और हिरणकासा पेट और हिरणकीसी पिंडली होय तो (दासवंशे जातापि सा युवतिः नृपपत्नी भवति) वह टहलनीके भी वंशमें उत्पन्न हुई होय सोभी स्त्री राजाकी रानी होती है ॥ ४७ ॥

मधुपिंगाक्षी स्निग्धा श्यामांगीराजहंसगतिनादा ॥
अष्टौ जनयति पुत्रान्धनधान्यविवर्धिनी तन्वी ॥ ४८ ॥

अन्वयार्थौ–(मधुपिंगाक्षी) शहदकेसे हैं नेत्र जिसके और (स्निग्धश्यामांगी) चिकना सुंदर है साँवला अंग जिसका और (राजहंसगतिनादा) राजहंसकीसी है चाल और बोल जिसका (ईदृशी तन्वी धनधान्यविवर्द्धिनी) ऐसी स्त्री धन धान्यको बढानेवाली (तथा अष्टौ पुत्रान् जनयति) वह आठ पुत्रोंको उत्पन्न करै है ॥ ४८ ॥

पीवरनितम्बबिम्बा पीवरवक्षोजमण्डला बाला ॥
पीवरकपोलपाली सा सौभाग्यान्विता युवतिः ॥ ४९ ॥

अन्वयार्थौ–(या बाला पीवरनितम्बबिम्बा) खूब भरे हुए मोटे फूले हैं कूले जिसके और (पीवरवक्षोजमण्डला) भरे हुए हैं कुचोंके मंडल जिसके और (पीवरकपोलपाली) फूले हुए हैं कपोलोंके हड्डे जिसके (सा युवतिः सौभाग्यान्विता भवति) सो स्त्री सौभाग्य युक्त अर्थात् सर्व सुहागिनी होती है ॥ ४९ ॥

रक्तालुनखरसना रक्तोष्ठी रक्तपाणिपादतला ॥
रक्तनयनान्तगुह्या धनधान्यसमान्विता वनिता ॥ ५० ॥

अन्वयार्थौ–(रक्तालुनखरसना–रक्तोष्ठी रक्तपाणिपादतला रक्तनयनान्तगुह्या स्यात्) लाल तालु और नख, जीभ, लाल, होठ लाल, हाथ पाँवके तलुवा लाल, नेत्रोंके अंत और योनि जिसकी लाल हैं (सा वनिता धनधान्यसमन्विता भवति) सो स्त्री धनधान्य युक्त होती है ॥ ५० ॥

पृथुनयना पृथुजघना पृथुवक्षाः पृथुकटिः पृथुश्रोणिः ॥
पृथुशीला च पुरंध्री सुपूजिता जायते जगति ॥ ५१ ॥

अन्वयः–(पृथुनयना पृथुजघना पृथुवक्षाः पृथुकटिः पृथुश्रोणिः पृथुशीला पुरंध्री जगति सुपूजिता जायते)। **अस्यार्थः**–लंबे चौडे नेत्र और लंबा चौडा कूलेका आगा, बडी चौडी छाती, बडी चौडी कमर, बडी चौडी योनि, बडी उदारता दीखे ऐसी स्त्री लोकमें मानिनीय अर्थात् पूजने योग्य होती है॥५१॥

मृदुरोमा मृदुगात्री मृदुकोपा मृदुशिरोरुहा रमणी ॥
मृदुभाषिणी अगण्यैः पुण्यैरासाद्यते सद्यः ॥ ५२ ॥

अन्वयः–(मृदुरोमा मृदुगात्री मृदुकोपा मृदुशिरोरुहा मृदुभाषिणी ईदृशी रमणी अगण्यैः पुण्यैः सद्यः आसाद्यते) **अस्यार्थः**–नरमरोम, कोमल शरीर, थोडे कोपवाली, कोमल बाल, मीठे बोलनेवाली ऐसी स्त्री बडे पुण्योंसे शीघ्रही मिलती है ॥ ५२ ॥

जानुयुगं जंघाद्वयमपि लगति परस्परेण यस्याः ॥
उत्कृष्टकामिनी या सा सौभाग्यान्विता रमणी ॥ ५३ ॥

अन्वयः–(यस्या जानुयुगं जंघाद्वयम् अपि परस्परेण लगति या उत्कृष्टकामिनी सा रमणी सौभाग्यान्विता भवति)। **अस्यार्थः**–जिस स्त्रीके दोनों-घोटुओंके ऊपरके भाग जानु संज्ञक तथा–आपसमें दोनों जंघा लगी हों और जो श्रेष्ठ कामकी चाह करनेवाली है सो स्त्री सौभाग्यवती अर्थात् अच्छे भाग्ययुक्त होती है ॥ ५३ ॥

दीर्घमुखी दीर्घाक्षी दीर्घभुजा दीर्घमूर्द्धजा तन्वी ॥
दीर्घाँगुलिका प्राप्नोत्यायुर्दीर्घं सुखोपेतम् ॥ ५४ ॥

अन्वयः—(दीर्घमुखी दीर्घाक्षी दीर्घभुजा दीर्घमूर्द्धजा दीर्घांगुलिका तन्वी सुखोपेतं दीर्घम् आयुः प्राप्नोति)। अस्यार्थः—बडा लंबा मुख, बडे लंबे नेत्र, बड़ी लंबी बाहें, बड़े लंबे बाल, बडी लंबी अंगुली हैं जिसकी ऐसी स्त्री सुख करके युक्त बड़ी आयु पातीहै ॥ ५४ ॥

वृत्तमुखी वृत्तकुचा वृत्तप्रसृतोरुजानुगुल्फयुगा ॥
वृत्तग्रीवानाभिर्वृत्ताशिरा जायते धन्या ॥ ५५ ॥

अन्वयः—(वृत्तमुखी वृत्तकुचा वृत्तप्रसृतोरुजानुगुल्फयुगा वृत्तग्रीवानाभिः वृत्तशिरा नारी धन्या जायते) । अस्यार्थः—गोल मुख, गोल चूंचे, गोल पसरे ऊरु, जानु और दोनों टकने गोल नाड, टूंडी और गोल मस्तक है जिसका ऐसी स्त्री धन्य अर्थात् अच्छी होतीहै ॥ ५५ ॥

व्यक्ता भवंति रेखा मणिबंधे कंठदेशके नूनम् ॥
पूर्णास्तिस्रो यस्या नृपस्य सा जायते जाया ॥ ५६ ॥

अन्वयः—(यस्याः मणिबंधे कंठदेशके व्यक्ताः पूर्णाः तिस्रो रेखाः भवंति—सा नूनं नृपस्य जाया जायते)। अस्यार्थः—जिस स्त्रीके पहुँचेमें और कंठमें प्रकट रेखा पूरी होंय सो निश्चय करके राजाकी रानी होतीहै ॥ ५६ ॥

उत्तप्तस्वर्णरुचिरा तनुत्वचा सकलकोमलावयवा ॥
लब्धसमुदायशोभा प्रायः श्रीभाजनं सुदृशी ॥ ५७ ॥

अन्वयः—(या उत्तप्तस्वर्णरुचिरा तनुत्वचा सकलकोमलावयवा लब्धसमुदायशोभा सा सुदृशी प्रायः श्रीभाजनं भवति) । अस्यार्थः—जो स्त्री तपे हुए सोनेके रंग और पतली खाल और संपूर्ण कोमल हैं हाथ, पाँव अंग जिसके और पाई है इकट्ठी शोभा जिसने सो स्त्री बहुधा लक्ष्मीका पात्र अर्थात् भोगनेवाली होतीहै ॥ ५७ ॥

पद्मिन्यथ हस्तिन्यथ शंखिनी चित्रिणी च भेदेन ॥
वनिता चतुष्प्रकारा क्रमेण तल्लक्षणं वयं ब्रूमः ॥ ५८ ॥

अन्वयः—(वनिता चतुष्प्रकारा भेदेन पद्मिनी हस्तिनी शंखिनी चित्रिणी क्रमेण तल्लक्षणं वयं ब्रूमः) । अस्यार्थः—स्त्रियोंके चार प्रकरके भेद हैं पद्मिनी १, हस्तिनी २, शंखिनी ३, चित्रिणी ४, तिनके क्रमसे लक्षण हम कहते हैं ॥ ५८ ॥

स्निग्धश्यामलकान्तिस्तिलकुसुमाकारसुभगनासिकायस्याः ॥
त्रिवलीतरंगमध्या वृत्तकुचा स्निग्धकृष्णकचा ॥ ५९ ॥
पद्ममुखी मधुगंधा पद्मायतलोचना प्रियालापा ॥
बिम्बोष्ठी हंसगतिर्द्धर्मरतिः पद्मिनी भवति ॥ ६० ॥

अन्वयः—(स्निग्धश्यामलकान्तिः तिलकुसुमाकारसुभगनासिका त्रिवली-तरंगमध्या वृत्तकुचा स्निग्धकृष्णकचा पद्ममुखी मधुगंधा पद्मायतलोचनाप्रिया-लापा बिम्बोष्ठी हंसगतिः धर्मरतिः सा नारी पद्मिनी भवति) । अस्यार्थः—सुंदर चिकना साँवला है रंग जिसका और तिलके फूलके आकार सुंदर है नाक जिसकी, त्रिवलीकी तरंग हैं बीचमें जिसके गोलहैं कुच जिसके और सुंदर काले बाल, कमलकासा है मुख जिसका, सुंदर मीठी है सुगंध जिसमें, कमलकेसे हैं बडे नेत्र जिसके, मीठा बोलनेवाली, कुँदरूकेसे हैं लाल होठ जिसके, हंसकीसी है चाल जिसकी, धर्ममें है प्रीति जिसकी सो नारी पद्मिनी नामकी होतीहै ॥ ५९ ॥ ६० ॥

स्थूलदशना सुमध्या गद्गदनादा सदोत्कटा चपला ॥
ह्रस्वोरुभुजग्रीवाजंघा वादित्रगीतरतिः ॥ ६१ ॥
स्निग्धतररंगकेशी पीनोन्नतविपुलवृत्तकुचकलशा ॥
मत्तमतंगजगमना मदगन्धा हस्तिनी भवति ॥ ६२ ॥

अन्वयार्थौ—(स्थूलदशना) बडे मोटे हैं दाँत जिसके, (सुमध्या) सुंदर है कमर जिसकी, (गद्गदनादा) गद्गद बोलवाली, (मदोत्कटा चपला) मदा मतवाली, चंचल (ह्रस्वोरुभुजग्रीवाजंघा) छोटे हैं ऊरु और भुजा, गला जंघा, जिसके, (वादित्रगीतरतिः) बाजे और गीतमें है प्रीति जिसकी. (स्निग्धतररंगकेशी) सुंदर रंगकेसे हैं बाल जिसके (पीनोन्नत-विपुलवृत्तकुचकलशा) मांसीले ऊंचे और बडे गोल हैं कुचकलश जाके, (मत्त-मतङ्गजगमना) मतवाले हाथीकीसी है चाल जिसकी, (मदगंधा सा हस्तिनी भवति) मदकीसी सुगंध है जिसमें सो हस्तिनी होतीहै॥ ६१ ॥ ६२ ॥

विषमकुचा विषगंधा दीर्घप्रसृतोरुनासिकानयना ॥
तनुकेशी खरचित्ता शंखरदा शंखिनी योषित् ॥ ६३ ॥

अन्वयः—(विषमकुचा विषगंधा दीर्घप्रसृतोरुनासिकानयना तनुकेशी खरचित्ता शंखरदा सा योषित् शांखिनी भवति) । अस्यार्थः—ऊँचे नीचे हैं कुच जिसके और कमलके तंतुकीसी है गंध जिसमें, लम्बे हैं हाथके पंजे और ऊरु, नाक, नेत्र जिसके, छोटे और थोडे पतले हैं बाल जिसके; तेज स्वभाव जिसका, शंखकेसे हैं दाँत जिसके ऐसी स्त्री शांखिनी होतीहैं ॥६३॥

तुङ्गपयोधरभारा विचित्रवस्त्रा प्रियाचलालापा ॥
सुक्षारगन्धनिचिता चित्राक्षी चित्रिणी गदिता ॥ ६४ ॥

अस्यार्थः—ऊंचे बडे कुचोंके भार वाली, अनेक प्रकारके जो वस्त्र वह हैं प्रिय जिसको, और चंचल है बोल जिसका, खारी गंध करके व्याप्त जिसमें, विचित्र हैं आंखें जिसकी, सो स्त्री चित्रिणी कही है ॥६४॥

कपिलविलोचनललनां कपिलकचां कपिलरोमराजिचिताम् ॥
कपिलावयवां बालां सन्तः शंसंति न प्रायः ॥ ६५ ॥

अस्यार्थः—भूरे हैं पिलाई लिये नेत्र और बाल जिसके, भूराहै रोम युक्त शरीर जिसका, भूरे हैं हाथ पाँव अंग जिसके, ऐसी स्त्रीकी पंडित बहुधा प्रशंसा नहीं करतेहैं अर्थात् अशुभ है ॥ ६५ ॥

विपुलमुखी विपुलकचा विपुलाक्षी विपुलकर्णपदा ॥
विपुलांगुलिका प्रायो भर्तृघ्नी जायते योषित् ॥ ६६ ॥

अस्यार्थः—चौडा बडा है मुख जिसका, बडे मोटे हैं बहुत बाल जिसके, बडे चौडे हैं भयंकर नेत्र जाके और बडे चौडे हैं कान और पाँवके पंजे जिसके, बडी हैं अंगुली जिसकी ऐसी स्त्री बहुधा पतिको मारनेवाली होतीहै ॥ ६६ ॥

कृष्णाक्षी कृष्णाङ्गी कृष्णनखी कृष्णरोमराजिकचा ॥
कृष्णौष्ठतालुरसना सा नियतं कृष्णचारित्रा ॥ ६७ ॥

अस्याथः—काली आँख, काला अंग, काले नख, काले रोम और बाल बहुत जाके—और काले होठ और तालु, जीभ जिसकी सो स्त्री निश्चय करके खोटे चलनकी होती है ॥ ६७ ॥

लम्बललाटी लम्बग्रीवा लम्बोष्ठनासिका न शुभा ॥
लम्बपयोधरबाला लंबास्फिग्लम्बरमणमणिः ॥ ६८ ॥

अन्वयः-(लम्बललाटी लम्बग्रीवा लम्बोष्ठनासिका न शुभा, तथा लम्बपयोधरबाला लम्बास्फिक् लम्बरमणमणिः ईदृशी बाला न शुभा)। अस्यार्थः-लंबा ललाट, लंबी नाड, लंबे होंठ और नाक ये अच्छे नहीं हैं और लंबे कुच, लंबी कोख, लंबी है योनिमें कली जिसके ऐसी स्त्री अच्छी नहीं है ॥ ६८ ॥

निःसरति वदनकुहराल्लाला यस्याः सदा शयानायाः ॥
स्मेरे किञ्चिन्नेत्रे सा बाला कथ्यते कुलटा ॥ ६९ ॥

अन्वयः-(शयानायाः यस्याः वदनकुहरात् लाला सदा निःसरति, तथा किंचित् नेत्रे स्मेरे भवतः सा बाला कुलटा कथ्यते)।अस्यार्थः-सोतेहुए जिसके मुखसें लार सदा निकले और थोडे नेत्र जिसके खुले होयँ सो स्त्री व्यभिचारिणी अर्थात् खोटी कही जातीहै ॥ ६९ ॥

यदि नाभ्यावर्त्तवले रेखाहीनं पृथूदरं यस्याः ॥
दुःखाद्व्याकुलचित्ता सा युवतिर्जायते सततम् ॥ ७० ॥

अन्वयः-(यस्याः नाभ्यावर्तवले पृथूदरं यदि रेखाहीनं स्यात सा युवतिः सततं दुःखात् व्याकुलचित्ता जायते)।अस्यार्थः-जिस स्त्रीकी टूंडी के चक्रसे ऊपर चौडा पेट जो रेखाहीन होय सो स्त्री निरंतर दुःखमें व्याकुल चित्तवाली होतीहै ॥ ७० ॥

प्रसभं प्रसरति बाष्पं प्रहसंत्या नेत्रकोणयोर्यस्याः ॥
लाला च मुखात्तस्याः कौतस्त्या शीलरक्षा स्यात ॥ ७१ ॥

अन्वयः-(प्रहसंत्या यस्याः नेत्रकोणयोः प्रसभं बाष्पं प्रसरति तथा मुखात् लालाऽपि निःसरति तस्याः शीलरक्षा कौतस्त्या स्यात)। अस्यार्थः-हँसते हुए जिसके नेत्रोंके कोनेसे बहुत जोरसे आँसू गिरें और मुखसे लारभी गिरे तिसके शीलकी रक्षा कहांसे होय अर्थात उसका चाल चलन अच्छा नहीं होय ॥ ७१ ॥

युगपद्भवन्ति यस्या दुर्गन्धाः श्वासमूत्रवपुर्ऋतवः ॥
साक्षादेव कुठारी सा वंशविकर्तिनी वनिता ॥ ७२ ॥

अन्वयः--(यस्याः श्वासमूत्रवपुर्ऋतवः युगपत् दुर्गन्धा भवंति, सा वनिता साक्षात् एव वंशविकर्तिनी कुठारी भवति) । अस्यार्थः--जिस स्त्रीके श्वास, मूत्र, शरीर और रज आदि सबमें बुरी बास हो तो वह साक्षात् वंश अर्थात् कुलको काटनेवाली कुल्हाड़ी होती है ॥ ७२ ॥

यस्याः स्फुटं हसंत्याः कपोलयोः कूपकौ स्याताम् ॥
नयने नितांतचपले सा भर्तृघ्नी भवत्यसती ॥ ७३ ॥

अन्वयः--(हसंत्याः यस्याः कपोलयोः स्फुटं कूपकौ स्याताम् तथा नयने नितांतचपले स्याताम् सा असती भर्तृघ्नी भवति) । अस्यार्थः--हँसते हुए जिसके कपोलोंमें प्रकट गढ्ढे होयँ और जिसके नेत्र चलने वा फडकने होयँ सो स्त्री कुलटा भर्त्ताको मारनेवाली होतीहै ॥ ७३ ॥

यान्त्या स्वैरं यस्या दैववशात्पटपटायते वसनम् ॥
सा सततमेव कलयति रमणी कल्याणवैकल्यम् ॥ ७४ ॥

अन्वयः--(यांत्याः यस्याः स्वैरं दैववशात् वसनं पटपटायते--सा रमणी सततं कल्याणवैकल्यं कलयत्येव)।अस्यार्थः--चलती हुई जिस स्त्रीके आपसे आप दैवयोगसे कपड़े फटफट करें सो स्त्री निरंतर कल्याणको बिगाडती है ॥७४॥

सर्वेऽस्थिसंधिबंधा यस्या गमनेन विकटिकायन्ते ॥
सुतमपि पतिं चिकीर्षति सा संगतयौवनं युवतिः ॥ ७५ ॥

अन्वयः--(यस्याः गमनेन सर्वेऽस्थिसंधिबंधाः विकटिकायन्ते सा युवतिः संगतयौवनं सुतमपि पतिं चिकीर्षति) । अस्यार्थः--जिस स्त्रीके चलनेमें सब हाडोंके जोड़ बंध चटकें सो स्त्री तरुण बेटेकोभी पति चाहतीहै ॥ ७५ ॥

अपराङ्गं रोमयुतं पूर्वाङ्गं रोमविरहितं यस्याः ॥
भवति विपरीतमथवा भयंकरा सा पिशाची च ॥ ७६ ॥

अन्वयः--(यस्याः पूर्वाङ्गं रोमविरहितं तथा अपरांगं रोमयुतम् अथवा विपरीतं भवति सा नारी भयंकरा च पुनः पिशाची ज्ञेया)। अस्यार्थः--जिस

स्त्रीके ऊपरका आधा अंग रोमयुक्त न होय और नीचेका अंग रोम युक्त होय अथवा इधर होय उधर न होय सो स्त्री डरावनी और पिशाचिनी जानिये ७६ ॥

फल्गुप्रचारशीला निष्कारणदृङ्निरीक्षणप्रगुणा ॥
निष्फलबहुलालापा सा नारी दूरतस्त्याज्या ॥ ७७ ॥

अस्यार्थः—विना काम घूमनेका स्वभाव जिसका और विना काम आँख चलानेवाली और विना काम व्यर्थ बहुत बात करनेवाली सो स्त्री दूरसेही छोड़ देने योग्य है ॥ ७७ ॥

अतिह्रस्वमुखा धूर्ता दीर्घमुखा दुःखभागिनी वनिता ॥
शुष्कमुखी वक्रमुखी सा सौभाग्यैश्वर्यसुखहीना ॥ ७८ ॥

अस्यार्थः—बहुत छोटे मुखवाली स्त्री धोखा देनेवाली होतीहै और बड़े लंबे मुखवाली स्त्री दुःखभोगनेवाली होतीहै और सूखे और टेढे मुखवाली स्त्री सुहागपन तथा धन और सुखसे हीन होती है ॥७८॥

यस्याः कपिला वृत्ता निरंतरा वपुषि रोमराजिः स्यात् ॥
जाता पितृपतिगोत्रे सा भुवि भजते भुजिष्यात्वम् ॥ ७९ ॥

अन्वयः—(यस्याः वपुषि रोमराजिः निरंतरा कपिला वृत्ता स्यात् पितृपतिगोत्रे जाता भुवि सा भुजिष्यात्वं भजते)। अस्यार्थः—जिस स्त्रीके शरीरमें रोमयुक्त पंक्ति बराबर, भूरे रंगकी भौंरी वा चक्र युक्त होय तो पिताके पतिके कुलमें जो उत्पन्न हुई सो पृथ्वीमें वह टहलनीका काम करतीहै॥ ७९ ॥

सततं विस्पष्टमानाखरोच्चकटुकस्वरा स्फुरद्भ्रुकुटिः ॥
स्वच्छंदाचारगतिः सा स्याद्रहिता निरंतरं लक्ष्म्या ॥ ८० ॥

अन्वयः—(सततं विस्पष्टमाना खरोचकटुस्वरा स्फुरद्भ्रुकुटिः या स्वच्छंदाचारगतिः सा निरंतरं लक्ष्म्या रहिता स्यात्)। अस्यार्थः—निरंतरही प्रकट तीक्ष्ण ऊंचा और कडुवा बोल जिसका और भौंह जिसकी फरका करै और अपनी इच्छाके अनुकूल आचारमें चलना जिसका—सो स्त्री सदा लक्ष्मी करिके रहित अर्थात् दारिद्रिणी होय ॥ ८० ॥

उत्कंटकं सांगुलिकं पाणितलपादतलद्वयं यस्याः ॥
राजान्वयजातापि त्याज्या दूरादपि प्रमदा ॥ ८१ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः सांगुलिकं पाणितलं तथा पादतलद्वयम् उत्कंटकं स्यात्) जिस स्त्रीकी अंगुलियों सहित हाथकी हथेली और पांवके तलुवे दोनों कांटेकी भाँति फटे खरदरे होंय तो (राजान्वयजातापि) राजाके कुलमेंभी उत्पन्न हुई (सा प्रमदा दूरादपि त्याज्या) वह स्त्री दूरसेही छोड़ देने योग्य है ॥ ८१ ॥

अतिह्रस्वा द्राघिष्ठाथ वा तनिष्ठांगनास्थविष्ठा वा ॥
रूपिण्यपि विश्वस्मिन्सा स्पष्टमनिष्टदा भवति ॥ ८२ ॥

अन्वयः–(या अंगना अतिह्रस्वा द्राघिष्ठा अथ वा तनिष्ठा वा स्थविष्ठा भवति–विश्वस्मिन्रूपिणी अपि सा स्पष्टम् अनिष्टदा भवति) । अस्यार्थः–जो स्त्री बहुत छोटी, बहुत लंबी और बहुत पतली वा बहुत मोटी होय तो संसारमें ऐसी रूपवती होय सो प्रकट विघ्नकी देनेवाली होतीहै ॥ ८२ ॥

पादौ यस्याः स्फुटितौ रोमशचिपिटांगुली गूढनखौ ॥
वा कच्छपपृष्ठनखौ सा नारी दुःखदारिद्रताहेतुः ॥८३ ॥

अन्वयः–(यस्याः पादौ स्फुटितौ रोमशचिपिटांगुली गूढनखौ वा कच्छपपृष्ठनखौ स्याताम् सा नारी दुःखदारिद्रताहेतुर्भवति) । अस्यार्थः–पाँवकी फटी टूटी रोम युक्त चिपटी हैं अंगुली जिसकी और दबे हुए हैं गहरे नख जिसके वा कछुवेकी पीठकेसे नख होंय तो वह स्त्री दुःख और दरिद्रताका कारण होतीहै ॥ ८३ ॥

विकलांगी व्याधियुता शुष्कांगी वामना तथा कुब्जा ॥
नीचान्वयजा रमणी परिहरणीया सुरूपाऽपि ॥ ८४ ॥

अन्वयार्थौ–(विकलांगी) कुरूपा (व्याधियुता) रोगिणी (शुष्कांगी) सूखे अंगवाली (वामना) बौनी (कुब्जा) कुबडी (नीचान्वयजा) नीच कुलमें उत्पन्न हुई (ईदृशी सुरूपाऽपि रमणी परिहरणीया ऐसी स्त्री सुंदर रूपवती भी छोडने योग्य है ॥ ८४ ॥

निशि सुप्ता या सततं पिनष्टि दशनान्परस्परं नारी ॥
यत्किञ्चिदपि प्रलपति सा न च शस्ता सुलक्षणाऽपि ॥ ८५ ॥

अन्वयः-(या नारी निशि सुप्ता दशनान् सततं परस्परं पिनष्टि, यत् किंचित् अपि प्रलपति सा नारी सुलक्षणा अपि न शस्ता)। अस्यार्थः- जो स्त्री रातमें सोते हुए निरंतर आपसमें दाँतोंको पीसे और कुछ कुछ बकि उठै सो स्त्री सुलक्षणा अर्थात् अच्छे लक्षणवाली भी अच्छी नहींहै ८५॥

काकमुखी काकाक्षी काकरवा काकजंघिका नारी ॥
काकगतिश्चेष्टा स्यान्नूनं दारिद्र्यदुःखवती ॥ ८६ ॥

अस्यार्थः-कौवेकासा मुख, कौवेकीसी आँख, कौवेकासा बोल, कौवेकीसी जाँघ, कौवेकीसी चाल और चेष्टा जिसकी है ऐसी स्त्री निश्चय करके दारिद्र्य करके दुःखवती होतीहै ॥ ८६ ॥

सततं कोपाविष्टा स्तब्धांगी चंचला महाबाहुः ॥
अतिकृशकरपादयुगा न कदाचन मंगला प्रमदा ॥ ८७ ॥

अस्यार्थः- निरंतर क्रोधवाली, कडा है अंग जिसका वह और चपल, लंबी भुजावाली बहुत सूखेसे दुबले हैं हाथ पाँव दोनों जिसके-ऐसी स्त्री कभीभी मंगल अर्थात् शुभको करनेवाली नहीं है ॥ ८७ ॥

अंगुष्ठेन विरहिता यस्याः करपादांगुलीमिलिताः ॥
सा दारिद्र्यवती स्याद्युवतिर्यदि वा न दीर्घायुः ॥ ८८ ॥

अन्वयः-(यस्याः अंगुष्ठेन विरहिता करपादांगुलीमिलिताःस्युः सा युवतिः दारिद्र्यवती-यदि वा दीर्घायुः न भवति) । अस्यार्थः-जिस स्त्रीके अंगूठेके विना हाथ पाँवकी सब अंगुली मिलजाँय सो स्त्री दरिद्रिणी होवे और वह बडी आयुवाली नहीं अर्थात् थोडी आयुकी होतीहै ॥ ८८ ॥

कपिवक्त्रा कपिनेत्रा कपिनासा कपिकटिर्या च ॥
कपिकर्णा रोमशापि प्रतीपकृज्जायते प्रायः ॥ ८९ ॥

अस्यार्थः-बंदरकासा मुख, बंदरकेसे नेत्र, बंदरकीसी नाक, बंदरकीसी कमर, बंदरकेसे कान, और बाल होंय जिसके वह स्त्री बहुधा उलटे काम करनेवाली होतीहै ॥ ८९ ॥

नगविहंगनदीनाम्नी वृक्षलतागुल्मनामिका नारी ॥
नक्षत्रग्रहनाम्नी न रज्यते स्वैरिणी पत्या ॥ ९० ॥

अस्यार्थः—पर्वत, पक्षी, नदी इनके नाम पर स्त्रीका नाम होय अथवा वृक्ष और बेलिके वा घास फूसके और नक्षत्र और ग्रह नामवाली होय तो (ईदृशी स्वैरिणी नारी पत्या न रज्यते) ऐसी खोटी स्त्री पतिके साथ प्रसन्न नहीं रहती अर्थात् पतिको नहीं चाहतीहै ॥ ९० ॥

शक्रसुरासुरनाम्नी पुंनाम्नी गगननामिका नियतम् ॥
भीषणनाम्नी रमणी स्वच्छन्दा जायते प्रायः ॥ ९१ ॥

अस्यार्थः—इंद्र, देवता,दैत्य इनके नामपर तथा पुरुषके नामकी अथवा आकाशके नामकी वा भयंकर नामकी होय तो (नियतं प्रायः स्वच्छन्दा जायते) निश्चय करिके बहुधा वह वेश्याके तुल्य होजाती है ॥ ९१ ॥

इह भवति मृगीबडवाकरिणीभेदेन कामिनी त्रेधा ॥
तासां लक्षणमधुना दिङ्मात्रमनूद्यते क्रमशः ॥ ९२ ॥

अन्वयः—(इह मृगीवडवाकरिणीभेदेन कामिनी त्रेधा भवति अधुना तासाम् लक्षणं क्रमशः दिङ्मात्रम् अनूद्यते) । अस्यार्थः—इस ग्रंथमें हरिणी और घोडी, हथिनी इन तीन भेदों करके स्त्रियें तीन प्रकारकी होती हैं और अब तिनके लक्षण क्रमसे दिशामात्र अर्थात् संक्षेपसे कहे जातेहैं ९२ ॥

यस्याः षडङ्गुलं स्यादष्टाङ्गुलं वा सरोजमुकुलाभम् ॥
नार्या वराङ्गमध्यं निगद्यते सा मृगी युवतिः ॥ ९३ ॥

अन्वयः—(यस्याः नार्याः षडंगुलं वा अष्टांगुलं सरोजमुकुलाभम् स्यात् सा युवतिः मृगी निगद्यते) । अस्यार्थः—जिस स्त्रीका भग छः अंगुलका अथवा आठ अंगुलका गहिरा कमलकी कली सरीखा होय सो स्त्री मृगी तथा हरिणी कहाती है ॥ ९३ ॥

---

१ पार्वती गिरिजादिनामभाक् । २ हंसी—लक्ष्मणादिनामभाक् अथवा विनतादिनामभाक् । ३ गङ्गा—यमुना—नर्मदेत्या दिनामभाक् ।

यस्या नवदशकाङ्गुलमेकादशांगुलं सा बडवा ॥
द्वादशत्रिदशाङ्गुलकं यदि करिणी कथिता ॥ ९४ ॥

अन्वयः–(यस्या वराङ्गं नवांगुलं वैकादशांगुलं स्यात्, सा नारी बडवा भवति यदि वा द्वादशत्रिदशांगुलं तदा करिणी सा कथिता)। अस्यार्थः–जिस स्त्रीकी योनि नव, दश, एकादश अंगुल की हो वह बडवा (घोडी) कहलातीहै और जिसकी बारह वा तेरह अँगुरकी योनि हो वह करिणी (हस्तिनी) बोली जातीहै ॥ ९४ ॥

प्रायेण मृगीवडवाकरिणीनां जायते सह मृगाद्यैः ॥
प्रीतिस्सहजा मनुजैर्यथाक्रमं संप्रयुक्तानाम् ॥ ९५ ॥

अन्वयः–(यथाक्रमं संप्रयुक्तानां मृगीवडवाकरिणीनां सहजा प्रीतिः प्रायेण मृगाद्यैः मनुजैः सह जायते)। अस्यार्थः–जैसे क्रमसे कही जो हैं हरिणी, घोडी, हथिनी, इनकी स्वाभाविक अच्छी प्रीति बहुधा करके मृग, घोडा, हाथी, ऐसेही मनुष्योंके साथ होती है अर्थात् जैसेको तैसा मिलनेसे उनकी प्रीति अच्छी होतीहै ॥ ९५ ॥

कामस्य सततवसतिस्ततो जगति कामिनीति विदिता स्त्री ॥
द्वादशवर्षादूर्ध्वं कामो विस्फुरति पुनरधिकः ॥ ९६ ॥

अन्वयः–(कामस्य सततं वसतिः ततः जगति स्त्री कामिनी इति विदिता द्वादशवर्षात् ऊर्ध्वं पुनः अधिकः कामः विस्फुरति)। अस्यार्थः–स्त्री कामका निरंतर स्थान है–तिससे लोकमें कामिनी इस नामसे प्रसिद्ध है बारह वर्षसे ऊपर फिर अधिक काम जगताहै ॥ ९६ ॥

तत्कारणं तु यौवनमनन्तरं सुभ्रुवो भवन्त्येते ॥
छेकोक्तिनयनलीलानितम्बबिम्बास्तनोद्भेदाः ॥ ९७ ॥

अन्वयः–(तत् कारणन्तु सुभ्रुवः यौवनम् अनंतरम् एते छेकोक्तिनयन, लीलानितम्बबिम्बस्तनोद्भेदाः भवन्ति)। अस्यार्थः–तिसका कारण स्त्रीका यौवन है–ताके पीछे स्त्रियोंको हाव भाव नेत्रोंकी अवस्था औरही हो जातीहै--तथा नितम्बबिम्ब और कुचोंमें और ही भेद हो जातेहैं ॥ ९७ ॥

गर्भाधाने रजसः शुक्राधिक्येन योषितां तनया ॥
हीनेन पुनस्तनयो भवति समत्वयोर्युगलम् ॥ ९८ ॥

अन्वयः—(योषितां गर्भाधाने अधिकेन रजसा हीनेन शुक्रेण तनया भवति तथा अधिकेन शुक्रेण हीनेन रजसा तनयः यदि समत्वयोर्युगलं भवति)। अस्यार्थः—(स्त्रियोंके गर्भाधानसमयमें रज तो अधिक होय और शुक्र न्यून होय तो पुत्री उत्पन्न होती है और शुक्र अधिक होय रज न्यून होय तो पुत्र उत्पन्न जानिये अथवा शुक्र और रज बराबर होंय तो नपुंसक होताहै९८॥

नारीणामपि तद्वत्स्नेहः क्षेत्राणि संहतिर्ज्ञेया ॥
तेषां यतो विशेषो वितर्कितः कोपि नास्माभिः ॥ ९९ ॥

अन्वयः—(नारीणाम् अपि स्नेहः क्षेत्राणि संहतिः तद्वत्—पुरुषवत् ज्ञेया तेषां पुरुषाणां यथा कथितः तद्वत् ज्ञेया, यतः अस्माभिः विशेषः न कोऽपि वितर्कितः)। अस्यार्थः—स्त्रियोंका स्नेह और क्षेत्र संहति पुरुषोंकीसी जानिये जैसे पुरुषोंका कहा तैसेही स्त्रियोंका जानिये यहां हमने और विशेष करके नहीं कहा ॥ ९९ ॥

शुभलक्षणाधिरूपाधिकापि विख्यातगोत्रजातापि ॥
सौभाग्यभाग्यभागपि न शुभा दुश्चारिणी रमणी ॥१००॥

अन्वयः—(शुभलक्षणाधिरूपाधिका अपि विख्यातगोत्रजातापि नारी सौभाग्यभाग्यभागपि दुश्चारिणी रमणी शुभा न)। अस्यार्थः—शुभलक्षणवाली रूपवती, प्रसिद्ध कुलमें उत्पन्न हुई ऐसी नारी सुहागपन और भाग्य इनकी भोगनेवाली भी यदि व्यभिचारिणी होय तो शुभ नहीं है ॥ १०० ॥

वृत्तं च लक्ष्म वृत्तं रूपं वृत्तं समग्रसौभाग्यम् ॥
वृत्तं गुणादिकं यत्तद्वृत्तं शस्यते सुदृशाम् ॥ १०१ ॥

अन्वयः—(सुदृशां वृत्तं च लक्ष्म रूपं वृत्तं समग्रसौभाग्यं वृत्तं यत् गुणादिकं वृत्तं तत् शस्यते) । अस्यार्थः—स्त्रियोंके अच्छे लक्षण अच्छे रूप, अच्छे समस्त सौभाग्योंमें जो उत्तम गुणादिक हैं वेही इनमें अच्छे समझे जातेहैं ॥ १०१ ॥

---

१ प्रशस्तमित्यर्थः 'मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च' इति क्तः ।

अपि दुर्लक्षणलक्ष्मा महार्थता शीलसंयुता जातिः ॥
शीलेन विना वनिता न शुभाशुभलक्षणवृतापि ॥ १०२ ॥

अन्वयः-(दुर्लक्षणलक्ष्मा अपि शीलसंयुता जातिः महार्थता तथा शुभाशुभलक्षणवृतापि वनिता शीलेन विना न शुभा) । अस्यार्थः-खोटे लक्षण करकेभी और कुलक्षण करके युक्त भी शीलसंयुक्त जाति बडे अर्थकी करनेवाली होवीहै और शुभाशुभ लक्षण करकेभी स्त्री विना शीलके शुभ नहीं है १०२

मत्यापि यत्राकृतयस्तत्र गुणाः सततमेव निवसंति ॥
रूपाधिका पुरंध्री वृत्तादिगुणान्विता प्रायः ॥ १०३ ॥

अन्वयः-(यत्र आकृतयः संति, तत्रैव गुणाः सततं निवसंति तथा वृत्तादिगुणान्विता अपि पुरंध्री प्रायः रूपाधिका शुभा भवति) । अस्यार्थः-जहां स्वरूप है वहां निरंतर गुण वसतेहैं और रूपाधिका (वहुत सुन्दर रूपवाली) स्त्री बहुधा वृत्तादि गुणयुक्त होतीहै ॥१०३॥

इति महत्तमसंस्थानाधिकारो द्वितीयः ।

शुभसंस्थानवृतादपि सुदृशां प्रायः प्रशस्यते वर्णः ॥
येनैता वर्णिन्यस्तस्मात्तल्लक्षणं वक्ष्ये ॥ १०४ ॥

अन्वयः-(शुभसंस्थानवृतात् अपि प्रायः सुदृशां वर्णः प्रशस्यते येन एता वर्णिन्यो भवंति तस्मात् तल्लक्षणम् अहं वक्ष्ये) । अस्यार्थः-शुभ आकारसेभी बहुधा स्त्रियोंका रंग प्रशंसाके योग्य है और जिस कारणसे येही स्त्री उत्तम वर्णनीय होतीहैं इस कारण उनके लक्षण मैं आगे कहताहूं ॥१०४॥

पंकजकिंजल्काभः स्त्रीणां नवतप्तकनकभंगनिभः ॥
चंपककुसुमसमानः स्निग्धो गौरः शुभो वर्णः ॥१०५॥

अन्वयः-(पंकजकिंजल्काभः नवतप्तकनकभंगनिभः चंपककुसुमसमानः स्निग्धः गौरः स्त्रीणां वर्णः शुभो भवति) । अस्यार्थः-कमलके फूलकी केसरकासा रंग, नये तपे हुए सोनेके पत्रके समान सुंदर गोरा रंग स्त्रियोंका शुभ अर्थात् अच्छा होताहै ॥ १०५ ॥

नवदूर्वांकुरतुल्यो स्मेरश्यामोऽर्जुनप्रसूनाभः ॥
कान्तः श्यामो वर्णः सौभाग्यं सुभ्रुवां तनुते ॥ १०६ ॥

अन्वयः–(सुभ्रुवां नवदूर्वांकुरतुल्यः वर्णः स्मेरश्यामः अर्जुनप्रसूनाभः कान्तः श्यामः वर्णः सौभाग्यं तनुते) । अस्यार्थः–स्त्रियोंके नये दूबके अंकुरके तुल्य रंग और खिलाहुवा श्याम, अर्जुनवृक्षके फूलके तुल्य सुंदर साँवला रंग सौभाग्यको फैलाताहै अर्थात् बढाताहै ॥ १०६ ॥

शुद्धोऽपि मध्यमः स्यात्कृष्णः सुस्निग्धगजजलच्छायः ॥
वायसतुंडविडंबी पुनर्जघन्यो घनविरूक्षः ॥ १०७ ॥

अन्वयः–(शुद्धोऽपि कृष्णः सुस्निग्धः गजजलच्छायः वर्णः मध्यमः वायसतुंडविडंबी पुनः घनविरूक्षः जघन्यो भवति)। अस्यार्थः–निर्मल भी साँवला रंग सुंदर चिकना, हाथी और जलकीसी कांतिवाला मध्यम है–और कौवेकी चोंचके आकार कड़ा रूखा रंग जघन्य अर्थात् नीच होताहै ॥ १०७ ॥

द्युतिमान् यो हरिबालस्तमिस्रानिभो नीलो भवेद्विवर्णः ॥
श्यामासंनिभवर्णो लावण्यगुणाधिकं स्त्रीणाम् ॥ १०८ ॥

अन्वयः–(यः द्युतिमान् हरिबालः तमिस्रानिभः नीलः वर्णः विवर्णः भवेत्, श्यामासन्निभवर्णः स्त्रीणां लावण्यगुणाधिकं तनुते) । अस्यार्थः–जो चमकदार सिंहके बालके वा अंधेरी रातकासा नीला रंग बेरंग होताहै और जो श्यामा चिडियाके तुल्य रंग है सो स्त्रियोंकी शोभा और गुणोंकी अधिकताको फैलाता अर्थात् बढ़ाता है ॥ १०८ ॥

प्रव्रजितापि प्रायो न पाण्डुराका स्याच्छुभाचारा ॥
कपिलातिगौरवर्णा न शस्यते मिश्रवर्णापि ॥ १०९ ॥

अन्वयः–(पाण्डुराका शुभाचारा न स्यात, प्रायः प्रव्राजितापि स्यात्, कपिलातिगौरवर्णा मिश्रवर्णापि न शस्यते)। अस्यार्थः–सफेद चाँदनीकेसे रंगवाली अच्छे चलनवाली नहीं होतीहै, बहुधा, वह वैरागिणी होजातीहै और कबरे चित्र विचित्र बहुत गोरे रंगके मिले हुए रंगवाली स्त्री अच्छी नहीं होतीहै १०९

अथ गन्धलक्षणम् ।

वरवर्णिन्यपि न शुभा गतगंधा कर्णिकारकलिकेव ॥
तस्या गंधांस्तद्वत्तल्लक्षणं ब्रूमहे तस्मात् ॥ ११० ॥

अन्वयः—गतगंधा कर्णिकारकलिका इव वरवर्णिन्यपि न शुभा तस्मात् तस्या गन्धान् तल्लक्षणं वयं ब्रूमहे) । अस्यार्थः—गई है गंध जिसकी अर्थात् विना सुगंधि कनेरकीसी कली जैसी ऐसे उजले रंगवाली भी स्त्री शुभ नहीं है तिस कारणसे तिसका गन्ध और लक्षण हम कहतेहैं ॥ ११० ॥

जातीचंपकविचिकिलशतपत्रीबकुलकेतकीतुल्यः ॥
स्वेदः श्वासादिभवः प्रशस्यते योषितां गन्धः ॥ १११ ॥

अन्वयः-(जातीचंपकविचिकिलशतपत्रीबकुलकेतकीतुल्यः योषितां स्वेद-श्वासादिभवः गंधः प्रशस्यते)। अस्यार्थः—चमेली, चंपा, विचिकिल, सेवती मोलशिरी और केतकीके फूलके तुल्य (इनकी भाँति) स्त्रियोंके पसीने और श्वासमें सुगंध होय सो प्रशंसाके योग्य है ॥ १११ ॥

गन्धः सर्वांगीणो मृगनाभीसन्निभो भवति यस्याः ॥
सा योषिदग्रमहिषी विहीनरूपापि भूमिपतेः ॥ ११२ ॥

अन्वयः—(यस्याः सर्वांगीणः गंधः मृगनाभीसन्निभो भवति, विहीनरूपापि सा योषित् भूमिपतेः अग्रमहिषी स्यात) । अस्यार्थः—जिस स्त्रीके सब अंगकी गंध कस्तूरीकीसी होय वह कुरूपाभी स्त्री राजाकी मुख्य पट रानी होती है ॥ ११२ ॥

ऋतुमत्या अपि यस्या विलसति गंधस्तिलप्रसूनाभः ॥
सुरभिद्रव्यसमानः सा सुभगत्वान्विता वनिता ॥ ११३ ॥

अन्वयः—(ऋतुमत्या अपि यस्याः सुरभिद्रव्यसमानः गंधः तिलप्रसूनाभः विलसति, सा वनिता सुभगत्वान्विता भवति) । अस्यार्थः—रजोधर्म युक्त स्त्रीकी कोई भी सुगंधित पदार्थ के तुल्य गंध वा तिलके फूलके तुल्य होय सो स्त्री सुंदर सुहागवती होतीहै॥ ११३॥

तुंबीकुसुमसुगन्धा कटुगन्धा या रसोनगन्धा या ॥
सा न कदाचन गर्भं सुदुर्भगा कामिनी धत्ते ॥ ११४ ॥

अन्वयः—(या नारी तुंबीकुसुमसुगंधा वा कटुगंधा वा या रसोनगंधा भवेत्, सा कामिनी सुदुर्भगा कदाचन गर्भं न धत्ते) । अस्यार्थः—जो स्त्री तूँबीके

फूलकीसी गंधवाली अथवा कड़वी गंधवाली वा लहसुनकीसी गंधवाली होय सो स्त्री कुलक्षणी कभी गर्भको धारण न करे अर्थात् वह गर्भवती न होय ११४॥

या हरितालीगन्धा मिश्रवसामांसपूतिसमगन्धाः ॥
अत्युग्रदुष्टगन्धाः सुभगा न सुरूपवत्योऽपि ॥ ११५ ॥

अन्वयः-(या नार्यः हरितालीगंधाः वा मिश्रवसामांसपूतिसमगंधाः वा अत्युग्रदुष्टगंधाः ताः सुरूपवत्योऽपि सुभगा न)। अस्यार्थः-जो स्त्री हरितालकीसी गंधवाली वा हाथीकी चर्बी और दुर्गन्धित मांसके समान गंध वा बहुत बुरी सड़ीसीगंध जिनके होय वे स्त्री स्वरूपवती भी सौभाग्यवती नहीं होतीहैं ११५

अथ आवर्तलक्षणम् ।

आवर्तो नारीणां प्रदक्षिणो पाणिपल्लवे व्यक्तः ॥
धर्मधनधान्यकारी न जातु शस्तः पुनर्वामः ॥ ११६ ॥

अन्वयः-(नारीणां पाणिपल्लवे प्रदक्षिणः व्यक्तः आवर्तः धर्मधनधान्यकारी भवेत्-पुनः वामः जातु न शस्तः) । अस्यार्थः-स्त्रियोंकी दाहिनी हथेलीमें प्रकट चक्र वा भौंरी होय तो वह धर्म, धन, धान्यकी करनेवाली होय और फिर वोही चक्र वा भौंरी बाईं हथेलीमें होय तो वह कभी अच्छी नहीं है ॥ ११६ ॥

नाभ्यां श्रुतियुगले वा दक्षिणवलिताः शुभास्त्वगावर्ताः ॥
चूडावर्तोऽपि पुनः प्रशस्यते दक्षिणः शिरसि ॥ ११७ ॥

अन्वयः-(नाभ्यां वा श्रुतियुगले त्वगावर्ताः दक्षिणवलिताः शुभाः पुनः शिरसि दक्षिणः चूडावर्तः अपि प्रशस्यते) । अस्यार्थः-टूंडीमें वा दोनों कानोंमें चक्र वा भौंरी दाहिनी ओर झुकी हुई शुभ होतीहैं-फिर शिरमें दाहिनी ओर झुका हुवा चक्र वा भौंरी प्रशंसाके योग्य है ॥ ११७ ॥

दक्षिणभागे स्त्रीणामावर्तो भवति पृष्ठवंशस्य ॥
सौभाग्यकरः सुव्यक्तो वामविभागे पुनर्न शुभः ॥ ११८ ॥

अन्वयः-(स्त्रीणां पृष्ठवंशस्य दक्षिणभागे सुव्यक्तः यदि आवर्तः सौभाग्यकरो भवति पुनः वामविभागे न शुभः)। अस्यार्थः-स्त्रियोंका शरीरके

दाहिने भागमें जो प्रकट भौंरी होय तो सौभाग्यकी करनेवाली होती है और फिर वोही भौंरी बाईं ओरके भागमें होय तो नहीं अच्छी है ॥ ११८ ॥

अन्तःपृष्ठं यस्या नाभिसमो भवति दक्षिणावर्तः ॥
चिरजीविन्यास्तस्या बहून्यपत्यानि जायन्ते ॥ ११९ ॥

अन्वयः—(यस्याः अंतःपृष्ठं नाभिसमो दक्षिणावर्तो भवति, चिरजीविन्याः तस्याःबहून्यपत्यानि जायन्ते)। अस्यार्थः-जिस स्त्रीकी पीठके मध्यमें जो टूँडीकी भाँति दाहिनी ओर भौंरी होय तो बहुत जीवनेवाली होय और उस स्त्रीके बहुत लड़का लड़की होते हैं ॥ ११९ ॥

शकटाभो भगमूले यस्याः स्निग्धः प्रदक्षिणावर्तः ॥
सा भवति भूपपत्नी पुत्रवती सुरभसौभाग्या ॥ १२० ॥

अन्वयः—(यस्याः भगमूले शकटाभः स्निग्धः प्रदक्षिणावर्तः भवति, सा सुरभसौभाग्या पुत्रवती भूपपत्नी भवति)। अस्यार्थः—जिस स्त्रीकी योनिके बीच मूलमें छकड़ेके समान चिकनी सुंदर दाहिनी ओर भौंरी होय सो प्रसिद्धहै सुहागपन जिसका सो पुत्रवती अर्थात् पुत्रवाली राजाकी स्त्री होतीहै॥ १२०॥

आवर्तः कटिमध्ये यस्याः संभवति गुह्यमध्ये च ॥
पत्युरपत्यानामपि विपातनं वितनुते सापि ॥ १२१ ॥

अन्वयः—(यस्याः कटिमध्ये च पुनः गुह्यमध्ये आवर्तः संभवति, सा स्त्री पत्युः तथा अपत्यानां विपातनं वितनुते)। अस्यार्थः—जिस स्त्रीकी कमरकी ओर योनिके बीचमें भौंरी दाहिनी ओर होय सो स्त्री पतिका और पुत्र पुत्रियोंका नाश करैहै ॥ १२१ ॥

पृष्ठावर्तद्वितयं यस्याः सुव्यक्तमुदरवेधेन ॥
सा हत्वा भर्तारं दुःशीला जायते प्रायः ॥ १२२ ॥

अन्वयः—(यस्याः उदरवेधेन सुव्यक्तं पृष्ठावर्तद्वितयं भवति सा नारी भर्तारं हत्वा प्रायः दुःशीला जायते)। अस्यार्थः—जिस स्त्रीके उदरपर प्रकट और पीठ पर भौंरी दो होयँ सो स्त्री पतिको मारके बहुधा खानगी (कसबी) अर्थात् व्यभिचारणी होती है ॥ १२२ ॥

दक्षिणवलितः स्त्रीणामावर्तः कण्ठकन्दले व्यक्तः ॥
वैधव्यदुःखदौर्भाग्यदायको न हि प्रशस्यः स्यात् ॥ १२३ ॥

अन्वयः—(स्त्रीणाम् आवर्तः दक्षिणवलितः कण्ठकन्दले व्यक्तो भवति, सः वैधव्यदुःखदौर्भाग्यदायकः न प्रशस्यः स्यात)। अस्यार्थः—स्त्रियोंकी भौंरी दाहिनी ओर झुकी हुई कंठदेशमें प्रकट होय तो विधवापन और दुःख और बुरे भाग्यके देनेवाली है, प्रशंसाके योग्य नहीं है ॥ १२३ ॥

सीमन्तपथप्रान्ते ललाटमध्ये च जायते यस्याः ॥
आवर्तः सुव्यक्तः सा दुःशीलाऽथ वा विधवा ॥ १२४ ॥

अन्वयः--(यस्याः सीमन्तपथप्रान्ते ललाटमध्ये आवर्तःसुव्यक्तः जायते, सा नारी दुःशीला अथवा विधवा भवेत)।अस्यार्थः--जिस स्त्रीकी माँगके अंतमें सम्मुख ललाटमें भौंरी प्रकट होय सो स्त्री खोटे चलनकी वा विधवा होय १२४

मध्ये कृकाटिकाया वक्रावर्तः प्रदक्षिणो यस्याः ॥
वर्षेणैकेन पतिं हत्वा सान्यं समाश्रयते ॥ १२५ ॥

अन्वयः--(यस्याः कृकाटिकायाः मध्ये प्रदक्षिणः वक्रावर्तः स्यात, सा नारी एकेन वर्षेण पतिं हत्वा अन्यं समाश्रयते) । अस्यार्थः--जिस स्त्रीकी घेंटीके बीचमें दाहिनी ओर झुकीहुई टेढी भौंरी होय सो स्त्री एकही वर्षमें पतिको मारके दूसरेका आसरा पकड़े अर्थात् औरके पास जाय ॥ १२५ ॥

एको द्वौ वा मस्तकमध्ये यस्याः प्रदक्षिणो नियतम् ॥
सा हन्ति पतिं पापा दशदिवसाभ्यन्तरेणैव ॥ १२६ ॥

अन्वयः—(यस्याः मस्तकमध्ये एकः वा द्वौ नियतं प्रदक्षिणावर्तौ स्याताम् सा पापा स्त्री दशदिवसाभ्यन्तरेणैव पतिं हन्ति) । अस्यार्थः—जिस स्त्रीके मस्तकके बीचमें एक वा दो निश्चय करके दाहिनी ओर भौंरी होंय सो पापिनी स्त्री दश दिनके भीतर पतिको मारतीहै ॥ १२६ ॥

कट्यावर्ता कुटिला नाभ्यावर्ता पतिव्रता सततम् ॥
पृष्ठावर्ता निन्द्या भर्तृघ्नी जायते योषित् ॥ १२७ ॥

अन्वयः—(या नारी कट्यावर्ता सा कुटिला, या नारी नाभ्यावर्ता सततं पतिव्रता, या योषित् पृष्ठावर्ता सा निन्द्या वा भर्तृघ्नी जायते) ।

अस्यार्थः—जो स्त्रीकी कमरमें भौंरी होय सो स्त्री खोटे चलनकी होय और जिस स्त्रीकी टूंडीमें भौंरी होय सो निरंतर पतिव्रता होय और जिस स्त्रीकी पीठमें भौंरी होय सो स्त्री बुरी वा पतिके मारनेवाली होतीहै॥ १२७॥

अथ सत्त्वलक्षणम्।

आपद्यपि संपद्यपि मुक्तमना दुःखमनोत्सुकेयम् ॥
अपगतविषादहर्षा हतशोकोत्साहनिःसत्त्वा ॥ १२८ ॥

अन्वयः—(इयम् आपदि अपि मुक्तमना तथा संपदि अपि दुःखमनोत्सुका अपगतविषादहर्षा च पुनः हतशोकोत्साहनिःसत्त्वा)। अस्यार्थः—आपत्तिमें छोडा है मन जिसने और संपत्तिमें दुःखयुक्त मनकी अभिलाषा करनेवाली और गया है दुःख और हर्ष जिसका और नष्ट होगया है शोक और उत्साह जिसका ऐसी स्त्री पराक्रम रहित जानिये ॥ १२८ ॥

सत्त्वोपेता प्रायः सदया सत्या स्थिरा गभीरा च ॥
कौटिल्यशल्यरहिताहितकल्याणा भवति नारी ॥ १२९ ॥

अन्वयः—(प्रायः सत्त्वोपेता नारी सदया सत्या स्थिरा गभीरा कौटिल्यशल्यरहिता आहितकल्याणा भवति)। अस्यार्थः—बहुधा शक्ति युक्त स्त्री दयासहित सची स्थिर गंभीर—कुटिलता और विना खटकवाली कल्याण करनेवाली होतीहै ॥ १२९ ॥

अथ स्वरलक्षणम्।

नारीणामनुनादः शुभस्वरः कामलाकलामन्दः ॥
श्रुतिपथगतापि नियतं जगतोपि मनः समादत्ते ॥ १३० ॥

अन्वयः—(नारीणाम् अनुवादः शुभस्वरः कामलाकलामन्दो भवति, नियतं श्रुतिपथगता सती अपि जगतः मनः समादत्ते)। अस्यार्थः—स्त्रियोंका बोल और अच्छा स्वर कामकी कलाओंमें थोडा होताहै—और ऐसे शुभ बोल युक्त स्त्री निश्चय कर शास्त्रके मार्गमें चलनेवाली हो तिससे जगतके मनको पकडतीहै अर्थात् ग्रहण करतीहै ॥ १३० ॥

वीणावेणुनिनादाः कोकिलहंसस्वरा पयोदरवाः ॥
केकिध्वनयो भुवने भवंति ललना नृपतिपत्न्यः ॥ १३१ ॥

अस्यार्थः—वीणा और वंशीकासा है बोल जिसका और कोकिल और हंसकासा है स्वर जिसका और मेघकासा और मोरकासा है बोल जिसका ऐसी स्त्री लोकमें राजाकी रानी होतीहै ॥ १३१ ॥

गतकौटिल्यमदीनं स्निग्धं दाक्षिण्यपुण्यमकठोरम् ॥
सकलजनसांत्वनकरं भाषितमिह योषितां शस्तम् ॥ १३२ ॥

अन्वयः—(इह योषितां शस्तं भाषितं गतकौटिल्यम् अदीनं स्निग्धं दाक्षिण्यपुण्यम् अकठोरं सकलजनसांत्वनकरं भवति) । अस्यार्थः—इस लोकमें स्त्रियोंका अच्छा बोल चाल कुटिलता और दीनता रहित सुंदर मीठा चतुरता, पवित्रता, मुलायम, सब मनुष्योंको आनंदका करनेवाला होताहै १३२

नारीविभिन्नकांस्यक्रोष्टृखरोलूककाककंकरवा ॥
दुःखबहुशोकशंकावैधव्यव्याधिभाग्भवति ॥ १३३ ॥

अन्वयः—(विभिन्नकांस्यकोष्टृखरोलूककाककंकरवा नारी दुःख बहुशोकशंकावैधव्यव्याधिभाक् भवति) । अस्यार्थः—फूटी कांसी, गीदड, गधा, उल्लू, कउवा, कंक (पक्षीविशेष)–इनकासा बोल होय तो ऐसी स्त्री दुःख और बहुत शोक शंका और विधवापन-रोग व्यथा इनको भोगनेवाली होतीहै १३३॥

विस्फुटतश्च श्रोतुः स्वस्त्ययनकरः शुभस्वरो मधुरः ॥
संक्रांताधरपल्लवसुधारसच्छद इव स्त्रीणाम् ॥ १३४ ॥

अन्वयः—(स्त्रीणां विस्फुटितः संक्रांताधरपल्लवसुधारसच्छद इव मधुरः शुभस्वरः श्रोतुः स्वस्त्ययनकरो भवति) । अस्यार्थः–स्त्रियोंका प्रकट लगाहुवा होठोंसे सुधारसकी पत्रकी भांति मीठा अच्छा बोल सुननेवालेको कल्याण करनेवाला होता है ॥ १३४ ॥

अथ गतिलक्षणम् ।

मत्तसंनिभेन पदा मदमत्तमतंगहंसगतितुल्या ॥
सुभगा गतिः सुललिता विलसति वसुधेशपत्नीनाम् ॥ १३५ ॥

अन्वयः—(वसुधेशपत्नीनां मत्तसंनिभेन पदा मदमत्तमतंगहंसगतितुल्या सुललिता सुभगा गतिर्विलसति) । अस्यार्थः—राजाओंकी रानीकी,

मतवाले मनुष्यके पाँवकीसी—और मतवाले हाथी और हंसकीसी चालकी भांति अच्छी सुंदर चाल होतीहै ॥ १३५ ॥

गोवृषभनकुलमृगपतिमयूरमार्जारगामिनी नियतम् ॥
सौभाग्यैश्वर्ययुता भाग्यवती भोगिनी भवति ॥ १३६ ॥

अस्यार्थः—(गाय, बैल, नौला, सिंह, मोर, बिल्ली इनकीसी चालवाली स्त्री निश्चय करके सुहागपन और ऐश्वर्य युक्त भाग्यवती भोगनेवाली होती है १३६

मंडूकघूकवृकबकजंबुकशुभक्रोष्टुसरटकपिगतयः ॥
दौर्गत्यदुःखसहिता जायन्ते युवतयः प्रायः ॥ १३७ ॥

अस्यार्थः—(मेडक, उल्लू, भेडिया, बगुला, गीदुवा, अच्छा गीदड करकेटा, बंदर, इनकीसी चालवाली (प्रायः दौर्गत्यदुःखसहिता युवतयः जायन्ते) बहुधा बुरी गति और दुःख सहनेवाली स्त्रियां होतीहैं ॥ १३७ ॥

ह्रस्वप्लुतानुविद्धा लसत्पदाभ्यन्तराबला बाह्या ॥
स्तब्धा मंदा विषमा लघुक्रमा शोभना न गतिः ॥ १३८ ॥

अस्यार्थः—कुछ ऊपरको उछलके जो गति होय और शोभायमान पाँव भीतर बाहर जिस चालमें होयँ और रुकरुकके थोडी कमती बढती चाल और हलके पडें पाँव जिसमें (ईदृशी गतिः शोभना न) ऐसी चाल अच्छी नहीं होतीहै ॥ १३८ ॥

निःस्वा बिलम्बितगतिर्विषमा न सा योषित् ॥
दासी कुरंगगमना कुलटा द्रुतगामिनी भवति ॥ १३९ ॥

अन्वयः—(बिलंबितगतिः निःस्वा भवति. विषमगतिः सा योषित् विषमा न कुरंगगमना गतिः दासी, द्रुतगामिनी कुलटा भवति) । अस्यार्थः— धीरे चलनेवाली स्त्री दरिद्रिणी होतीहै और कमती बढती चालवाली ऐसी स्त्री तीक्ष्ण नहीं होतीहै और हिरणकीसी चालवाली स्त्री दासी होतीहै और शीघ्र चलनेवाली स्त्री खोटी व्यभिचारिणी होतीहै ॥ १३९ ॥

अथ छायालक्षणम् ।

छादयति लक्षणानि स्त्रीणामग्रे तदुच्यते छाया ॥
लावण्यं सौभाग्यं तां लक्षणवेदिनो ब्रुवते ॥ १४० ॥

अन्वयः–(स्त्रीणां लक्षणानि छाया छादयति तत् अग्रे उच्यते, च पुनः लक्षणवेदिनः सौभाग्यलावण्यं तां ब्रुवते)। अस्यार्थः–स्त्रियोंके लक्षणोंको जो छाया है सो ढक देतीहै तिसको आगे कहते हैं और लक्षणके जानने-वाले जो हैं सो उन लक्षणोंको सुंदर सौभाग्य शोभा कहतेहैं ॥ १४० ॥

वस्त्वतिरिक्तं किंचन महाकवीनां यथा गिरा स्फुरति ॥
अंगे दक्षा तद्वन्मनोहरा लवणिमा छाया ॥ १४१ ॥

अन्वयः–(किंचन वस्त्वतिरिक्तं महाकवीनां यथा गिरा स्फुरति तद्वत स्त्रीणाम् अंगे छाया दक्षा लवणिमा मनोहरा भवति)। अस्यार्थः–कुछ वस्तु-ओंके सिवाय बडे कवीश्वरोंकी जैसे वाणी फुरै है तैसेही स्त्रियोंके अंगमें कांति चतुरता नमकीनी शोभा मनकी हरनेवाली होतीहै ॥ १४१ ॥

सौभाग्यं छायैव प्रमुखा निखिलेषु लक्ष्मसु स्त्रीणाम् ॥
यदभावे भुवि वनिता पांचालीवन्न भोगार्हा ॥ १४२॥

अन्वयार्थौ–(निखिलेषु लक्ष्मसु स्त्रीणां छाया एव प्रमुखा सौभाग्यम्) संपूर्ण चिह्नों वा लक्षणोंमे स्त्रियोंकी छाया जो है सोई मुख्य सौभाग्यकी कर-नेवाली है और (भुवि यदभावे वनिता पांचालीवत् भोगार्हा न भवति) लोक-में विना छायाके स्त्री व्यभिचारिणीकी भाँति भोगनेके योग्य नहीं होतीहै १४२॥

चित्तचमत्कृतिजननी हृदि संतापं तनोति जगतोपि ॥
या दृष्टापि स्पष्टं सा छाया शस्यते सुदृशाम् ॥ १४३ ॥

अन्वयः–(चित्तचमत्कृतिजननी या स्पष्टं दृष्टा सती अपि जगतोपि हृदि संतापं तनोति सा सुदृशाम् ईदृशी छाया प्रशस्यते)। अस्यार्थः–चित्तको प्रसन्न करनेवाली और जो स्पष्ट देखनेपरभी जगत्के हृदयको संताप करे सो स्त्रियोंकी छाया प्रशंसाके योग्य है ॥ १४३ ॥

यस्याः सर्वाङ्गीणा विराजते हंत लवणिमा च्छाया ॥
चित्रमिदं सा जगति माधुर्यं समधिकं दधते ॥१४४॥

अन्वयः–(यस्याः सर्वांगीणा लवणिमा छाया हंत विराजते सा छाया जगति माधुर्यं दधते इदं समधिकं चित्रम्)। अस्यार्थः–जिन स्त्रियोंके सब अंगकी अच्छी छाया आनंदकी देनेवाली शोभायमान है सोई छाया जगत्में मीठेपनको धारण करती है, यह बहुत बडा अचरज है ॥ १४४ ॥

यदि सौभाग्यच्छायालंकरणा ध्रुवं विलसति बाला ॥
रूपेण लक्षणैर्वा प्रयोजनं जगति किं तस्याः ॥ १४५ ॥

अन्वयः-(यदि बाला सौभाग्यच्छायालंकरणा ध्रुवं विलसति, तस्याः रूपेण वा लक्षणैः जगतः किं प्रयोजनम्)। अस्यार्थः-जिस स्त्रीकी छायाही भूषण करके निश्चय शोभायमान है तिस स्त्रीका रूप और लक्षण करके जगत्में क्या प्रयोजन है ॥ १४५ ॥

रूपाकारविहीने शुभलक्षणविरहिते नियतमंगे ॥
सौभाग्यमस्ति यस्याः सा ललना दुर्लभा भुवने ॥ १४६ ॥

अन्वयः-(यस्याः अंगे रूपाकारविहीने तथा शुभलक्षणविरहिते सति सौभाग्यम् अस्ति, इह भुवने सा ललना नियतं दुर्लभा भवति)। अस्यार्थः-जिस स्त्रीका अंग, रूप आकार और शुभ लक्षण रहित होते हुए भी सौभाग्य है ऐसी स्त्री निश्चय करके इस लोकमें दुर्लभ होती है ॥ १४६ ॥

यदि लावण्यच्छायाछन्नं शुभलक्ष्मरूपमंगं स्यात् ॥
तद्द्वयसंयोगेन शृतदुग्धे शर्कराक्षेपः ॥ १४७ ॥

अस्यार्थः-(जो शोभायुक्त छायागुन और शुभ लक्षणरूप अंग होय तो उन दोनोंके संयोग करके जैसे औटाये दूधमें मिश्रीका डालदेना तैसेही जानिये ॥ १४७ ॥

यत्रोक्तं पूर्वस्मिन्नरौचित्यं तन्नरेपि तारावत् ॥
यद्यस्मिन्नपि पुनः सकलं तन्नरवदभ्यूह्यम् ॥ १४८ ॥

अन्वयः-(यत्र पूर्वस्मिन् नरे उक्तम् तत् पुनः तारावत् औचित्यं यदि अस्मिन् पुनः न उक्तं तत् सकलं नरवत् अभ्यूह्यम्) । अस्यार्थः-जैसे कि पहले नरप्रकरणमें जो कहा सो फिर कहना तारोंकी भाँति उचित नहीं है और जो इस नारी प्रकरणमें फिर नहीं कहा सोई वह सब नरप्रकरणकी भाँति जानना चाहिये १४८

सामुद्रिकतिलकाख्यं पुरुषस्त्रीलक्षणं प्रपंचभयात् ॥
दिङ्मात्रमत्र गदितं सापि समुद्रोक्तिरपि नान्या ॥ १४९ ॥

अन्वयः-(पुरुषस्त्रीलक्षणं प्रपंचभयात् सामुद्रिकतिलकाख्यम् अत्र यत् दिङ्मात्रं गदितम् सा समुद्रोक्तिः अपि अन्या न)। अस्यार्थः-पुरुष और

स्त्रीके लक्षणोंवाली सामुद्रिककी टीका बढ़जानेके भयसे यहां दिशामात्र ही कहा है सो भी समुद्रका ही कहा हुआ है अर्थात् किसी दूसरेका नहीं है ॥ १४९ ॥

इति श्रीमहत्तमश्रीनरसिंहात्मजदुर्लभराजविरचिते सामुद्रतिलकाख्येऽपरनाम्नि पुरुषस्त्रीलक्षणे वर्णाद्यधिकारश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

अथ कविवृत्तान्तकथनम् ।

अत्रास्ति कोपि वंशः प्राग्वाटाख्यस्त्रिलोकविख्यातः ॥
नृपसंपदि वृद्धौ वा चालम्बनयष्टिरभवद्यः ॥ १ ॥

अन्वयः—(अत्र कः अपि त्रिलोकविख्यातः प्राग्वाटाख्यो वंशः अस्ति, यः नृपसंपदि वा वृद्धौ आलंबनयष्टिः अभवत्) । अस्यार्थः—इन तीनों भुवनोंमें प्रसिद्ध है नाम जिसका ऐसा कोई एक प्राग्वाटाख्य वंश है-और जो वंश राजाकी संपत्ति वा समृद्धिमें सहारेकी लाठी हुआ ॥ १ ॥

आसीत्तत्र विचित्रश्रीमद्वाहिल्लसंज्ञया ज्ञातः ॥
व्ययकरणपदामात्यो नृपतेः श्रीभामदेवस्य ॥ २ ॥

अन्वयः—(तत्र विचित्रश्रीमद्वाहिल्लसंज्ञया ज्ञातः श्रीभामदेवस्य नृपतेः व्ययकरणपदामात्यः आसीत्) । अस्यार्थः—तहां चित्र विचित्र लक्ष्मी करके वाहिल्ल संज्ञासे जाना जाय जो सो श्रीभामदेव राजाका व्ययकरण नाम मंत्री होताभया ॥ २ ॥

समजनि तदंगजन्मा प्रथितः श्रीराजपाल इति नाम्ना ॥
प्रतिपक्षद्विपसिंहः श्रीनृसिंहः सुतस्तस्य ॥ ३ ॥
श्रीमान् दुर्लभराजस्तदपत्यं बुद्धिधाम सुकविरभूत् ॥
यं श्रीकुमारपालो महत्तमं क्षितिपतिं कृतवान् ॥ ४ ॥

अन्वयः—(तदंगजन्मा श्रीराजपाल इति नाम्ना प्रथितः, प्रतिपक्षद्विपसिंहः श्रीनृसिंहः तस्य सुतः समजनि, श्रीमान् बुद्धिधाम सुकविः दुर्लभराजः तदपत्यम् अभूत्, श्रीकुमारपालः महत्तमं यं क्षितिपतिं कृतवान्)। अस्यार्थः—तिसके अंगसे है जन्म जिसका सो श्रीराजपाल नाम करके प्रसिद्ध है, सो शत्रुरूप हस्तियोंको सिंहके तुल्य श्रीनृसिंह तिसका पुत्र उत्पन्न हुवा, सो

लक्ष्मीवान् और बुद्धिका घर अच्छा कवि दुर्लभराज नामसे होता भया—और श्रीकुमारपाल बड़ा है तप जिसका तिसको राजा करता भया॥ ३॥ ४॥

प्रक्षालयितुम्मलमिव वाणी मज्जति चतुर्विधाम्बुधिषु ॥
यस्य विलासवती गजतुरंगशकुनिप्रबन्धेषु ॥ ५ ॥
तेनोपज्ञातमिदं पुरुषस्त्रीलक्षणं तदनु कविता ॥
तस्यैव सुतेन जगद्देवेन समर्थयांचक्रे ॥ ६ ॥

अन्वयः—(गजतुरंगशकुनिप्रबन्धेषु चतुर्विधाम्बुधिषु मलं प्रक्षालयितुम् इव यस्य विलासवती वाणी मज्जति, तस्यैव सुतेन तेनैव जगद्देवेन इदं पुरुषस्त्रीलक्षणम् उपज्ञातं तदनु कविता उपज्ञाता इव समर्थयांचक्रे)। अस्यार्थः—हाथी, घोड़े, शकुनि इनके जो प्रबंध कहिये शास्त्रोंमें चारों दिशाके जो समुद्रकी भाँति मलके धोनेको जिसकी चमत्कारी वाणी गोता मारतीहै, तिसीके पुत्र जगद्देवने यह पुरुष स्त्रीके हैं लक्षण जिसमें आद्य ज्ञान वर्णन किया तिसके पीछे कविता वर्णन करके इसको आर्या छंदमें बनाया ॥५॥६॥

अहमपि परेपि कवयस्तथापि महदन्तरं परिज्ञेयम् ॥
ऐक्यं रलयोरिति यदि तत्किं कलभायते करभः ॥ ७ ॥
सुललितपदा सुवर्णा सालंकारा सुदुर्लभा सार्था ॥
एकाप्यर्थसुरम्या किं पुनरष्टौ शतं चैताः ॥ ८ ॥

अन्वयः—(अहम् अपि परेपि कवयः संति, तथापि—महदन्तरं परिज्ञेयम् यदि रलयोः ऐक्यम् इति तत् किं करभः कलभायते सुललितपदा सुवर्णा सालंकारा सार्था अर्थसुरम्या एकापि आर्या सुदुर्लभा अष्टौ शतम् एताः किं पुनः वक्तव्यम्)। अस्यार्थः-मैं भी कवि हूं और भी कवि हैं तौभी बड़ा अन्तर समझना चाहिये, क्योंकि जो रकार और लकारकी एकता है तो क्या करभ (ऊंट) कलभ (हाथी) होजायगा? सुन्दर हैं पद जिसमें और सुन्दर ही हैं अक्षर जिसमें और अलङ्कार सहित हैं अर्थ जिसमें ऐसी अर्थ करके सुन्दर आर्या एकभी बनाना कठिन है और जो वे आठसौ ऐसी अर्थसहित होय तौ फिर क्या कहना है ॥ ७ ॥ ८ ॥

परहृदयाभिप्रायं परगदितार्थस्य वेत्ति यः सत्त्वम् ॥
सत्त्वं भुवने दुर्लभसम्भूतिः सुकविरेवैकः ॥ ९ ॥
नृस्त्रीलक्षणपुष्पां स्रजमेतां सुरभिवर्णगुणगुम्फाम् ॥
मृगराजसभाख्याता अपि सन्तः कुरुत कण्ठस्थाम् ॥ १० ॥

अन्वयः-(यः परगदितार्थस्य हृदयाभिप्रायं वेत्ति,स सत्त्वम् तथा भुवने सत्त्वं दुर्लभम् एकः सुकविः एव सम्भूतिः. हे मृगराजसभाविख्याताः सन्तः अपि पुरुषा एतां नृस्त्रीलक्षणपुष्पां सुरभिवर्णगुणगुम्फां स्रजं कण्ठस्थां कुरुत । अस्यार्थः-(जो दूसरेके कहे हुए प्रयोजनको जानिलेय सोई सत्त्व है-और लोकमें सत्त्व ही दुर्लभ है-और एक सुन्दर कवि है यही सम्भूति है हे सिंहसभाके विख्यात पंडितो ! इस पुरुष स्त्रीके लक्षणरूप हैं पुष्प जिसमें और सुगन्धित रंगवाले इन गुणों करके गुँथी हुई मालाको कण्ठमें स्थित करो ॥ ९ ॥ १० ॥ समस्तग्रन्थश्लोकसंख्या ॥ ७९३ ॥

इति श्रीमहत्तमश्रीनृसिंहात्मजदुर्लभराजविरचिते सामुद्रतिलकाख्येऽपर नाम्नि पुंस्त्रीलक्षणे वंशवर्णनं ग्रन्थपूर्तिश्च ॥

सामुद्रिकभाषेयं राधाकृष्णेन निर्मिता रम्या ॥
लब्ध्वा साहाय्यं वै विदुषो घनश्यामनाम्नश्च ॥ १ ॥
गिरिवेदनवक्ष्माभिः प्रमिते संवत्सरे सुपौषे च ॥
मेचकपक्षे रुचिरे दुर्गातिथियुतरवेर्वारे ॥ २ ॥
अर्गलपुरवरनगरे कालिन्दीतीरसंस्थिते रम्ये ॥
नृस्त्रीलक्षणशास्त्रं पूर्णं जातं हि लोकेऽस्मिन् ॥ ३ ॥
जातो वैश्यः खेमराजाऽभिधानः श्रीकृष्णस्यापत्यभावं गतो वै ।
तेनायं वै वेङ्कटेशाख्ययन्त्रे श्रीमुम्बय्यां मुद्रितो ग्रन्थ आशु ॥ ४ ॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

मिलनेका पत्ता-खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बंबई.